अपूर्वा

भाग १

अपूर्वा

भाग 1

छठी कक्षा की पाठ्यपुस्तक
(द्वितीय भाषा हिंदी शिक्षण के लिए)

संपादक
लालचंद राम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

आमुख

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, शिक्षा विशेषतः विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों के निर्धारण एवं क्रियान्वयन में सहयोग और परामर्श प्रदान करती है। राष्ट्र के समक्ष शिक्षा के मौजूदा मुख्य सरोकारों और मुद्दों को पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों में समाहित किया जाए इसके बारे में विचार करती रही है तथा व्यापक दिशा-निर्देश भी देती रही है। परिषद् के तत्वावधान में विद्यालयी स्तर की पाठ्यचर्या तथा उस पर आधारित विभिन्न शैक्षिक विषयों के पाठ्यक्रमों तथा पाठ्यपुस्तकों आदि के निर्माण का कार्य लगभग चार दशकों से निरंतर किया जा रहा है।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986' में यह स्पष्ट सुझाव दिया गया था कि ज्ञान-विज्ञान के विकास, सामाजिक संरचना और नवीन दृष्टिकोण तथा मूल्यपरक शैक्षिक आवश्यकताओं को देखते हुए समय-समय पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में यथासंभव संशोधन और परिवर्तन अवश्य किया जाए। इसी सुझाव और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए परिषद् ने इस पाठ्यपुस्तक तथा अन्य पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया है।

भारत एक बहुभाषा-भाषी देश है। अतः बहुभाषिक संप्रेषण के संदर्भ में द्वितीय भाषा हिंदी शिक्षण की भूमिका विशिष्ट हो जाती है अर्थात् इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों के बीच संपर्क स्थापित करना तथा राष्ट्रीय भावात्मक एकता की भावना पैदा करना है। द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण सामग्री का उद्देश्य और लक्ष्य स्पष्ट करना भी अब आवश्यक हो गया है। भाषा अधिगम को वास्तविक भाषा प्रयोग के शिक्षण के माध्यम से अधिक दृढ़ता प्रदान की जा सकती है, यह तथ्य आधुनिक विश्व की अन्य भाषा शिक्षण संबंधी अवधारणाओं में स्वीकार कर लिया गया है। अतः यह पुस्तक भी भाषा संरचना के सहारे भाषा-संप्रेषण के महती उद्देश्य को साधने का यत्न करती है। इसीलिए द्वितीय भाषा के रूप में किसी भी भाषा के पठन-पाठन के उद्देश्य भाषा व्यवहार की विषयरूपी प्रकृति से भी आ जुड़ते हैं। भाषा प्रयोग की स्वाभाविकता से इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए द्वितीय भाषा शिक्षण में सभी भाषा-कौशलों (सुनना-बोलना-पढ़ना- लिखना) के स्तर पर भाषा अधिगम का सुचारु विकास सुनियोजित ढंग से हो सके, इसका नियोजन पाठ्यपुस्तकों में करने की नितांत आवश्यकता है। इस दृष्टि से द्वितीय भाषा-शिक्षण के उद्देश्य, पद्धति और तकनीक को प्रथम भाषा-शिक्षण से भिन्न समझना होगा। इस समझ के साथ ही प्रस्तुत पुस्तक की योजना की गई है।

अन्य भाषा शिक्षण के अद्यतन विचार यह स्पष्ट कर चुके हैं कि द्वितीय भाषा का अध्ययन प्रारंभ करने से पहले शिक्षार्थी भाषा के चारों कौशलों के स्तर पर प्रथम भाषा में पर्याप्त क्षमता अर्जित कर चुका होता है। अतः द्वितीय भाषा शिक्षण में उसके पूर्व अर्जित स्व-भाषा ज्ञान के साथ ही इससे उत्पन्न द्वितीय भाषा अधिगम संबंधी समस्याओं को भी शैक्षिक भाषा (हिंदी) के व्यतिरेक में देखा जाना चाहिए

क्योंकि ये स्थितियां द्वितीय भाषा सीखने में साधक भी हो सकती हैं और बाधक भी। शिक्षार्थी मातृभाषा के साथ ही द्वितीय भाषा के व्याकरण, संरचना और सामाजिक प्रयोग को अपने भीतर निर्मित करता चलता है जिससे द्वितीय भाषा प्रयोग के समय व्याकरण और प्रयोगगत त्रुटियों का उत्पन्न होना स्वाभाविक है जिसे अभ्यास कार्य या त्रुटि-विश्लेषण कराकर सुधारा जा सकता है। इससे शिक्षार्थी के लिए द्वितीय भाषा का अधिगम और बोधन सहज हो जाएगा। आज हिंदीतर भाषा-भाषी शिक्षार्थियों के लिए द्वितीय भाषा हिंदी कोई नई भाषा नहीं रह गई है- सिनेमा, दूरदर्शन, रेडियो, पर्यटन तथा आवागमन के अवसरों के कारण हिंदी एक सार्वदेशिक भाषा (लिंग्वा फ्रेंका) और संपर्क भाषा (लिंक लैंग्वेज) के रूप में विस्तार पा चुकी है।

द्वितीय भाषा हिंदी का शिक्षार्थी हिंदी सीखने से पूर्व अपनी मातृभाषा के कई हजार शब्द, व्याकरणिक संरचनाएं और प्रयोगगत विशेषताओं को सीख चुका होता है। उसकी मातृभाषा का दृढ़ीकरण पांचवीं कक्षा तक हो चुका होता है। मातृभाषा की भाषिक संरचना, शब्दावली तथा व्यावहारिक जीवन में इनके उपयुक्त प्रयोग करने में वह समर्थ होता है। जिन भारतीय भाषाओं की ध्वनि व्यवस्था, व्याकरणिक संरचना तथा प्रयोग-नियम और शब्द भंडार हिंदी के अनुकूल है वहां द्वितीय भाषा हिंदी शिक्षण में सहायता मिलेगी। यह समानता लगभग सभी भारतीय भाषाओं में परिलक्षित होती है। इसलिए द्वितीय भाषा हिंदी शिक्षण में इनका पूरा-पूरा लाभ उठाया जाना चाहिए। साथ ही मातृभाषा और द्वितीय भाषा के स्पष्ट भेदों को देखते हुए हिंदी शिक्षण सामग्री को अधिक व्यावहारिक बनाने की जरूरत भी है जिसे भिन्न-भिन्न प्रकार के अभ्यासों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हिंदीतर भाषा-भाषी शिक्षार्थियों के लिए द्वितीय भाषा हिंदी शिक्षण की यह पाठ्यपुस्तक बनाने की आवश्यकता महसूस की गई। छठी कक्षा के लिए 'अपूर्वा भाग-1' नामक पाठ्यपुस्तक इसी सोच का परिणाम है।

प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में हमें अनेक शिक्षाविदों, अनुभवी अध्यापकों तथा भाषाशास्त्रियों का सहयोग मिला है, इसके लिए मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूं। जिन कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाएं इस पुस्तक में सम्मिलित करने की अनुमति दी है, उनके प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं।

पुस्तक में परिवर्तन, संशोधन और परिष्कार के लिए आपके सुझावों का हम स्वागत करेंगे ताकि पाठ्यपुस्तक का आगामी संस्करण हम अधिक व्यावहारिक एवं उपयोगी बना सकें।

नई दिल्ली
फरवरी 2002

जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

अध्यापक बंधुओं से

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और तदनुसार पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। इसके अनुसार छठी कक्षा में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी सीखने-सिखाने के लिए 'अपूर्वा' पुस्तक माला का निर्माण किया गया है। यह पुस्तक सामान्य रूप से द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की ज़रूरतों को पूरा करती है। इसका उपयोग हिंदी शिक्षण से संबंधित हिंदीतर क्षेत्रों के सभी विद्यालय कर सकते हैं। तथापि यह पुस्तक हिंदीतर क्षेत्रों मे स्थित जवाहर नवोदय विद्यालयों की ज़रूरतों को भी पूरा करती है और विश्वास है कि यह उनके लिए हर दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पाठ्यपुस्तक के पहले दस पाठों मे लिपि शिक्षण के साथ मौखिक अभ्यास हेतु भी पाठ दिए गए है। इनमें वर्ण, मात्रा तथा शब्द निर्माण पर बल दिया गया है और मौखिक अभ्यास में आवश्यकतानुसार सरल वाक्यों में उनका प्रयोग करवाया गया है। ग्यारहवें पाठ से आगे के पाठों में हिंदी संरचना के तीनों कालों– वर्तमान, भूत तथा भविष्य को ध्यान में रखकर छोटे-छोटे पाठ तैयार किए गए है जिनमें क्रमशः हिंदी की उन संरचनाओं का अभ्यास कराया गया है जिनकी शिक्षार्थियों को हिंदी भाषा के व्यवहार के लिए ज़रूरत पड़ती है। इस पाठ्यपुस्तक की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

1. मात्रा और वर्ण शिक्षण का क्रम इनकी बारंबारता (फ्रीक्वेंसी) के आधार पर निर्धारित किया गया है,
2. अधिगम की दृष्टि से कठिन माने जाने वाले संयुक्त वर्णो तथा 'र' के तीनों रूपों को नवें तथा दसवें पाठ में सिखाया गया है,
3. मौखिक अभ्यास में सरल वाक्यों के आधार पर संरचनाएँ सिखाई गई हैं,
4. पुस्तक के पाठों मे वार्तालाप अधिक हैं ताकि बच्चे बलाघात, अनुतान आदि का ध्यान रखते हुए सही ढंग से हिंदी बोल सकें। इसके लिए कुछ अतिरिक्त और विशेष प्रयासों की आवश्यकता पड़ सकती है,
5. पाठ तैयार करते समय पाठों में आए पात्रों की आयु, नाते-रिश्ते और सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर-भेद का भी ध्यान रखा गया है क्योंकि मौखिक व्यवहार में हिंदी बोलते समय इनका ध्यान रखना ज़रूरी होता है। शिक्षार्थी कब, कहाँ, किससे और क्या बोल रहा है, यह जानकर वह हिंदी भाषा का सही प्रयोग कर सके, इसका भी ध्यान रखा गया है। अन्य भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में आज यह माना जा रहा है कि भाषा

के सामाजिक व्यवहार की जानकारी के बिना संप्रेषण स्वाभाविक नहीं हो सकता। वार्तालाप के पाठों में इन बिंदुओं को अभ्यास में भी उभारा गया है,

6. कहानियों में बच्चों की रुचि और उनकी ग्रहण क्षमता को ध्यान में रखा गया है। ये कहानियाँ शिक्षाप्रद भी है और मनोरंजक भी, ताकि शिक्षार्थी इन्हें रुचिपूर्वक आसानी से पढ़ और समझ सकें,

7. कविताओं का चयन विषय-वस्तु को ध्यान में रखकर किया गया है। प्रकृति प्रेम, राष्ट्र भावना और मानवीय संवेदना शिक्षार्थियों में विकसित हो सके, इसका पूरा ध्यान रखा गया है। कविताओं का चयन केवल याद कराने के लिए नहीं बल्कि बच्चों को उनका भाव बोध कराने और उनकी सराहना करने की क्षमता के विकास के लिए भी किया गया है। इसीलिए इन कविताओं के साथ कठिन शब्दों का अर्थ तथा पूरी कविता का भावार्थ दिया गया है,

8. अंतिम दो पाठ (26 तथा 27) रोचक चित्रकथाओं पर आधारित हैं। ये कथाएँ भारतीय लोकजीवन में रची बसी हैं। शिक्षार्थियों में स्वतंत्र मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए चित्रों के माध्यम से उन्हीं भाषिक संरचनाओं में बाँधकर प्रस्तुत किया गया है जिनसे शिक्षार्थी पूर्व पाठों में परिचित हो चुके हैं,

9. आज द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में शिक्षार्थियों की व्यावहारिक दक्षता भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इस बात को ध्यान में रखकर इस संकलन में पत्र लेखन को भी शामिल किया गया है। सामान्य स्थितियों में पत्र लिखना, पत्र लेखन की औपचारिकताओं का निर्वाह करना और लिफ़ाफ़े पर सही ढंग से पता आदि लिखना शिक्षार्थी सीख सकें, यह इस पाठ का उद्देश्य है,

10. सभी पाठों की संरचनाएँ पूर्व निश्चित और अभिक्रमित हैं। जिन पाठों में जो संरचनाएँ शिक्षण बिंदु के रूप में प्रमुखत: निर्धारित की गई है, उन्हें ही पाठ में स्वाभाविक ढंग से उभारने का प्रयत्न किया गया है। इन्हीं पाठों में यह भी प्रयत्न किया गया है कि मूल संरचनाओं के साथ जो अन्य संरचनाएँ स्वाभाविक रूप से आती हैं, उन्हें आने दिया जाए ताकि पाठ का प्रवाह और उसकी रोचकता अप्रभावित रहे,

11. इस पुस्तक में पाठवार अभ्यास शिक्षार्थियों में हिंदी भाषा की व्यावहारिक दक्षता को विकसित करने की दृष्टि से दिए गए हैं। इसमें यह भी ध्यान रखा गया है कि अभ्यास छात्र-छात्राओं के जीवन अनुभवों से जुड़े हुए हों और प्रत्येक अभ्यास में शिक्षार्थी अपने को भी सहभागी समझें,

12. इस सहभागिता को बढ़ाने के लिए अभ्यासों में घर-परिवार, विद्यालय, मित्र, बाजार, खेल

का मैदान, बगीचा आदि को परिवेश के रूप में रखा गया है जिससे कि हिंदी भाषा का सहज स्वाभाविक रूप अपनी व्यावहारिक विशेषताओं के साथ पाठों में सिमट सके। इस प्रकार ये अभ्यास मात्र व्याकरणिक भाषा-अभ्यास न होकर शिक्षार्थी की हिंदी भाषा संबंधी संप्रेषणपरक क्षमता के विकास में भी सहायक होंगे,

13. अभ्यासों में उच्चारण और भाषाबोध पर विशेष बल दिया गया है। अपेक्षाकृत संयुक्ताक्षरीय व्यवस्था वाले शब्दों को उच्चारण के लिए और बोध के स्तर पर प्रयोग होने वाली विशेष शब्दावली और अभिव्यक्तियों को क्रमशः 'पहचानो और बोलो', 'पढ़ो और समझो' तथा 'पढ़ो और बोलो' शीर्षकों के अंतर्गत रखा गया है। हिंदी में संरचनागत रूपांतरण के नियम भी यथास्थान आरेख/चार्ट के रूप में दिए गए है जो एक ही दृष्टि में पाठ की मूल संरचना की सभी परिवर्तनीय संभावनाओं को उजागर कर देते हैं,

14. ग्यारहवें पाठ से आगे भाषिक अभ्यासों पर अधिक बल दिया गया है, इसके दो कारण हैं : पहला यह कि हिंदी संरचनाओं के जो मूल शिक्षण बिंदु पाठ में निर्धारित किए गए है उनका पूरा परिचय शिक्षार्थी को मिल सके; दूसरा यह है कि संरचनाओं में परस्पर परिवर्तन करके शिक्षार्थी हिंदी भाषा का प्रयोग भाषिक दक्षता के साथ कर सके। इस कार्य में किसी भी प्रकार की व्याकरणिक शब्दावली के प्रयोग से बचा गया है,

15. लेखन अभ्यासों में लेखन को महत्त्व दिया गया है। अभ्यास के नमूने देकर, रिक्त स्थान देकर, मिलान करने की स्थितियाँ देकर उन्हें पूरा करने के संकेत दिए गए हैं,

16. इन भाषिक अभ्यासों में शिक्षार्थियों की सहभागिता को सुनिश्चित करने के लिए उनके अनुभवों और उनके आसपास की चीजों को केंद्र में रखकर 'प्रश्नोत्तर', 'हाँ-नही में उत्तर' जैसे शीर्षक रखकर उनकी सहभागिता बढ़ाई गई है ताकि शिक्षार्थी आसानी के साथ अपने घर-परिवार आदि की स्थितियों में भी इन संरचनाओं का व्यावहारिक प्रयोग कर सके,

17. चिंतन योग्यता के विकास के लिए अभ्यास में बोध प्रश्नों को भी महत्त्व दिया गया है, किंतु बोध प्रश्न इस प्रकार के हैं कि शिक्षार्थी उनका उत्तर एक वाक्य में दे सके क्योंकि इनका उद्‌देश्य शिक्षार्थी में पूरे पाठ के बोध को विकसित करना है न कि पाठ के किसी एक बिंदु को,

18. प्रत्येक पाठ के साथ महत्त्वपूर्ण शिक्षण संकेत भी दिए गए हैं जिनकी सहायता से शिक्षक हिंदी भाषा के भाषिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को उभारते हुए शिक्षार्थियों को अतिरिक्त अभ्यास करा सकेंगे। इसके साथ ही इन शिक्षण संकेतों में वह तकनीक भी अपनाने के संकेत दिए गए हैं जिनसे शिक्षार्थी को अधिक से अधिक भाषिक व्यवहार की गतिविधियों में शामिल किया जा सके। शिक्षार्थी के भाषिक व्यवहार के दृढ़ीकरण

के लिए यह जरूरी है कि भाषा की संरचना के साथ-साथ वे अपने स्तरानुकूल जीवन जगत के अनुभवों को जोड़कर परस्पर बातचीत कर सकें और यथासंभव लिखकर अभिव्यक्त कर सकें.

19. उक्त लक्ष्यों की पूर्ति के लिए इन अभ्यासों में अनुकार्य का प्रावधान भी किया गया है ताकि कक्षा के बाहर की अन्यान्य जीवंत परिस्थितियों में हिंदी भाषा का प्रयोग शिक्षार्थी बिना किसी मानसिक दबाव के हंसने-खेलते कर सकें और हिंदी भाषा अधिगम एक स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में शिक्षार्थी को आनंद प्रदान कर सके। इसके लिए पाठ्यपुस्तक में संदर्भ से जुड़े तथा स्थितियों को स्पष्ट करने वाले आकर्षक चित्र अधिकाधिक संख्या में दिए गए हैं.

20. आशा है हिंदी भाषा के समग्र अधिगम और व्यावहारिक दक्षता का विस्तार करने वाली यह पाठ्यपुस्तक हिंदी का द्वितीय भाषा के रूप में उपयोग करने वाले अध्यापक बंधुओं, शिक्षार्थियों और विद्यालयों के लिए आदर्श सिद्ध होगी। अध्यापक बंधुओं से विशेष अनुरोध है कि इस पाठ्यपुस्तक का प्रयोग करते समय उनके समक्ष जो भी कठिनाइयाँ आएं अथवा इस पाठ्यपुस्तक के संबंध में वे कोई अन्य सुझाव देना चाहें तो हम उनका स्वागत करेंगे।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

लालचंद राम डॉ. सुरेश पांडेय डॉ. चंद्रा सदायत

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

पांडुलिपि समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया
   पूर्व प्रोफेसर, लालबहादुर शास्त्री
   प्रशासन अकादमी, मंसूरी (उ. प्र.)
2. प्रो. वी. रा. जगन्नाथन
   निदेशक, मानविकी विद्यापीठ
   इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.
3. प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी
   प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान
   नई दिल्ली.
4. प्रो. दिलीप सिंह
   प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, उच्च शिक्षा शोध संस्थान
   दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़, (कर्नाटक)
5. डॉ. नरेंद्र व्यास
   पूर्व-निदेशक
   केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली.
6. डॉ. हीरालाल बाछोतिया, रीडर एवं पूर्व प्रभारी
   हिंदी प्रकोष्ठ, सा.वि.मा.शि.वि.
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली.
7. प्रो. शारदा भसीन
   पूर्व प्रभारी, केंद्रीय हिंदी संस्थान
   नई दिल्ली
8. डॉ. एच. बालसुब्रमण्यम
   पूर्व सहायक निदेशक,
   केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली.
9. डॉ. पूरन सहगल
   निदेशक, मालव लोक संस्कृति अनुष्ठान
   कृष्णायन/ उषागंज, मनासा (मध्य प्रदेश)
10. डॉ. उमेश वाजपेयी
    उप निदेशक (शैक्षिक)
    जवाहर नवोदय विद्यालय समिति, नई दिल्ली.
11. श्री राजकुमार निगम
    पूर्व सहायक शिक्षा अधिकारी
    केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली.
12. डॉ. रूपेंद्र सिंह
    पी.जी.टी (हिंदी), जवाहर नवोदय विद्यालय
    मेडक (आंध्र प्रदेश)
13. डॉ. एम. भास्कर शर्मा
    टी.जी.टी. (हिंदी), जवाहर नवोदय विद्यालय,
    मामनूर, वारंगल (आंध्र प्रदेश)
14. डॉ. बी. एम. शिवशंकर मूर्ति
    टी.जी.टी. (हिंदी), जवाहर नवोदय विद्यालय
    क्यारकोप्पा रोड, धारवाड़ (कर्नाटक)
15. श्री पी. जयरंगप्पा
    जवाहर नवोदय विद्यालय
    डोडा बल्लापुरा, बंगलौर (कर्नाटक)
16. श्रीमती सुलेखा बेगम
    पी.जी.टी. (हिंदी), जवाहर नवोदय विद्यालय,
    मलंपुझा, पलकड़ जिला, (केरल)

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

विषय-सूची

		पृष्ठ
आमुख		
अध्यापक बंधुओं से		
पहला पाठ	कलम	1
दूसरा पाठ	जहाज़	7
तीसरा पाठ	खरगोश	12
चौथा पाठ	किताब	17
पाँचवाँ पाठ	झंडा	22
छठा पाठ	धनुष	27
सातवाँ पाठ	ठेला	32
आठवाँ पाठ	पौधा	37
नवाँ पाठ	ऋषि	42
दसवाँ पाठ	ट्रैक्टर	48
❑	*वर्णमाला*	55
❑	*बारहखड़ी*	56
❑	*संयुक्त व्यंजन*	58
ग्यारहवाँ पाठ	हमारा घर	59
बारहवाँ पाठ	कपड़े की दुकान	65
तेरहवाँ पाठ	तितली	70
चौदहवाँ पाठ	बातचीत	72
पंद्रहवाँ पाठ	पेड़	78

सोलहवाँ पाठ	सरकस	80
सत्रहवाँ पाठ	मदारी का तमाशा	86
अठारहवाँ पाठ	माँ	91
उन्नीसवाँ पाठ	ईश्वरचंद्र विद्यासागर	93
बीसवाँ पाठ	तोड़ो नही जोड़ो	99
इक्कीसवाँ पाठ	बादल पानी बरसाता है	105
बाईसवाँ पाठ	पत्र	108
तेईसवाँ पाठ	शेर और लोमड़ी	113
चौबीसवाँ पाठ	बढ़े चलो	118
पच्चीसवाँ पाठ	यात्रा की तैयारी	120
छब्बीसवाँ पाठ	गायक गधा और चतुर सियार (चित्रकथा-1)	124
सत्ताईसवाँ पाठ	अब पछताने से क्या होगा? (चित्रकथा-2)	129

पहला पाठ

कलम

शिक्षण बिंदु

क ल म न र अ आ ा
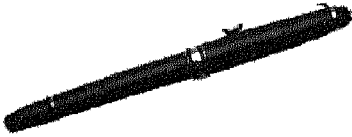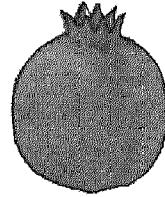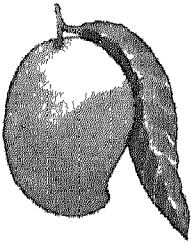
शिक्षण संकेत

* श्यामपट्ट/ फ्लैश कार्ड पर **कलम** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए विद्यार्थियों से बार-बार बुलवाएँ।
* इसी तरह **अनार, आम** और **मकान** के चित्र दिखाएँ, वर्णों की पहचान करवाएँ और बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

क   ल   म   न   र   अ

का   ला   मा   ना   रा   आ

3. सुनो और पढ़ो

कल   कमल   लाल   काला   नाम

मकान   राम   रमा   कमला   कमरा

4. लिखो

क   म   ल   न   र   अ   आ

क   का   म   मा   न   ना   ला

शिक्षण संकेत

* **पहचानो और बोलो** के अंतर्गत आए वर्णों की पहचान करवाएँ और विद्यार्थियों से अलग- अलग और फिर एक साथ बुलवाएँ। इसके लिए अध्यापक वर्णों के फ्लैश कार्ड का प्रयोग कर सकते हैं।
* अध्यापक **खेल विधि** का प्रयोग कर सकते है, जहाँ हर विद्यार्थी के पास एक-एक वर्ण का कार्ड होगा और वे क्रम में खड़े होकर शब्द बनाएँगे।
* **सुनो और पढ़ो** के अंतर्गत श्यामपट्ट/फ्लैश कार्ड पर लिखे शब्दों को दिखाते हुए पहले एक साथ फिर अलग-अलग विद्यार्थियों से बुलवाएँ।
* **लिखो** के अंतर्गत दिए गए वर्णों को सही शब्दक्रम में लिखना सिखाएं तथा विद्यार्थियों को अपनी नोटबुक में लिखने के लिए कहें।

5. इनके नाम लिखो
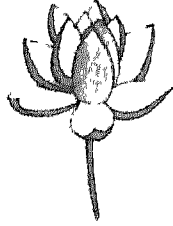
ना...... कम..... का......

योग्यता विस्तार

* **शिक्षण बिंदु** वाले सभी वर्णों तथा मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी बारी से उनकी पहचान करवाएँ और बुलवाएँ।
* विद्यार्थियों **क ल म न र अ आ ा** लिपि संकेतों की सहायता से अन्य शब्द बनाकर बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाएँ।

शिक्षण संकेत

* सोपान पाँच में दिए गए चित्रों को पहचानकर विद्यार्थी उनका नाम बोलें और छूटा हुआ वर्ण खाली जगह में लिखें । विद्यार्थियों की गति के अनुसार अध्यापक कुछ और शब्द भी अभ्यास के लिए दे सकते हैं।

मौखिक पाठ

शिक्षण बिंदु

यह क्या है?
यह आम है।

1. अध्यापक चित्र दिखाते हुए वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी सुनेंगे

यह कलम है।
यह आम है।
यह अनार है।...आदि।

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और कक्षा के सभी विद्यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

अध्यापक : यह कलम है।
विद्यार्थी : यह कलम है।
अध्यापक : यह आम है।
विद्यार्थी : यह आम है।
अध्यापक : यह अनार है।
विद्यार्थी : यह अनार है।... आदि।

3. इसी प्रकार अध्यापक कुछ अन्य वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए वाक्यों का अभ्यास करवाएँ, जैसे

यह नाक है।
यह हाथ है।
यह कान है।.... आदि।

4. अब अध्यापक चार-पाँच विद्यार्थियों से विभिन्न वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए इसी तरह वाक्य बुलवाएँ। विद्यार्थी भी वस्तुओं को छूते हुए/उनकी तरफ संकेत करते हुए वाक्य बोलें, जैसे

यह नाक है। (उँगली से दिखाते हुए)

यह कमल है। (चित्र द्वारा)

यह कलम है। (चित्र द्वारा)...आदि।

प्रश्नोत्तर अभ्यास

5. वस्तु-चित्रों को दिखाते हुए अध्यापक नमूने के अनुसार प्रश्न पूछें और विद्यार्थी उत्तर दें

नमूना

अध्यापक : यह क्या है ?

⟹ विद्यार्थी : यह कलम है।

अध्यापक : यह क्या है? विद्यार्थी : यह है।

अध्यापक : यह क्या है? विद्यार्थी : यह है।

अध्यापक : यह क्या है? विद्यार्थी : यह है।

शिक्षण संकेत

* विद्यार्थियों ने जिन शब्दों को बोलना और लिखना सीख लिया है, अध्यापक उनका प्रयोग करते हुए **यह. है** की संरचना में वाक्य बोलना सिखाएँ।
* यह अभ्यास मौखिक ढंग से ही करवाने के लिए है। इसके बाद इसका पठन-अभ्यास भी किया जा सकता है।

योग्यता विस्तार

* विद्‌यार्थी इसी तरह कक्षा की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए आपस में प्रश्नोत्तर करें।
* अध्यापक विद्‌यार्थियों को कक्षा से बाहर की जीवंत/यथार्थ स्थितियों में इस प्रकार के संवाद के लिए प्रेरित करें, जैसे :
    1. प्रत्यक्ष रूप से खेल के मैदान में/ बाग-बगीचे की परिस्थितियों में आदि।
    2. दुकान का चित्र और जानवरों का चार्ट भी अभ्यास के लिए कक्षा में प्रयोग किए जा सकते हैं।

शिक्षण संकेत

* **अन्य शब्दों का प्रयोग :** इस अभ्यास को सहज बनाने के लिए अध्यापक को कक्षा में उपलब्ध प्रत्यक्ष वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए। अध्यापक पांच-छह शब्दों का प्रयोग अवश्य करें, जैसे **घड़ी, मेज, कुर्सी, दरवाजा, पंखा** आदि। और अधिक अभ्यास कराने के लिए अध्यापक अन्य परिचित शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं, जैसे : **ट्यूबलाइट, बल्ब, डस्टर, चाक** आदि। इन शब्दों के लिखित रूप से विद्‌यार्थी अपरिचित है इसलिए इनका लिखित रूप विद्‌यार्थियों के सामने न लाएँ।
* इसी संदर्भ में शरीर के अंगों के नामों का भी अभ्यास कराएँ, जैसे : **नाक, कान, हाथ, आँख, पैर** आदि। **विद्‌यार्थियों की अभिव्यक्ति का निरीक्षण:** जब विद्‌यार्थी बोलें, तब उनके उच्चारण और मातृभाषा प्रभावित शब्द प्रयोग आदि के संदर्भ में अध्यापक उनकी गलतियों पर उन्हें बार-बार न टोकें। उनकी सहज अभिव्यक्ति पर उनकी प्रशंसा करते हुए अपनी ओर से उच्चारण आदि का मानक रूप स्वयं बार-बार बोलते रहें।

दूसरा पाठ

जहाज़

शिक्षण बिंदु

| घ ड़ व स द ज ज़ ई ी |
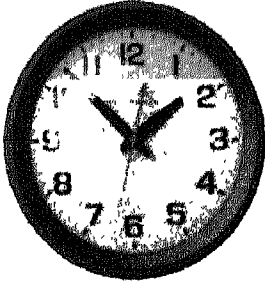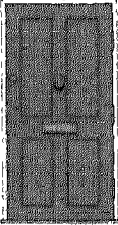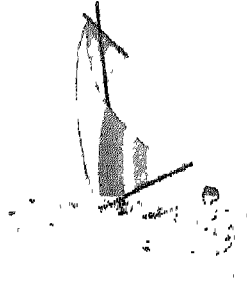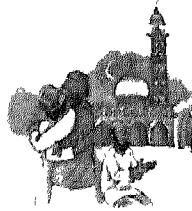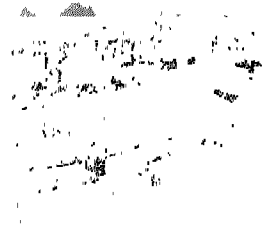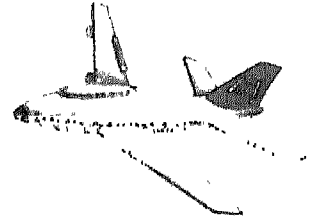
शिक्षण संकेत

* श्यामपट्ट/फ्लैश कार्ड पर **घड़ी** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियों से बार-बार बुलवाएँ।
* इसी तरह **नाव, सड़क, दरवाज़ा** और **ईद** में आए वर्णों की पहचान करवाएँ और बार–बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

स	ड़	घ	र	द	व	ई	मा	ल	ज	ज़
व	वा	वी	स	सी	र	रा	री	दी	जा	ज़ा
क	का	की	ल	ला	ली	न	ना	नी	जी	ज़ी

3. सुनो और पढ़ो

सन	साल	साड़ी	रसम	सारस	सड़क
जल	ज़ाल	ज़मीन	आज	अनाज	आदमी
ईसा	दाम	दान	दया	दाना	दवाई
वन	वानर	वीर	नाव	ज़रा	घर
घी	घड़ी	लड़का	लड़की	नीम	नीर
कील	खील	दीवार	दीवाली	आम	माला

4. लिखो

व	द	स	ज	घ	ड़	ई	ज़
दी	सी	जी	घी	नी	की	भी	ज़ी

[illegible]

* **पहचानो और बोलो** के अंतर्गत आए वर्णों की पहचान करवाएं और सभी विद्यार्थियों से पहले अलग अलग और फिर एक साथ बुलवाएं। इसके लिए वर्णों के फ्लेश कार्ड का प्रयोग कर सकते हैं।
* अध्यापक **खेल विधि** का प्रयोग कर सकते है जहाँ हर विद्यार्थी के पास एक-एक वर्ण का कार्ड होगा और वे क्रम में खड़े होकर शब्द बनाएंगे।
* **सुनो और पढ़ो** के अंतर्गत फ्लेश कार्डों/श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों को दिखाते हुए पहले अलग-अलग फिर एक साथ विद्यार्थियों से बुलवाएं। इसके बाद कुछ विद्यार्थियों से शब्दों का वाचन भी करवाएं।
* **लिखो** के अंतर्गत अध्यापक दिए गए वर्णों को सही शब्दक्रम में लिखना सिखाएं और विद्यार्थियों से अपनी नोटबुक में लिखने के लिए कहें।

5. रेखा खींच कर शब्द को सही चित्र से मिलाओ

योग्यता विस्तार

* **शिक्षण बिंदु** वाले सभी वर्णों तथा मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से इनकी पहचान करवाएँ। मात्राओं से बनने वाले शब्दों का अभ्यास भी करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **घ ड़ स ज द व ई ी लिपि संकेतों** की सहायता से अन्य शब्द बनवाकर बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से इन्हें बोर्ड पर लिखवाएँ, जैसे : **वज़न, वानर, दाना, दवाई** आदि।

मौखिक पाठ **शिक्षण बिंदु**

यह क्या है?
यह घड़ी है।

1. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी सुनेंगे

अध्यापक : (समीप की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए)
यह क्या है ?
यह कलम है।
यह लड़का है।...आदि।

अध्यापक : (दूर की वस्तु की ओर संकेत करते हुए)
वह क्या है ?
वह घड़ी है।...आदि।

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और कक्षा के सभी विद्यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

अध्यापक : यह दीवार है। विद्यार्थी : यह दीवार है।
अध्यापक : वह घड़ी है। विद्यार्थी : वह घड़ी है।
अध्यापक : यह अमर है। विद्यार्थी : यह अमर है।
अध्यापक : वह रमा है। विद्यार्थी : वह रमा है।...आदि।

3. इसी प्रकार अध्यापक कक्षा में पास की और दूर की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए यह और वह का अभ्यास करवाएँ, जैसे

यह मेज़ है।
वह खिड़की है।
यह चाक है।..... आदि।

---

* वस्तु के पास खड़े होकर **यह.... है** का प्रयोग करें और उस वस्तु से दूर होकर उसी वस्तु की ओर संकेत करते हुए **वह... है** की संरचना का अभ्यास कराएँ। इस अभ्यास में विद्यार्थियों को अधिकाधिक सक्रियतापूर्वक शामिल करें।

4. प्रश्नोत्तर अभ्यास

पास की तथा दूर की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए अध्यापक नमूने के अनुसार प्रश्न पूछें और विद्यार्थी उत्तर दें

नमूना

अध्यापक : यह क्या है?
विद्यार्थी : यह घड़ी है।
अध्यापक : वह क्या है?
विद्यार्थी : वह दरवाजा है।

अध्यापक : यह क्या है? विद्यार्थी : यह घड़ी है।
अध्यापक : वह क्या है? विद्यार्थी : वह सड़क है।
अध्यापक : यह क्या है? विद्यार्थी : यह कुरसी है।
अध्यापक : वह क्या है? विद्यार्थी : वह दीवार है.......आदि।

योग्यता विस्तार

* विद्यार्थी स्वयं भी इसी तरह कक्षा की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए आपस में प्रश्नोत्तर करें।
* अध्यापक विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर की जीवंत/यथार्थ स्थितियों में संवाद के लिए प्रेरित करें, जैसे :
  1. प्रत्यक्ष रूप से खेल के मैदान में तथा बाग-बगीचे के संदर्भ में बातचीत।
  2. बस स्टैंड की तस्वीर और पक्षियों के चार्ट भी प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

शिक्षण संकेत

* **अन्य शब्दों का प्रयोग :** इस अभ्यास को सहज बनाने के लिए अध्यापकों को कक्षा में प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध वस्तुओं के बारे में बातचीत करना चाहिए। अध्यापक पाँच-छह शब्दो का प्रयोग अवश्य करें, जैसे : **घड़ी, मेज़, खिड़की** आदि। विस्तृत व्यवहार के लिए विद्यार्थी अन्य परिचित शब्दों का भी प्रयोग कर सकते है। जिन शब्दों के लिखित रूप से विद्यार्थी अभी परिचित नहीं हैं, उनका लिखित रूप विद्यार्थियों के सामने न लाएं।
* **विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का निरीक्षण :** अध्यापक इसका अभ्यास पिछले पाठ में दिए गए शिक्षण संकेतों के अनुसार करवाएँ।

तीसरा पाठ

खरगोश

शिक्षण बिंदु

[illegible]

1. **गाय** **पपीता**

गा य **प पी ता**

ओखली **खरगोश**

ओ ख ली **ख र गो श**

शिक्षण संकेत

* श्यामपट्ट पर **गाय** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियो से बुलवाएँ।
* इसी तरह **पपीता, ओखली, खरगोश** में आए वर्णों एवं मात्राओं की पहचान करवाएँ और बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

ग	य	प	त	ओ	ख	श
ग	गा	गी	गो	प	पा	पी
त	ता	ती	तो	श	शी	शो

3. सुनो और पढ़ो

गला	गाल	याद	योग	नया	कोयल	कोयला	पलक
पास	पीला	पालक	पालकी	पीपल	आय	माला	ताला
तोता	तीन	ताई	तीसरा	जोकर	आओ	जाओ	आदत
खाना	कोई	दोसा	मोर	सोना	तोता	शोर	रोटी
समोसा	शाल	शाखा	शीशा	कलश	राशन	मशाल	मसाला

4. लिखो

य	प	त	ओ	ख	श	स	व	द
गो	यो	पो	तो	खा	शा	का	की	को
गला	गाल	कोयल	कोयला	पालक	पालकी	ओस	गमला	
खान	खाद	शाखा	शीशा	तना	तीन	नानी		

शिक्षण संकेत

* **पहचानो और बोलो** के अंतर्गत आए वर्णों की पहचान करवाएँ और विद्यार्थियों से अलग-अलग फिर एक साथ बुलवाएँ। इसके लिए फ्लैश कार्डों का प्रयोग कर सकते हैं।
* अध्यापक **खेल विधि** का प्रयोग करते हुए पिछले पाठों के अनुसार फ्लैश कार्डों की सहायता से शब्द बनाना सिखाएँ।
* **सुनो और पढ़ो** तथा **लिखो** के अंतर्गत एक समान लगने वाले शब्दों के उच्चारण पर ध्यान दें तथा उनके अंतर को स्पष्ट करें, जैसे : **गला-गाल, कोयल-कोयला, पालक-पालकी** आदि।

5. रेखा खींचकर शब्द को सही चित्र से मिलाओ

कोयल

समोसा

दोसा

पालकी
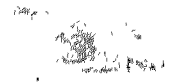
गमला
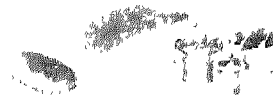
योग्यता विस्तार

* शिक्षण बिंदु वाले सभी वर्णों तथा मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से पहचान करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **ग, ख, य, प, त, ओ, श, ो** लिपि संकेतों की सहायता से अन्य शब्द बनवाकर बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाएँ, जैसे: **गाना, पवन** आदि।

मौखिक पाठ | **शिक्षण बिंदु**

1. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी सुनेंगे

अध्यापक : (समीप के व्यक्ति के लिए)

1. यह कौन है?
   यह गोपाल है।
2. यह कौन है?
   यह रेखा है।... आदि।

अध्यापक : (दूर के व्यक्ति के लिए)

1. वह कौन है?
   वह जीनी है।
2. वह कौन है?
   वह मोहन है।... आदि।

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और कक्षा के सभी विद्यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

अध्यापक	:	यह कौन है?	विद्यार्थी	:	यह कौन है?
अध्यापक	:	यह रमा है।	विद्यार्थी	:	यह रमा है।
अध्यापक	:	वह कौन है?	विद्यार्थी	:	वह कौन है?
अध्यापक	:	वह लता है।	विद्यार्थी	:	वह लता है।...आदि।

शिक्षण संकेत

* कक्षा में समीप के विद्यार्थी के लिए **यह कौन है** तथा दूर के विद्यार्थी के लिए **वह कौन है** की संरचना का जीवंत/यथार्थ परिस्थितियों में अभ्यास करवाएँ।

3. प्रश्नोत्तर अभ्यास

अध्यापक अलग-अलग छात्र-छात्राओं की ओर संकेत करते हुए प्रश्न पूछें और विद्यार्थी उत्तर दें

अध्यापक : यह कौन है? विद्यार्थी : यह जीनी है।

अध्यापक : वह कौन है? विद्यार्थी : वह अलीम है।

अध्यापक : यह कौन है? विद्यार्थी : यह आशा है।

अध्यापक : वह कौन है? विद्यार्थी : वह लता है।... आदि।

योग्यता विस्तार

* विद्यार्थी इसी तरह कक्षा के दूसरे विद्यार्थियों की ओर संकेत करते हुए आपस में **यह कौन है, वह कौन है** की संरचना का अभ्यास करें।
* अध्यापक विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर की जीवंत/यथार्थ स्थितियों में संवाद के लिए प्रेरित करें, जैसे: विद्यालय के गेट पर या घर के बाहर किसी अपरिचित व्यक्ति से मिलने पर- आप कौन हैं? आप का क्या नाम है? आपको किससे मिलना है? आदि।

शिक्षण संकेत

* **अन्य शब्दों का प्रयोग :** अध्यापक सोपान 3 के अंतर्गत विद्यार्थियों के नामों का अवश्य प्रयोग करें। और अधिक अभ्यास कराने के लिए अध्यापक अन्य परिचित नामों का भी प्रयोग कर सकते हैं कितु इन शब्दों के लिखित रूप से विद्यार्थी परिचित नहीं है इसलिए इनका लिखित रूप विद्यार्थियों के सामने न लाएं।
* **विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का निरीक्षण :** अध्यापक विद्यार्थियों के शब्द/वाक्य उच्चारण में अनुतान, बलाघात आदि पर अवश्य ध्यान दें किंतु बार-बार बोलकर कक्षा तथा कक्षा से बाहर के रोचक प्रसंगों में इनका अभ्यास करवाएँ।

चौथा पाठ

किताब

शिक्षण बिंदु

ट इ ि ब ह थ च
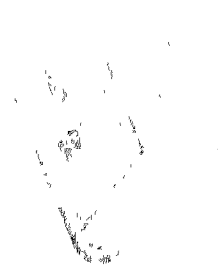
1. **टमाटर** **इमली** **किताब**

ट मा ट र **इ म ली** **कि ता ब**

हाथ **चाबी** **हिरन**

हा थ **चा बी** **हि र न**

---

* श्यामपट्ट पर **टमाटर** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियों से बुलवाएँ। इसी तरह **इमली**, **किताब**, **हाथ**, **चाबी** और **हिरन** में आए वर्णों एवं मात्राओं का परिचय कराते हुए शब्दों को बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

ट इ त व ह थ च स प म

ट टा टि टी टो च चा चि ची चो

थ था थि थी थो ब बा बि बी बो

3. सुनो और पढ़ो

टब टाट टीका टोपी बटन कलम हरा हार इनाम

दिन दीन किला कील दिशा खिड़की सिलाई मलाई शादी

सादी बस बाल बाघ बीस बोली बिजली बगीचा महीना

हल हाल हीरा हाथ हाथी हिरन शहर बहन पहाड़

थन थाली मोड़ जोड़ साथी सारथी सिपाही गिलहरी चना

चाक चाट चटाई चरखा चारपाई

4. लिखो

ट इ द ब ह थ च ल ज

त ता ति ती तो था थी पी ख

टीका टोपी इनाम टिकट खिड़की खिचड़ी मलाई

बाघ बगीचा हार हिरन गिलहरी चारपाई लड़ाई

शिक्षण संकेत

* **पहचानो और बोलो** के अंतर्गत आए वर्णों और मात्राओं की पहचान करवाएँ और एक साथ बुलवाएँ।
* **सुनो और पढ़ो** के अंतर्गत एक समान लगने वाले शब्दों के उच्चारण पर विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट करते हुए बार-बार बोलें तथा उनके अंतर को स्वयं बोलकर तथा विद्यार्थियों से बुलवाकर स्पष्ट करें, जैसे: **हरा-हार, हल-हाल** आदि।
* **लिखो** के अंतर्गत पहले बिना मात्रा के वर्णों/शब्दों को पहले अन्विति के साथ फिर बिना अन्विति के साथ लिखवाएं और बार-बार उच्चारण करवाएं।

5. इनके नाम लिखो

------------ ------------ ------------ ------------
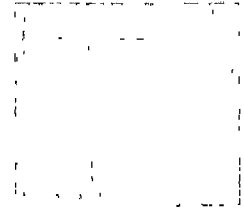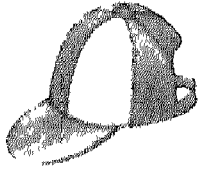
योग्यता विस्तार

* शिक्षण बिंदु वाले सभी वर्णों तथा मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से उनकी पहचान करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **ट, इ, ब, ह, थ, च, ि** लिपि संकेतों की सहायता से अन्य शब्द बनवाकर बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से बोर्ड पर भी लिखवाएँ, जैसे: **टिकट, टब** आदि।

मौखिक पाठ

शिक्षण बिंदु

क्या			
जी हाँ	जी नहीं	नहीं	भी

1. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी सुनेंगे

क्या यह चाबी है? (चाबी दिखाकर)

जी हाँ, यह चाबी है।

जी नहीं, यह चाबी नहीं है। (कलम दिखाते हुए)... आदि।

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और कक्षा के सभी विद्यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

अध्यापक : क्या यह घड़ी है? विद्यार्थी : क्या यह घड़ी है?

अध्यापक : यह घड़ी है? विद्यार्थी : यह घड़ी है ?

अध्यापक : जी हाँ, यह घड़ी है। (घड़ी दिखाकर)

विद्यार्थी : जी हाँ, यह घड़ी है।

अध्यापक : जी नहीं, यह घड़ी नहीं है। (कलम दिखाते हुए)

विद्यार्थी : जी नहीं, यह घड़ी नहीं है।....आदि।

3. इसी प्रकार अध्यापक कक्षा की कुछ अन्य वस्तुओं खिड़की, दरवाज़ा, किताब, दीवार आदि की ओर संकेत करते हुए वाक्यों में 'जी हाँ', 'जी नहीं', का अभ्यास जारी रखें, जैसे

क्या वह (दरवाज़ा) है? जी हाँ, वह दरवाज़ा है।

जी नहीं, वह दरवाज़ा नहीं है। वह खिड़की है।.......आदि।

शिक्षण संकेत

* विद्यार्थियों ने जिन शब्दों का बोलना और लिखना सीख लिया है उनका प्रयोग करते हुए **क्या, जी हाँ, जी नहीं, नहीं** का प्रयोग करते हुए वाक्य बोलना सिखाएँ।
* 'क्या' प्रश्न वाक्यों में प्रश्न चिह्न हटाते हुए केवल अनुतान से प्रश्न वाक्य करना भी सिखाएँ।

4. प्रश्नोत्तर अभ्यास

अध्यापक अलग-अलग वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए प्रश्न पूछें और विद्यार्थी उत्तर दें

अध्यापक : क्या यह हाथ है?

विद्यार्थी : जी हाँ, यह हाथ है।

अध्यापक : क्या यह भी हाथ है? (दूसरा हाथ दिखाकर)

विद्यार्थी : जी हाँ, यह भी हाथ है।

अध्यापक : क्या वह दरवाजा है? (खिड़की की ओर संकेत करते हुए)

विद्यार्थी : जी नहीं, वह दरवाजा नहीं है। वह खिड़की है।... आदि।

योग्यता विस्तार

* विद्यार्थी इसी तरह कक्षा की वस्तुओं/विद्यार्थियों के नामों की ओर संकेत करते हुए आपस में प्रश्नोत्तर करें।
* अध्यापक विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर की जीवंत/यथार्थ स्थितियों में संवाद के लिए प्रेरित करें।
    1. प्रत्यक्ष रूप से खेल के मैदान में/बाजार की परिस्थितियों में।
    2. खिलौनों की दुकान की तस्वीर और फलों के चार्ट भी अभ्यास के लिए प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

शिक्षण संकेत

* सोपान 4 के अभ्यास के लिए अध्यापक को कक्षा में उपलब्ध वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए। अध्यापक 5-6 अन्य ज्ञात शब्दों का प्रयोग अवश्य करें, जैसे, **चाबी, बटन, खिड़की** आदि। और अधिक अभ्यास कराने के लिए अध्यापक अन्य परिचित शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं, जैसे : **बोर्ड, वाच, रबड़, फ़ोटो...**आदि। इन शब्दों के लिखित रूप से विद्यार्थी अभी परिचित नहीं हैं इसलिए इनका लिखित रूप विद्यार्थियों के सामने न लाएं।
* **विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का निरीक्षण** पिछले पाठों के शिक्षण संकेतों के अनुसार करें।

पाँचवाँ पाठ

झंडा

शिक्षण बिंदु

फ फ़ ऐ ै ड झ ं ँ

1. **फल** **आँख** **ऐनक**

फ ल **आँ ख** **ऐ न क**

थैला **डाकिया** **झंडा**

थै ला **डा कि या** **झं डा**

शिक्षण संकेत
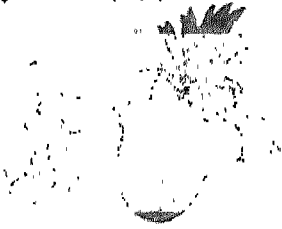
* श्यामपट्ट/फ्लेश कार्ड पर **फल** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियों से बुलवाएँ।
* इसी तरह **आँख, ऐनक, थैला, डाकिया** और **झंडा** में आए वर्णों की पहचान करवाएँ और बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

फ ऐ ड झ ड़ ए स क इ द म प

फ फा फि फी फो फै ड डा डि डी डो डै

3. सुनो और पढ़ो

फ़न फिर फ़ीस सफाई फ़ाटक फावड़ा फ़ोटो

माँ चाँद गाँव यहाँ वहाँ है हैं

ऐसा पैसा बेल बैल सैर शेर सैलाब

अंडा हँस हंस बंदर शंख कंघा हिंदी

झटपट झाड़ी झोला झाँकी झरना झोपड़ी

4. लिखो

फ ऐ ड झ र स म च

फ़न सफाई माँ हँस हंस बंदर झरना झोला

समान आसमान पीला पपीता नीला पैसा बैल जैसा

शिक्षण संकेत

* **पहचानो और बोलो** के अंतर्गत आए वर्णों और मात्राओं की पहचान करवाएँ और एक साथ दुहरवाएँ।
* **सुनो और पढ़ो** के अंतर्गत एक समान लगने वाले शब्दों के उच्चारण पर विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट करते हुए बार-बार बोलें तथा उनके अंतर को स्वयं बोलकर तथा विद्यार्थियों से बुलवाकर स्पष्ट करें।
* **लिखो** के अंतर्गत बिना मात्रा के वर्णों/शब्दों को पहले अन्विति के साथ फिर बिना अन्विति के साथ लिखवाएँ और बार-बार उच्चारण करवाएँ।
* विद्यार्थियों का ध्यान **ऐ** और उसकी मात्रा ै के रूप में आए अंतर की ओर विशेष रूप से आकृष्ट करें।

5. रेखा खींचकर शब्द को सही चित्र से मिलाओ
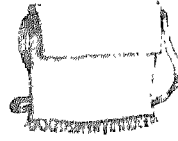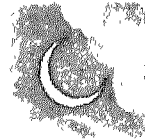
6. योग्यता विस्तार

* शिक्षण बिंदु वाले सभी वर्णों तथा मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से पहचान करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **फ ँ ऐ ै ड झ म ल स न त ी ़** लिपिसंकेतों की सहायता से अन्य शब्द बनाकर बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाएँ, जैसे: **फल, एक-अनेक, ऐसा-वैसा** आदि।
* नुक्ते वाले शब्दों के उदाहरण देकर उनके अंतर को स्पष्ट करें, जैसे : **फल-फ़ोटो** आदि।
* अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग के अंतर को स्पष्ट करें, जैसे : **हंस-हँस** आदि।
* रंगों की जानकारी आस-पास की वस्तुओं के आधार पर कराएँ, जैसे :
  1. आपकी शर्ट/पैंट का रंग क्या है?
  2. आपने कौन से रंग की स्कर्ट पहनी है?
  3. अपने रिबन, हेयर बैंड, बैग, जूते, ज़ुराब आदि के रंग के बारे में एक दूसरे से चर्चा करें।

मौखिक पाठ

शिक्षण बिन्दु

तोता हरा है।	कोयल काली है।
वह रमा का घर है।	यह श्याम की घड़ी है।

1. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी सुनेंगे

1. यह बड़ा मकान है।
2. वह रमा का घर है।
3. रमा का घर नया है।
4. यह गोपाल का कमरा है।
5. गोपाल का कमरा बड़ा है।
6. यह लाल टमाटर है।
7. यह लड़का है, लड़का लंबा है।
8. पपीता पीला है ओर आसमान नीला है।
9. तोता हरा है और कोयल काली है।... आदि।

2. अध्यापक पहला वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी दोहराएँगे। फिर अध्यापक केवल मोटे टाइप वाले शब्दों को बोलें और विद्यार्थी उनकी मदद से वाक्य पूरे करें

अध्यापक : रमा का घर नया है। विद्यार्थी : रमा का घर नया है।
अध्यापक : गोपाल का **कमरा**........ विद्यार्थी : ....
अध्यापक : **कोयल** .... विद्यार्थी : ....
अध्यापक : **पपीता** .... विद्यार्थी : ....
अध्यापक : **आसमान** विद्यार्थी : ....

---

*आशय संकेत

* 'तोता **हरा** है' विशेषण संरचना के अनुसार यह अभ्यास करवाएँ।

3. अध्यापक पहला वाक्य पूरा बोलेंगे और दूसरा वाक्य आधा बोलकर रुकेंगे, विद्यार्थी वाक्य पूरा करें

> **नमूना**
> तोता **हरा** है, कोयल **काली** है।

1. श्यामपट्ट काला है, आसमान............................।
2. अनार लाल है, आम ....।
3. संतरा हरा है, पपीता ....।

4. प्रश्नोत्तर अभ्यास

वस्तुओं/चित्रों को दिखाते हुए अध्यापक नमूने के अनुसार प्रश्न पूछें और विद्यार्थी सही उत्तर दें

> **नमूना**
> अध्यापक : तोता हरा है? विद्यार्थी : जी हाँ, तोता हरा है।

अध्यापक	:	आसमान नीला है?	विद्यार्थी	:	....
अध्यापक	:	पपीता काला है?	विद्यार्थी	:	....
अध्यापक	:	अनार हरा है?	विद्यार्थी	:	....
अध्यापक	:	कोयल काली है?	विद्यार्थी	:	....

योग्यता विस्तार

* विद्यार्थी आपस में इसी तरह कक्षा की वस्तुओं और विद्यार्थियों की ओर संकेत करते हुए उनके साथ विपरीत रंगों को जोड़कर प्रश्न पूछें।
* अध्यापक विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर की जीवंत/यथार्थ स्थितियों में संवाद के लिए प्रेरित करें जिनमें विभिन्न रंगों के नाम आ सकें।

शिक्षण संकेत

* **अन्य शब्दों का प्रयोग :** सोपान 3 और 4 के अभ्यास पिछले पाठ में दिए गए शिक्षण संकेतो के अनुसार कराएं किंतु प्रश्न आदि में रंगों के नाम **लाल, हरा, पीला, नीला, काला, सफेद** आदि का प्रयोग अवश्य करें।

छठा पाठ

धनुष

शिक्षण बिंदु

उ, ध, ग, ऊ, भ

1. **उँगली** **धनुष**

उँ ग ली **ध नु ष**

ऊन **भालू**

ऊ न **भा लू**

शिक्षण संकेत
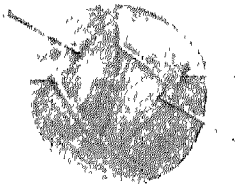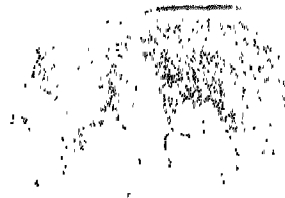
* श्यामपट्ट/फ्लेश कार्ड पर **भालू** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियों से बुलवाएं।
* इसी तरह **धनुष, ऊन** और **उँगली** शब्दों में आए वर्णों की पहचान करवाएँ और बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

उ ऊ ध भ ष स श ड़

ध धा धि धी धु धू धे धो

3. सुनो और पढ़ो

उस	उसका	उपकार	उपचार	धन	धान	धीमा
धोखा	आधा	धनिया	पुल	कुल	बुनाई	दुकान
साबुन	बुलबुल	बुराई	नुमाइश	गुलाब	अब	ऊँट
ऊपर	ऊँचाई	उधार	असर	दूसरा	मज़दूर	लू
फूल	चूहा	धूप	जूता	आलू	चाकू	सुना
सूना	भात	भाषा	भाई	भोजन	भीतर	सभा
लाभ	शोभा	भारत				

4. लिखो

उ ऊ ध भ ष प ऐ

उसका धान पुल ऊँट आलू चाकू

शिक्षण संकेत

* **सुनो और पढ़ो** के अंतर्गत एक समान लगने वाले शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दिलाते हुए उनके अंतर को स्पष्ट कर, जैसे : **उपकार-उपचार, धन-धान, फल-फूल, सुना-सूना, भला-भाल-भाला-भालू, चाक-चाकू, पूल-कुल, बुराई-बुनाई-बुआई** आदि।

5. रेखा खींचकर शब्द को सही चित्र से मिलाओ
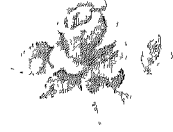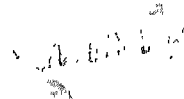
योग्यता विस्तार

* शिक्षण बिंदु वाले सभी वर्णों और मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से पहचान करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **ध ष भ उ ऊ ु ू** लिपि संकेतों की सहायता से अन्य शब्द बनाकर बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाएँ, जैसे : **धुन, धूल, भाला, भालू, विषय, विषम, विशेष ...** आदि।

शिक्षण संकेत

* सोपान 5 का अभ्यास पिछले पाठों में दिए गए शिक्षण संकेतों के अनुसार करवाएँ।

मौखिक पाठ

शिक्षण बिंदु

मेरा भाई	मेरी बहन
आपका भाई	आपकी बहन
रमा का घर	सलमा की लड़की
मोहन का कमरा	मोहन की घड़ी

1. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी सुनेंगे

1. यह सतीश का थैला है।
2. यह आपका मकान है।
3. यह हमारा झंडा है।
4. यह हमारी किताब है।.....आदि।

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और सभी विद्यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

1. यह मेरा थैला है।
2. यह उसकी कलम है।
3. आपका नाम क्या है?
4. आपकी कलम कहाँ है?
5. यह हमारा झंडा है।
6. यह मेरी किताब है।... आदि।

टिप्पणी [illegible]

* विद्यार्थियों ने जिन शब्दों को बोलना और लिखना सीख लिया है उनका प्रयोग करते हुए अध्यापक **हमारा, आपका.....** आदि का प्रयोग करना/बोलना सिखाएँ।

3. अध्यापक पहले वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी दोहराएँगे। फिर अध्यापक केवल मोटे टाईप वाले शब्दों को बोलें और विद्यार्थी उनकी मदद से वाक्य पूरा करें

नमूना

यह कमरा **मेरा** है। (कलम)

यह कलम **मेरी** है।

1. **मोहन**............ भाई है।
2. **रमा**.............. बहन है।
3. **भूषण** .... साथी है।
4. **प्रिया** .... सहेली है।
5. .... भाई मोहन है।
6. .... बहन रमा है।
7. .... साथी है।
8. .... सहेली है।

योग्यता विस्तार

* विद्यार्थी **मेरा, तुम्हारा, आपका, हमारा** आदि का प्रयोग कक्षा की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए करें।

शिक्षण संकेत

* **अन्य शब्दों का प्रयोग :** इस अभ्यास को सहज बनाने के लिए अध्यापक को कक्षा में प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध वस्तुओं के बारे में बातचीत करनी चाहिए। अध्यापक पाँच-छह शब्दों का प्रयोग अवश्य करें, जैसे : **साबुन, फूल, गाय, पुस्तक, कलम** आदि। विस्तृत व्यवहार के लिए विद्यार्थी अन्य परिचित शब्दों/वाक्यों का भी प्रयोग कर सकते हैं, जैसे :

1. इसका नाम क्या है?(केवल मौखिक रूप से)
2. तुम्हारा घर कहाँ है?
3. यह किसका बस्ता है?.... आदि।

सातवाँ पाठ

ठेला

शिक्षण बिंदु

ठ ढ ढ़ रु रू ए =

1. **एड़ी** **ठेला** **ढोलक**

ए ड़ी **ठे ला** **ढो ल क**

सीढ़ी **रुपया** **रूमाल**

सी ढ़ी **रु प या** **रू मा ल**

शिक्षण संकेत
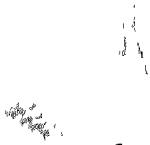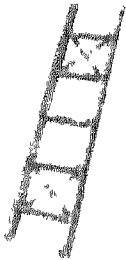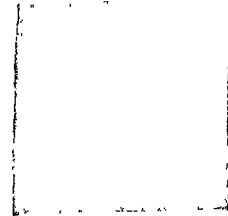
* श्यामपट्ट/फ्लेश कार्ड पर **ढोलक** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियों से बुलवाएँ।
* इसी तरह **एड़ी**, **ठेला**, **सीढ़ी**, **रुपया** और **रूमाल** में आए वर्णों की पहचान करवाएँ और बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

ए	ठ	ढ	ढ़	रु	रू	द	उ	ऐ
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठां

3. सुनो और पढ़ो

एक	एकता	आइए	इसलिए	किसलिए	किसका	जिसका
ठंडा	आठ	साठ	गाँठ	लाठी	कोठरी	गठरी
ठीक	टीका	सेठ	मेल	मैल	केला	सेब
बेर	बैर	शेर	सैर	मेला	मैला	ढाल
ढोल	ढील	बाढ़	बूढ़ा	कढ़ाई	कड़ाई	लड़ाई
गुरु	शुरू	रुई	रूखा	डमरू	रुपया	रूमाल

4. लिखो

ए	ठ	ढ	ढ़	रु	
रू	द	ड	ऐ		
एकता	इसलिए	आठ	लाठी	शेर	
मेला	रेखा	नोट	कोठी	गढ़	ढाल

शिक्षण संकेत

* सोपान 2, 3 और 4 के अभ्यास पिछले पाठों में दिए गए शिक्षण संकेतों के अनुसार करवाएँ।

5. रेखा खींचकर शब्द को सही चित्र से मिलाओ
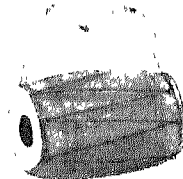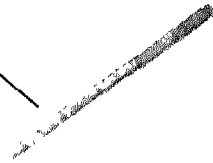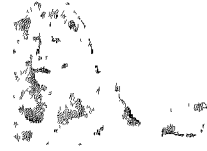
योग्यता विस्तार

* शिक्षण बिंदु वाले वर्णों तथा मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से पहचान करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **ठ ढ ढ़ रु रू ए ◌े** लिपि संकेतों की सहायता से अन्य शब्द बनवाकर बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाएँ, जैसे : **ढाल, ठंडा, कठिन, कठोर, रूठना** आदि।

मौखिक पाठ

शिक्षण बिंदु

आओ	आइए
दो	दीजिए
न	मत

1. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी सुनेंगे

1. तुम यहाँ आओ ।
2. आप यहाँ आइए।
3. लता, रूमाल लाओ।
4. मोहन, रूमाल मत लाओ।
5. आप रूमाल न लाइए।

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और कक्षा के सभी विद्यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

1. रमेश, तुम यहाँ आओ।
2. सीता, तुम अंदर जाओ।
3. तुम लोग अंदर बैठो।
4. रामू, एक कप चाय लाओ।
5. आप यहाँ आइए।
6. आप अंदर आइए।
7. आप लोग अंदर बैठिए।
8. आप एक कप चाय पीजिए।
9. यह किताब मत पढ़ो।
10. ठंडा दूध मत पिओ।
11. शोर मत करो।
12. यह किताब न पढ़िए।
13. ठंडा दूध न पीजिए।
14. शोर न कीजिए।

3. नमूने के अनुसार वाक्य बदलो

क. **नमूना**

तुम खाना **खाओ**। आप खाना **खाइए**।

शिक्षण संकेत

* विद्यार्थियों ने जिन क्रिया शब्दों को बोलना और लिखना सीख लिया है उनकी सहायता से अध्यापक **आओ-आइए, दो-दीजिए** आदि का आदरार्थक प्रयोग करना/बोलना सिखाएं।

1. तुम अपने घर जाओ। आप ....।
2. तुम यह पाठ पढ़ो। आप ....।
3. तुम कुरसी पर बैठो। आप ....।

ख. **नमूना**

तुम यह किताब **मत लो।** आप यह किताब **न लीजिए।**

1. तुम रामू को पाँच रुपए दो। आप ....।
2. तुम यह चाय मत पिओ। आप ....।
3. तुम शोर मत करो। आप ....।

योग्यता विस्तार

* कक्षा की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए विद्यार्थी आपस में उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाएँ, जैसे

1. आप यहाँ आओ। आप यहाँ आइए।
2. वहाँ से चाक लाओ। वहाँ से चाक लाइए।

* अध्यापक विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर की जीवंत/यथार्थ स्थितियों में संवाद के लिए प्रेरित करें जिनमें आदरार्थक क्रियाओं का प्रयोग हो।

[illegible]

* **अन्य शब्दों का प्रयोग :** इन अभ्यासों को सहज बनाने के लिए कक्षा में प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध वस्तुओं के बारे में बातचीत करनी चाहिए, जैसे : **चित्र, पेन, बॉक्स, स्केल, फ़ोटो, रिंग, फुटा** आदि।
* विस्तृत व्यवहार के लिए अन्य परिचित शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं, जैसे : **फैन, रेगुलेटर, शर्ट** आदि। चूँकि जिन शब्दों के लिखित रूप से विद्यार्थी अपरिचित है, उनका लिखित रूप सामने न लाएँ।
* **विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का निरीक्षण :** अध्यापक विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति के समय उच्चारण और शब्द प्रयोग पर ध्यान दें, त्रुटियाँ होने पर उन्हें दोष न दें। उच्चारण और शब्द प्रयोग का बार-बार अभ्यास कराकर उनमें सुधार लाने का प्रयत्न करें।

आठवाँ पाठ

पौधा

शिक्षण बिंदु

| औ ै छ ण |

1. **औरत** **पौधा**

औ र त **पौ धा**

छतरी **बाण**

छ त री **बा ण**
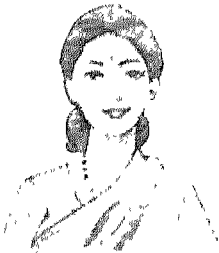
शिक्षण संकेत

* श्यामपट्ट/फ्लैश कार्ड पर **'औरत'** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियों से बुलवाएँ।
* इसी तरह **पौधा, छतरी** और **बाण** में आए वर्णों की पहचान करवाएँ और बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

ओ छ ण ओ च ढ ढ़ ड़ ऐ अ

छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ

3. सुनो और पढ़ो

और औज़ार औषध कौन कौआ

गौरेया चौक चौकी चौड़ा चौपाया

तौलिया नौकर चौथा खिलौना छतरी

छाता छाया छिलका छिपकली मछली

भाषण भूषण रावण विभीषण

4. लिखो

आ छ ण आ च ढ ढ़ ड़

और और औषध कौआ गौरेया चौड़ा तौलिया

छिपकली भाषण चौक छाया छतरी भूषण

5. इनके नाम लिखो

_ _ _ _ _ _ _   _ _ _ _ _ _ _

योग्यता विस्तार

* शिक्षण बिंदु वाले सभी वर्णों तथा मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से पहचान करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **छ, ण, औ, ौ, ऐ, ै, प, म, ल, स र** लिपि संकेतों की सहायता से अन्य शब्द बनाकर बुलवाएँ और कुछ शब्द विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाएँ, जैसे : **रन-रण, कल-खल, चौदह, चौराहा** आदि।

शिक्षण संकेत

* एक समान लगने वाले शब्दों के उच्चारण तथा उनके अंतर को स्पष्ट करें और बार-बार बुलवाएँ, जैसे: **चौक-चौकी, ओर-और, लोटना-लौटना, कोना-कौन** आदि।
* जल में और थल पर पाए जाने वाले जीव-जंतुओं, पशु-पक्षियों के बारे में विद्यार्थियों को बताएँ और उनकी विशेषताओं के बारे मे उनसे चर्चा करें।

मौखिक पाठ

शिक्षण बिंदु

1. में, पर
2. वहाँ, यहाँ, कहाँ

1. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी सुनेंगे

1. आपका भाई कहाँ है? — मेरा भाई घर में है।
2. आपकी कलम कहाँ है? — मेरी कलम मेज़ पर है।
3. आपकी रूमाल कहाँ है? — मेरी रूमाल यहाँ है।
4. आपकी छतरी कहाँ है? — मेरी छतरी यहाँ है।

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और कक्षा के सभी विद्यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

1. आपका भाई कहाँ है?
2. मेरा भाई घर में है।
3. मेरा भाई कमरे में है।
4. मेरा भाई गाँव में है।
5. मीरा कहाँ है?
6. मीरा वहाँ है?
7. आपकी कलम कहाँ है?
8. मेरी कलम थैले में है।
9. मोहन! रूमाल कहाँ है?
10. रूमाल यहाँ है।

3. अध्यापक पहला वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी दोहराएँगे। फिर अध्यापक केवल मोटे टाइप वाले शब्दों को बोलें और विद्यार्थी उनकी मदद से वाक्य पूरा करें

नमूना

कलम **अलमारी में** है। **(संदूक)**

कलम **संदूक में** है।

शिक्षण संकेत

* विद्यार्थियों ने जिन शब्दों को बोलना और लिखना सीख लिया है, अध्यापक उनका प्रयोग करते हुए **में, पर, वहाँ, यहाँ, कहाँ** आदि शब्दों का प्रयोग वाक्यों में करना सिखाएँ।

1. मेरा भाई **शहर में** रहता है। **(गाँव)**		4. गाड़ी **सड़क पर** है। **(ठेला)**	
2. ....**(मैदान)**		5. ....**(साइकिल)**	
3. ....**(घर)**		6. ....**(बस)**	

4. प्रश्नोत्तर अभ्यास

अध्यापक अलग-अलग विद्यार्थियों से प्रश्न पूछें और विद्यार्थी नमूने के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दें

नमूना	
आपकी बहन कहाँ है?	मेरी बहन **घर में** है।

1. आपका भाई कहाँ है? (गाँव, शहर) ....
2. आपका घर कहाँ है? (शहर, गाँव) ....
3. मेरी किताब कहाँ है? (अलमारी, संदूक) ....

योग्यता विस्तार

* विद्यार्थी आपस में इसी तरह अन्य शब्दों जैसे : **दादा, स्कूटर, चिड़िया** आदि का प्रयोग करते हुए प्रश्नोत्तर करें।
* अध्यापक विद्यार्थियों को जीवंत/यथार्थ स्थितियों में बातचीत करने के लिए प्रेरित करें जिसमें **में, पर, यहाँ, वहाँ, कहाँ, कौन, किसका, उसका, अपना, आपका, हमारा, तुम्हारा** आदि का प्रयोग हो सके।
* अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द जो हिंदी में रूढ़ हो गए हैं, उनको संवाद तथा बातचीत में अवश्य प्रयोग करें, जैसे : **बाट, फैन, स्कूटर, बल्ब, ट्यूबलाइट, बटन, बोर्ड, रबर, फ़ोटो** आदि।

शिक्षण संकेत

* **अन्य शब्दों का प्रयोग :** इन अभ्यासों को सहज बनाने के लिए कक्षा में/कक्षा के बाहर उपलब्ध वस्तुओं के बारे में बातचीत करना चाहिए, जैसे : **बाट, दोस्त, बस्ता, दुकान, ढोल** आदि।
* **विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का निरीक्षण :** विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष रूप से ध्यान दें। उच्चारण और अनुतान का सुधार साथ-साथ करवाएँ।

नवाँ पाठ

ऋषि

शिक्षण बिंदु

ऋ ृ श क्ष त्र श्र

1. ऋषि यज्ञ कक्षा

ऋ षि य ज्ञ क क्षा

छात्र श्री त्रिशूल
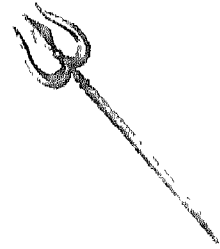
छा त्र श्री त्रि शू ल

शिक्षण संकेत

* अध्यापक श्यामपट्ट/फ्लैश कार्ड पर **ऋषि** लिखे और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्‌यार्थियों से बुलवाएँ।
* इसी तरह **यज्ञ, कक्षा** तथा **छात्र** में आए वर्णों की पहचान करवाएँ और बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

ऋ ज्ञ क्ष त्र प इ झ त छ

3. सुनो और पढ़ो

ऋण	ऋतु	ऋषभ	ज्ञान	ज्ञाता	विज्ञान
क्षमा	क्षत्रिय	क्षेत्र	शिक्षा	परीक्षा	शिक्षक
नेत्र	त्रिशूल	त्रिभुज	त्रिवेणी	पत्र	चित्र
तृण	कृपा	मृग	कृपया	मंत्र	मित्र
श्री	श्रीमान	श्रीमती	श्रम	आश्रम	विश्राम

4. लिखो

ज्ञ, त्र, श्र, क्ष, ऋ श ष

ऋतु, क्षेत्र, पत्र, कृपा, मृग, शिक्षा, शिक्षक

5. इनके नाम लिखो

— — — —

— — — —
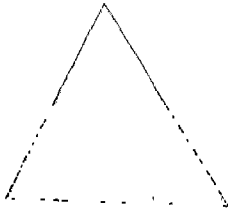
शिक्षण संकेत

* सोपान 2, 3, 4 और 5 के अभ्यास पिछले पाठों में दिए गए शिक्षण संकेतों के अनुसार करवाएँ।
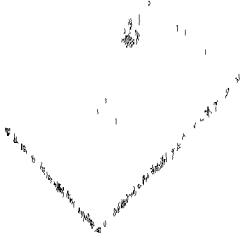
योग्यता विस्तार

* शिक्षण बिंदु वाले सभी वर्णों तथा मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से इनकी पहचान करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **क्ष त्र ज्ञ श्र ऋ** लिपि संकेतों की सहायता से अन्य शब्द बनवाकर बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाएँ, जैसे : **रक्षक, श्रम, अज्ञान, कक्ष, श्रीमती, कृपा** आदि।

मौखिक पाठ

शिक्षण बिंदु

मैं..............हूँ।
तुम..............हो।
वह...............है।
वे/आप/हम......हैं।

1. अध्यापक मोटे अक्षर वाले शब्दों पर बल देते हुए बोलें ताकि विद्यार्थियों को इन दोनों के संबंध का स्पष्ट बोध हो सके

1. **मैं** शिक्षार्थी **हूँ।**
2. **मैं** छात्रा **हूँ।**
3. **तुम** विद्यार्थी **हो।**
4. **वह** छात्रा **है।**
5. **हम** शिक्षार्थी **हैं।**
6. **आप** अध्यापक **हैं।**
7. **वे** अध्यापिकाएँ **हैं।**

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और कक्षा के सभी विद्यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

1. मैं विद्यार्थी हूँ।
2. तुम विद्यार्थी हो।
3. हम विद्यार्थी हैं।
4. क्या तुम ठीक हो?
5. जी नहीं, मैं बीमार हूँ।
6. आप कैसे हैं?
7. मैं ठीक हूँ।
8. आप शिक्षक हैं।
9. वह शिक्षक है।
10. वे शिक्षक हैं।
11. मेरी कक्षा में बीस विद्यार्थी हैं।
12. वे हमारी कक्षा के शिक्षक हैं।
13. आपके पिताजी कैसे हैं?
14. पिताजी आजकल बीमार हैं।

शिक्षण संकेत

* विद्यार्थियों ने जिन शब्दों को बोलना और लिखना सीख लिया है अध्यापक उनका प्रयोग करते हुए **मैं.....हूँ, तुम.....हो, वह.... है, वे..... हैं, आप.......है।** की संरचनाओं में वाक्य बोलना सिखाएँ।

3. अध्यापक पहले वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी दोहराएँगे। फिर अध्यापक केवल मोटे टाइप वाले शब्दों को बोलें और विद्यार्थी उनकी मदद से वाक्य पूरा करें

1. **मैं** छठी कक्षा का विद्यार्थी हूँ।
2. **हम** -------------------------------
3. **वह** -------------------------------
4. **वे**--------------------------------
5. **तुम** -------------------------------
6. **आपके** पिताजी आजकल कहाँ हैं ?
7. **आपकी** माताजी--------------------
8. **आपका** भाई ----------------------
9. **आपकी** बहन --------------------
10. **पिताजी** आजकल दिल्ली में हैं।
11. **मैं**--------------------------------
12. **हम** -------------------------------
13. **वह** -------------------------------
14. **मेरी** बहन ------------------------

4. प्रश्नोत्तर अभ्यास

अध्यापक अलग-अलग विद्यार्थियों से प्रश्न पूछें और विद्यार्थी जी हाँ, जी नहीं लगाकर पूरे वाक्य में उत्तर दें

1. क्या तुम इसी कक्षा के विद्यार्थी हो? (जी हाँ, जी नहीं)
2. क्या आप शिक्षक हैं? (जी हाँ, जी नहीं)
3. क्या आपके भाई शिक्षक हैं? (जी हाँ, जी नहीं)

4. क्या पिताजी घर में हैं? (जी हाँ, जी नहीं)
5. क्या आपका मकान गाँव में है? (जी हाँ, जी नहीं)
6. क्या आप ठीक हैं? (जी हाँ, जी नहीं)
7. तुम कैसे हो? (ठीक, बीमार)
8. आप कौन हैं? (छात्र, छात्रा)
9. तुम आजकल कहाँ रहते हो? (दिल्ली, मैसूर)
10. वे लड़कियाँ कौन हैं? (छात्राएँ, मेरी बहनें)

योग्यता विस्तार

* विद्यार्थी आपस में इसी तरह कक्षा की वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए प्रश्नोत्तर करें।
* अध्यापक विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर की जीवंत/यथार्थ स्थितियों में संवाद के लिए प्रेरित करें जिनमें **जी हाँ, जी नहीं,** आदि का प्रयोग हो सके।

---

* **अन्य शब्दों का प्रयोग :** इन अभ्यासो को सहज बनाने के लिए अध्यापक को कक्षा में उपलब्ध वस्तुओं के बारे में बातचीत करनी चाहिए, जैसे : **दरवाज़ा, स्विच बोर्ड, श्यामपट्ट, चार्ट, तार** आदि।
* विस्तृत व्यवहार के लिए विद्यार्थी अन्य परिचित शब्दो का भी प्रयोग कर सकते हे, जैसे : **चाक, चित्र, तस्वीर** आदि।
* **विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का निरीक्षण :** विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति के समय अध्यापक शब्द के उच्चारण और प्रयोग पर ध्यान दें। उच्चारण और अनुतान का अभ्यास साथ-साथ करवाएँ।

दसवाँ पाठ

ट्रैक्टर

शिक्षण बिंदु

क्	स्

1.
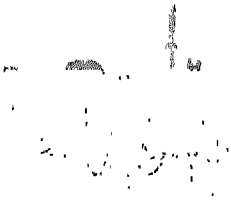
क्यारी	बस्ता	लड्डू
क या री	ब स्‍ ता	ल ड् डू
ट्रैक्टर	प्रार्थना	पर्वत
ट्रै क ट र	प्रा र्थ ना	प र्व त
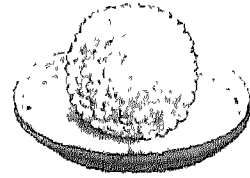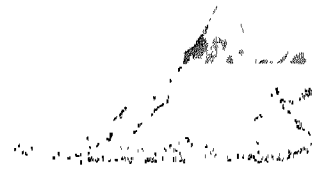
शिक्षण संकेत

* श्यामपट्ट/फ्लैश कार्ड पर **ट्रैक्टर** लिखें और उसका चित्र दिखाते हुए सभी विद्यार्थियों से बुलवाएँ।
* इसी तरह **क्यारी, बस्ता, लड्डू** और **प्रार्थना** में आए वर्णों की पहचान करवाएँ और बार-बार बुलवाएँ।

2. पहचानो और बोलो

क्या	क्यों	दफ्तर	बच्चा	प्याला	ड्रम
अड्डा	छुट्टी	ट्रक	पर्वत	क्रम	ट्राम

3. सुनो और पढ़ो

पका	पक्का	चक्र	चक्कर
हफ्ता	प्राप्त	रास्ता	नाश्ता
गुब्बारा	अध्यापक	विद्या	अच्छा
मच्छर	सब्जी	नब्ज़	पत्ता
पता	अन्न	रन	पप्पू
फालतू	लट्टू	पत्थर	चिट्ठी
कबड्डी	बुद्धि	डाक्टर	खद्दर
ट्रेन	ड्रम	ड्रामा	क्रिकेट
क्रेन	धर्म	समुद्र	

4. लिखो

क्य	क्त	च्च	ड्ड	क्या	वक्त
बच्चा	अड्डा	समुद्र	डाक्टर	क्रिकेट	ट्रेन
पत्ता	खद्दर	क्रम	चक्कर	धर्म	चर्म

शिक्षण संकेत

* सोपान 2, 3 और 4 के अभ्यास पिछले पाठों में दिए गए शिक्षण संकेतो के अनुसार कराएँ।

5. रेखा खींचकर शब्द को सही चित्र से मिलाओ

ट्रक

पत्ता

लट्टू
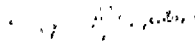
पर्वत

क्रिकेट

योग्यता विस्तार

* अध्यापक शिक्षण बिंदु वाले सभी स्वर रहित वर्णों को श्यामपट्ट पर लिखें और विद्यार्थियों से बारी-बारी से पहचान करवाएँ।
* विद्यार्थियों से **क, रु, ड्, प्र, ट्र** वर्णों की सहायता से अन्य शब्द बनवाकर विद्यार्थियों से बुलवाएँ और कुछ विद्यार्थियों से उन्हें बोर्ड पर भी लिखवाएँ, जैसे : **बिस्तर, सच्चा, अच्छा, शर्बत, अमृत, प्रिय** आदि।

शिक्षण संकेत

* अन्य अभ्यास पिछले पाठों में दिए गए शिक्षण संकेतों के अनुसार कराएँ।
* क्र, ट्र और र्व में रेफ के अंतर को विशेष रूप से स्पष्ट करें तथा इनका बार-बार अभ्यास करवाएँ।

मौखिक पाठ

शिक्षण बिंदु

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]

1. अध्यापक बोलेंगे और विद्‌यार्थी सुनेंगे

1. मोहन खाना खा रहा है।
2. सीता गाना गा रही है।
3. बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।
4. लड़कियाँ खाना पका रही हैं।
5. मैं इस समय चिट्‌ठी लिख रहा हूँ।
6. तुम क्या कर रहे हो?
7. आप कहाँ जा रहे हैं?

2. अध्यापक वाक्य बोलेंगे और कक्षा के सभी विद्‌यार्थी एक साथ वाक्य दोहराएँगे

1. मोहन लड्‌डू खा रहा है।
2. गोपाल सो रहा है।
3. सीता गाना गा रही है।
4. बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।
5. खेत में ट्रैक्टर चल रहा है।
6. लड़कियाँ क्यारी में पानी दे रही हैं।
7. अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहे हैं।
8. मैं चिट्‌ठी लिख रहा हूँ।

शिक्षण संकेत

* विद्यार्थियों ने जिन वाक्यों को बोलना और लिखना सीख लिया है अध्यापक उनका प्रयोग करते हुए **जा रहा हूँ, जा रहा है, जा रही है, जा रहे हैं, जा रही हैं** आदि संरचना को वाक्यों में बोलना सिखाएं।

3. **अध्यापक पहला वाक्य बोलेंगे और विद्यार्थी दोहराएँगे। फिर अध्यापक केवल मोटे टाइप वाले शब्दों को बोलें और विद्यार्थी उनकी मदद से वाक्य पूरा करें**

नमूना

मोहन खेल **रहा है। (सीता)**

सीता खेल **रही है।**

1. रमेश किताब पढ़ रहा है। **(शीला)**
2. ....**(लड़की)**
3. ....**(लड़कियाँ)**
4. ....**(लड़के)**
5. ....**(माताजी)**

प्रश्न	**उत्तर**
1. तुम क्या कर रहे हो?	1. ....
2. आप	2. ....
3. वे लड़के	3. ....
4. वे लड़कियाँ.........	4. ....
5. पिताजी	5. ....
6. तुम लोग	6. ....

4. प्रश्नोत्तर अभ्यास

अध्यापक अलग-अलग विद्यार्थियों से प्रश्न पूछें और विद्यार्थी नमूने के अनुसार जी हाँ, जी नहीं लगाकर प्रश्नों के उत्तर दें

नमूना

अध्यापक : क्या तुम खेल रहे हो?

शिक्षार्थी : जी हाँ, मैं खेल रहा हूँ।

जी नहीं, मैं नहीं खेल रहा।

1. क्या तुम चिट्ठी लिख रहे हो? (जी हाँ, जी नहीं)
2. सभी लड़के पढ़ रहे हैं? (जी हाँ, जी नहीं)
3. क्या तुम कपड़े धो रही हो? (जी हाँ, जी नहीं)
4. क्या आप टेलीविजन देख रहे हैं? (जी हाँ, जी नहीं)
5. तुम बाजार जा रहे हो? (जी हाँ, जी नहीं)
6. क्या लड़कियाँ छात्रावास जा रही हैं? (जी हाँ, जी नहीं)

शिक्षण संकेत

* अभ्यास को सहज बनाने के लिए अध्यापक, छात्र/छात्राओं से आपस में बातचीत करवाएं, जैसे :
  1. मैं बाजार जा रहा हूँ। (लड़का)
  2. मैं खेल रही हूँ । (लड़की)
* जी नहीं वाले उत्तर में सहायक क्रिया हूँ, **हो**, है, **हैं** के लोप की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट करें। बार-बार के अभ्यास से वे इसका लोप करना सीख जाएंगे।

5. नमूने के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दो

नमूना

तुम्हारा भाई इस समय क्या कर रहा है? **(पढ़)**

मेरा भाई इस समय पढ़ रहा है।

1. तुम क्या कर रहे हो? (लड्डू)
2. आप कहाँ जा रहे हैं? (बाज़ार)
3. माता जी क्या पका रही हैं? (सब्ज़ी)
4. छोटा लड़का क्या कर रहा है? (खेल)
5. तुम क्या पढ़ रही हो? (कविता)
6. तुम क्या लिख रही हो? (पत्र)
7. अध्यापक क्या कर रहे हैं? (पढ़ा)
8. तुम कहाँ से आ रहे हो? (छात्रावास)
9. शीला क्या कर रही है? (गाना)

योग्यता विस्तार

* शिक्षण बिंदु वाले वाक्य श्यामपट्ट पर लिखें और बारी-बारी से विद्यार्थियों से पहचान करवाएँ, बुलवाएँ तथा विद्यार्थियों से बोर्ड पर कुछ सामान्य वाक्य लिखवाएँ।

---

* अध्यापक पाठ में आए नमूने के अनुसार विदयार्थियों से प्रश्नोत्तर तथा बातचीत का अभ्यास करवाएँ, जैसे
  1. माताजी क्या पका रही हैं?(खीर)
  2. रमा क्या कर रही है? (सो)
  3. लड़के क्या देख रहे हैं? (टीवी)
  4. लड़कियाँ क्या कर रही है?(नाच)

मानक हिंदी वर्णमाला

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ

ए ऐ ओ औ अं अः

मात्राएँ

ा ि ी ु ू ृ

ो ौ ं ँ े ै

व्यंजन

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ श्र

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः

फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः

संयुक्त व्यंजन

1. क - अ = क् , फ - अ = फ्
2. खड़ी पाई वाले व्यंजनों से खड़ी पाई निकाल देना, जैसे :

   ख - अ = ख् , ग - अ = ग् , च - अ = च् आदि।
3. उपर्युक्त (1) और (2) को छोड़कर सभी व्यंजनों के नीचे हल चिह्न (्) लगाना, जैसे : ठ - अ = ठ् , ड - अ = ड् , द - अ = द्,

   ह - अ = ह् आदि ।
4. र को व्यंजनों से पहले और बाद में जोड़ना

   (क) पूर्व व्यंजन यदि स्वर रहित (आधा) हो और बाद में र आए तो रेफ (्र) नीचे आएगी, जैसे :

   क् + र = क्र , ग् + र = ग्र , ज् + र = ज्र आदि ।

   (ख) ट वर्ग के पहले वाले चारों वर्णों के साथ नीचे हंसपद नुमा रूप (‸) जुड़ेगा, जैसे : ट्र, ड्र आदि ।

   (ग) स्वर रहित र (र्) के बाद व्यंजन आने पर रेफ (र्) परवर्ती व्यंजन के ऊपर लगेगी, जैसे : र् + म = र्म (कर्म) , र् + च = र्च (चर्च), र् + त = र्त (शर्त) आदि।

   (घ) स्वर रहित (र्) व्यंजन के बाद स्वर की मात्रा आए तो (र्) स्वर की मात्रा के ऊपर लगेगी, जैसे : कार्यालय, विद्यार्थी, कर्मों आदि।

ग्यारहवाँ पाठ

हमारा घर

शिक्षण बिंदु

यह/वह	(सर्वनाम/पूरक + संज्ञा) हमारा + घर	
	(संज्ञा + सर्वनाम/पूरक) घर + हमारा	
	(विशेषण + संज्ञा) छोटा + कमरा	[illegible]
	(संज्ञा + विशेषण) कमरा + छोटा	
	लिंग-वचन की अन्विति	

सलमान : सतीश ! नमस्कार।

सतीश : नमस्कार, सलमान।

सलमान : यह घर किसका है?

सतीश : यह घर हमारा है।

आओ, अंदर आओ।

सलमान : तुम्हारे घर में कितने कमरे हैं?

सतीश : हमारे घर में चार कमरे हैं। दो कमरे बड़े हैं, दो कमरे छोटे।

सलमान : रसोईघर और स्नानघर किधर है?

सतीश : दाहिनी ओर रसोई घर है। उसके पास स्नानघर है।

सलमान : यह कमरा किसका है?
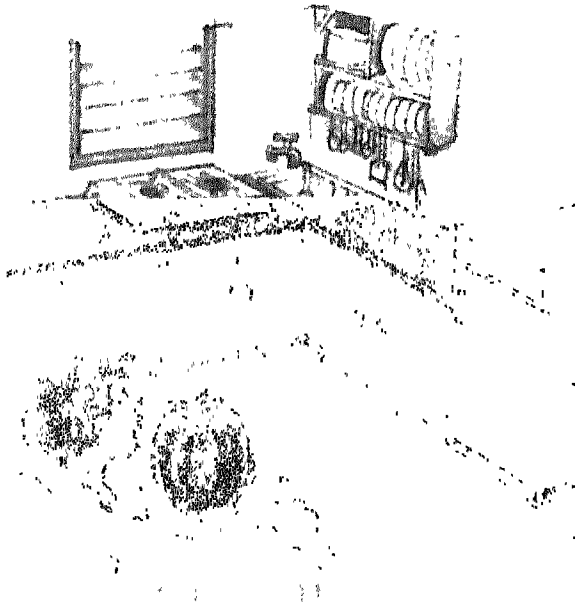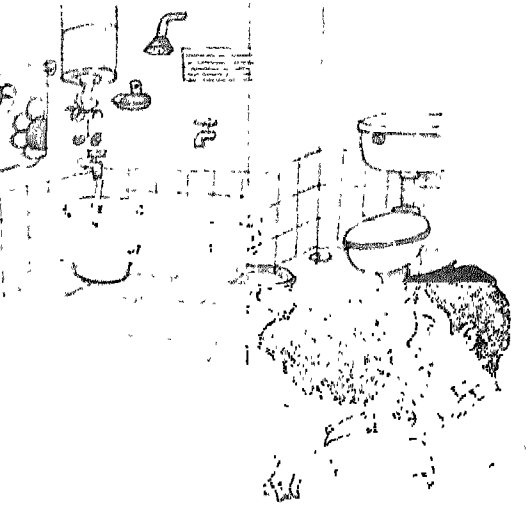
सतीश : यह मेरे दादाजी का कमरा है।

सलमान : और वह?

सतीश : वह मेरे पिताजी का कमरा है।

सलमान : वह किसका मकान है?

सतीश : वह श्रीनिवासन का मकान है। वह मेरा दोस्त है। उसका मकान बड़ा है। उसके घर के सामने एक सुंदर बगीचा भी है। आओ, हम बगीचे में चलें ।

सतीश : देखो, बगीचे में कई पौधे हैं। क्यारियों में रंग-बिरंगे फूल लगे हैं। ये गुलाब के फूल हैं और वे गेंदे के। दीवार के पास कई पेड़ हैं। कुछ पेड़ लंबे हैं और कुछ पेड़ छोटे। यह आम का पेड़ है और वह नीम का। वह अमरूद का पेड़ है, यह नारियल का। अमरूद का पेड़ छोटा होता है और नारियल का पेड़ लंबा।

सलमान : वाह ! यह बगीचा बहुत सुंदर है।

शिक्षण संकेत

* संज्ञा के पहले पूरक/विशेषण आए तो गुण (विशेषण) पर बल होता है, जबकि संज्ञा के बाद विशेषण आए तो कथन में संज्ञा पर बल होता है। अध्यापक को चाहिए कि इस अंतर को विद्यार्थियों को समझाते हुए ऐसे और उदाहरण दें।

अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

घर कमरा रसोईघर स्नानघर दादाजी पिताजी मकान दोस्त
बगीचा फूल पौधा पेड़ आम बड़ा छोटा लंबा
सुंदर रंग-बिरंगे दाहिनी ओर के सामने कई कुछ

2. पढ़ो और समझो

एकवचन पुल्लिंग	बहुवचन पुल्लिंग
कमरा	कमरे
बगीचा	बगीचे
पौधा	पौधे
लड़का	लड़के

एकवचन स्त्रीलिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
अलमारी	अलमारियाँ
साड़ी	साड़ियाँ
कुरसी	कुरसियाँ
लड़की	लड़कियाँ

3. तालिका में से शब्द लेकर वाक्य बनाओ

यह	बड़ा पुराना नया	मकान	है।

यह मकान	मेरा उसका तुम्हारा	है।

शिक्षण संकेत

* अध्यापक वस्तुएँ दिखाकर प्रश्न पूछें और विद्यार्थी उनके उत्तर दें, जैसे :
  1. यह किसका बस्ता है? यह रमेश का बस्ता है।
  2. यह किसका किताब है? यह सुनीता की किताब है।

4. **कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो**

(गंदा, छोटा,लंबा, पीला)

1. यह कमरा बड़ा है, वह कमरा .... है।
2. यह फूल लाल है, वह फूल .... है।
3. यह स्नानघर साफ़ है, वह स्नानघर .... है।
4. यह पेड़ छोटा है, वह पेड़ .... है।

5. **नमूने के अनुसार वाक्यों को मिलाओ**

नमूना

यह मकान नया है। वह मकान पुराना है।

→ यह मकान नया है **और** वह पुराना।

1. कुछ पेड़ लंबे हैं। कुछ पेड़ छोटे हैं।1
2. यह आम का पेड़ है। वह नीम का पेड़ है।
3. यह किताब मेरी है वह किताब तुम्हारी है।
4. ये कमरे छोटे हैं। वे कमरे बड़े हैं।

6. **नमूने के अनुसार उत्तर दो**

नमूना

यह किसका मकान है? → यह श्रीनिवासन का मकान है।

1. वह किसकी घड़ी है? ....
2. ये किसकी किताबें हैं? ....
3. यह किसका बस्ता है? ....
4. वे किसके जूते हैं? ....

शिक्षण संकेत

* अध्यापक ऊपर दिए प्रश्नों का उत्तर भिन्न वचन और लिंग का प्रयोग करते हुए सिखाएँ।
* विद्यार्थियों और कक्षा की वस्तुओं के आधार पर पहले मौखिक फिर लिखित अभ्यास कराएँ।

7. नमूने के अनुसार वाक्य बनाओ

नमूना	
यह कमरा बड़ा है।	**ये कमरे** बड़े हैं।

1. यह बस्ता छोटा है। --------------------------
2. यह लोटा बड़ा है। --------------------------
3. यह तोता हरा है। --------------------------
4. यह केला कच्चा है। --------------------------

नमूना	
वह लड़की सुंदर है।	**वे लड़कियाँ** सुंदर हैं।

1. वह खिड़की बड़ी है। --------------------------
2. वह टोकरी छोटी है। --------------------------
3. वह अलमारी ऊँची है। --------------------------
4. वह घड़ी अच्छी है। --------------------------

8. प्रश्नों के उत्तर दो

1. सतीश के घर में कितने कमरे हैं?
2. सतीश के घर के पास किसका मकान है?
3. श्रीनिवासन के घर के सामने क्या है?
4. बगीचा कैसा है?
5. सलमान और सतीश ने बगीचे में क्या-क्या देखा?

अनुकार्य

विद्यार्थी कक्षा की वस्तुओं के संदर्भ में उनके गुण आदि का वर्णन कर सकते हैं, जैसे : **ये खिड़कियाँ बड़ी हैं।** और उनके स्वामित्व के बारे में प्रश्नोत्तर करें, जैसे : **यह लाल बैग किसका है?** मेरा है। आदि।

बारहवाँ पाठ

कपड़े की दुकान

शिक्षण बिंदु

1. आना / आओ / आइए
2. मुझे + (संज्ञा) + चाहिए

अकबर	:	अम्मी, परसों ईद है। मुझे नए कपड़े चाहिए।
अम्मी	:	तुम फ़िक्र मत करो। आज शाम को हम बाज़ार जा रहे हैं।
सलमा	:	अम्मी, मुझे भी बाज़ार ले चलो। अब्बा, आप भी चलिए।
अब्बा	:	अकबर ! तुम भी चलो। तैयार हो जाओ।

(चारों बाजार जाते हैं। कपड़े की दुकान पर पहुँचते हैं।)

दुकानदार : आइए, इक़बाल भाई, नमस्कार।

अब्बा : आदाब, माधवन भाई।

दुकानदार : नमस्ते। आइए, आइए।

अब्बा : बच्चों के लिए कपड़े चाहिए।

दुकानदार : अभी लीजिए। रामू, साहब के लिए पानी लाओ, चाय भी लाना।

अम्मी : नहीं-नहीं चाय नहीं, सिर्फ़ पानी चाहिए।

अब्बा : भाई, सलमा के लिए सूट का कपड़ा दिखाइए। अकबर के लिए पैंट का कपड़ा चाहिए।

दुकानदार : रामू, पैंट के कपड़े निकाल लाओ।

अकबर : सलमा, तुम अपने लिए कपड़ा पसंद कर लो।

दुकानदार : बेटे, यह पैंट का कपड़ा देखो। यह बहुत अच्छा है।

अकबर : नहीं, यह नहीं चाहिए। यह अच्छा नहीं है, वह दिखाइए।

सलमा : अम्मी, यह सूट बहुत अच्छा है।

अम्मी : यह रंग अच्छा नहीं है बेटी ! माधवन भाई, कोई दूसरा रंग दिखाइए।

दुकानदार : यह लीजिए, नए-नए रंग के कपड़े।

अम्मी : यह रंग ठीक है। अकबर तुम भी अपना कपड़ा दे दो। माधवन भाई, ये कपड़े पैक कर दीजिए।

दुकानदार : रामू , ये कपड़े पैक कर दो, यह लीजिए आपका बिल।

अब्बा : शुक्रिया।

शिक्षण संकेत

* अध्यापक **ईद, दिवाली, होली** आदि त्योहारों के बारे मे विद्यार्थियों को बताएँ तथा **अम्मी-अब्बा, नमस्ते, शुक्रिया, आदाब, धन्यवाद** आदि का सांस्कृतिक प्रयोग समझाएँ ।

अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

ईद	कपड़ा	दुकान	दुकानदार	बढ़िया	दूसरा
अपना	खरीदना	लाना	रहना	कच्चा	नहीं
सलाम	नमस्ते	शुक्रिया	फिक्र	बाजार	सिर्फ़

2. पढ़ो और समझो

क. (तुम/आप के प्रयोग)

तुम	आओ।	
तुम्हें	क्या	चाहिए?
तुम्हारा	नाम	क्या है?

आप	आइए।
आपको	क्या चाहिए?
आपका	नाम क्या है?

ख.

तू	तुम	आप
आ	आओ	आइए
बैठ	बैठो	बैठिए
देख	देखो	देखिए
पढ़	पढ़ो	पढ़िए
दे	दो	दीजिए
पी	पिओ	पीजिए
कर	करो	कीजिए

शिक्षण संकेत

* इस तरह अध्यापक भिन्न-भिन्न क्रियाओं **आना, बैठना, देखना** आदि संज्ञाओं **आम, साड़ी, पुस्तक** और व्यक्ति नामों **मोहन, शीला** का प्रयोग करते हुए मौखिक अभ्यास कराएँ तथा विद्यार्थियों को यह बताएँ कि वे '**तू**' का प्रयोग करने से बचें।

3. नमूने के अनुसार लिखो

नमूना	
झूठ मत **बोलो**।	आप झूठ मत **बोलिए**।

1. कच्चे आम मत खाओ। आप ---------------
2. तुम भीतर मत जाओ। आप ---------------
3. तुम यहाँ बैठो। आप ---------------

4. रिक्त स्थानों में तुम/आप लिखकर वाक्य पूरे करो

1. -------- मेरे साथ चलो।
2. -------- यह काम मत करो।
3. -------- बाजार की मिठाई न खाइए।
4. -------- पत्र लिखिए।
5. -------- यह पुस्तक पढ़ो।
6. -------- वहाँ से जल्दी लौट आइए।

5. क्रिया का सही रूप चुनकर वाक्य पूरे करो

1. रामू ! तुम बाज़ार---------------- । (जाओ/जाइए)
2. पिताजी ! आप मुझे भी अपने साथ। (ले चलो/ले चलिए)
3. आइए ! बहन जी ! इधर -------- । (बैठो/बैठिए)
4. लड़के ! तुम यह पुस्तक---------- । (पढ़ो/पढ़िए)

6. नमूने के अनुसार वाक्य बदलो

नमूना	
मुझे यह पुस्तक **चाहिए।**	मुझे यह पुस्तक **दीजिए।**

1. मुझे वह कमीज़ चाहिए। -----------------------
2. उसे यह मिठाई चाहिए। -----------------------
3. हमें यह फल चाहिए। -----------------------
4. इसे वह कलम चाहिए। -----------------------
5. मुझे वह घड़ी चाहिए । -----------------------

7. प्रश्नों के उत्तर दो

1. कपड़े खरीदने कौन-कौन गए ?
2. दुकानदार का नाम क्या है?
3. दुकानदार ने कैसे कपड़े दिखाए?
4. सलमा के लिए कौन-सा कपड़ा अच्छा लगा ?
5. अकबर नए कपड़े क्यों खरीदना चाहता था?

अनुकार्य

निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं का प्रयोग करते हुए चीजें खरीदने के लिए संवाद का आयोजन करें। पहले अध्यापक-विद्यार्थी संवाद करें, फिर विद्यार्थी आपस में, जैसे :

1. मुझे यह कपड़ा चाहिए/नहीं चाहिए, वह दिखाइए/दीजिए।
2. तुम्हें/आपको क्या चाहिए/नहीं चाहिए।
3. मुझे एक किलो आलू/एक पैकेट चाय चाहिए/दीजिए।

तेरहवाँ पाठ

रंग-बिरंगे पंख तुम्हारे, सबके मन को भाते हैं।
कलियाँ देख तुम्हें खुश होतीं फूल देख मुस्काते हैं।।

रंग-बिरंगे पंख तुम्हारे, सबका मन ललचाते हैं।
तितली रानी, तितली रानी, यह कह सभी बुलाते हैं।।

पास नहीं क्यों आती तितली, दूर-दूर क्यों रहती हो ?
फूल-फूल के कानों में जा, धीरे से क्या कहती हो ?

सुंदर-सुंदर प्यारी तितली, आँखों को तुम भाती हो ।
इतनी बात बता दो हमको, हाथ नहीं क्यों आती हो ?

इस डाली से उस डाली पर, उड़-उड़ कर क्यों जाती हो ?
फूल-फूल का रस लेती हो, हमसे क्यों शरमाती हो ?

नर्मदा प्रसाद खरे

शब्दार्थ

भाना : अच्छा लगना
हाथ न आना : पकड़ में न आना
कानों में कहना : धीरे से कहना।

भावार्थ

इस कविता में तितली से बात की गई है और उसके लुभावने रूप का चित्र खींचा गया है।

चौदहवाँ पाठ

बातचीत

शिक्षण बिंदु

1. मैं पढ़ता/ती हूँ, तुम पढ़ते/ती हो।
2. हम पढ़ते/तीं हैं, आप पढ़ते/ती हैं।

श्रीधर : नमस्ते, सुजाता। हम बहुत समय बाद मिले।

सुजाता : श्रीधर, नमस्ते।

श्रीधर : सुजाता, तुम आजकल किस विद्यालय में पढ़ती हो?

सुजाता : मैं जयहिंद विद्यालय में पढ़ती हूँ।

श्रीधर : जयहिंद विद्यालय ! वह कहाँ है?

सुजाता : प्रधान डाकघर के पास है। और तुम कहाँ पढ़ते हो?

श्रीधर : मैं आजकल नागपुर में पढ़ता हूँ। वहाँ मेरे मामाजी रहते हैं। अच्छा सुजाता, तुम्हारे विद्यालय में हिंदी कौन पढ़ाता है।

सुजाता : एक अध्यापिका हैं जिनका नाम ललिता जी है। वे बहुत अच्छा पढ़ाती हैं। मज़ेदार कहानियाँ सुनाती हैं। हिंदी के गीत भी सिखाती हैं।

श्रीधर : अरे, वे तो मेरी मौसी की सहेली हैं। मैं मौसी के साथ कभी-कभी उनके घर जाता हूँ। वे बहुत अच्छी-अच्छी बातें करती हैं। वे बहुत अच्छी हैं।

सुजाता : तुम ठीक कहते हो। अच्छा श्रीधर! आजकल शाम को तुम क्या करते हो?

श्रीधर : शाम को मैं एक घंटे खेलता हूँ। मेरे घर के पास मैदान है। हमलोग फुटबाल खेलते हैं। कभी-कभी क्रिकेट भी खेलते हैं। सुजाता, तुम कौन-सा खेल खेलती हो?

सुजाता : मैं खो-खो खेलती हूँ। कभी-कभी भाई बहनों के साथ अंत्याक्षरी भी खेलती हूँ।

श्रीधर : (हँसता है) अंत्याक्षरी, यह भी कोई खेल है?

सुजाता : भाई, यह बुद्धि का खेल है। इसके लिए हम कई गीत याद करते हैं। तुम्हें मालूम नहीं, शतरंज भी बुद्धि का खेल है।

श्रीधर : मैं यह मानता हूँ लेकिन हमें इस उम्र में भागना-दौड़ना चाहिए।मैं सुबह योगासन भी करता हूँ।

सुजाता : यह तुम बहुत अच्छा करते हो । योग करना अच्छा है। स्वास्थ्य ठीक रहता है। मैं भी सीखना चाहती हूँ।

श्रीधर : तुम कल सुबह गांधी पार्क में आ जाना। मेरे चाचाजी योगासन सिखाते हैं।

सुजाता : ठीक है। मैं कल गांधी पार्क पहुँचती हूँ। तो अब मैं चलती हूँ श्रीधर नमस्ते।

श्रीधर : नमस्ते सुजाता, मैं भी चलता हूँ।

अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

विद्यालय	प्रधान डाक घर	मौसी	खो-खो	सहेली
अंत्याक्षरी	शतरंज	योगासन	पढ़ना	खेलना
सीखना	सिखाना	सुनाना	याद करना	आ जाना
कहाँ	सुबह	शाम को	दिन में	कभी-कभी

2. पढ़ो और समझो

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मैं	पढ़ता हूँ । गाता हूँ ।	पढ़ती हूँ । गाती हूँ ।
तुम	खेलते हो । खाते हो ।	खेलती हो । खाती हो ।
हम आप	सीखते हैं । सुनते हैं ।	सीखतीं हैं । सुनतीं हैं ।

3. कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
1. मैं दूध -------------- (पी)	मैं गाना ------------ (सीख)

शिक्षण संकेत

* पुल्लिंग/स्त्रीलिंग के साथ भिन्न-भिन्न क्रियाओं के साथ अभ्यास कराएँ।
* इस तरह के और भी प्रश्न छात्र-छात्राओं से पूछें और छात्र अपने अनुसार और छात्राएँ अपने अनुसार (पुल्लिंग/स्त्रीलिंग) सही क्रिया रूप का प्रयोग करके उत्तर दें।

2. तुम केला ---------- (खा) तुम कबड्डी --------- (खेल)

3. हम विद्यालय ---- (जाना) हम हिंदी ----------- (पढ़)

4. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' 'नहीं' में दो

नमूना

क्या तुम संगीत सीखते हो/सीखती हो?

→ हाँ, मैं संगीत सीखता/सीखती हूँ।

नहीं, मैं संगीत नहीं सीखता/सीखती हूँ।

1. क्या आप हिंदी पढ़ते हैं/पढ़ती हैं?

   हाँ...............................

   नहीं.............................

2. क्या तुम कबड्डी खेलती हो/खेलते हो?

   हाँ...............................

   नहीं.............................

3. क्या आप चाय पीती हैं/पीते हैं?

   हाँ...............................

   नहीं.............................

5. घड़ी में दिखाए समय को भरकर वाक्य पूरे करो

1. मैं सुबह ------------------- उठता हूँ।

शिक्षण संकेत

* प्रायः नकारात्मक उत्तर में **'हो' 'हैं'** का प्रयोग छोड़ा जा सकता है। जैसे :
  मैं चाय नहीं पीता हूँ - मैं चाय नहीं पीता।
* अध्यापक प्रश्नोत्तर द्वारा बच्चों की दिनचर्या पर केंद्रित वाक्य बुलवाएँ।
* **एक से बारह बजे तक का समय** तय दिनचर्या के साथ घड़ी देखना सिखाएँ।

2. हम सुबह------------------ स्नान करते हैं।
3. मैं सुबह ------------------ स्कूल जाता हूँ।
4. हम दिन में---------------- खाना खाते हैं।
5. मैं शाम को -------------- क्रिकेट खेलता हूँ।
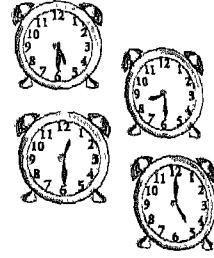
6. नमूने के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दो

> **नमूना**
>
> क्या तुम चाय पीते/पीती हो?
>
> मैं चाय नहीं, दूध पीता/पीती हूँ।

1. क्या तुम क्रिकेट खेलते हो? (फुटबाल)

   ----

2. क्या आप कॉमिक्स पढ़ते हैं ?(किताब)

   ----

3. क्या तुम गाना सीखती-हो? (नाच)

   ----

4. माँ, क्या आप बुनाई करती हैं? (सिलाई)

   ----

7. प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में दिए शब्द की सहायता से दो

1. तुम कितने बजे उठते/उठती हो? (पाँच बजे)

   मैं --

---

* इस अभ्यास को छात्रों और छात्राओं दोनों से अलग-अलग करवाएँ।

* **'मैं'** और **'हम'** के साथ इस तरह के अन्य प्रश्न पूछकर आदत और दैनिक व्यवहार के संबंध मे उत्तर प्राप्त करें।

2. तुम नाश्ते में क्या खाते/खाती हो? (इडली/बड़ा/दूध-ब्रेड/दही-पराठा)
   मैं --
   हम --
3. तुम स्कूल कब जाते/जाती हो? (नौ बजे)
   मैं --
   हम --
4. तुम स्कूल से कब लौटते/लौटती हो? (शाम को चार बजे)
   मैं --
   हम --
5. तुम गृहकार्य कब करते/करती हो?(छह बजे)
   मैं --
   हम --

8. प्रश्नों के उत्तर दो

1. जयहिंद विद्यालय कहाँ है?
2. अध्यापिका हिंदी कैसे पढ़ाती हैं?
3. सुजाता कौन-सा खेल खेलती है?
4. श्रीधर सुबह क्या करता है?
5. आसन कौन सिखाता है ?

अनुकार्य

अध्यापक **क्या-क्या** का प्रयोग करके प्रश्न पूछें, छात्र-छात्राएँ उत्तर दें, जैसे :

1. तुम क्या-क्या खेलते/खेलती हो? (क्रिकेट, शतरंज, जूड़ो, फुटबाल, हाकी)
2. तुम क्या-क्या पीते/पीती हो? (चाय, दूध, काफी, कोक, बटर मिल्क)
3. तुम क्या-क्या पढ़ते/पढ़ती हो? (कहानी, कविता, कामिक्स, गणित)
4. तुम टीवी में क्या-क्या देखते/देखती हो? (कार्टून, समाचार, सीरियल)

शिक्षण संकेत

* अन्य क्रियाओं का भी अभ्यास कराएँ, जैसे : **दौड़ना, खाना, उठना, ब्रुश करना, नहाना** आदि।
* प्रश्नों के उत्तर छात्रों और छात्राओं दोनों से अलग-अलग प्राप्त करें।

पंद्रहवाँ पाठ

पेड़ हमें देते हैं छाया,
पेड़ हमें देते हैं फल,
पेड़ हमें देते ऑक्सीजन,
पेड़ बुलाते हैं बादल।

पेड़ हमें देते हैं लकड़ी,
कुरसी-मेज़ बनाते हम,
दरवाज़ों, खिड़कियों, झरोखों
से घर-बार सजाते हम।

पेड़ हमें देते हैं कागज़
तो हम लिखते-पढ़ते हैं,
पेड़ों के कारण ही जीवन
में हम आगे बढ़ते हैं।

पेड़ों पर आरी चलवाना
अपना गला कटाना है,
हम को तो पेड़ों के कटने
का दस्तूर घटाना है।

बालस्वरूप 'राही'

शब्दार्थ

आक्सीजन	:	प्राणवायु, शुद्ध हवा
झरोखा	:	छत से लगा हुआ रोशनदान
आरी	:	धारदार औजार, जिससे लकड़ी काटी जाती है
दस्तूर	:	रिवाज़, प्रथा

भावार्थ

इस कविता में कवि हमें यह बताना चाहता है कि पेड़ हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। पेड़ों से हमें छाया मिलती है, फल मिलते हैं और ऑक्सीजन मिलती है। पेड़ों से हमें लकड़ी भी मिलती है। लकड़ी से मेज़-कुरसी और तरह-तरह की चीजें बनती हैं। हम जिस कागज़ पर लिखते हैं, वह भी पेड़ों से ही बनता है। हमारे जीवन के लिए पेड़ बहुत आवश्यक है। इस कविता में यह सुझाया गया है कि ऐसे उपयोगी पेड़ों को हम काटें नहीं, बल्कि उनकी रक्षा करें।

सोलहवाँ पाठ

सरकस

शिक्षण बिंदु

नित्य वर्तमान : -ता हूँ, -ता है, -ती है, -ते हैं, -ती हैं।

प्रदीप : राघव! तुम्हें मालूम है कि रामलीला मैदान में सरकस चल रहा है।

राघव : अच्छा! मैं तो नहीं जानता हूँ। सरकस कितने बजे शुरू होता है प्रदीप ?

प्रदीप : शाम को साढ़े पाँच बजे।

राघव : सरकस में क्या-क्या होता है?
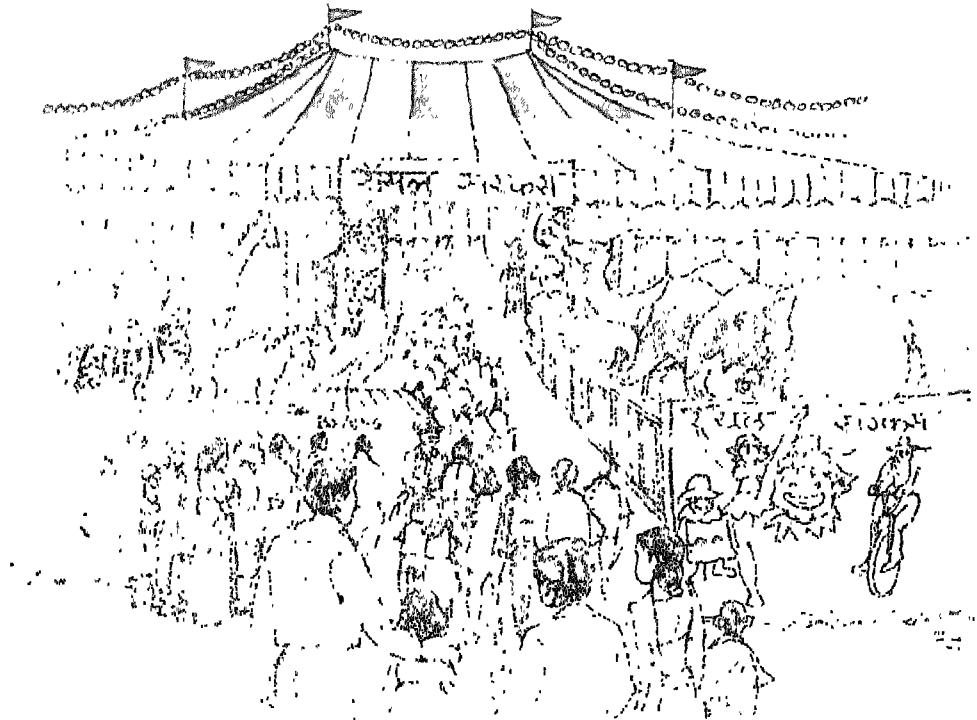
प्रदीप : सरकस में तरह-तरह के खेल दिखाए जाते हैं। उसमें बहुत से जानवर होते हैं, जैसे : हाथी, शेर, भालू, घोड़े, कुत्ते आदि। जोकर भी होते हैं। वे रंग-बिरंगे कपड़े पहने होते हैं।

राघव : सरकस में शेर क्या करते हैं?

प्रदीप : शेर खेल दिखाते हैं। शेरों के साथ एक रिंग मास्टर होता है। उसके हाथ में एक लंबा चाबुक होता है। वह चाबुक फटकारता है तो शेर स्टूलों पर खड़े हो जाते हैं।

राघव : हाथी क्या करते हैं ?

प्रदीप : हाथी नाच दिखाते हैं। स्टूल पर बैठते हैं और सूँड़ उठाकर नमस्ते करते हैं। कुत्ते एक लंबी गाड़ी खींचते हैं।

राघव : और जोकर क्या करते हैं प्रदीप ?

प्रदीप : जोकर लोगों को हँसाते हैं।

राघव : सरकस में और क्या होता है ?

प्रदीप : बहुत कुछ होता है। लड़कियाँ साइकिल चलाती हैं, एक पहिए वाली साइकिल।

राघव : एक पहिए वाली साइकिल! वह कैसी होती है?

प्रदीप : उसमें एक ही पहिया होता है और एक छोटी सी गद्दी होती है। सरकस में बहुत मज़ा आता है।

राघव : प्रदीप, मैं भी सरकस देखना चाहता हूँ।

प्रदीप : तब चलो, कल ही चलते हैं। माँ और शीला को भी ले चलते हैं।

राघव : तो ठीक है, फिर कल मिलते हैं।

अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

सरकस	जानवर	फटकारना	मैदान	शैतान
तैनात	रंगीन	रंग-बिरंगे	नमस्ते	सूँड़

2. पढ़ो और समझो

पुल्लिंग			स्त्रीलिंग		
मैं		गाता हूँ।	मैं		गाती हूँ।
तुम		गाते हो।	तुम		गाती हो।
वह		गाता है।	वह		
राम	गाना		सीता	गाना	गाती है।
हम			हम		
आप		गाते हैं।	आप		गाती हैं।
वे			वे		
पिताजी			माताजी		

3. पढ़ो, समझो और बोलो

1. मेरी माताजी सवेरे छह बज़े स्नान करती हैं।
2. मेरे पिताजी सुबह सात बज़े सैर करने जाते हैं।
3. मेरी नानीजी सवेरे चार बज़े पूजा करती हैं।
4. मेरा भाई रात को देर तक पढ़ता है।
5. मेरे चाचाजी शाम को घूमने जाते हैं।

शिक्षण संकेत

* अध्यापक समय बोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए **सुबह सात बज़े, दोपहर दो बज़े, रात दस बज़े** आदि का मौखिक अभ्यास कराएं।

4. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में दिए शब्दों की सहायता से दो

1. तुम्हारे चाचा कहाँ काम करते हैं? (स्कूल में)

   ----

2. तुम्हारे बड़े भाई दफ्तर से कब लौटते हैं? (साढ़े पाँच बजे)

   ----

3. तुम्हारे मामाजी कहाँ रहते हैं? (हैदराबाद में)

   ----

4. तुम्हारी बहन कहाँ पढ़ती है? (जवाहर नवोदय विद्यालय में)

   ----

5. तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं? (स्कूल में पढ़ाना)

   ----

5. नमूने के अनुसार वाक्य बदलकर बोलिए

नमूना
तुम्हारे चाचाजी की क्या रुचि है? (क्रिकेट खेलना)
मेरे चाचाजी क्रिकेट **खेलते हैं।**

1. तुम्हारी बहन की क्या रुचि है? (गाना सीखना)
2. तुम्हारी माताजी की क्या रुचि है? (कढ़ाई करना)
3. तुम्हारे नानाजी की क्या रुचि है? (कहानी लिखना)
4. तुम्हारे भाई की क्या रुचि है? (शतरंज खेलना)

शिक्षण संकेत

* रिश्ते-नाते के शब्दों में **दादा-दादी, नाना-नानी, माताजी-पिताजी, चाचा-चाची, मामा-मामी, भाई-भाभी, जीजा-दीदी** को अभ्यास में स्थान दें।

6. घड़ी देखकर प्रश्नों के उत्तर दो

क. 1. तुम स्कूल कब पहुँचते हो?

----

2. गणित की कक्षा कितने बजे शुरू होती है?

----

3. स्कूल की छुट्टी कब होती है?

ख. **मिलान करो**

आप   स्कूल कब पहुँचते हो?

खाना कितने बजे खाती हो?

तुम   गाना कहाँ सीखती हैं?

टहलने कब जाते हैं?

7. नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो

> **नमूना**
>
> **लड़के** खेल **दिखाते** हैं।
>
> **लड़कियाँ** खेल **दिखाती** हैं।

1. लड़कियाँ साइकिल चलाती हैं।
   लड़के ------------------
2. एक जोकर लोगों को हँसाता है।
   सभी जोकर--------------

3. आदमी नाचते हैं।
   औरतें -------------------
4. छात्रा गाना गाती है।
   छात्राएँ -------------------

8. प्रश्नों के उत्तर दो

1. सरकस कहाँ चल रहा है?
2. सरकस में हाथी क्या करता है?
3. सरकस में जोकर क्या करता है?
4. सरकस की साइकिल कैसी होती है?
5. सरकस में कौन-कौन से जानवर होते हैं?

अनुकार्य

सभी विद्यार्थी अपने तथा अपने परिवार के सदस्यों की आदत के बारे में चार-चार वाक्य लिखें, जैसे :

1. मेरे चाचा क्रिकेट खेलते हैं।
2. मेरी बहन गाना सीखती है।
3. मेरी माँ कढ़ाई करती है।
4. मेरे नाना कहानियाँ लिखते हैं।
5. मेरा भाई जूड़ो-कराटे सीखता है, आदि।

सत्रहवाँ पाठ

मदारी का तमाशा

शिक्षण बिंदु

सामान्य वर्तमान-
रहा है, रहे हैं, रही है, रहा हूँ।

मोहन और सुषमा अपने घर के सामने खड़े हैं। वे आपस में बातें कर रहे हैं। तभी उन्होंने एक मदारी को आते हुए देखा। मोहन ने खुश होकर सुषमा से कहा- सुषमा, इधर आओ। देखो मदारी आ रहा है।
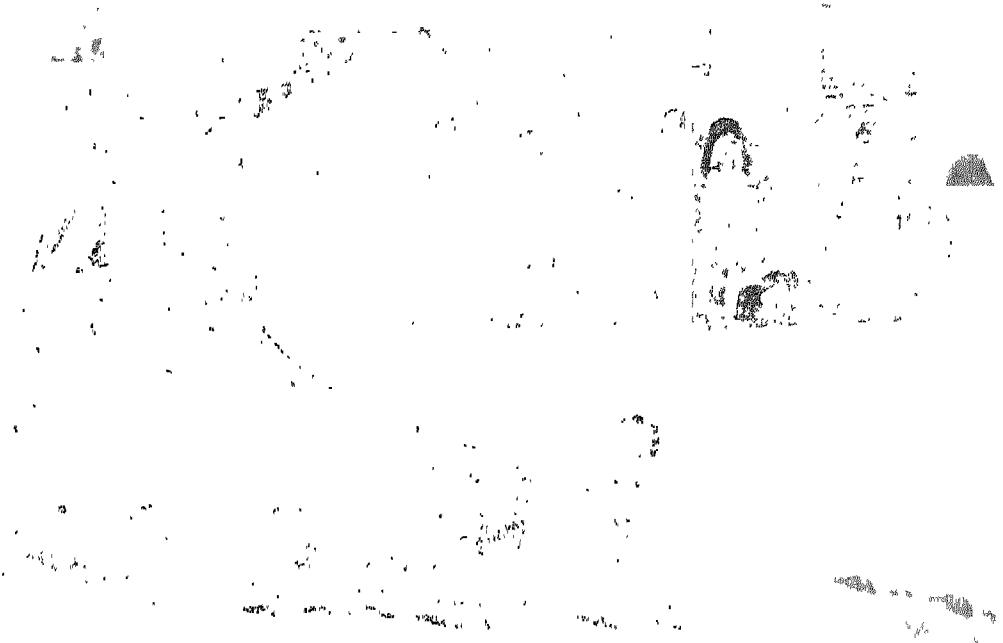
उसके साथ एक लड़की है। बंदर और बंदरिया भी हैं। मदारी के हाथ में डुगडुगी है। यह देखकर सुषमा भी खुश हो गई और बोली- मोहन, वह देखो लड़की के हाथ में बाँसुरी भी है। और देखो बंदर के सिर पर लाल टोपी है। मदारी के कंधे पर एक झोला लटक रहा है।

मोहन ने सुषमा को बताते हुए कहा- तुमने देखा सुषमा, बंदर कितने मज़े से मदारी के आगे-आगे चल रहा है और बंदरिया उसके पीछे-पीछे चल रही है। उस लड़की को देखो, वह मदारी के साथ-साथ चल रही है। सुषमा ने ताली बजाते हुए कहा- अरे मोहन देखो, मदारी तमाशा दिखाना शुरू कर रहा है। लड़कियाँ भी तमाशा देख रही हैं। सुषमा भी खुश होकर बोली - मोहन देखो, मदारी डुगडुगी बजा रहा है और बंदरिया कैसे ठुमक-ठुमक कर नाच रही है। मोहन भी उछल पड़ा और बोला देखो सुषमा, बंदरिया के पैर के घुँघरू भी बज रहे हैं और सुनो लड़की कितना अच्छा गाना गा रही है। सुषमा बोली- मोहन, मदारी का खेल तो बड़ा मज़ेदार है। देखो सब बच्चे कितने खुश हैं। हँस रहे हैं और तालियाँ बजा रहे हैं।
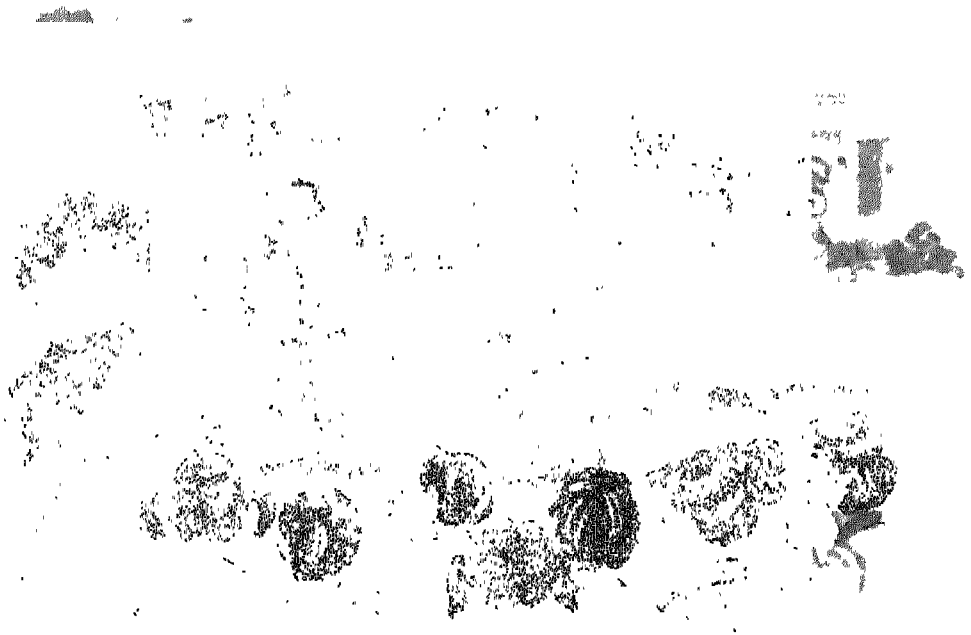
अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

मदारी बंदर बंदरिया डुगडुगी बाँसुरी सिर

टोपी कंधा झोला तमाशा हाथ घुँघरू

बच्चा तालियाँ खेल देखना गाना बजना

बजाना नाचना नचाना हँसना समाप्त

के साथ-साथ, के हाथ में, के सिर पर, के कंधे पर,

के आगे आगे, के पीछे-पीछे, के हाथ में।

2. पढ़ो और समझो

पुल्लिंग			स्त्रीलिंग		
मैं		रहा हूँ।	मैं		रही हूँ।
तुम		रहे हो।	तुम		रही हो।
वह			वह		
राम	पुस्तक पढ़	रहा है।	गीता	पुस्तक पढ़	रही है।
हम			हम		
आप		रहे हैं।	आप		रही हैं।
वे			वे		
पिताजी			माताजी		

3. नमूने के अनुसार वाक्य बदलो

नमूना

राघव **रोज़** स्कूल **जाता है।** (अभी) राघव **अभी** स्कूल नहीं **जा रहा है।**

रघु प्रतिदिन दूध **पीता है।** (इस समय) रघु **इस समय** चाय **पी रहा है।**

1. वे **रोज़** बाजार जाते हैं। (अभी)
2. हम **प्रतिदिन** कसरत करते हैं। (इस समय)
3. मेरा भाई **रोज़** यहाँ आता है। (अभी)
4. तुम **रोज़** कलम से लिखते हो। (इस समय)
5. गीता **प्रतिदिन** गाना गाती है। (इस समय)

4. नमूने के अनुसार वाक्य बनाओ

नमूना

लड़की------------------ । (चल)

लड़की **चल रही** है।

1. बंदरिया-------------- । (नाच)
2. बच्चे ----------------- । (हँस)
3. सब्जीवाला------------। (जा)
4. रमा गाना------------- । (गा)
5. मेरा भाई ------------ । (पढ़)
6. शीला यहाँ----------- । (आ)

5. चित्र को देखकर रहा हूँ, रहा है, रही है, रहे हैं, आदि सहायक क्रियाओं से पाँच वाक्य बनाओ, जैसे

सूरज चमक **रहा है।**
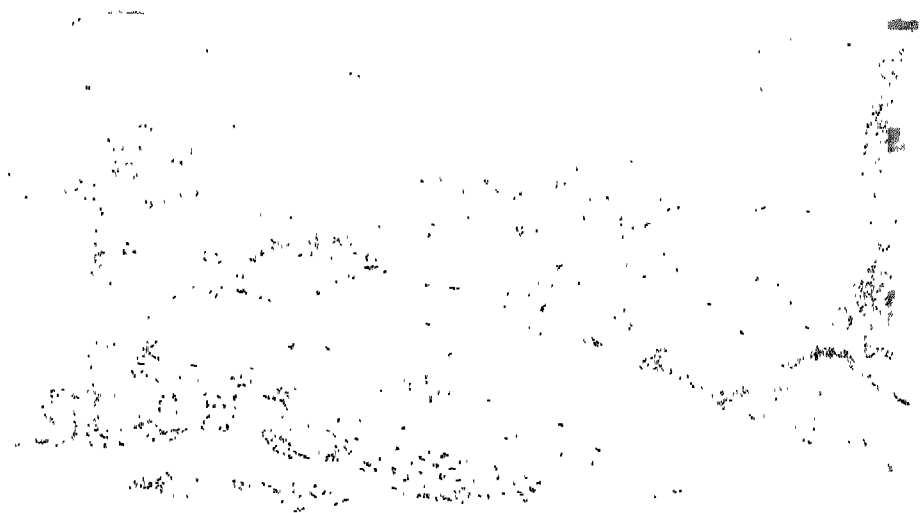
6. प्रश्नों के उत्तर दो

1. मदारी के साथ कौन है?
2. बंदर के सिर पर कैसी टोपी है?
3. बच्चे क्या देख रहे हैं?
4. कौन नाच रही है?
5. लड़कियाँ क्या कर रही हैं?

अनुकार्य

कक्षा में उपलब्ध सामग्री जैसे : **पंखा, खिड़की, दरवाजा, घड़ी, कलम** आदि की ओर संकेत करके संवाद वाक्य बनवाएँ, जैसे : **यह पंखा चल रहा है। वह पंखा नहीं चल रहा है।** आंगिक अभिनय द्‌वारा अध्यापक शिक्षण बिंदु का अभ्यास कराएँ, जैसे : एक विद्‌यार्थी हाव-भाव द्‌वारा **(बिना बोले) लिखना, पीना, दौड़ना, डराना** आदि व्यापार अभिनीत करे और शेष विद्‌यार्थी उसे देखकर वाक्य में बदल कर बोलें।

अठारहवाँ पाठ

माँ

मानव हमें बनाया माँ ने
जीना हमें सिखाया माँ ने
अपने तन-मन से, प्राणों से
सारा जगत बनाया माँ ने।
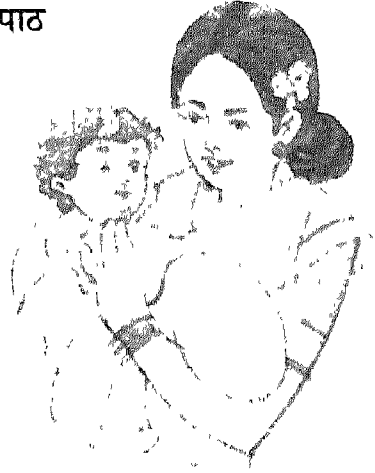
वह जननी है, वह निर्माता
वह दुखहरणी, है सुखदाता
माँ का आँचल बहुत दिव्य है
बरसों दूध पिलाया माँ ने।

हँसकर कष्ट अकेले सहती
नहीं किसी से वह कुछ कहती
पाला - पोसा स्नेह हमें दे
सदा खिलाकर खाया माँ ने।

मंदिर, मस्ज़िद, ध्यान, नाम, जप
माँ का आदर सर्वश्रेष्ठ तप
वही विधाता, ईश्वर है वह
सुख की गोद सुलाया माँ ने।

कविता वाचक्नवी

शब्दार्थ

जननी	:	माँ, निर्माता, निर्माण करने वाली,
दुख हरणी	:	दुख हरने वाली
सुखदाता	:	सुख देने वाली
दिव्य	:	महान
कष्ट	:	दुख, तकलीफ़
स्नेह	:	प्रेम, ममता
ध्यान-नाम, जप	:	पूजा की विधियाँ
सर्वश्रेष्ठ	:	सबसे अच्छा
तप	:	तपस्या
विधाता	:	भाग्य बनाने वाला
तनमन से	:	जी जान से

भावार्थ

इस कविता में माँ की ममता और उसके त्याग की बात की गई है। माँ हमें मनुष्य बनाती है। अनेक दुख सहकर वह अपनी संतान को सुखी बनाती है । इसीलिए किसी भी पूजा से, किसी भी ईश्वर से माँ बड़ी है।

इस कविता के भाव को धरती माँ और भारत माता से जोड़कर भी समझा जा सकता है । धरती भी हमें अन्न देने के लिए अनेक कष्ट सहती है। हमारी भूमि भी हमारे लिए माँ की तरह ही पूजनीय है। इसीलिए मातृभूमि की पूजा या अपने देश के प्रति प्रेम सारी पूजाओं से बढ़कर है।

उन्नीसवाँ पाठ

ईश्वरचंद्र

शिक्षण बिंदु

सामान्य भूत : था, उतरा, आया, बोला

ईश्वरचंद्र विद्यासागर प्रसिद्ध विद्वान और समाज सुधारक थे। वे बंगाल के थे। बंगाल में उनकी बहुत इज्ज़त थी। एक दिन एक युवक उनसे मिलने उनके गाँव मिदनापुर आया। वह रेलगाड़ी से स्टेशन पर उतरा उसके पास एक सूटकेस था। स्टेशन पर कुली नहीं था। वह युवक गुस्से से बोला, "यह अजीब स्टेशन है? यहाँ एक भी कुली नहीं है।" उसी गाड़ी
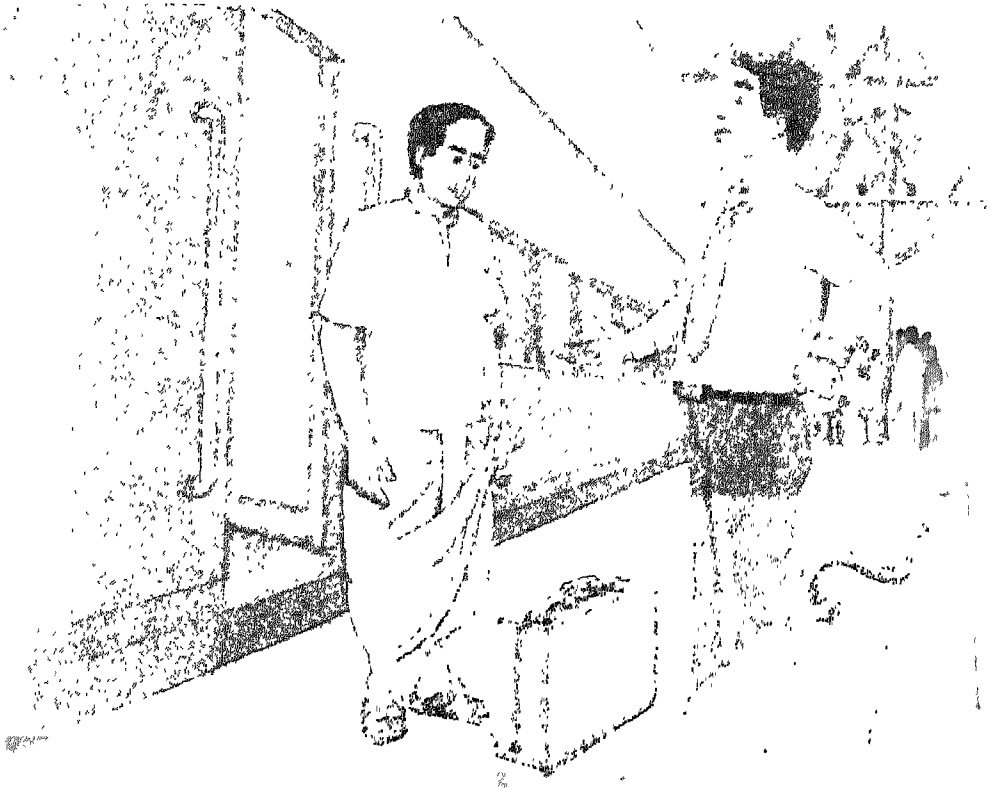
से एक और आदमी उतरा। वह बहुत सादी पोशाक में था। वह आधी बाँह का कुरता–धोती और चप्पल पहने था। वह आदमी युवक के पास आया और बोला "क्या बात है भाई?" युवक ने कहा, "इस स्टेशन पर कुली नहीं है। मेरे पास यह सामान है। तब वह आदमी बोला, "लाइए मैं आपका सामान उठा लूँ।"

युवक स्टेशन से बाहर आया और उस आदमी से बोला, "ये लो पैसे" उस आदमी ने कहा, "मुझे पैसे नहीं चाहिए।" वहाँ कई बैलगाड़ियाँ खड़ी थीं। युवक एक बैलगाड़ी में बैठा।

दूसरे दिन सवेरे वह युवक ईश्वरचंद्र के घर पहुँचा। वहाँ वही आदमी मौज़ूद था जिसने कल उसका सामान उठाया था। युवक बोला, "क्या विद्यासागर जी यहीं रहते हैं?" जवाब मिला, "जी हाँ, आइए अंदर बैठिए।" युवक ने पूछा 'विद्यासागर जी कहाँ हैं?"

"मैं ही विद्यासागर हूँ।" जवाब मिला।

युवक को बहुत शर्म आई। उसने विद्यासागर जी से माफी माँगी और कहा कल मुझसे बहुत भूल हुई। अब मैं समझ गया कि कोई काम बड़ा या छोटा नहीं होता। अपना काम खुद करना चाहिए।

---

* अध्यापक विद्यार्थियों को यह समझाएं कि **आदरार्थक प्रयोग** होने पर **क्रिया बहुवचन** में परिवर्तित हो जाएगी तथा **सर्वनाम भी बहुवचन** में होगा।

अभ्यास

1. पढ़ो ओर बोलो

ईश्वरचंद्र	विद्यासागर	मिदनापुर	युवक	सूटकेस	स्टेशन
कुली	पोशाक	कुरता	धोती	गुस्सा	धन्यवाद
शर्म	भूल	चप्पल	जवाब	माफ़ी	सामान
विद्वान	समाज सुधारक	सादा	मौजूद	बैलगाड़ी	इंजन

2. तालिका में से शब्द चुनकर वाक्य बनाओ

क.

		बाज़ार	
मैं	आज	स्कूल	गया।
	कल	अस्पताल	
	परसों	चिड़ियाघर	
		मंदिर	

		बाज़ार	
मैं	आज	स्कूल	
	कल	अस्पताल	गई।
	परसों	चिड़ियाघर	
		मंदिर	

ख.

मैं		बाज़ार	गया था।
	आज	स्कूल	
हम	कल	अस्पताल	
तुम	परसों	चिड़ियाघर	गए थे।
आप		मंदिर	

मैं		बाज़ार	गई थी।
	आज	स्कूल	
हम	कल	अस्पताल	गईं थीं।
तुम	परसों	मंदिर	
आप			

3. नमूने के अनुसार कोष्ठक में से शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो

क. **नमूना**

राम कुर्सी पर.... है।   राम कुर्सी पर **बैठा** है।

(बैठा, बैठे, लेटे, खड़े, खड़ी)

1. श्री निवास जी बिस्तर पर --------- हैं।
2. माताजी कार के पास-------------- हैं।
3. बंदर छत पर--------------------- है।
4. कुछ बच्चे भी वहाँ---------------- हैं।
5. तुम यहाँ क्या ------------------- हो?

ख. **नमूना**

राघव **अभी** कमरे में बैठा है।   राघव **पहले से** कमरे में बैठा था।

1. रहमान इस समय दरवाज़े पर खड़ा है।

   ----

2. सलमा अभी कुरसी पर बैठी है।

   ----

3. अकबर अभी चारपाई पर लेटा है।

----

4. मोहन इस समय पेड़ के नीचे बैठा है।

----

5. शीला अभी पेड़ के नीचे खड़ी है।

ग. **नमूना**

गाड़ी प्लेटफॉर्म पर **खड़ी होती** है। गाड़ी प्लेटफॉर्म पर **खड़ी हुई** है।

1. फूलवाली वहाँ खड़ी होती है।--------------------
2. सब्जीवाला गली में खड़ा होता है----------------
3. दूधवाला दरवाजे पर खड़ा होता है। -------------
4. बस गली में खड़ी होती है। ---------------------
5. रूपा लाइन में खड़ी होती है। ------------------

4. कैलेंडर देख कर नमूने के अनुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति करो

नमूना

पंद्रह तारीख को --------है।

पंद्रह तारीख को **रविवार** है।

1. बीस तारीख को --------------- है।
2. ---------------को एक तारीख है।
3. पच्चीस तारीख को------------- है।
4. -------------- को तीस तारीख है।
5. दूसरा शनिवार -------तारीख को है।

मार्च

रविवार	1	8	15	22	29
सोमवार	2	9	16	23	30
मंगलवार	3	10	17	24	31
बुधवार	4	11	18	25	
बृहस्पतिवार	5	12	19	26	
शुक्रवार	6	13	20	27	
शनिवार	7	14	21	28	

5. प्रश्नों के उत्तर दो

1. ईश्वरचंद्र विद्यासागर कौन थे?
2. युवक का सामान उठाने वाले कौन थे?
3. स्टेशन के बाहर युवक किस गाड़ी में बैठा?
4. दूसरे दिन युवक ने विद्यासागर से मिलने पर क्या कहा?
5. ईश्वरचंद्र विद्यासागर वाले पाठ से तुमने क्या सीखा?

बीसवाँ पाठ

तोड़ो नहीं, जोड़ो

शिक्षण बिंदु

1. सामान्य नित्य भूत : -ता था/-ते थे, -ती थी/-ती थीं
2. संयुक्त क्रिया प्रयोग : समझ गया, आ गया
3. 'ने' संरचना का प्रयोग

अंगुलिमाल एक डाकू था। वह जंगल में रहता था। वह लोगों को मार देता और उनकी उँगलियाँ काट लेता था। वह उन उँगलियों की माला बनाकर पहनता था। इसलिए लोग उसे अंगुलिमाल कहते थे। सभी लोग उससे बहुत डरते थे और जंगल में नहीं जाते थे।

एक बार भगवान बुद्ध उस जंगल में आए। लोगों ने उन्हें अंगुलिमाल के बारे में बताया और उनसे प्रार्थना की, "आप यहाँ से चले जाइए।"

भगवान बुद्ध ने लोगों की बातें सुनीं पर वे डरे नहीं। वे जंगल में ही रहे।

अंगुलिमाल को इसका पता चला। उसे बहुत गुस्सा आया। वह बुद्ध के पास आया। भगवान बुद्ध ने मुस्कराकर प्यार से उसका स्वागत किया। यह अंगुलिमाल के लिए एक नई बात थी।

भगवान बुद्ध ने उससे कहा, "भाई! सामने के पेड़ से चार पत्ते तोड़ लाओ।" अंगुलिमाल ने पत्ते तोड़े और ले आया। बुद्ध ने कहा, "अब एक काम और करो। जहाँ से इन पत्तों को तोड़ा है, इन्हें वहीं लगा आओ।"

अंगुलिमाल बोला- "यह कैसे हो सकता है?" बुद्ध ने कहा, "तुम जानते हो कि जो तोड़ लिया वह जुड़ता नहीं। फिर तुम तोड़ने का काम क्यों करते हो? लोगों की उँगलियाँ क्यों काटते हो?"

अंगुलिमाल बुद्ध की बात समझ गया और उनकी शरण में आ गया। उसने लोगों को मारना छोड़ दिया।

अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

जोड़ो	तोड़ो	छोड़ो	डर	डोर	निडर
बुद्ध	शुद्ध	युद्ध	भगवान	पकवान	धनवान
गुस्सा	हिस्सा	किस्सा	शरण	चरण	हिरण
पत्ता	गत्ता	डाकू	प्रार्थना	जंगल	स्वागत

2. पढ़ो और समझो

आना × जाना

हँसना × रोना

जोड़ना × तोड़ना

3. नमूने के अनुसार वाक्य बदलो

नमूना

पहले मैं गाँव में रहता **था**।

अब मैं शहर में रहता **हूँ**।

1. पहले राघवन फुटबाल खेलता था। (क्रिकेट)

   ----

2. पहले सुषमा गाना सीखती थी। (नृत्य)

   ----

3. पहले वे चाय पीते थे। (दूध)

   ----

4. पहले हम गाँव की पाठशाला में पढ़ते थे। (जवाहर नवोदय विद्यालय)

   ----

4. **कोष्ठक में दी गई क्रियाओं से नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो**

क. **नमूना**

(समझना - समझ जाना - समझ गया)

मैं आपकी बात समझ गया।

(हो गया/हो गई/हो गईं, बैठ गया/बैठ गई/बैठ गए, ठहर गया/ठहर गई, सींच गया/सींच गई, रह गया/रह गई)

1. मेरा काम अधूरा -------------------------
2. रसोइया खाना -------------------------
3. माली पौधों को -------------------------
4. वह रास्ते में ही -------------------------
5. सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी सीट पर ----
6. दीवाली की छुट्टियाँ --------------------
7. रंजना बीमार --------------------------

ख. नमूने के अनुसार वाक्य बदलो

नमूना

मैं पुस्तक **पढ़ता हूँ।** मैंने पुस्तक **पढ़ी।**

1. मैं पतंग उड़ाता हूँ। -------------------
2. मैं हिंदी सीखता हूँ। -------------------
3. शीला मिठाई खाती है। ---------------

शिक्षण संकेत

- अध्यापक विद्यार्थियों को समझाएँ कि **'जाना'** क्रिया का भूतकाल रूप **गया/गए/गई/गईं** होता है। अध्यापक **'ने'** संरचना के बारे में विद्यार्थियों को बताएँ कि इस संरचना में क्रिया का कर्म, लिंग, वचन के अनुसार रूप बदलता है।

ग. **नमूना**

मैं दूध **पीता** हूँ। मैंने दूध **पिया**।

1. मैं चित्र बनाता हूँ। ---------------
2. धोबी कपड़े धोता है। ---------------
3. रसोइया खाना बनाता है। ---------------

घ. **नमूना**

ललिता **रोज़** नौ बजे **सो जाती** है।

आज वह आठ बजे **सो गई**।

1. श्रीनिवासन रोज़ सात बजे स्कूल जाता है। (दस बजे)

   ----

2. अखबार रोज़ सुबह ग्यारह बजे आ जाता है। (बारह बजे)

   ----

3. सुनीता रोज़ सुबह नहाती है। (शाम को)

ङ. **नमूना**

बुद्ध ने अंगुलिमाल से कहा, "फूल **तोड़ लाओ**।"

अंगुलिमाल फूल **तोड़ लाया**।

1. माँ ने बेटी से कहा, "पानी भर लाओ।"

   --- ।

2. अध्यापक ने छात्र से कहा, "कुर्सी उठा लाओ।"

   --- ।

3. मालिक ने नौकर से कहा, "दीवार से चित्र उतार लाओ।"

----

4. भाई ने छोटी बहन से कहा, "यह गिलास धो लाओ।"

----

5. प्रश्नों के उत्तर दो

1. अंगुलिमाल कौन था?
2. डाकू को अंगुलिमाल क्यों कहते थे?
3. अंगुलिमाल को गुस्सा क्यों आया?
4. भगवान बुद्ध ने अंगुलिमाल का स्वागत कैसे किया?
5. भगवान बुद्ध ने अंगुलिमाल से क्या तोड़ लाने को कहा?

विद्यार्थी 1 से 20 तक की हिंदी गिनती (**एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह, सत्रह, अट्ठारह, उन्नीस, बीस**) का अभ्यास करें।

विद्यार्थी **सुबह, दिन में, दोपहर में, तीसरे पहर, शाम को, रात में** क्रिया विशेषणों का एक-एक वाक्य बनाकर अध्यापक को दिखाएँ।

इक्कीसवाँ पाठ

बादल पानी बरसाता है

बारिश के मौसम में देखो
उमड़-उमड़कर बादल आते।
गरज-गरजकर चमक-चमककर
रिमझिम-रिमझिम जल बरसाते।।

ये बादल कैसे बनते हैं ?
कैसे ये उपर उठते हैं ?
फिर कैसे बरसाते पानी ?
इसकी भी है एक कहानी।।
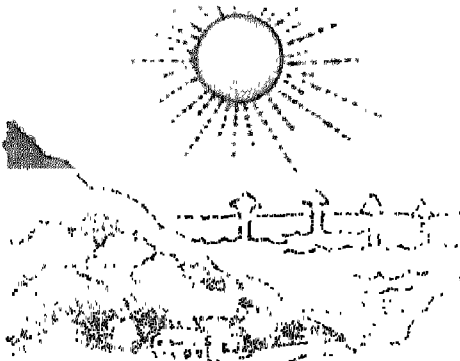
गरमी का मौसम आता है
चलती दिन भर गरम हवाएँ।
पानी की लहरों को छूकर
ये पानी को भाप बनाएँ ।।

किरणों की सीढ़ी पर चढ़कर
भाप गगन में है थम जाती ।
धीरे-धीरे, जमते-जमते
यही भाप बादल बन जाती ।
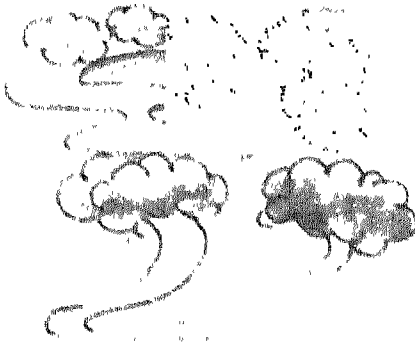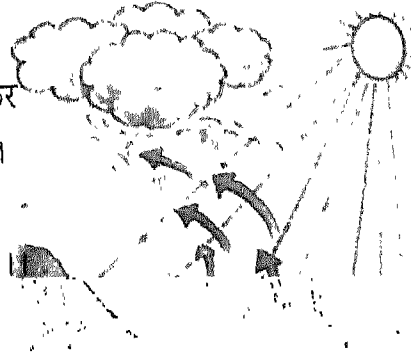
इस बादल को तेज हवाएँ
बहुत दूर तक ले जाती हैं।
नील गगन में ठंडक पाकर,
ये बादल को बरसाती हैं ।

रिमझिम-रिमझिम पानी बरसे
घना अँधेरा छा जाता है ।
चमचम-चमचम बिजली चमके
बादल पानी बरसाता है।।

सुरेश पांडेय

शब्दार्थ

बारिश	:	बरसात, वर्षा
उमड़-उमड़कर	:	चक्कर लगाकर
रिमझिम-रिमझिम	:	हल्की-हल्की बरसात, लगातार धीरे-धीरे बरसना
भाप	:	वाष्प, पानी को गरम करने से जो भाप ऊपर उठती है।
लहर	:	पानी की लहर, तरंग
गगन	:	आकाश, आसमान
नील गगन	:	नीला आकाश, नीले रंग का आसमान

भावार्थ

इस कविता में यह बताया गया है कि बरसात कैसे होती है ? गरम हवाएँ पानी को जब भाप बना देती हैं तो भाप ऊपर उठती है और धीरे-धीरे आकाश में जमने लगती है। यही भाप बादल का रूप ले लेती है। इन बादलों को तेज़ हवाएँ आकाश में बहुत ऊपर तक ले जाती हैं। नीले आकाश में जब उसे ठंडा वातावरण मिलता है तो वही बादल पानी के रूप में बरसने लगता है।
इस कविता में कवि ने पानी को भाप में बदलने, फिर ऊपर उठकर बादल के रूप में जमने, बहुत ऊपर तक बादलों के चक्कर काटने तथा फिर पानी के रूप में बरसने की पूरी प्रक्रिया का वर्णन किया है। इसमें कवि ने बरसात के मौसम की बारिश का वर्णन किया है।

बाईसवाँ पाठ

पत्र

शिक्षण बिंदु

हम गए हैं/हमने देखा

पता : - - - - - -

- - - - - - चेन्नई

तारीख - - - - - -
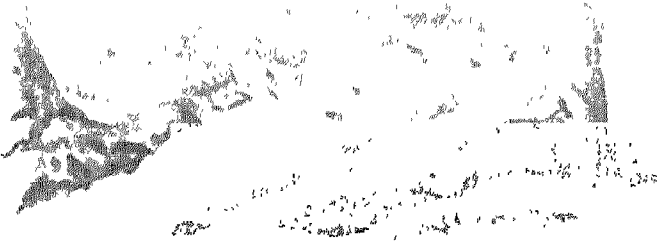
पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम ।

हम यहाँ सकुशल पहुँच गए हैं । हमारी यात्रा बहुत अच्छी रही। हमारे अध्यापकों ने हमारा बहुत ध्यान रखा। यहाँ मौसम अच्छा है। आज हमने 'स्नेक पार्क' देखा। हम 'बर्मा बाज़ार' और 'चाइना बाज़ार' भी घूमे। उसके बाद हम 'महाबलीपुरम्' गए। वहाँ हमने समुद्र और मंदिर देखा। कल हम 'मरीना बीच' जाएँगे। यहाँ हम बहुत खुश हैं, आप चिंता न करें। हम 25 तारीख को जयपुर पहुँच जाएँगे। आजकल चाचा जी यहाँ नहीं हैं। वे हैदराबाद गए हैं। वे सोमवार, 30 तारीख को आ रहे हैं।

माताजी को मेरा प्रणाम और राजू भैया को बहुत प्यार।

आपकी पुत्री

लता

(अंतर्देशीय पत्र)	टिकट
	4:00
सेवा मे	
श्री मोहन लाल	
1/20, छोटी सदरी	
चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)	
पिन - - - - - - -	

अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

पूज्य	राज्य	ज़्यादा	सकुशल
मौसम	मौसी	मौसमी	समुद्र
ध्यान	अध्यापक	अध्याय	मंदिर
पत्र	यंत्र	यात्रा	प्रणाम

2. पढ़ो और समझो

प्रणाम : पिताजी को प्रणाम ।
गुरुजी को प्रणाम ।
माताजी को प्रणाम।

नमस्कार : चाचाजी को नमस्कार ।
भैया को नमस्कार।

प्यार : छोटे भाई-बहनों को प्यार ।

3. तालिका के प्रत्येक कालम से एक-एक शब्द लेकर वाक्य बनाओ

<table>
<tr><td>मोहन
पीटर
रहमान</td><td rowspan="4">मुंबई
चेन्नई
पुणे</td><td>गया है</td></tr>
<tr><td>लीज़ा
राधा
लड़की</td><td>गई है</td></tr>
<tr><td>बच्चे
पिताजी</td><td>गए हैं ।</td></tr>
<tr><td>लड़कियाँ
माताजी</td><td>गई हैं</td></tr>
</table>

4. तालिका के प्रत्येक कालम से शब्द चुनकर वाक्य बनाओ

क.

<table>
<tr><td>मैंने
हमने</td><td rowspan="3">चेन्नई में
हैदराबाद में
केरल में</td><td rowspan="3">अजायबघर
सिनेमा
किला
समुद्र तट</td><td>देखा</td></tr>
<tr><td>तुमने
आपने</td><td>देखा ?</td></tr>
<tr><td>उसने
शीला ने
मोहन ने</td><td>देखा</td></tr>
</table>

ख. तालिका के प्रत्येक कालम से सही शब्द चुनकर वाक्य बनाओ

<table>
<tr><td>आज मैं (पुं.)</td><td rowspan="2">पेंसिल
किताब
कापी
रूमाल</td><td>नहीं लाया हूँ</td></tr>
<tr><td>आज मैं (स्त्री.)</td><td>नहीं लाई हूँ।</td></tr>
</table>

ग. नमूने के अनुसार वाक्य बदलो

> **नमूना**
> हम रोज़ बाज़ार **जाते हैं**।
> हम कल बाज़ार **गए**।

1. बच्चे रोज़ सुबह खेलने जाते हैं। --------------------------
2. शीला राज़ नौ बजे सोती है। --------------------------
3. सुरेश रोज़ सुबह पाँच बजे उठता है। --------------------------
4. वह रोज़ टहलने जाता है। --------------------------

5. नमूने के अनुसार उत्तर दो

> **नमूना**
> क्या तुम मेरी किताब **लाए** हो? (कॉपी)
> मैं किताब नहीं, कॉपी **लाया** हूँ।

1. क्या आप लोग मेरा गिफ्ट लाए हैं? (टाफी)
2. क्या तुम टिफ़िन में दोसा लाए हो? (पूरी)
3. क्या तुम अपनी गुड़िया लाई हो? (मोटर)
4. क्या आप मेरी फ्राक लाई हैं? (चप्पल)

6. प्रश्नों के उत्तर दो

1. यह पत्र कहाँ से आया है?
2. चेन्नई में कौन-कौन से दर्शनीय स्थल हैं?
3. महाबलीपुरम में क्या-क्या देखा?
4. चाचा जी कहाँ गए हैं?
5. चाचा जी वापस कब आ रहे हैं?

अनुकार्य

विद्यार्थी, मित्रों, परिवार के सदस्यों, सगे संबंधियों, रिश्तेदारों द्वारा भेजे गए पत्रों को पढ़ें, अलग-अलग प्रकार के संबोधनों और अभिवादनों पर ध्यान दें। विद्यार्थी अपने मित्र, चचेरे भाई-बहन को दीवाली, होली, ईद और क्रिसमस पर आने के लिए पत्र लिखें और लिफ़ाफ़ा तैयार करें।

तेईसवाँ पाठ

शेर और लोमड़ी

शिक्षण बिंदु

चाहता है/था
सकता है/था

एक बार कुछ शिकारी जंगल में घूम रहे थे। वे एक शेर पकड़ना चाहते थे। उन्होंने एक जगह एक बड़ा पिंजरा रख दिया और उस पिंजरे में एक बकरी को बाँध दिया। बकरी की आवाज सुनकर शेर वहाँ आया। वह पिंजरे में घुसा, तभी पिंजरा बंद हो गया। अब शेर बाहर नहीं निकल सकता था। वह पिंजरे में इधर-उधर घूमने लगा। तभी वहाँ एक लोमड़ी आई। शेर ने लोमड़ी को पुकारा और कहा-बहन, आओ, यहाँ आओ। मैं इस पिंजरे से बाहर निकलना चाहता हूँ। तुम इसे खोल दो। लोमड़ी बोली- महाराज ! मैं ऐसा नहीं कर सकती, आप बाहर निकलकर मुझे मार डालेंगे। मैं मरना नहीं चाहती। शेर ने लोमड़ी को भरोसा दिलाते हुए कहा- मैं तुम्हें नहीं मारूँगा। पिंजरा खोल दो। मैं तुम्हें इनाम भी दूँगा। लोमड़ी शेर की बातों
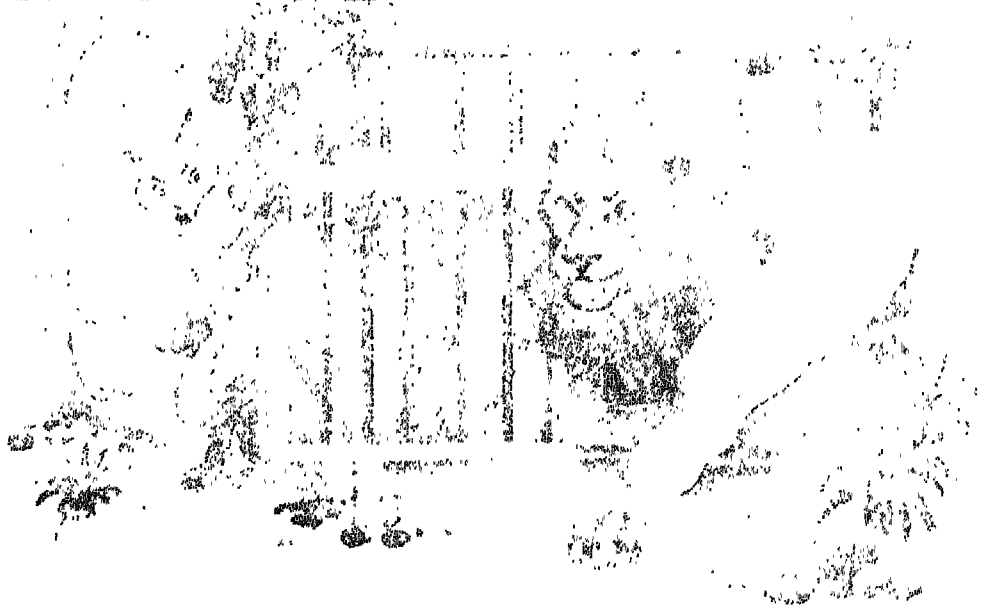
में आ गई और बोली- ठीक है। मैं पिंजरा खोलती हूँ लेकिन तुम मुझे मारना नहीं।

लोमड़ी ने पिंजरा खोल दिया। शेर बाहर निकल आया। बाहर निकलते ही उसने लोमड़ी को पकड़ लिया। लोमड़ी चिल्लाई-बचाओ, बचाओ। तभी वहाँ से एक आदमी जाते हुए दिखाई पड़ा। लोमड़ी ने उसे बुलाया-भाई, जरा यहाँ आओ। देखो मैंने इस शेर को बचाया है। अब यही मुझे मारना चाहता है। यह सुनकर आदमी को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा- तुमने शेर को बचाया, यह तो हो ही नहीं सकता। लोमड़ी ने पूरी कहानी बताते हुए कहा कि शेर इस पिंजरे में बंद था। इसने मुझे इनाम देने का लालच दिया और कहा कि पिंजरे से बाहर आने पर मुझे मारेगा नही। पर जब मैंने पिंजरा खोला तो इसने मुझे पकड़ लिया। अब यह मुझे मारना चाहता है। अब आप ही मुझे बचाइए। आदमी ने बड़ी चालाकी से शेर से कहा- क्या यह लोमड़ी सच बोल रही है? आप पिंजरे में बंद थे, यह मैं मान ही नहीं सकता। आप भला इस छोटे से पिंजरे में कैसे बंद हो सकते हैं? शेर ने कहा- लोमड़ी ठीक कहती है। लेकिन मैं इसे छोड़ूँगा नहीं क्योंकि मुझे भूख लगी है। फिर भी मैं पिंजरे में बंद होकर दिखा सकता हूँ। आदमी ने कहा- ठीक है।

शेर पिंजरे में चला गया। आदमी ने जल्दी से पिंजरे का दरवाज़ा बंद कर दिया। अब शेर कुछ भी नहीं कर सकता था, केवल पछता सकता था। लोमड़ी ने आदमी को धन्यवाद दिया और जंगल में चली गई।
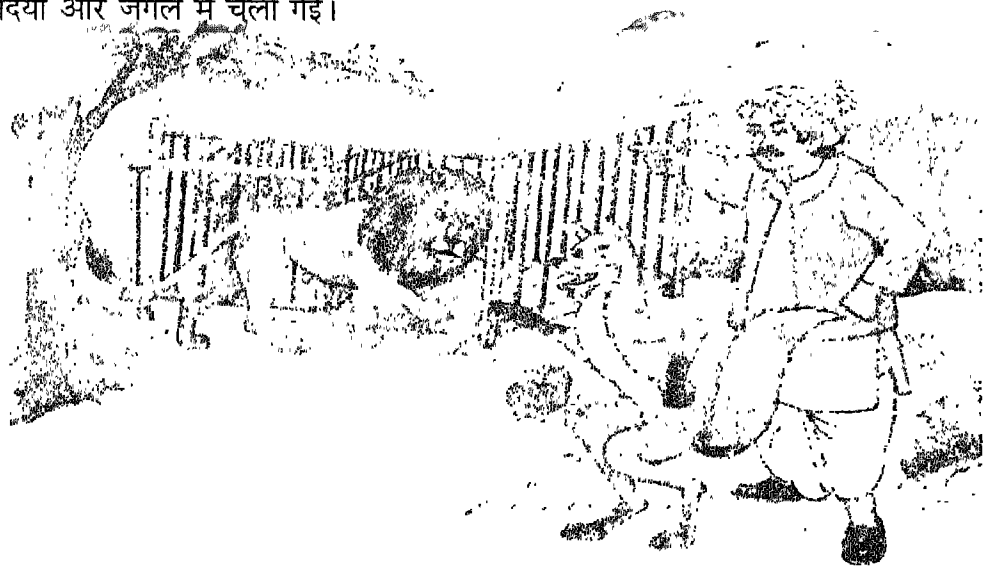
अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

शेर	पिंजरा	बकरी	लोमड़ी	दरवाज़ा
फैसला	इनाम	पकड़ना	सकना	चाहना
बाँधना	घुसना	पुकारना	खोलना	चिल्लाना
इधर-उधर	महाराज	भरोसा	भूख	धन्यवाद

2. पढ़ो और समझो

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मैं	पकड़ सकता हूँ।	पकड़ सकती हूँ।
तुम	पकड़ना चाहता हूँ। खोल सकते हो।	पकड़ना चाहती हूँ। खोल सकती हो।
वह	खोलना चाहते हो। घुस सकता है। घुसना चाहता है।	खोलना चाहती हो। घुस सकती है। घुसना चाहती है।
हम आप वे	चिल्ला सकते हैं। चिल्लाना चाहते हैं।	चिल्ला सकती हैं। चिल्लाना चाहती हैं।

3. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो

नमूना

वह............ । (हिंदी बोलना)

------> वह हिंदी **बोल सकता** है

(साइकिल चलाना, तस्वीर बनाना, गाना गाना, क्रिकेट खेलना, हिंदी पढ़ना, तैरना)

1. मैं ------------------------------------ ।
2. क्या तुम ---------------------------- ?
3. मेरे पिताजी---------------------------- ।
3. चाचीजी, क्या आप------------------ ?
5. हम लोग ---------------------------- ।
6. मेरी बहन ---------------------------- ।

4. नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो

नमूना
चीता तेज़ दौड़ सकता है, लेकिन कछुआ------ ।
चीता तेज **दौड़ सकता है,** लेकिन कछुआ **दौड़ नहीं सकता।**

1. चिड़ियाँ उड़ सकती हैं, लेकिन आदमी ----------------------- ।
2. आदमी बोल सकता है, लेकिन पशु ------------------------- ।
3. उल्लू रात को देख सकता है, लेकिन चमगादड़--------------- ।
4. चिड़ियाँ घोंसला बना सकती हैं, लेकिन बंदर----------------- ।
5. कोयल गा सकती है, लेकिन कौआ ------------------------- ।

5. कोष्ठक में से शब्द चुनकर नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो

नमूना
वह -------------- । (हिंदी सीखना)
वह हिंदी सीखना **चाहता है।**

(फिल्म देखना, सोना, शतरंज खेलना, विदेश जाना, संगीत सीखना, दूध पीना)

1. मैं --------------------------- । 4. मेरा भाई------------------- ।

2. हम लोग---------------------- । 5. क्या तुम ----- ------ ।
3. पिता जी, क्या आप---------- । 6. मेरी छोटी बहन ----------- ।

6. नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो

नमूना

मैं घर जाना चाहता था, लेकिन ------ ।

मैं घर जाना चाहता था, लेकिन **नहीं जा सकता।**

1. मैं मिठाई खाना चाहता था , लेकिन --------------- ।
2. वह फुटबाल खेलना चाहता था, लेकिन-------------- ।
3. बच्चे सिनेमा जाना चाहते थे, लेकिन -------------- ।
4. शीला साड़ी खरीदना चाहती थी, लेकिन------------- ।
5. हम सब किला देखना चाहते थे, लेकिन------------ ।

7. प्रश्नो के उत्तर दो

1. शेर को कौन पकड़ना चाहता था?
2. शेर किसकी आवाज सुनकर पिंजरे के पास आया?
3. पिंजरे को किसने खोला?
4. आदमी ने किसे बचाया?
5. लोमड़ी ने आदमी को धन्यवाद क्यों दिया?

अनुकार्य

विद्यार्थी आने वाली छुट्टियों में क्या करना चाहते हैं, इसकी चर्चा करें।

चौबीसवाँ पाठ

बढ़े चलो

वीर, तुम बढ़े चलो।
धीर, तुम बढ़े चलो।।

हाथ में ध्वजा रहे,
बाल-दल सजा रहे,
ध्वज कभी झुके नहीं,
दल कभी रुके नहीं।

वीर, तुम बढ़े चलो।
धीर, तुम बढ़े चलो।।

मेघ गरजते रहें,
मेघ बरसते रहें,
बिजलियाँ कड़क उठें,
बिजलियाँ तड़क उठें।

वीर, तुम बढ़े चलो।
धीर, तुम बढ़े चलो।।

सामने पहाड़ हो,
सिंह की दहाड़ हो,
तुम निडर, हटो नहीं,
तुम निडर, डटो वहीं।

वीर, तुम बढ़े चलो।
धीर, तुम बढ़े चलो।।

प्रात हो कि रात हो,
संग हो न साथ हो,
सूर्य से बढ़े चलो,
चंद्र से बढ़े चलो ।

वीर, तुम बढ़े चलो ।
धीर, तुम बढ़े चलो ।।

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

शब्दार्थ

वीर	:	वीर पुरुष, साहसी
धीर	:	धैर्यवान
ध्वजा	:	झंडा
निडर	:	जो किसी से नहीं डरता
डटो	:	पीछे मत हटो
कड़क-तड़क	:	बिजलियों के कड़कने की आवाज़
प्रात	:	सुबह

भावार्थ

यह एक प्रयाण गीत है। कवि कहता है कि हे वीर, धीर! तुम आगे बढ़ो। हाथ में राष्ट्रीय ध्वज लेकर बिना रुके बढ़ते रहो। चाहे सामने पहाड़ हो या सिंह गरज रहा हो, बिल्कुल डरो नहीं, डटकर सामना करो और आगे बढ़ो। चाहे बादल गरज रहे हों, बिजलियाँ कड़क रही हों, सुबह हो या रात, कोई साथ में हो या न हो, सूर्य और चंद्रमा के समान आगे बढ़ते रहो। इसमें कवि ने पक्के इरादे के साथ आगे बढ़ने की बात की है। लगातार चलने से मुश्किलें भी आसान हो जाती हैं।

पच्चीसवाँ पाठ

शिक्षण बिंदु

वेंकटेश : पिताजी, दशहरे की छुट्टियों में हम मैसूर जाएँगे ।

पिताजी : ठीक है। हम मैसूर चलेंगे। वहाँ हम दशहरा देखेंगे और वृंदावन गार्डन भी घूमेंगे ।

माताजी : आजकल तो रेलगाड़ी में बहुत भीड़ होगी।

पिताजी : तो क्या हुआ, हम पहले से टिकट खरीद लेंगे । तुम यात्रा की तैयारी करो। देखो सामान कम रखना। ज्यादा सामान से परेशानी होगी ।

माताजी : चार-पाँच दिन के लिए सबके कपड़े चाहिए । बिस्तर भी चाहिए। खाना, पानी सब कुछ चाहिए । फिर सामान कम कैसे हो सकता है?

(पिताजी रेलगाड़ी के टिकट खरीद लाए । माताजी और बच्चे यात्रा की तैयारी करने लगे।)

माताजी : बच्चो, अपने-अपने कपड़े लाओ। सूटकेस में रखें।

वेंकटेश : ये तौलिये और चादर कहाँ रखेंगे माँ ?

माताजी : इस बैग में रखेंगे और खाना दूसरे बैग में रखेंगे।

वेंकटेश : हम पानी का जग भी ले जाएँगे न?

गौरी : हाँ, ले जाएँगे। गाड़ी में पढ़ने के लिए कहानी की किताबें भी ले जाएँगे ।

वेंकटेश : यह कैमरा भी रख लो ।

गौरी : माँ हम घर की चाबी किसे देंगे ?

माताजी : मिसेज वर्मा को दे देंगे बेटी।

वेंकटेश : मैं सुबह टैक्सी ले आऊँगा, उसी से स्टेशन चलेंगे।

गौरी : तब तो हम आराम से स्टेशन पहुँच जाएँगे।

अभ्यास

1. पढ़ो और बोलो

छुट्टियाँ	वृंदावन गार्डन	भीड़	तौलिया	बिस्तर
घूमना	खरीदना	चाहिए	आराम से	चाबी

2. तालिका के प्रत्येक कालम से एक-एक शब्द लेकर वाक्य बनाओ

क.

		पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मैं	घर काम	जाऊँगा, करूँगा	जाऊँगी, करूँगी
तुम		जाओगे, करोगे	जाओगी, करोगी
वह		जाएगा, करेगा	जाएगी, करेगी
हम आप वे		जाएँगे, करेंगे	जाएँगी, करेंगी

ख.

वेंकटेश गौरी पिताजी माताजी लड़कियाँ	मैसूर दिल्ली	जाएगा जाएगी जाएँगे जाएँगी जाएँगी

3. नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो

नमूना

गोपाल दिल्ली ... **(जाना)**

गोपाल दिल्ली **जाएगा**।

1. मीरा दिल्ली ----------------- (जाना)
2. गणेश कैमरा ---------------- (लाना)
3. माताजी खाना -------------- (बनाना)
4. पिताजी टिकट ------------ (खरीदना)
5. बच्चे मैसूर ------------------ (जाना)

4. नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो

नमूना

सोहन, थोड़ी देर .... **(रुकना)**

सोहन, थोडी देर **रुक जाना**।

1. मोहन, स्कूल से जल्दी वापस -------------- (आना)
2. मैं बोलता हूँ, तुम ------------------------ (लिखना)
3. मीरा बाज़ार से एक किलो चीनी --------- (लाना)
4. पिताजी, यह बाक्स ऊपर ---------------- (रखना)

5. नमूने के अनुसार वाक्य पूरे करो

नमूना

हम कैमरा ... **(ले जाना)**

हम कैमरा **ले जाएँगे।**

1. मैं अभी टैक्सी ------------------------(ले आना)
2. वे सात बजे स्टेशन-----------------(पहुंच जाना)
3. शीला घर के लिए फल -------------- (दे जाना)

6. नमूने के अनुसार वाक्य बदलो

नमूना

मेले में रोज़ बहुत भीड़ **होती है।** कल मेले में बहुत भीड़ **होगी।**

1. इस शहर में रोज़ बहुत बारिश होती है। कल------------------------
2. कला भवन में रोज़ हिंदी नाटक होता है। कल ----------------------
3. यह दुकान रोज़ रात को नौ बजे बंद होती है। कल-----------------

7. प्रश्नों के उत्तर दो

1. वेंकटेश का परिवार कितने दिन के लिए मैसूर जा रहा है ?
2. गौरी पढ़ने के लिए क्या रखना चाहती है ?
3. वेंकटेश सुबह क्या ले आएगा ?
4. रेलगाड़ी का टिकट कौन खरीद कर लाया ?
5. वेंकटेश अपने साथ क्या ले जाना चाहता है ?

अनुकार्य

विद्यार्थी शैक्षिक टूर/पिकनिक पर जाने की योजना पर चर्चा करें और सभी विद्यार्थियों की राय लें।

किसी दर्शनीय स्थल या शहर के बारे में वर्णन करें।

छब्बीसवाँ पाठ

गायक गधा और चतुर सियार
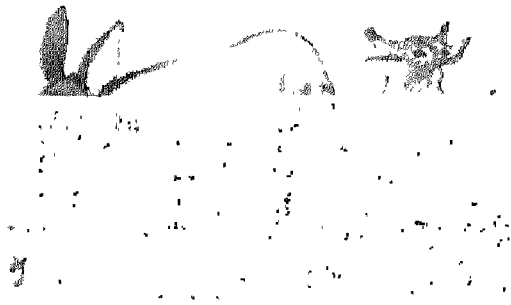
गधा और सियार दोस्त थे,
दोनों मिलकर रहते थे।

चाँदनी रात थी । त

घूमते-घूमते वे ककड़ी के
खेत के पास पहुँचे।
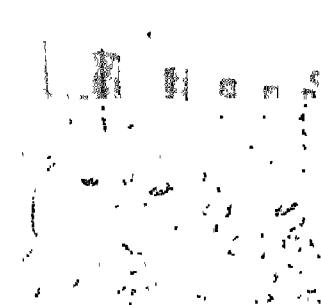
दोनों खेत में घु
ककड़ियाँ खाईं।
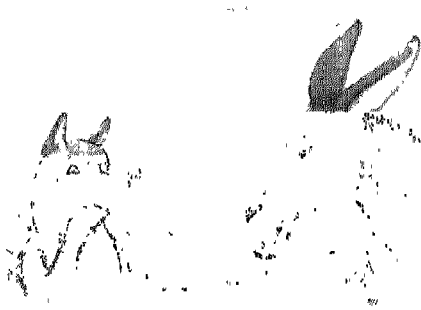
पेट भर गया तो गधा बहुत प्रसन्न हुआ।
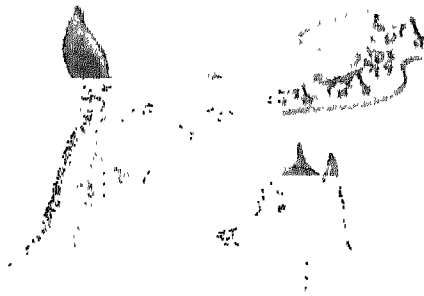
सियार ने गधे को समझाने की कोशिश की।

गधे ने सियार की बात नहीं मानी वह ज़ोर से गाने लगा।
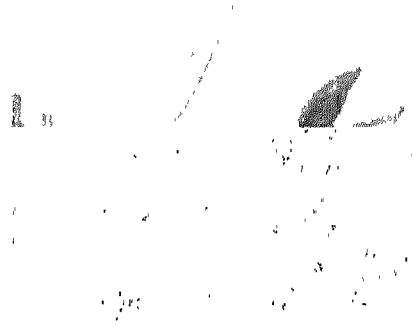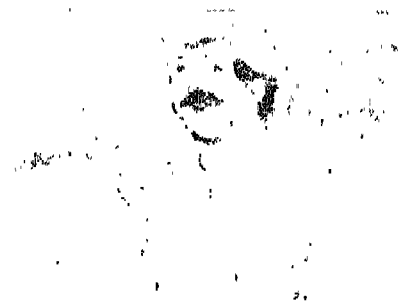
किसान आवाज़ सुनकर जाग गया।

किसान लाठी लेकर भागा आया।

चतुर सियार किसान को देखकर भाग खड़ा हुआ लेकिन गधा मिल गया।

किसान ने गधे पर खूब डंडे बरसाए।

फिर खेत में घुसा तो जान से मार दूँगा। कम्बख्त !

बेचारा गधा मार खाता रहा।
दूर खड़ा सियार यह देखता रहा।

चल फूट, भाग यहां से।
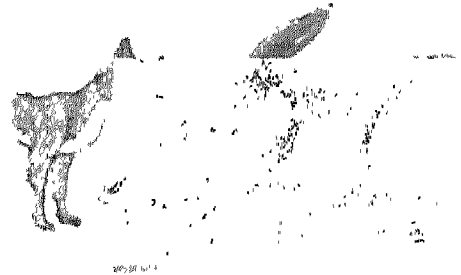
किसान ने गधे को मार-मारकर
खेत से बाहर खदेड़ दिया।

हाय ! मैं मर गया।
बहुत दर्द हो गया है।

गधा नीचे पड़ा-पड़ा कराह रहा था।
सियार उसके पास आया।

मैंने खतरे के बारे में तुम्हें
चेताया, लेकिन तुम नहीं माने।

सियार ने गधे को समझाया।

मैं तो सिर्फ़ अपनी खुशी बताना चाह
रहा था । क्या गाना गलत बात है ?
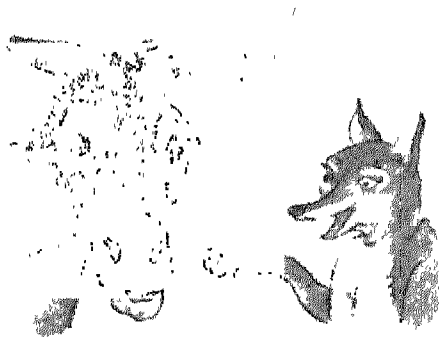
गधे ने अपनी सफ़ाई दी।
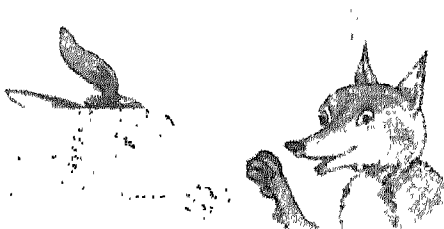
सियार ने उसे फिर समझाया।

गधे की समझ में आया कि
दूसरों की सलाह माननी चाहिए।

सत्ताईसवाँ पाठ

अब पछताने से क्या होगा ?

किसी गाँव में एक दंपति थे।
उनकी कोई संतान नहीं थी।
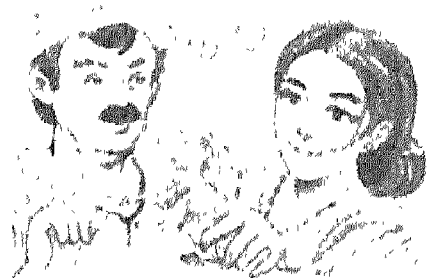
इसलिए उन्होंने एक नेवले को पाला।
वे उसे बहुत प्यार करते थे।

कुछ दिन बीते। उनके घर
पुत्र का जन्म हुआ।
दोनों पति-पत्नी बहुत खुश हुए।

स्त्री अपने बच्चे से बहुत प्यार करती
थी। वह अब नेवले पर कम ध्यान
देती थी।
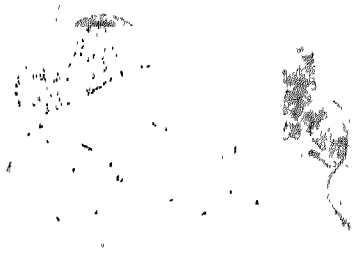
नेवला भी उदास रहता था
स्त्री कहती थी कि यह मेरे
बेटे से जलता है।
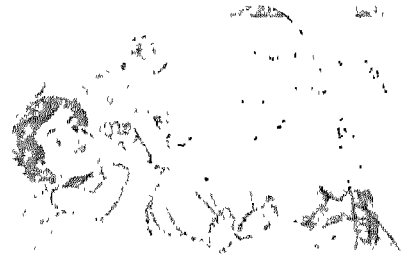
पति कहता था -जलन कैसी ?
ये दोनों ही हमारे बेटे हैं।

एक दिन पत्नी घड़ा लेकर कुएँ
से पानी भरने गई।

जाते-जाते उसने पति से कहा
कि बच्चे का ध्यान रखे । कहीं
नेवला उसका नुकसान न कर दे।

अरे, मैं तो भूल ही गया था, मुझे भी बाहर जाना है।

थोड़ी देर हुई। पति को अचानक कुछ काम याद आया।

उसने नेवले से कहा कि वह बच्चे का ध्यान रखे।
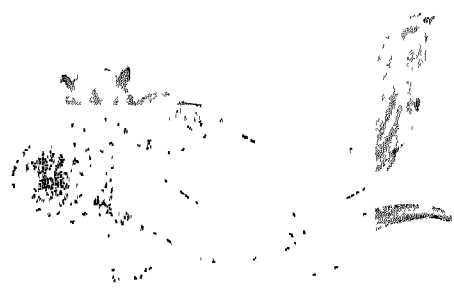
बच्चा पालने में सो रहा था। एक साँप पालने की तरफ बढ़ा।

नेवले ने साँप को मार डाला।

मॉ कितनी खुश होगी, मैंने भाई
को बचा लिया।
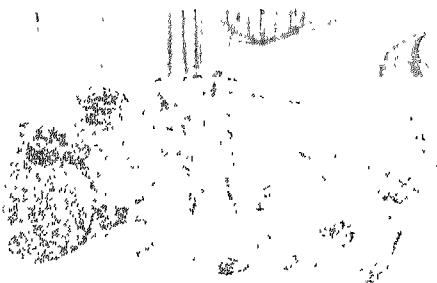
नेवला घर से बाहर आकर स्त्री
की प्रतीक्षा करने लगा। वह
बड़ा खुश था।

अरे पापी। तूने मेरे बेटे
को काट खाया।

स्त्री ने नेवले के मुँह में खून देखा तो
गुस्से में घड़ा फेंककर नेवले को
मार डाला।

हाय! यह मैंने क्या कर दिया। नेवले ने
तो सॉप को मारा था

वह घर में गई तो देखा कि साँप
मरा पड़ा है। बच्चा सोया हुआ है।

वह बैठी रोती रही, उसे बहुत दुःख
हुआ तभी उसका पति अंदर आया।

मैंने तो सोचा था कि नेवले ने मेरे बेटे को काट लिया है। मुझसे बड़ी गलती हो गई।

कोई भी काम सोच समझकर ही करना चाहिए। बाद में पछताने से कुछ नहीं हो सकता। अब नेवला ज़िंदा थोड़े ही हो सकता है।

पत्नी ने पति को पूरा किस्सा सुनाया और कहा कि मुझसे बड़ी गलती हो गई।

पति ने उसे समझाया कि हर काम सोच-समझकर करना चाहिए।

One of the reasons for leading to hearing-impairment is serious disease in a very early age. Information was sought on the point. It revealed that out of 34 children, 12 children had a serious disease during the first year after birth. Only 4 children were operated for some defect in hearing or some structural defect. But it did not help their hearing. During the course of the Project, one girl was operated for Cochlear Implant. When she rejoined, no significant change was found in her. The father reported that the training they received for auditory training to the daughter was not sufficient. Even at the time of writing this report there is no evidence that Cochlear Implant has helped her to improve her hearing and speech. In the personal discussion with the parents it was revealed that there was no provision of necessary training to the parents to give ouditory training to the child.

It was also found that among the lot, there were three pairs of deaf children coming from the same family. They were as follows :

Rashmi and Shraddha	both sisters
Amit and Samit	both brothers
Rupali and Pandurang	sister and brother

PARENTS INCLUDED IN THE PROJECT

In any programme for parental orientation it is the general experience of organisers that only the mothers attend the programmes. It is a general notion in the society that education of the children is a responsibility of a mother. Mother, may be educated or otherwise, usually takes part in such programmes.

Really speaking much depends upon the joint participation of both the parents so far as progress and development of child is concerned. It is doubly needed in the case of handicapped child. The mutual co-operation, concern of the parents is reflected in the upbringing of the child. The feeling of 'guilt' on the part of the mother, which results in permanent depression can be removed by sympathetic active participation of the father.

So we tried earnestly to make an appeal to the male parents to participate in the programme right from our first meeting. We were successful in making the proportion of the male and female parents as 13 : 25 i.e. out of 38 parents taking active part in the Project, 13 were fathers and 25 were the mothers of the deaf child. Same reasons of having good number of male parents may be as follows :

1) The research is done in Pune City so the cultural atmosphere is quite congeneal to such participation on the part of father.

2) Most of the parents come from the middle class so the awareness and the sharing between the husband and wife must be more than lower class.

3) Our pre-test, preliminary meetings and the programmes might have been effective to create motivation in the minds of the fathers.

(A) Mothers :-

In all 25 mothers took part in the orientation programme. The young mothers were more aware of the handicap of their child and wanted to do really something worthwhile. The following table will reveal how the percentage of young mothers is more in the group.

TABLE NO. 4.7

Age-wise distribution of the mothers

Upto 30 years	30 to 40 years	Above 40 years	Total
11	10	4	25

Welfare of the child is a common feeling of all the mothers. In many cases educational background was very poor. Even then the mothers could show enthusiasm in attending the programmes. The level of education of the mothers is as follows :

TABLE NO. 4.8

Educational background of the mothers

Uneducated	Upto S.S.C.	Graduate	Total
9	5	11	25

The mother of the handicapped child is over-burdened by the tension. She tries to spend more time in upbringing of the child only. It may result in the fact that most of the mothers are housewives and not working outside as is seen from the following table :

TABLE NO. 4.9

Working and Non-working mothers

Working	Non-working	Total
2	23	25

(B) FATHERS :

The agewise distribution of fathers of the hearing-impaired children in the Project is seen below :

TABLE NO. 4.10

Age-wise distribution of fathers

30 to 40 years	Above 40 years	Total
6	7	13

So far as educational background is concerned, the picture is heterogeneous. It ranged from uneducated to highly qualified careers as doctors and engineers. The following table will reveal the picture.

TABLE NO. 4.11

Educational background of fathers

Uneducated	S.S.C.	Graduate	MBBS	Eng.	Diploma	Total
1	4	5	1	2	--	13

(C) INFORMATION REGARDING THE FAMILIES INCLUDED IN THE PROJECT

The economic status of the families ranged mainly from middle class group to higher middle class group as is seen in the following table.

TABLE NO. 4.12

Economic status of the families included in the Project

Income per month upto Rupees			Total
Rs. 2000/-	Rs. 2000/- to 4000/-	Rs. 4000/- and above	
10 families	16 families	5 families	31 families

The size of the families was generally small. They were mainly separated (विभक्त) families and not joint families, so the members of the families were in most cases husband, wife and their children. The following table shows this.

TABLE NO. 4.13

Information about the members in the families

No. of persons upto 4	No. of persons Above 4	Total
21	10	31

CHAPTER - V

INTERPRETATION AND ANALYSIS OF THE DATA

The Data was collected through different tools used for the purpose. After the programme of intervention was over, the Investigator analysed the data both quantitatively and qualitatively. The discussion in this respect is given in this chapter on the following points :

1) Language development of the children included in the project.
2) Socialization of the children included in the project.
3) Awareness on the part of the parents included in the project.
4) Enrichment of student-teachers of the course.
5) Enrichment of the teachers participated in the project.

LANGUAGE DEVELOPMENT OF THE CHILDREN :

The language development was measured on the basis of the pre-test post-test results. The test results are as follows : -

In all 26 children gave both the tests. 4 children were present only for one test and four could not give any test.

It was observed from the test results that the mean

score for the pre-test was 18.46 and that of the post-test was 28.85. It was observed that there is difference of 10.39 units in the two means. To test the significance of this difference between the two means, the statistical method of 't'-ratio was used.

In this research the group of children was the same for the pre-test and the post-test and the test paper was also the same.

As per H.E. Garrette (page 226......)[1] "This is the experimental design; i.e. the **same** test-administered to the **same** group upon two occasions. This is called "single group method" In order to determine the significance of the difference between the means obtained in the initial and final testing. We must use the formula -

$$SE_D = \sqrt{\sigma_{m_1}^2 + \sigma_{m_2}^2 - 2 r_{12} \sigma_{m_1} \sigma_{m_2}}$$

in which σm_1 and σm_2 are two Standard Errors of the initial and final test means, and r_{12} is the coefficient of correlation between scores made on initial and final tests."
Hence in the present research the values of σm_1, σm_2 and r_{12} were as follows :

$\sigma_{m_1} = \sigma_x = 1.757$ Standard Error of the pre-test

$\sigma_{m_2} = \sigma_y = 2.145$. Standard Error of the post-test

and $r_{12} = r_{xy} = 0.91$ coefficient of correlation between the pre-test and post-test.

Using the above formula the Standard Error of the difference between the means of pre-test and the post-test was calculated as follows:-

$$S.E._D = \sqrt{(1.757)^2 + (2.145)^2 - (0.91)(1.757)(2.145)}$$
$$= 0.91$$

Using the Standard Error of difference between the means of the pre-test and post-test, the 't'-ratio was calculated by the formula -

$$t = \frac{M_y - M_x}{S.E_D}$$

$$\text{i.e} \quad t = \frac{28.85 - 18.46}{0.91} = \frac{10.39}{0.91} = 11.413$$

The required value of 't'-ratio at 0.01 level is 2.79 (Page 461, H.E. Garrette)[2] and the obtained value is 11.413, which is much more than the required value. Hence the difference between the means of the pre-test and post-test is highly significant at 0.01 level of significance.

In addition to scoring, the expert judges passed some remarks in the column on the scoring sheet for the test.

The remarks can be summarised as follows:-

(A) The child

i) could not speak at all,
ii) made some strange sounds in between the two words,
iii) showed no automatic expression,
iv) was nervous while testing,
v) uses incomplete sentences,
vi) needs lot of encouragement,
vii) does not lip rid properly.

(B) The child

i) understands lip reading very well,

ii) has good expression,

iii) uses good sentence pattern,

iv) has good pronunciation,

v) uses appropriate words,

vi) uses complete and meaningful sentences,

vii) uses sequence of tense while narrating the story.

STRONG POINTS OF TESTING :-

With the help of the testing and training most of the children showed good improvement. The test was graded according to the difficulty value. Those who had got more capacity to speak got an opportunity to reach to the last test successfully. The individual observations by the experts were helpful to judge the performance of the child. It was an attempt to encourage the children to speak and express throughout the testing procedure. This helped children to come out of fear and shyness.

LIMITATIONS TO TESTING :-

In the case of handicapped children, lot of things are to be considered. Hence though the attempt of testing was done, the Investigator had to take into account following limitations:

i) Each child had different degree of handicap.

ii) Each child had different capacity of expression.

iii) Speech of some children was not intelligible and was difficult to judge.

iv) We could not conduct the test No. 8 as we did not get the materials from the artist in time.

From the above analysis it is found that the children have shown good language development in the points included in the test such as, use of noun, gender, case, adjective, number, sequence of sentence, etc.

It means the effect of package programmes prepared and implemented during the project is positive.

In addition to testing by the experts, teachers had their observations in this respect. They are as follows:

i) Many children, who were silent in the beginning started expressing without fear.

ii) Some children tried to speak in complete sentences.

iii) Those who had no expression, began to show eagerness to express.

It is seen that with the help of this self-made test, the Investigator could test the language ability of the children included in the sample.

SOCIALIZATION OF THE CHILDREN

For evaluating the socialization of the children, the time serial observation scale was used.

In all there were 25 programmes for the children. We divided the programmes in 3 phases as 8, 8, 9.

Some children were absent on some of the programmes. The absentee was not taken into account while calculating the occurrence or non-occurrence of a particular behaviour item.

Throughout the programmes the teacher went on marking the occurrence or non-occurrence of the behaviour on each day of the programme. At the end, they had a continuous record of the same.

As given in the 'procedure', the Investigator divided the items in negative, positive and highly positive behaviour.

The analysis is given on percentage basis. The graphs show the percentage of occurrence and non--occurrence of the items grouped together in three parts mentioned above.

AGE GROUP 3 TO 6

From graph No. V-1 it will be seen that in the first phase the presence of negative behaviour was 45.58%, it reduced to 15.95% in the second and 4.33% in the III Phase. It was very natural that in the beginning nearly half of the children were not adjusted. They were very small. For many of them it was the first exposure outside the family. They had no habit of to be away from the mother. Because of their handicap they could not express. From this point of view the decrease in negative behaviour is quite note-worthy. Please see Graph No. V-1.

As the children had no chance to have experiences outside home, they naturally had no practice of greeting, etc. In the first phase, only 30.95% children developed this habit but due to constant insistance of the act in the last stage, the percentage was increased upto 75.44%. So it also shows good growth in their socialization.
Please see Graph No. V-2.

Items Nos. 6,7,8 and 12 show the positive behaviour.

The occurrence of the items was 38.95% in

the first phase was increased to 89.95% in the last phase. It was quite good increase, because children had to be taught everything personally. They were very young and hence teachers had to strive hard for expected behaviour. Please see Graph No. V-3.

From Graph No. V-4 we can see the picture of increase in higher social behaviour among the children. If encouraged properly, children can pick up these traits, as is seen by the fact that the increase in this respect, from First Phase to Third Phase, is from 41.28% to 83.51% i.e. it is doubled. It is the effect of the efforts on the part of the teachers to encourage the children to be inquisitive, to appreciate the good work done by others, etc. Please see Graph No.V-4.

It was observed that some children, in this age group, could not show growth in expressive transactions due to their profound hearing loss, though they got adjusted to the group gradually.

AGE GROUP 7 TO 9 YEARS

The number of occurrences in the negative Items Nos. 1 to 4 was 30% in the First Phase, 17% in

the Second Phase and has reduced to 5.13% in the last phase. The number of non occurrences is proportionately increased from I to III phase.
Please see Graph No. V-5.

The item No. 5 was of habit formation. It shows the positive increase over the three phases. The percentage increase is from 62.52% to 99%. It is also noted that nearly 60% of children had the habit of greeting even during the I Phase. It may be due to the fact that children in this age group were attending some school and during the first get-together and introduction meetings, we gave a sufficient practice for the same.
Please see Graph No. V-6.

Items No. 6,7,8 and 11 show the positive behaviour. These traits were gradually developed by the children. The increase is very significant from 39% in the first phase to 81% in the III Phase, which shows good amount of socialization of the children.
Please see Graph No. V-7.

Items No. 9,10 and 12 show the higher positive behaviour. In this respect also positive increase is marked in the III Phase. From the Graph No. V-8 it will be seen that percentage of occurrence of positive behaviour is doubled in the last phase i.e. 40% to 80%. It clearly indicates that children have picked up good social behavioural traits.

AGE GROUP 10 TO 12 YEARS

The percentage of occurrences of negative items 1-4 has gradually decreased during the three phases. It was 38.69% in the first phase and 11.32% in the third phase. This means that even the grown-up children had a positive growth of social behaviour. We find that in this age group the main problem is the mixing of the boys and girls together. By constantly arranging the joint programmes, we did not find any difficulty in this case. Boys and girls were well-adjusted.
Please see Graph No. V-9.

The item No. 5 was of habit formation. It was observed that the children had already developed this habit of greeting as they were quite used to it in their school. Even then 5% growth is seen in the last phase, because the teachers made each child to greet everytime without fail. The children who were shy, were insisted to greet the friends and the teachers at least, and hence the increase.
Please see Graph No. V-10.

From the Graph No. V-11, it will be seen that the increase in items No. 6,7,8 and 11 is from 49.11% to 82.63% and the non occurrence is proportionately

decreased. The occurrence of positive behaviour was good even in the first phase in the case of this group i.e. nearly 50%. It may be due to the fact that the children had more exposure for schooling and they had maturity also as they were grown up.
Please see Graph No. V-11.

Items No. 9,10, and 12 show the higher positive social behaviour. It shows the increase from 30% to 57% in the II phase and upto 75% in the last phase. The teacher took special efforts to strengthen these aspects in the children. As the children were more and more adjusted and became more friendly, they grew these positive traits of social behaviour.
Please see Graph No. V-12.

From the above analysis it will be seen that due to the participation of the children in the programmes, they got lot of opportunities to develop good socialization. It is due to the fact that the nature of the programmes was informal, in out-of-school setting. Children were not worried about the academic subjects or fear of examination. They were never aware that they were being tested. It was recreation according to them, which they really enjoyed. There was no feeling of any tough competition as it was not the part of their schooling. They whole-heartedly appreciated or encouraged their friends, they took active part in everything.

GRAPHS SHOWING THE PROGRESS OF SOCIALIZATION OF THE CHILDREN IN THREE DIFFERENT AGE GROUPS

I, II, III are the phases of the programmes containing 8, 8 and 9 programmes respectively on the time serial scale

Age Group 3 to 6 years

GRAPH NO. V-1

Showing the progress of socialization of children in respect of items No. 1,2,3,4 and 11 of the socialization check-list.

Occurrence
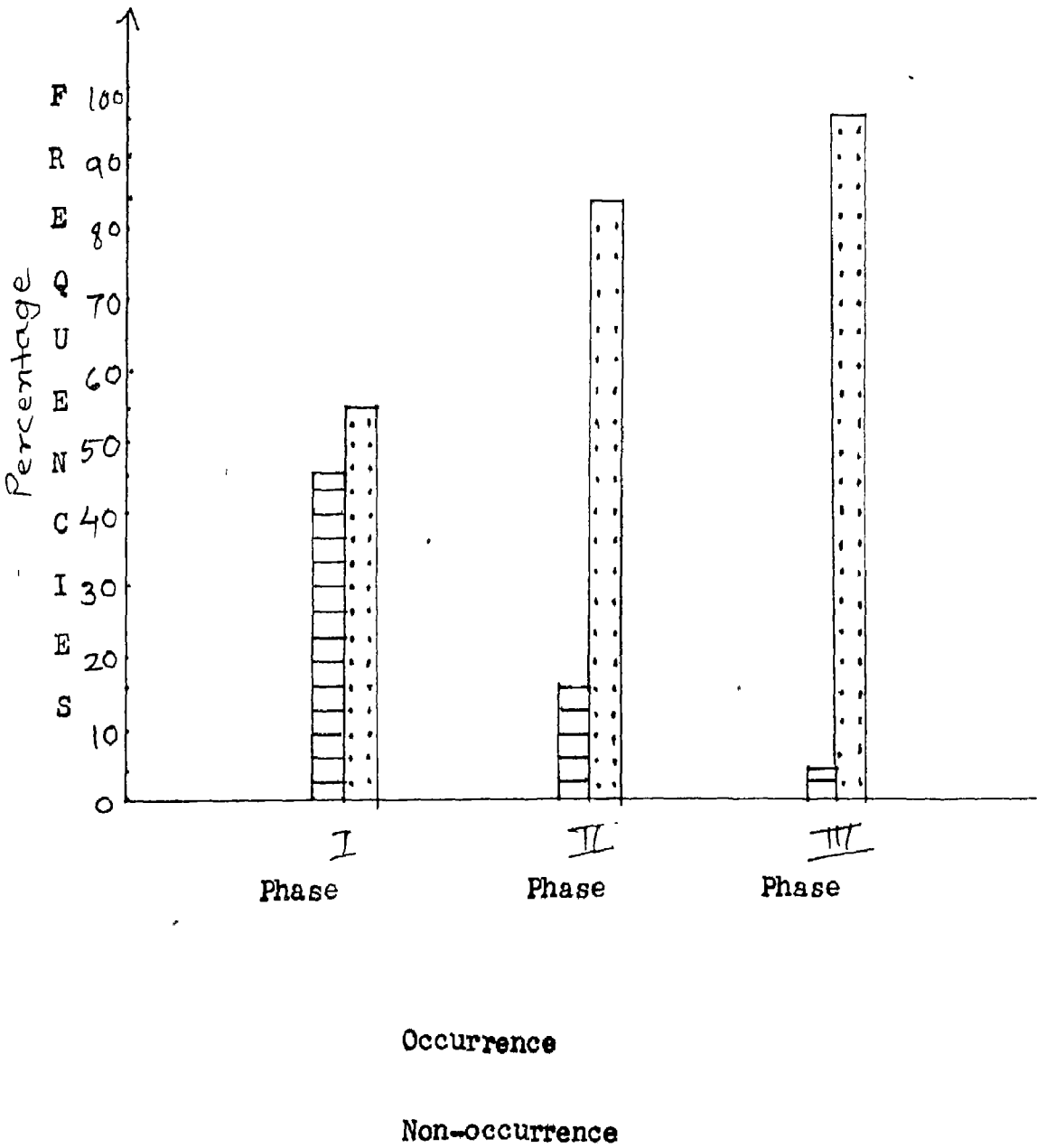
Non-occurrence

Age group 3 to 6 years

Graph No. V-2

Showing the progress of socialization of children in respect of item no. 5 of the socialization check-list.
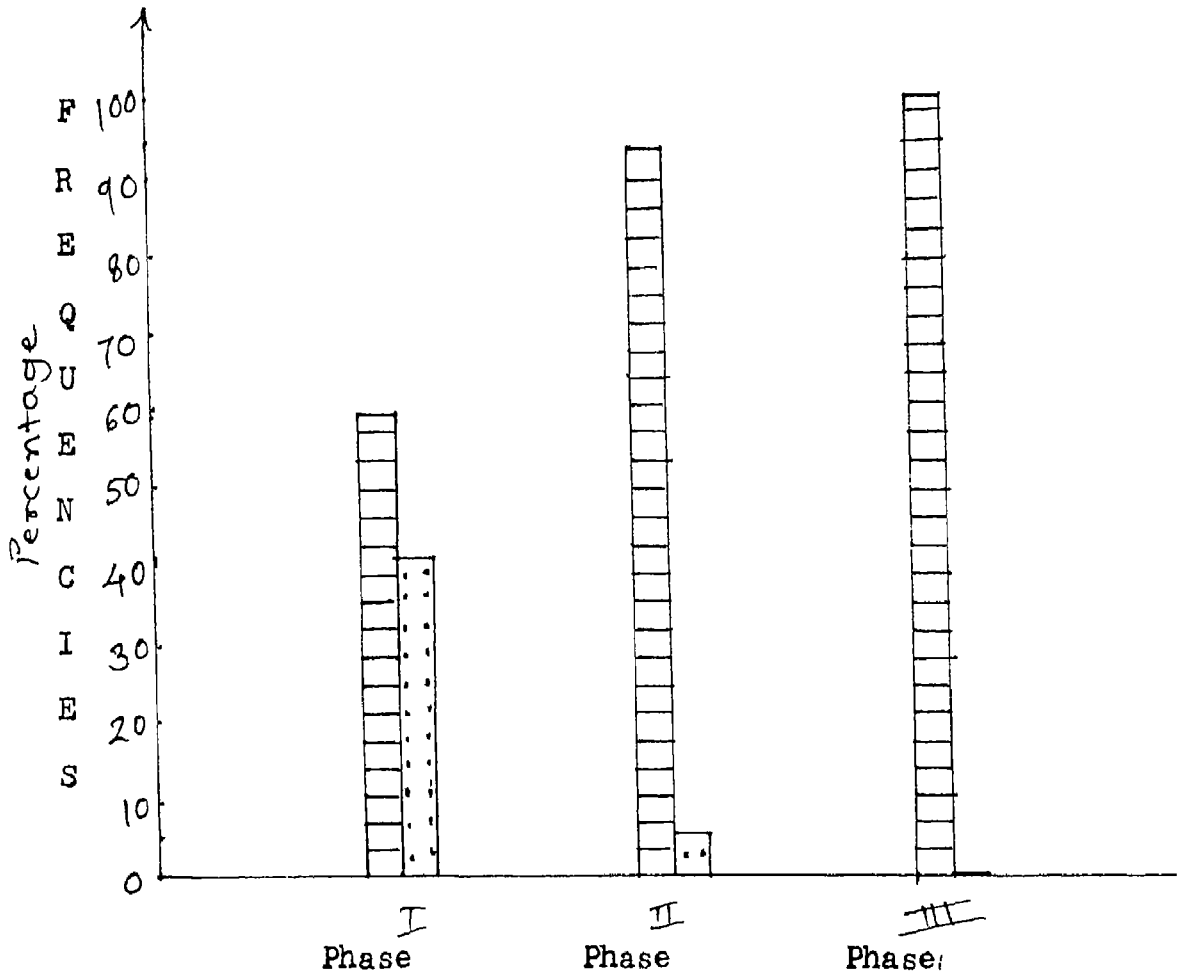
Occurrence

Non-occurrence

Age group 3 to 6 years

GRAPH NO. V-3

Showing the progress of socialization of children in respect of items No. 6,7,8 and 12 of the socialization check-list.
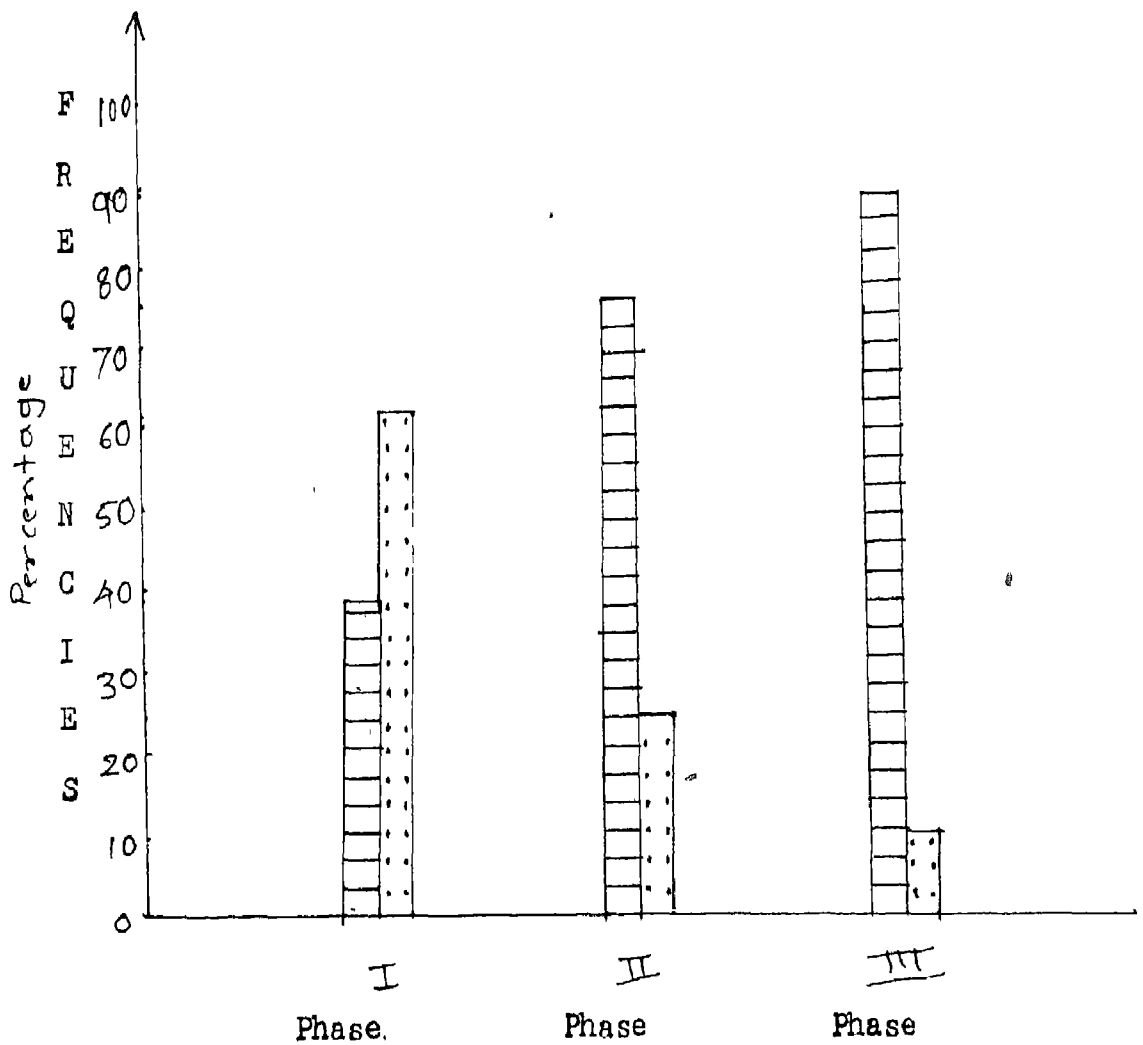
Occurrence

Non-occurrence

Age group 3 to 6 years

GRAPH NO. V-4

Showing the progress of socialization of children in respect of items No. 9 and 10 of the socialization check-list

Occurrence Non-occurrence
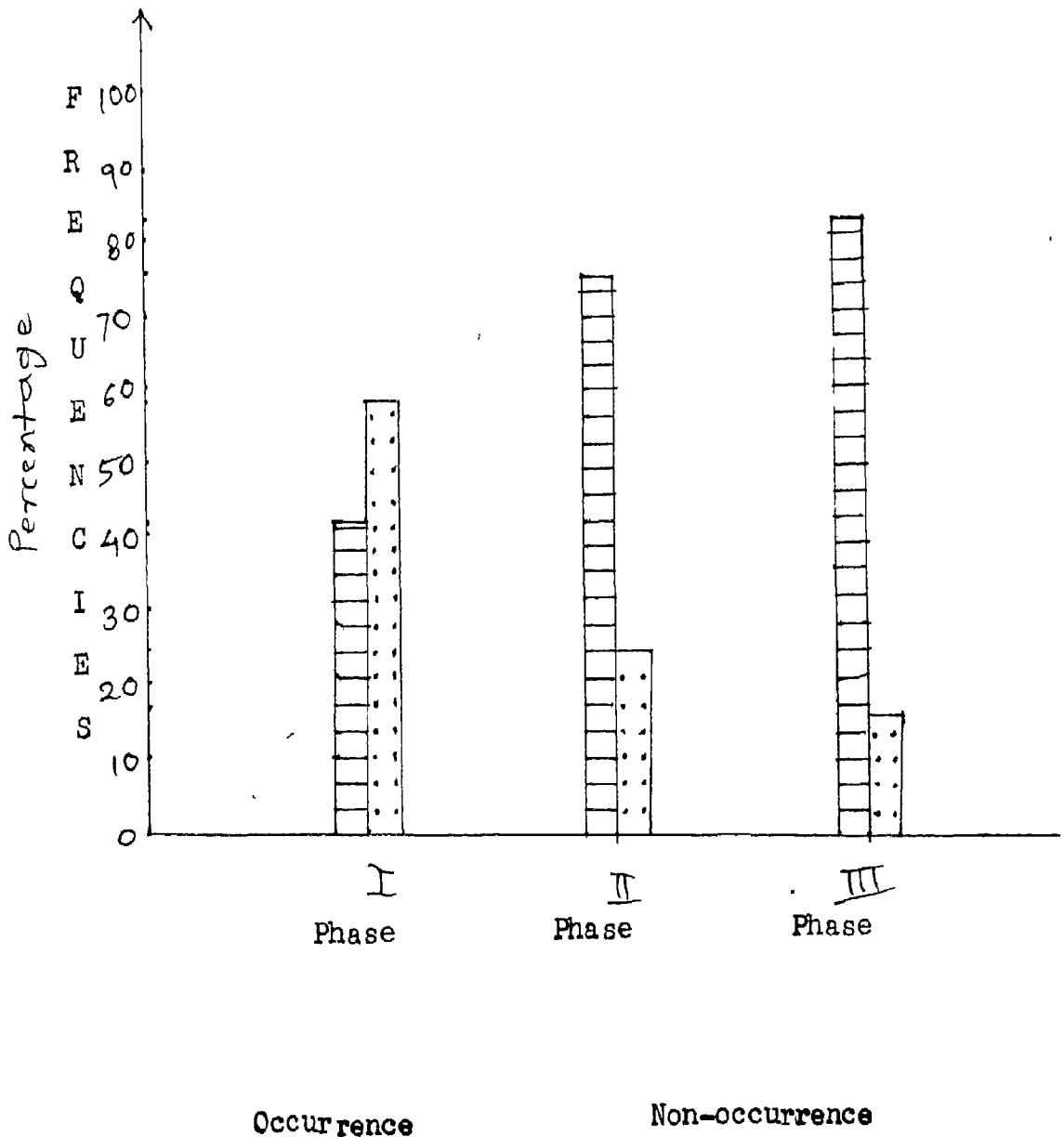
AGE GROUP 7 to 9 years

GRAPH NO. V-5

Showing the progress of socialization of children in respect of items No. 1 to 4 of the socialization check-list
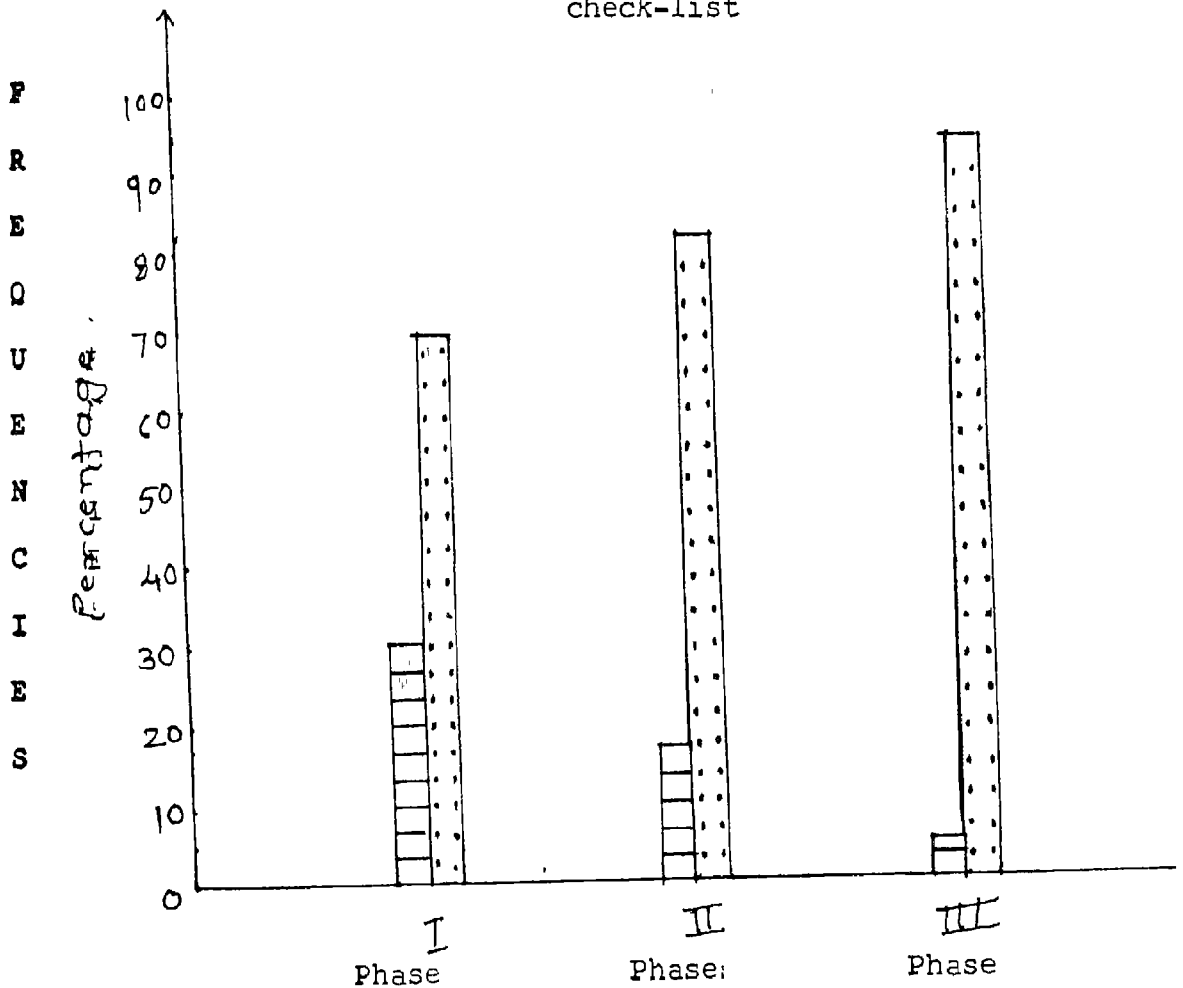
Occurrence Non-occurrence

AGE GROUP 7 to 9 years

GRAPH NO. V-6

Showing the progress of socialization of children in respect of item No. 5 of the socialization check-list

Occurrence

Non-occurrence
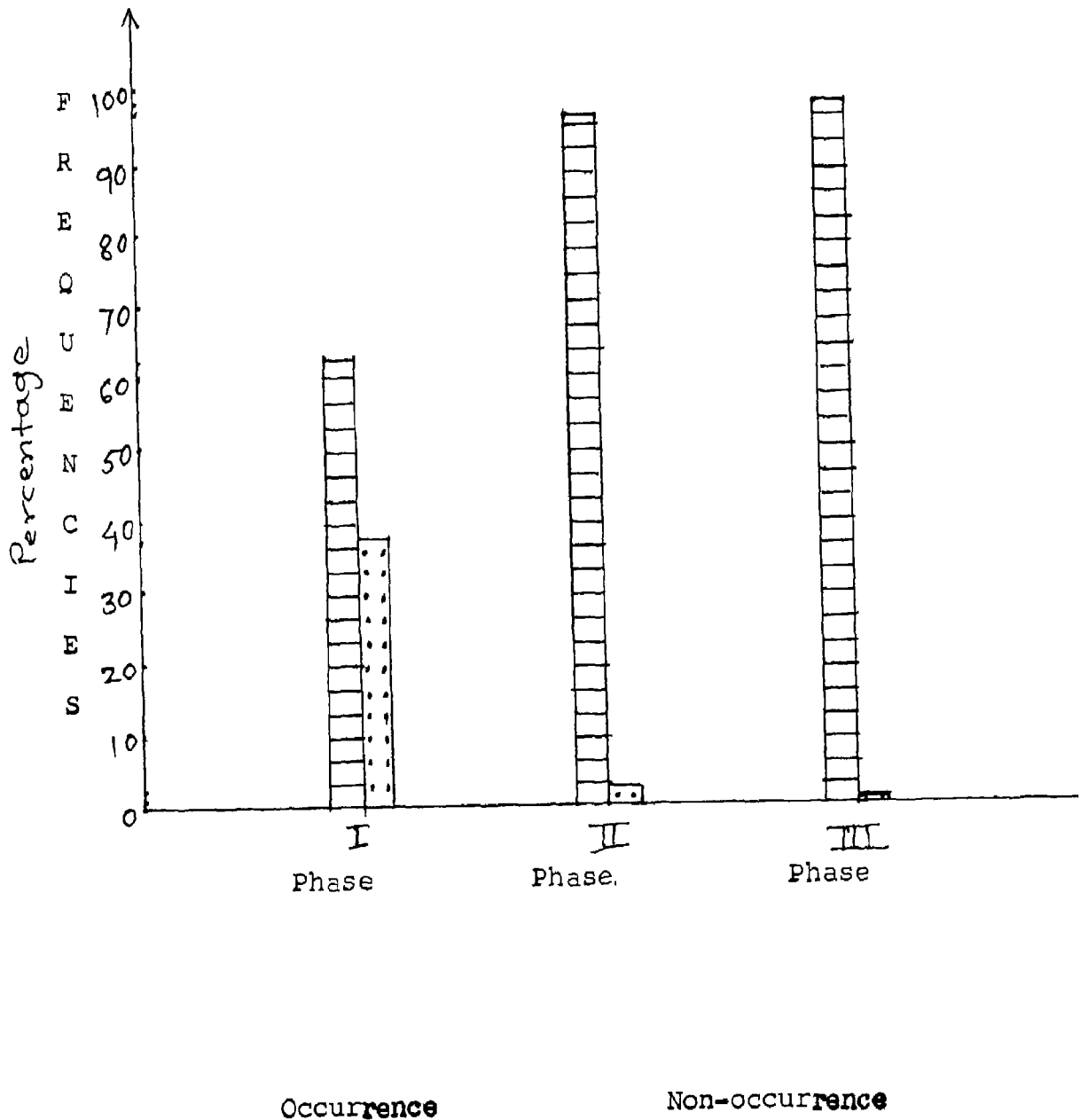
AGE GROUP 7 to 9 years

GRAPH NO. V-7

Showing the progress of socialization of children in respect of items No. 6,7,8 and 11 of the socialization check-list

Percentage

FREQUENCIES

100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0

I Phase

II Phase

III Phase

Occurrence

Non-occurrence
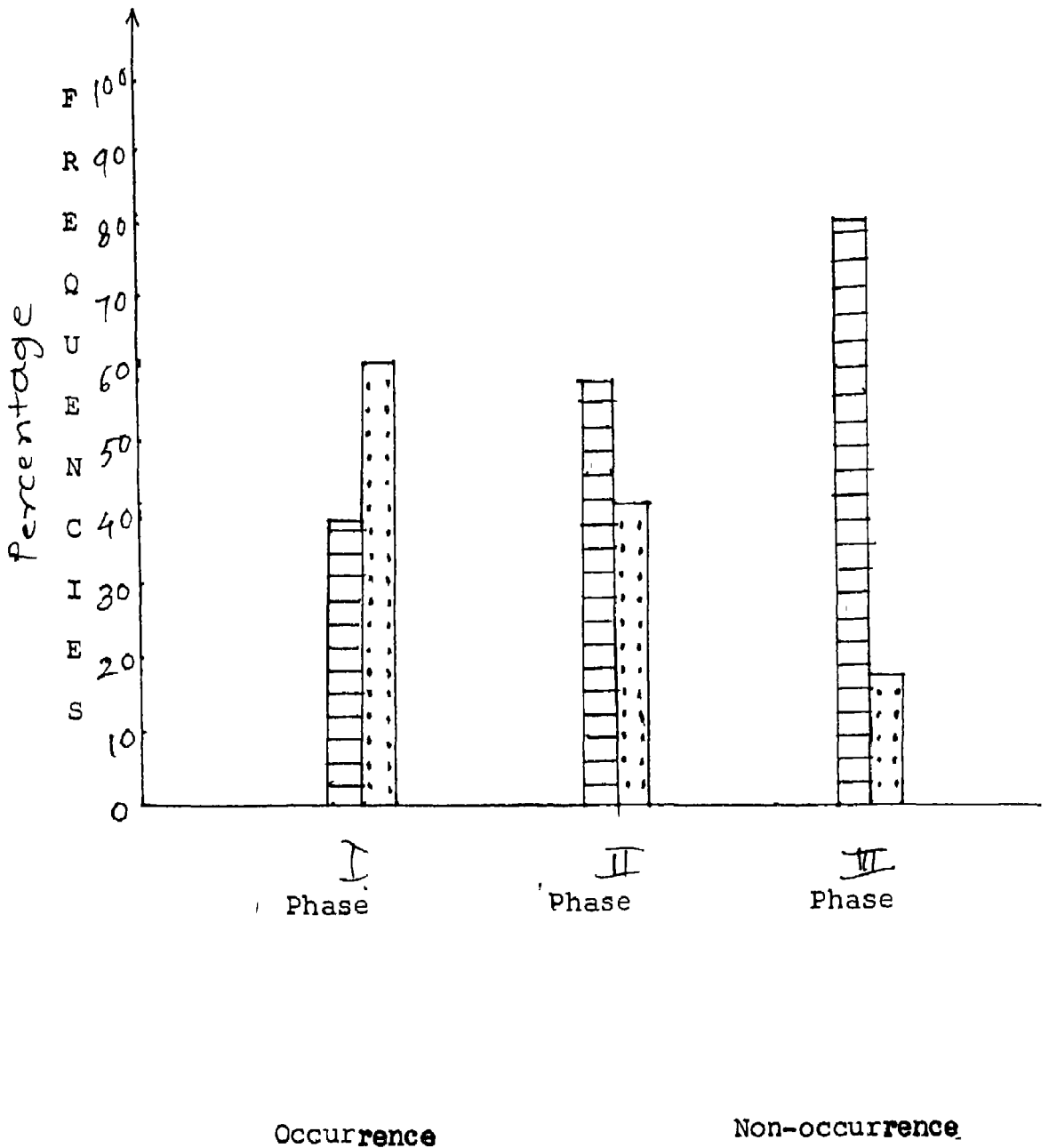
Age group 7 to 9 years

GRAPH NO. V-8

Showing the progress of socialization of children in respect of items Nos. 9, 10 and 12 of the socialization check-list

Occurrence Non-occurrence
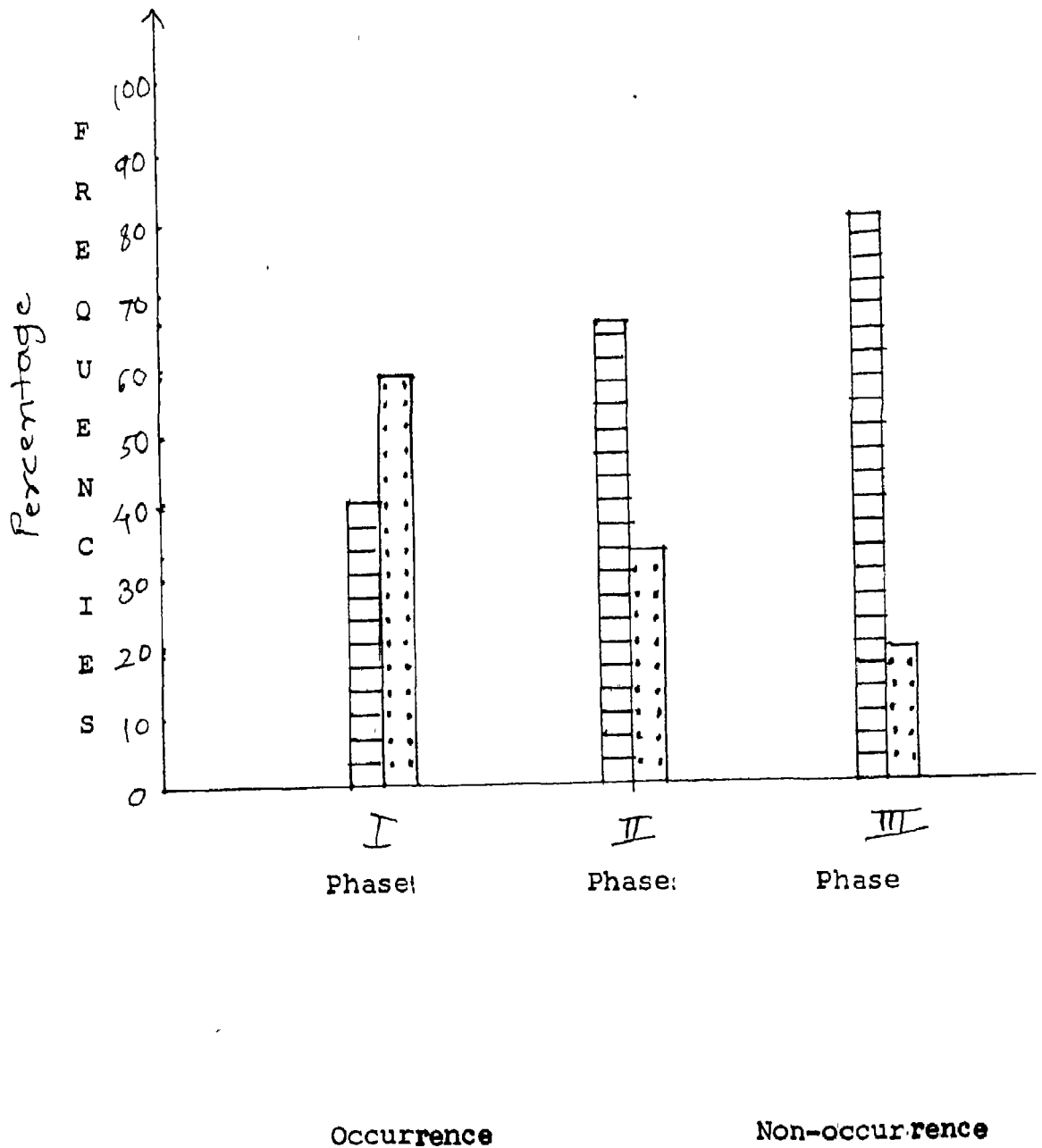
Age group 10 to 12 years

GRAPH NO. V-9

showing the progress of socialization of children in respect of item Nos. 1 to 4 of the socialization check-list
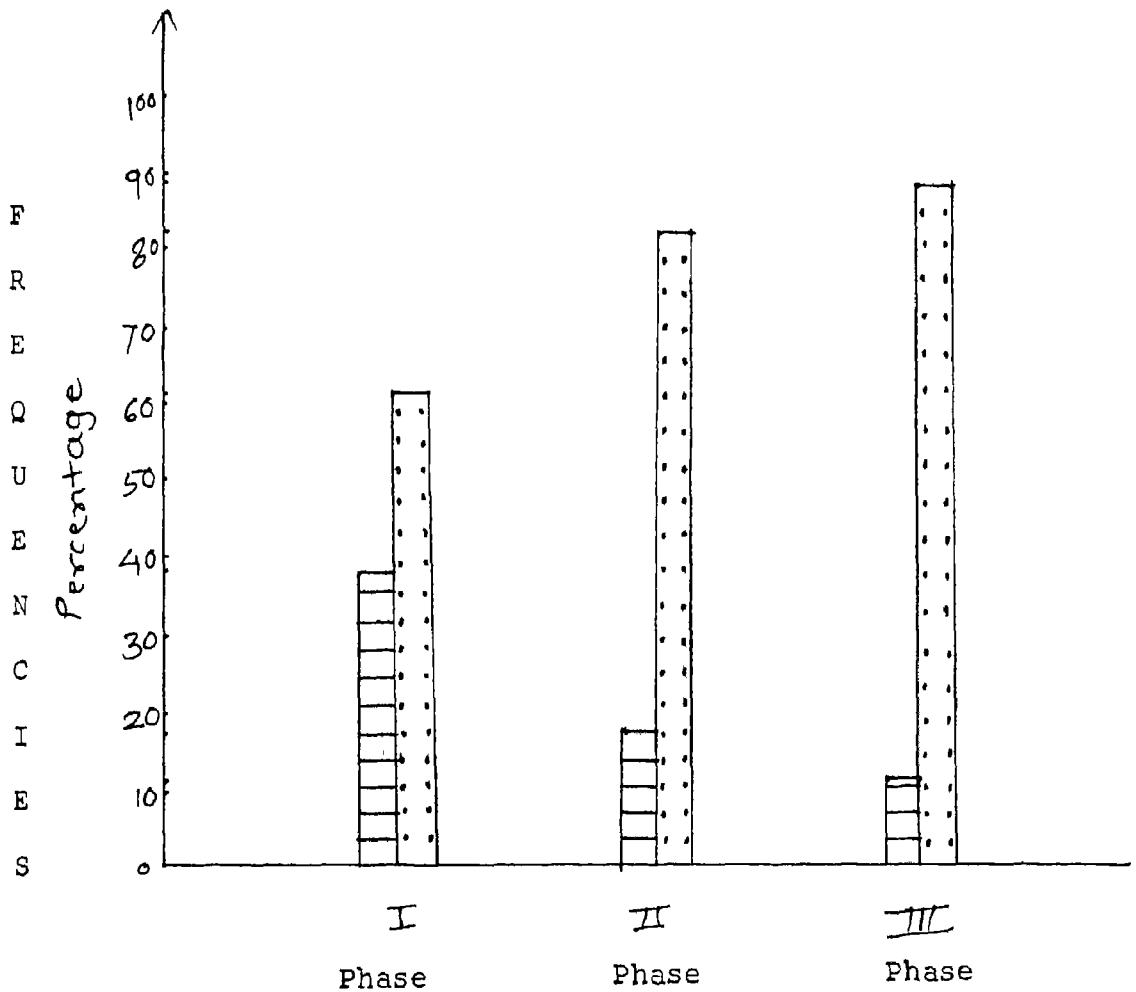
Occurrence

Non-occurrence

Age group 10 to 12 years

GRAPH NO. V-10

Showing the progress of socialization of children in respect of item No. 5 of the socialization check-list

Occurrence Non-occurrence
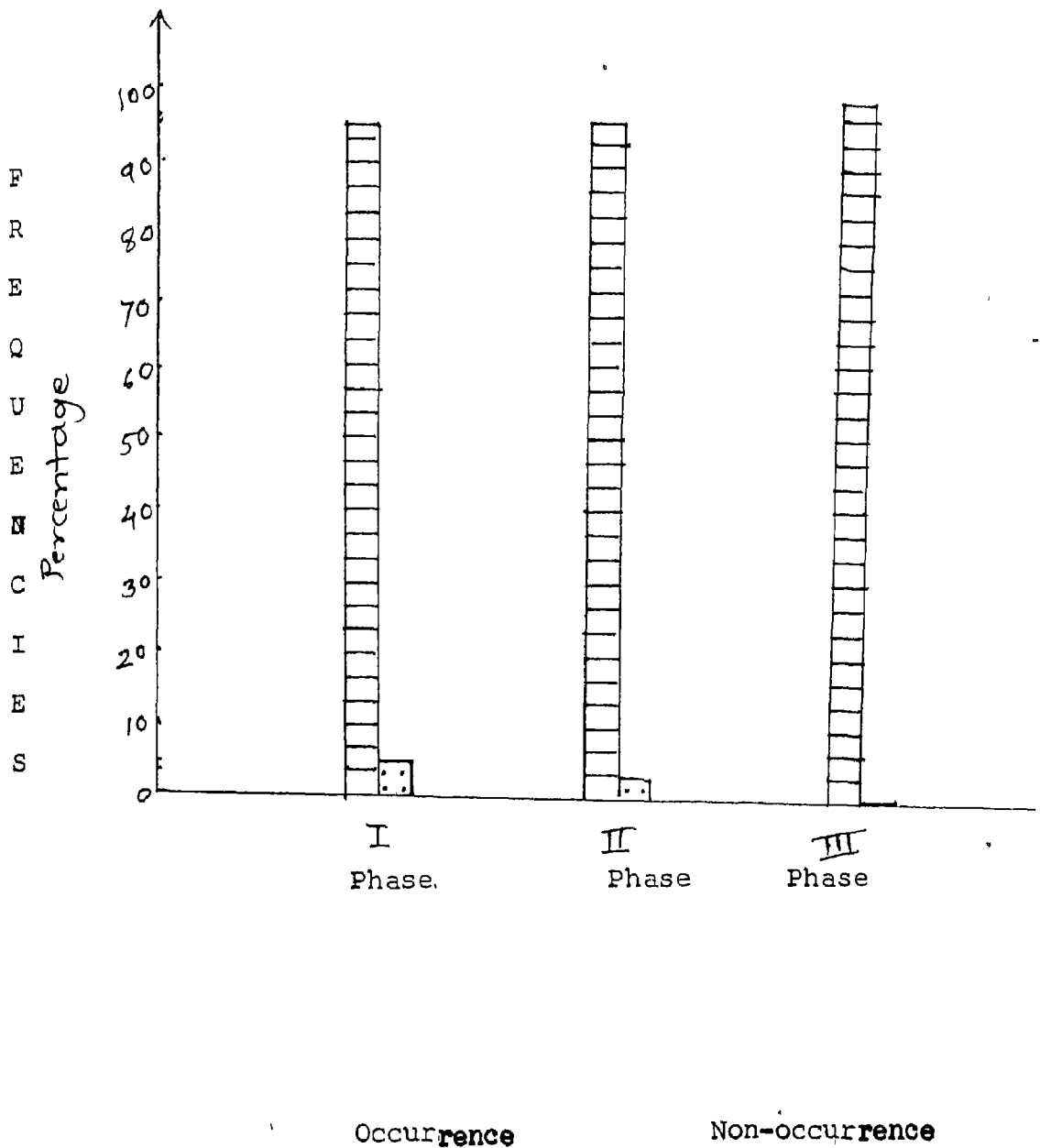
AGE GROUP 10 to 12 years

GRAPH NO. V-11

showing the progress of socialization of children in respect of item Nos. 6,7,8 and 11 of the socialization check-list

Occurrence
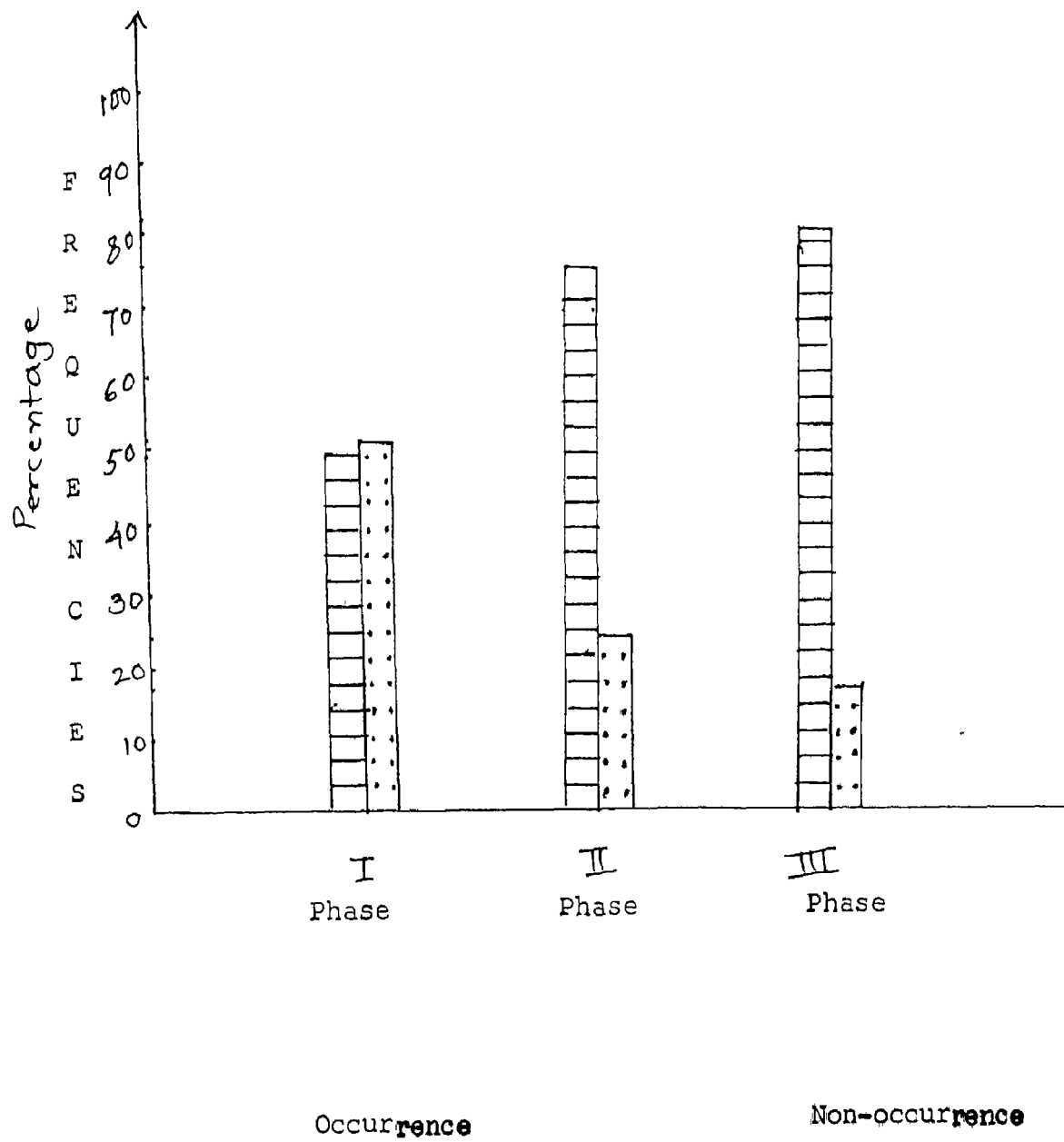
Non-occurrence

AGE GROUP 10 to 12 years

GRAPH NO. V-12

Showing the progress of socialization of children in respect of item Nos. 9, 10 and 12 of the socialization check-list
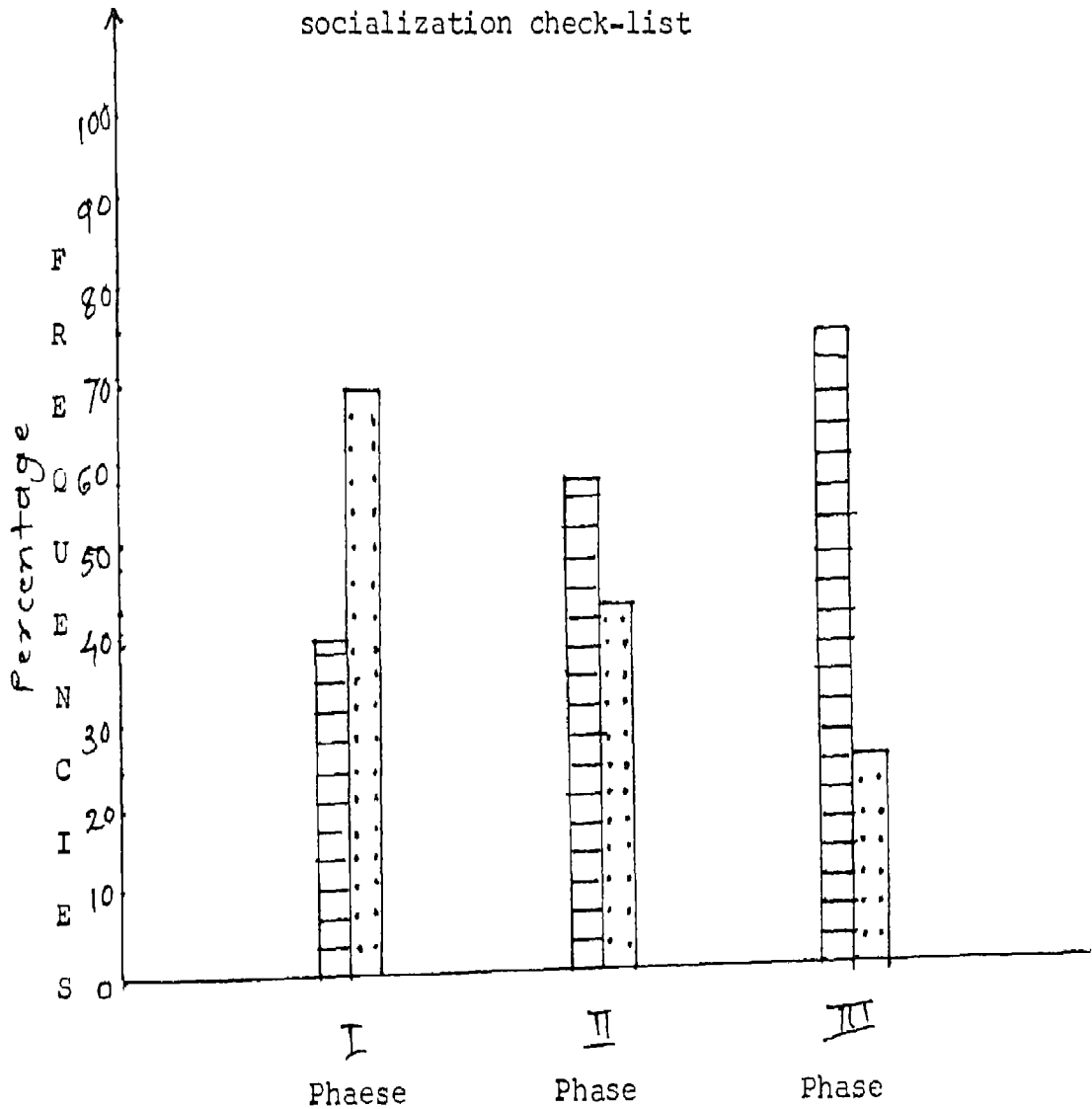
Occurrence

Non-occurrence

In addition to this quantitative analysis, some qualitative observations were recorded by the Investigator. They are summarised below :

QUALITATIVE INTERPRETATION OF SOCIALIZATION OF THE CHILDREN :

The children got adjusted gradually to the whole atmosphere of the programme.

We made them call their teachers as "Tai" and not as a teacher. This established a good rapport between the children and the teachers.

Those who were not adjusted in the beginning started mixing with the group in a short time. They liked the idea of greeting in the beginning and at the end of the programme. They started doing so with everybody present, at the programme. The warming up programme in the form of breathing, and some games helped developing fellowship among them. It was very naturally accepted that older children should help the younger ones in many ways.

The habit of making everything tidy after the programme, was developed by some children. They volunteered every time.

Distribution of snacks was another task that was allotted to the children turn by turn. They did it with all sincerity and neatness.

The Investigator sent greeting cards to children in Diwali festival. 50% of the children reciprocated the same.

When we celebrated a birthday of the youngest as a part of the programme, most of the children brought presents to the child.

When the children were taken outside for purchases or for visits etc. they boldly asked questions to the strangers.

The programme was continued in the next year under the name of "Saturday activity" (1990-91). In the very first programme, charge of the children was given to the student-teachers of the new batch. They were not at all acquainted with the children. But the children went with the new Tai and Dada for purchases of different things and came back very happily after an hour. In a Palghar project, arranged by NCERT at SCERT, Pune, the demonstrations in speech correction were arranged by the Investigator, when she worked as a resource person. Two children were taken to the programme. It was observed that the children gave good

responses in speech correction. They answered the questions by the participant teachers. They moved round in the group and asked questions to the teachers. It was an indication of their socialization.

ANALYSIS OF THE DATA IN RESPECT OF THE PARENTS OF THE HEARING IMPAIRED CHILDREN

It is generally observed in any research in social sciences that the collection of Data through questionnaires is always a problem. The research worker has no control over the respondents.

There is an initial resistance on our part to put down anything on paper. People show apathy when asked to give responses in writing.

In the case of the parents of the hearing impaired, the difficulty was doubled. The parents were already over burdened with their individual worries. They were always shy to express anything openly. They had not come out of the shock of the handicap of their child. They did not understand the utility of filling-in the test proforma. There was a notion that they were appearing for an examination. They could not answer many questions and hence they were not willing to fill-in the questionnaires.

Moreover, the Investigator could not make them aware that they were to be tested for the experiment, because that would have resulted in making them more reserved.

Some mothers were not at all educated. They had no previous experience with paper and pencil. So they were not ready to fill-in the questionnaire.

There were some practical difficulties in giving the tests. They were as follows:

In the case of two girls, both the parents were deaf. The parents could not join the programme. Grand mother attended only few programmes. So no test could be given. One child had no father. The deaf mother used to bring the child but could not take part in orientation programme.

In the case of one girl, both the parents were medical practitioners. They were reluctant to attend any programme. So they were not given any test.

In the case of some children, both the parents were attending the programme. Only either of them gave the test.

Under these circumstances the pretest was given to 18 parents, approximately 50% of the sample.

When the question of post-test arose, many parents showed willingness to fill-in the questionnaire. They were adjusted by now and they thought that they could understand and write the correct answer. Though we gave post-test to 25 parents we could not use it for comparison.

It was felt that a journey from shock to awareness of the handicap, on the part of the parents of the hearing-impaired children, was a long one full of hazards and difficulties.

The parents' general condition in the beginning was as follows:

1) Parents mostly denied the handicap of the child.

2) They relied on those professionals, who misguided them for magic recovery of the handicap.

3) The handicapped child was not accepted by many parents.

4) Some felt guilty about the handicap and always come on self defence or self condemnation.

5) Most of them always had a feeling of compensation towards the handicapped child.

6) Some parents had a strong sense of withdrawal.

7) Most of the parents were least aware of potentialities of the handicapped child.

So only quantitative analysis was not sufficient to have a real picture of the change, if any, in the parents' awareness.

Naturally, we had to evolve parallel strategies to get data from the parents. Those were in the form of continuous observations, discussions, responses in informal talks, actual visits to the houses, informal interviews, etc.

With the help of all this, the Data was collected, analysed and conclusions drawn.

ANALYSIS OF THE RESULTS OF TESTS FOR THE PARENTS

The first part 'A' was on the information regarding structure of the ear.

In response to question No. 1 in the pretest, 13 parents gave the correct response and in the post-test 17 parents, out of 18, gave the correct response. It shows that the number of parents knowing the correct response was increased by 30.77%.

It was observed that parents could not name all the parts of the ear correctly in the pre-test. But whatever the information they gave, was ticked as their knowledge about the ear. Comparatively in the post-test they have given the names of all the parts correctly. It may be the result of the information given to them with the help of the model and charts by the audiologist. Please see Graph No. 5-A-1.

The question No. A-2(a) was about the location of the hearing defect. Only 12 parents were knowing the correct answer in pre-test, which was 17 in the post-test. That means the range of their knowledge was increased considerably, i.e. 41.67%.
Please see Graph No. 5-A-2(a)

The parents could not narrate the nature of the hearing loss. It is clear from the Graph No. 5-A-2(b). The increase in correct response in post-test is only 10%. The parents were not in a position to give any technical information though they were sufficiently oriented.
Please see Graph No. 5-A-2(b).

When asked about the causes of deafness, the number of parents giving correct response in pre-test was 12, while it was 17 in post-test. There is increase by 41%. This shows that parents have tried to locate the causes of deafness in case of their children.
Please see Graph No. 5-A-3.

Which defects can be removed by operation of the ear? To this question the number of correct response is increased by 87.5%. It was found in informal discussions that many of them were under the impression, perhaps misguided by the professionals, that operation will cure the defect. After the talk by Dr. Hemant Dabake, it seems that lot of their misunderstandings were removed.
Please see Graph No. 5-A-4.

About the exact hearing loss of the child, the number of parents knowing the loss is increased by 50%.

This was really a considerable increase.
Please see Graph No. 5-A-5.

In our preliminary informal talks, it was our experience that parents either did not know about hearing loss or sometimes they were not very open minded to disclose the same. In case of two educated mothers, it was observed that they were not in a position to accept the hearing loss and hence hesistated to talk about it. The real thing was disclosed only after audiometry. The idea of residual hearing was totally new to the parents. They used to talk always in negative terms. We wanted to make them aware about the positive, plus points what the child had. We never spared an opportunity to stress this point. The result is that the number of parents giving correct response in this case is increased by 55.56% which is really a good indication of positive attitude.
Please see Graph No. 5-A-6.

It is always an experience of ours that the parents, when desperate, go from doctor to doctor for consultation. It is the natural tendency to believe in the hopeful diagnosis and not to accept the reality. Sometimes parents did not want to tell that they had consulted many doctors. So they straightway gave the negative response to the question. Throughout

the project gradually they must have felt bit free to give the response and tell what the different doctors told them. This increase is 63.64% in the post-test. Please see Graph No. 5-A-7.

To the question regarding other measures than medical, the number of respondents is increased by 42.86%in the post test.

In the beginning parents were not free to tell about other measures such as some religious rituals, fasting or observing some strict rules, taking the child to Guru etc. But from casual remarks we could locate the real thing. It was very natural that this helped them to have some moral support and strength.

From the increase in post-test it seems that they had left the inhibition to tell frankly about such measures. It means, they became aware of futility of such measures. Some measures other than medical, in the case of some parents, were positive also, which were helpful to make child use his residual hearing. The increase in the positive responses is 42.86%in the post-test.

Please see Graph No. 5-A-8.

GRAPH NO. 5-A-1

KNOWLEDGE REGARDING STRUCTURE OF THE EAR
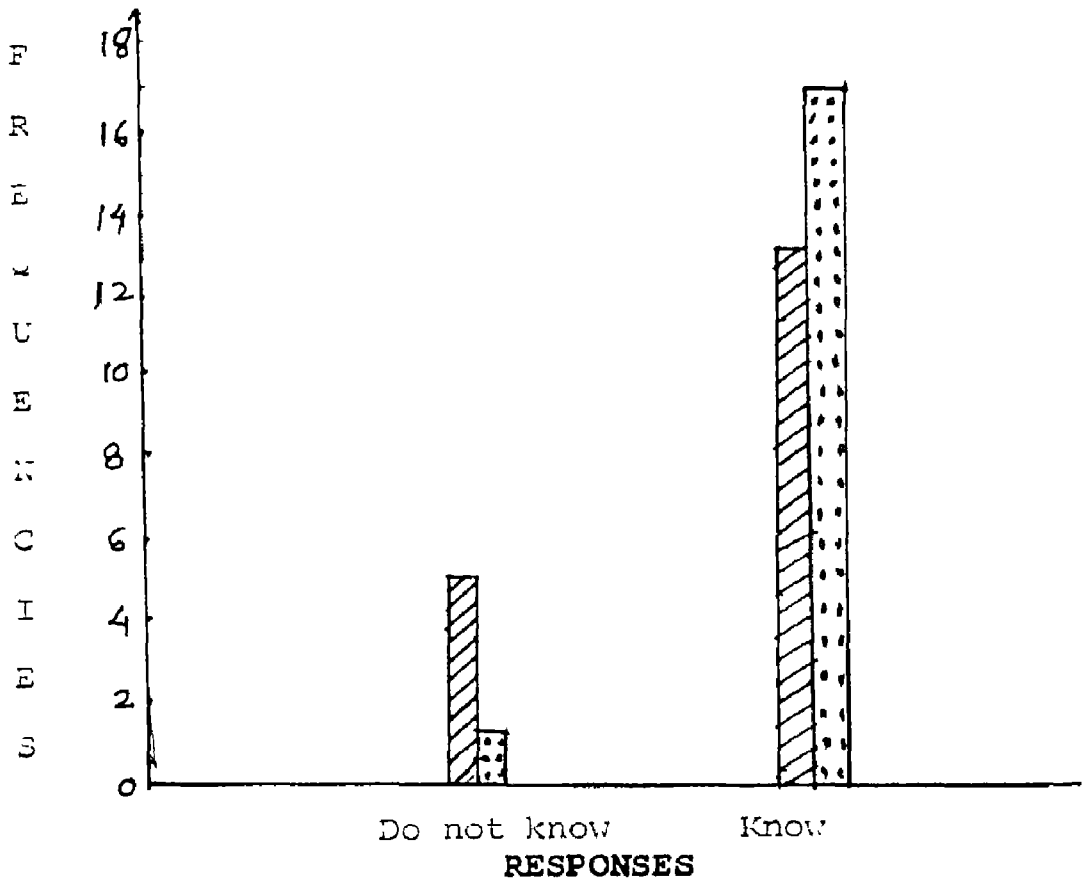
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-A-2(a)

KNOWLEDGE REGARDING LOCATION OF HEARING DEFECT
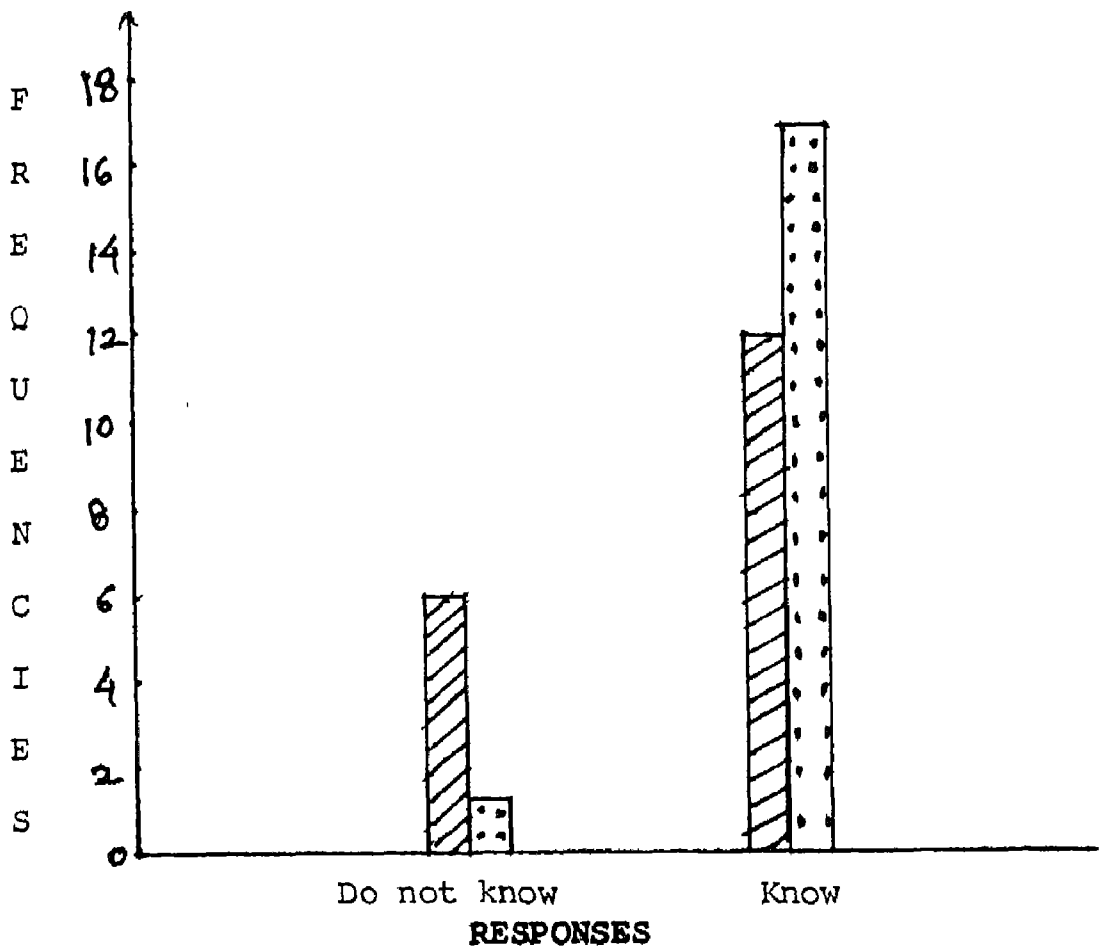
Pre-test Post-test

GRAPH NO. 5-A-2(b)

KNOWLEDGE REGARDING NATURE OF DEFECT
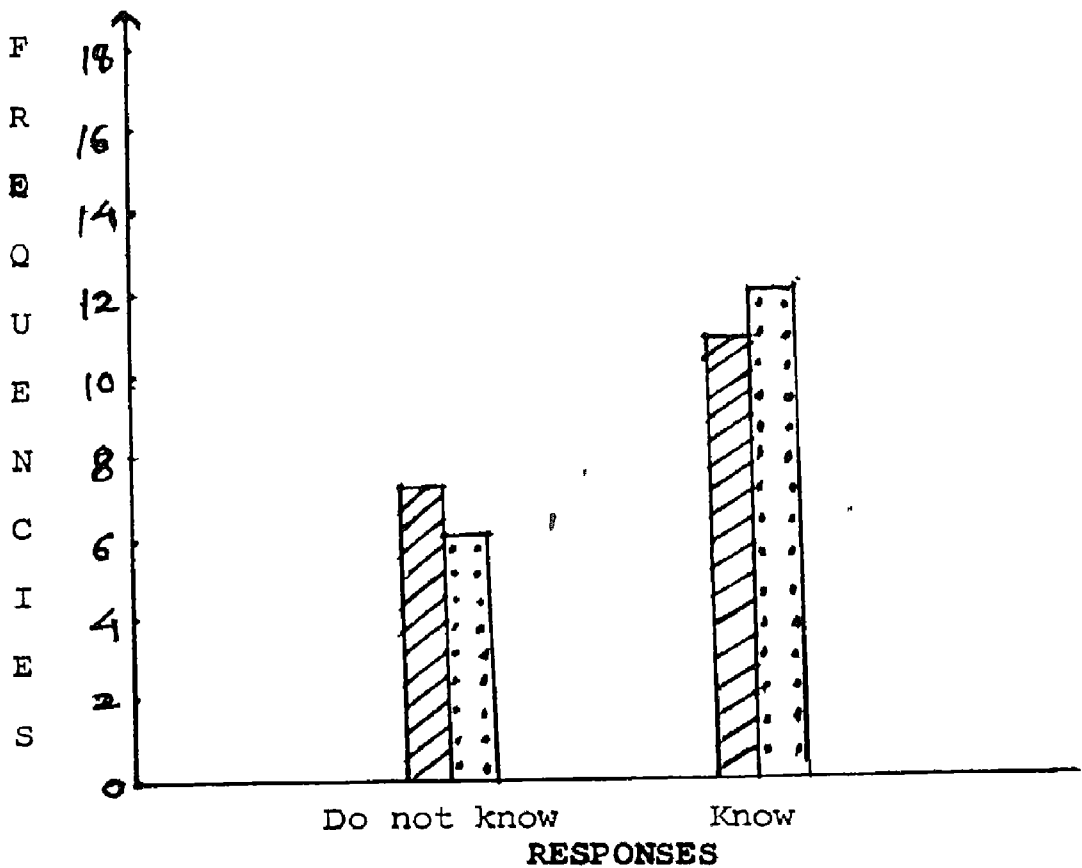
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-A-3

KNOWLEDGE REGARDING CAUSES OF DEFECT
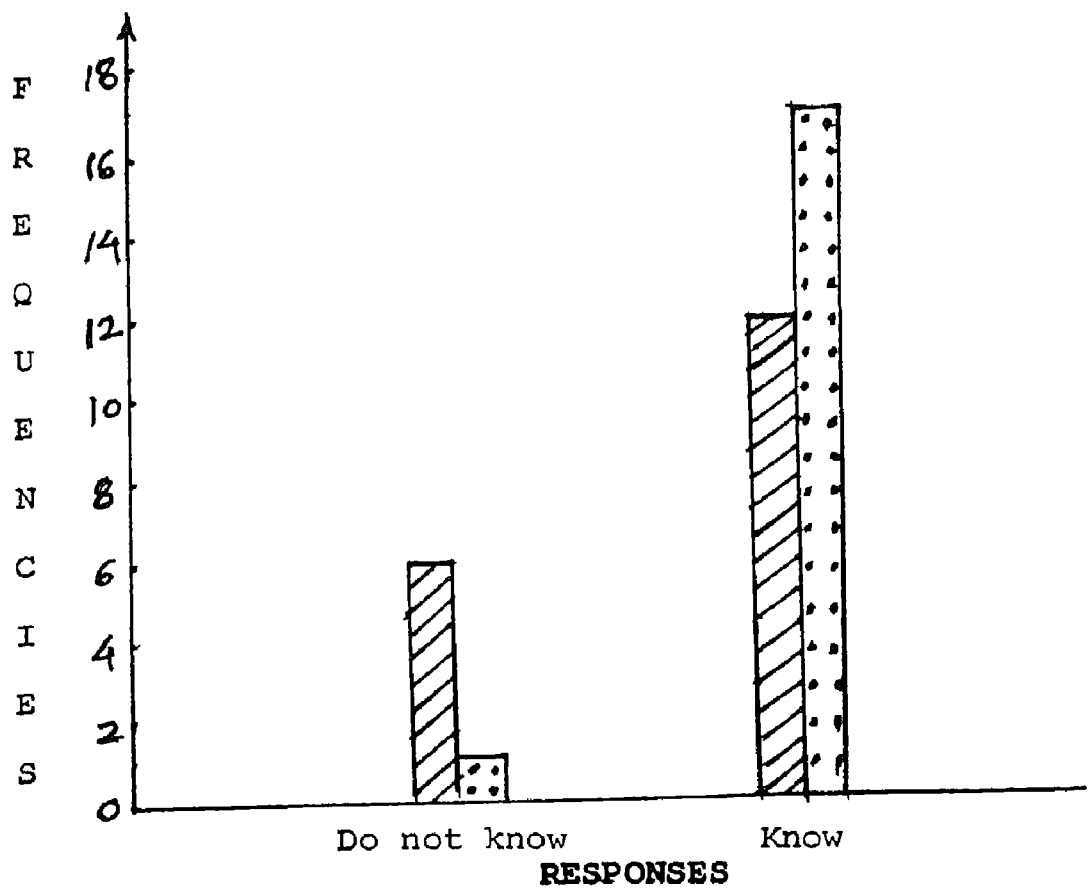
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-A-4

KNOWLEDGE REGARDING THE EFFECT OF OPERATION IN CURING THE DEFECT
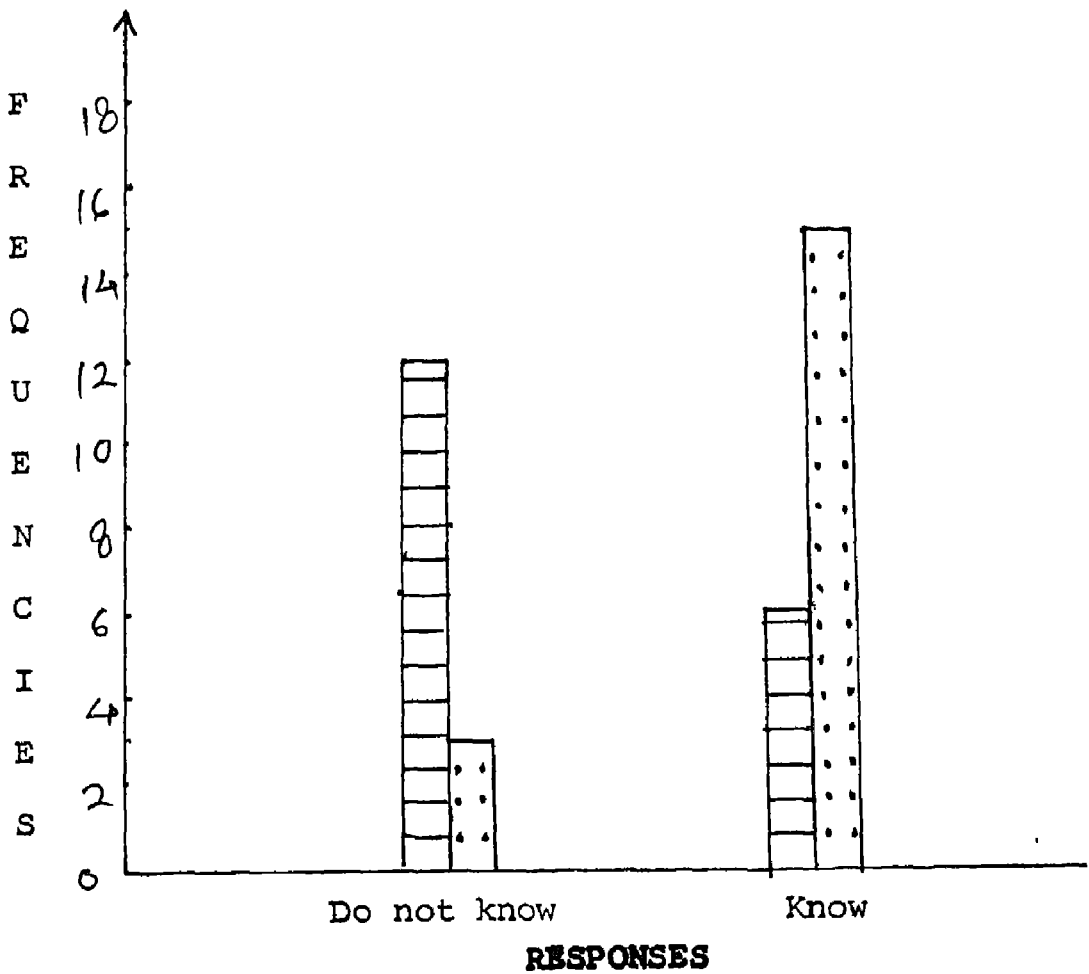
Pre-test Post-test

GRAPH NO. 5-A-5

KNOWLEDGE REGARDING THE HEARING LOSS OF BOTH THE EARS
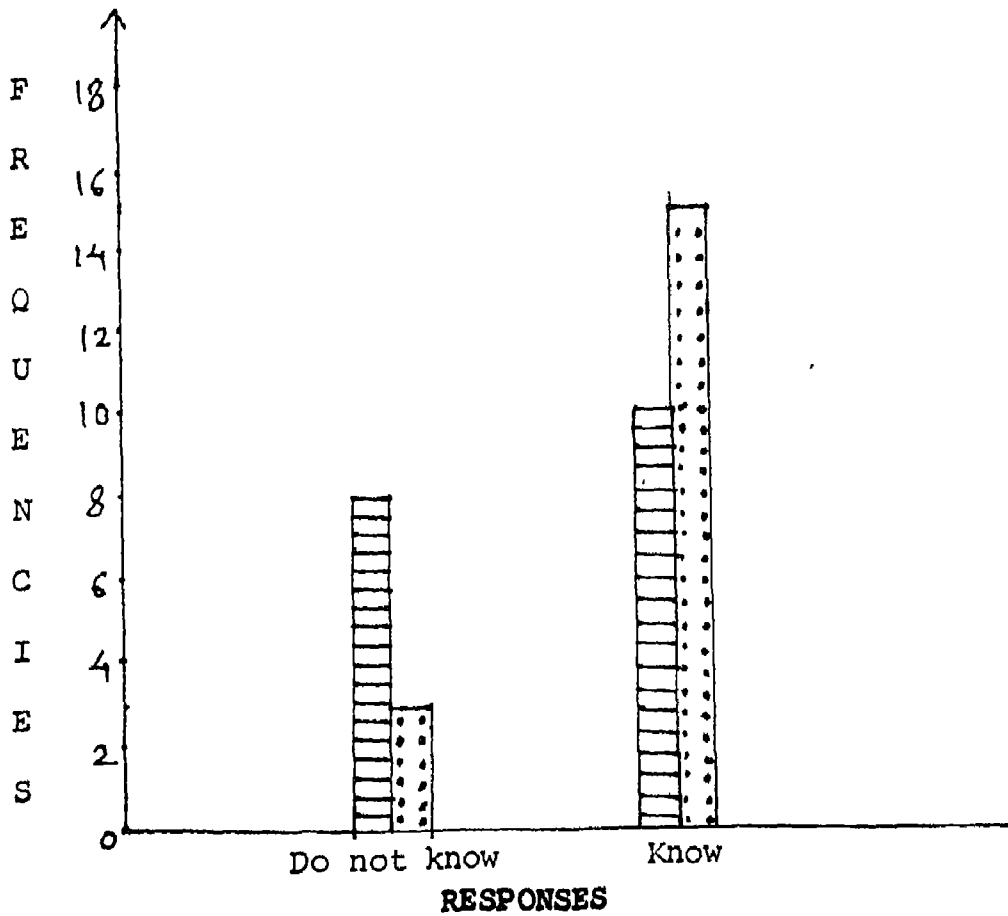
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-A-6

KNOWLEDGE REGARDING RESIDUAL HEARING
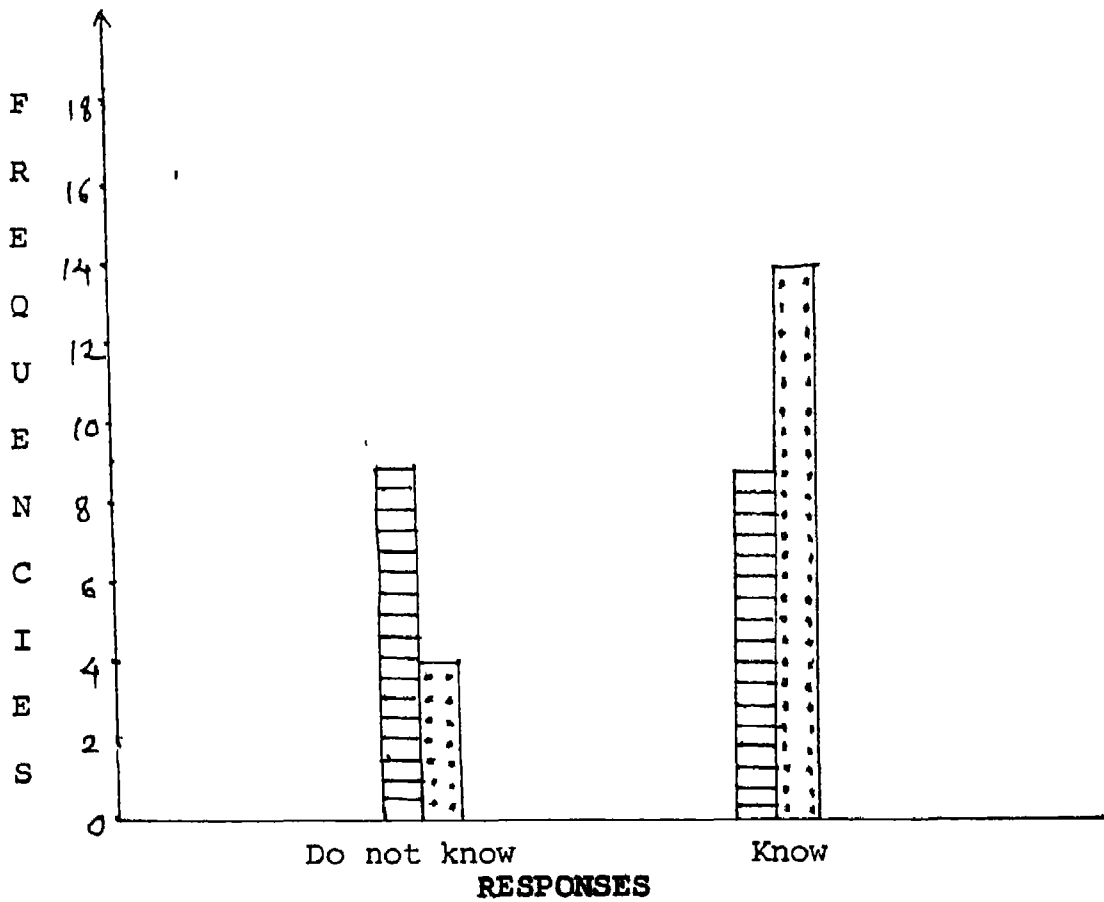
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-A-7

MEDICAL OPINION OF DIFFERENT DOCTORS REGARDING THE HEARING OF THE CHILD
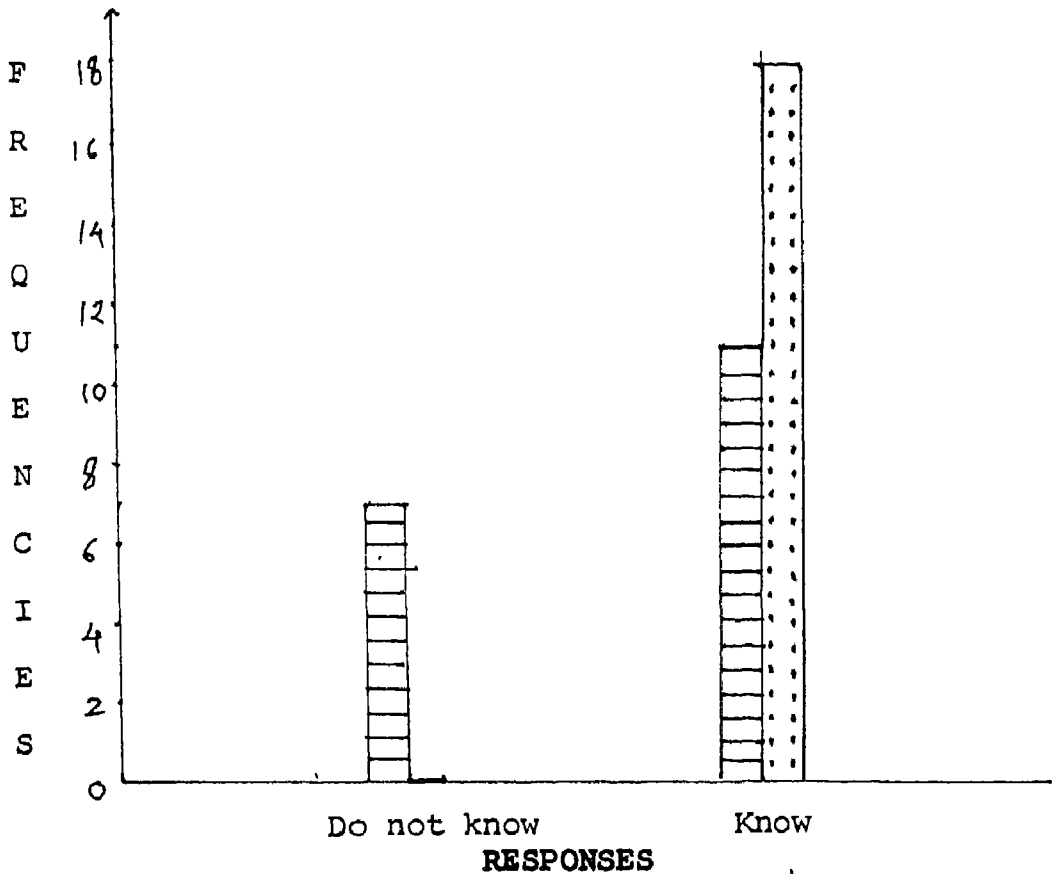
Pre-test Post-test

GRAPH NO. 5-A-8

OTHER THAN MEDICAL MEASURES ADOPTED
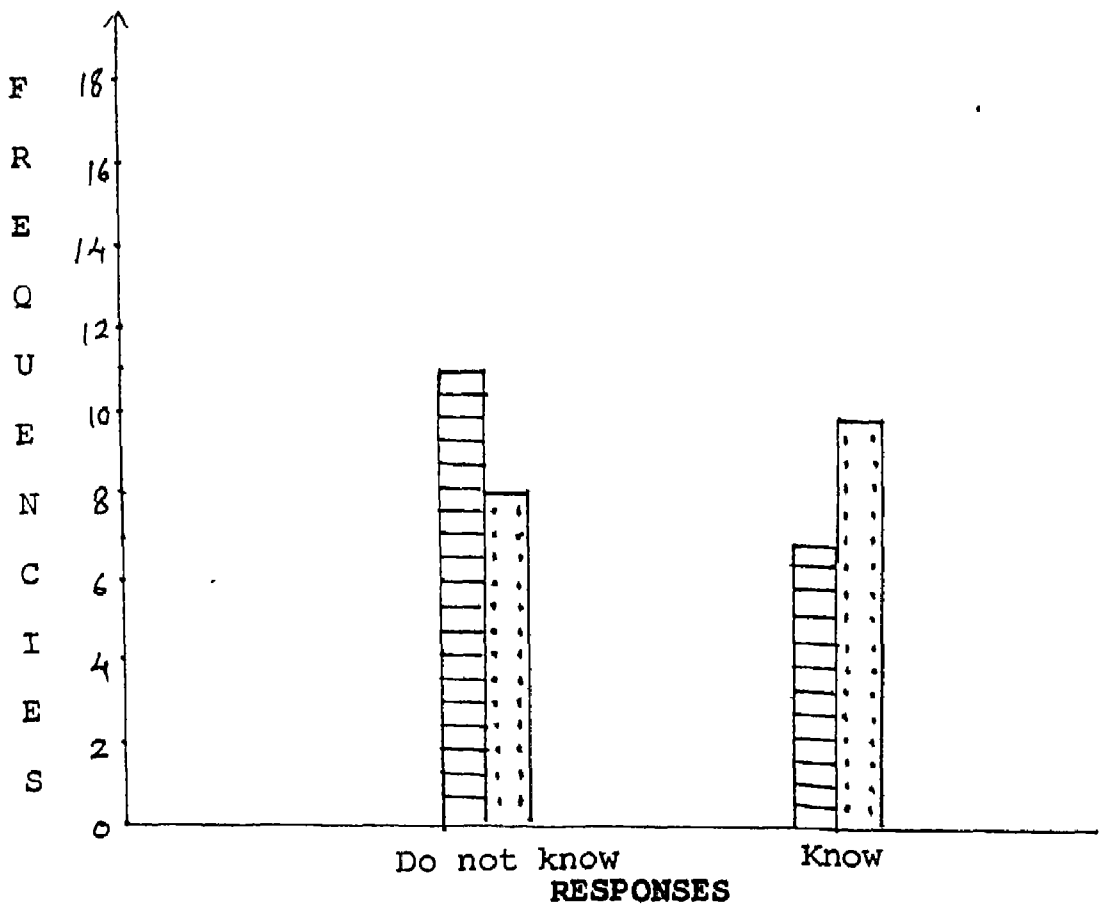
Pre-test

Post-test

<u>PART 'B'</u> : of the Questionnaire was regarding the information of the hearing aid.

1) Regarding the technical information, the parents were ignorant in the beginning. To the question what are the parts of the hearing aid, in the first test only 5 parents gave the correct response, while in the post-test 12 parents have got the correct answer. It shows that the information given during the project was well conceived by them.
Please see the Graph No. 5-B-1.

2) The second question was about the change of battery. The incorrect responses in the first test were 15 and the correct were only 3. In the posttest there is an increase in the number of correct responses which was tribbled. It shows that the parents have got a correct idea about the change of cells, etc.
Please see Graph No. 5-B-2.

3) During the project we were insisting that the parents should see that the child puts on the hearing aid continuously during the day. It was reported by some parents that in the schools the teachers put on the hearing aids to the child during the school hours and take them away and keep in the cupboard when the child leaves for home. Naturally children are without hearing aid when they are moving about in the home,

in society. This hampers their hearing experiences. On enquiry with some teachers, in the matter, they reported that the parents do not take due care of the aid. Manytimes they send the child without it. It is handled carelessly by the parents. Under these circumstances teachers prefer to use it only when the child is in the school. We discussed this with the parents and appealed to them the importance of using the hearing aid continuously. The result is that the number of parents using the hearing aid for the child continuously, increased from 8 to 12 in the post-test. Please see Graph No. 5-B-3.

4) Parents are always faced with the question as to which hearing aid is good. They are mostly dependent upon the advice given to them by the professionals. These professionals recommend the hearing aid of particular company. The parents are under wrong impression that hearing aid of a particular company is the best. This question was asked to test this information. In the first test all the parents gave the name of a company. It was not really expected. In the second test the number of parents giving the correct response i.e. 'the quality does not depend upon the company' is given at least by 4 parents.
Please see Graph No. 5-B-4.
There is also one more false notion among the parents that higher the price, best is the hearing aid.

5) Manytimes the child is without hearing aid. It may be due to the fact that the aid is given for repairs or child is tired of hearing aid, etc. Under these circumstances, child should be taught without the aid. He should be taught to lip read. The question was asked to see whether parents teach the child when he is not using the hearing aid. The number of correct responses increased in post test from 7 to 14. It is doubled. Our insistance on this point has really helped the parents in proper direction.

Please see Graph No. 5-B-5.

From the above discussion, it will seen that parents had received lot of information about the use and maintenance of hearing aid through the lecture-cum-discussion on the subject, by Smt. Kalyani Mandke.

GRAPH NO. 5-B-1

INFORMATION REGARDING THE PARTS OF THE HEARING-AID
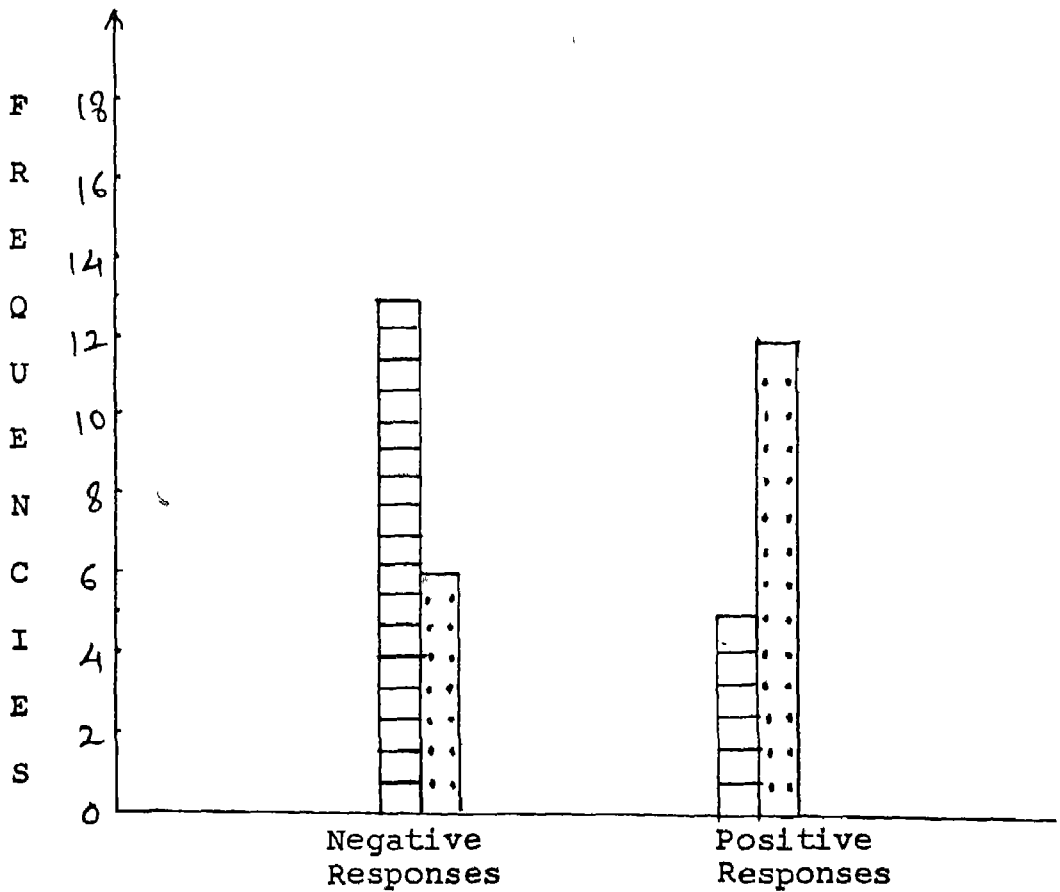
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-B-2

INTERVAL OF CHANGING THE BATTERY OF HEARING-AID

Pre-test

Post-test
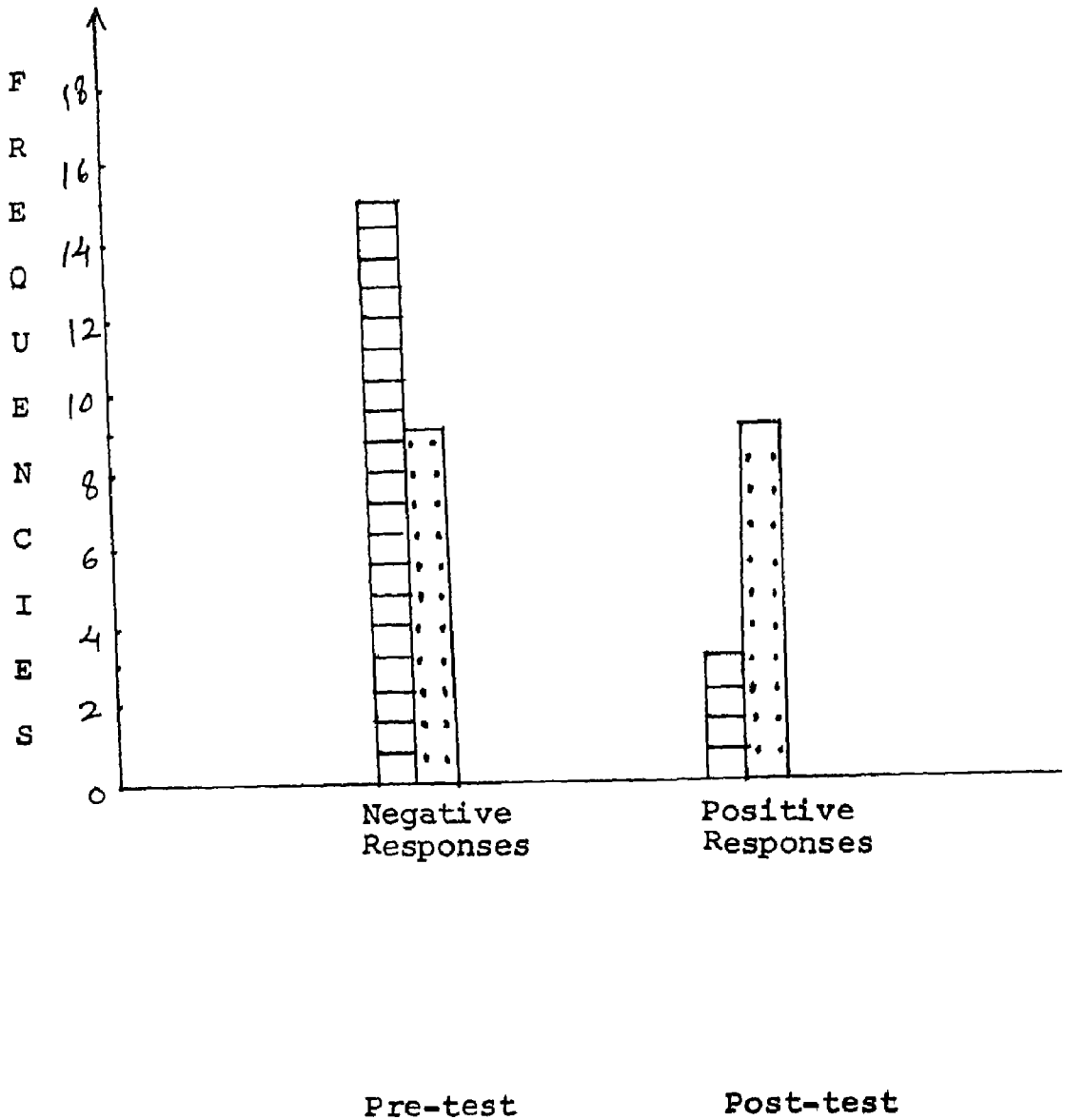
GRAPH NO. 5-B-3

CONTINUOUS USE OF HEARING-AID BY THE CHILD

Pre-test

Post-test
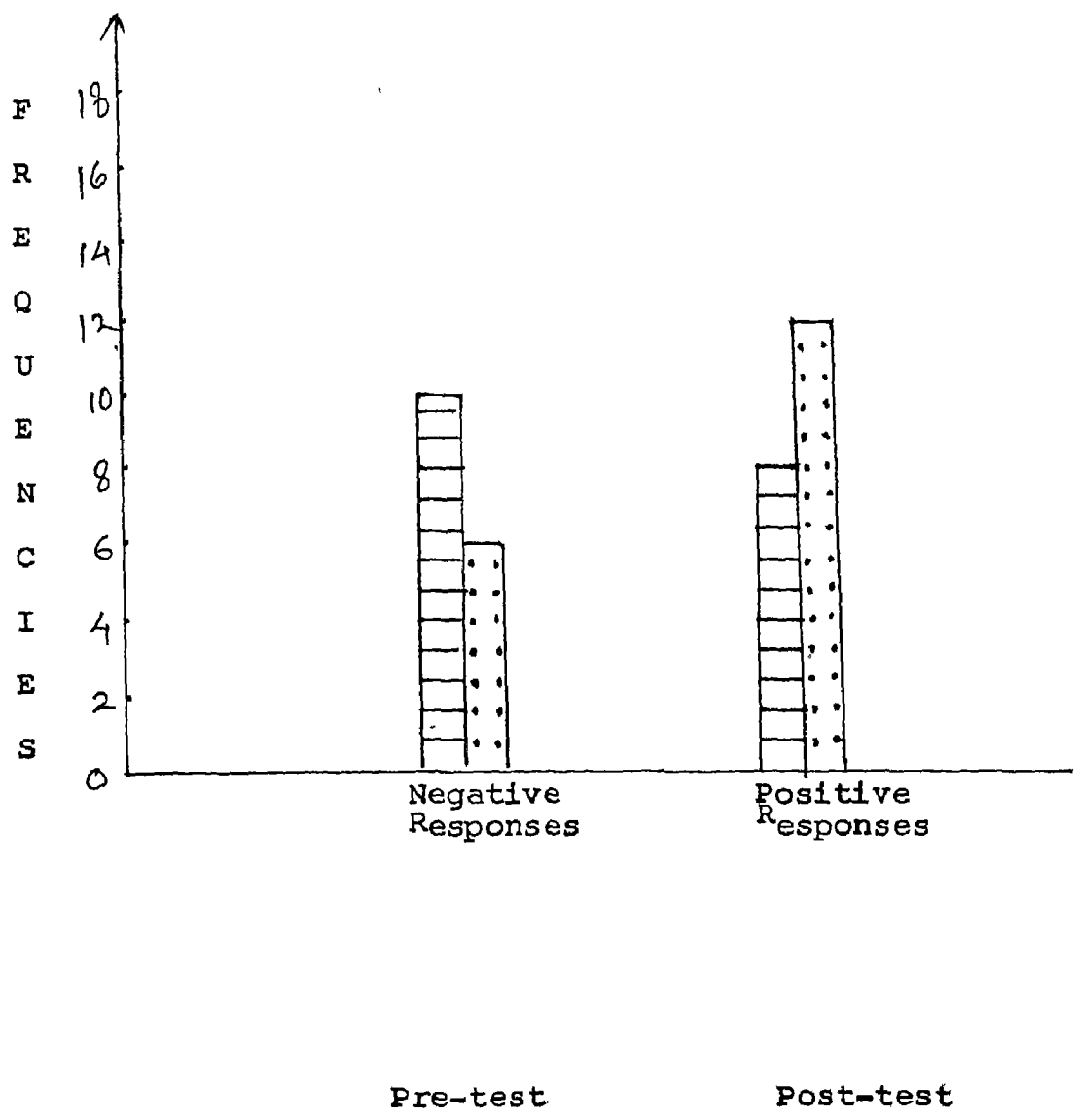
GRAPH NO. 5-B-4

KNOWLEDGE ABOUT THE BEST QUALITY OF THE HEARING-AID

Pre-test Post-test
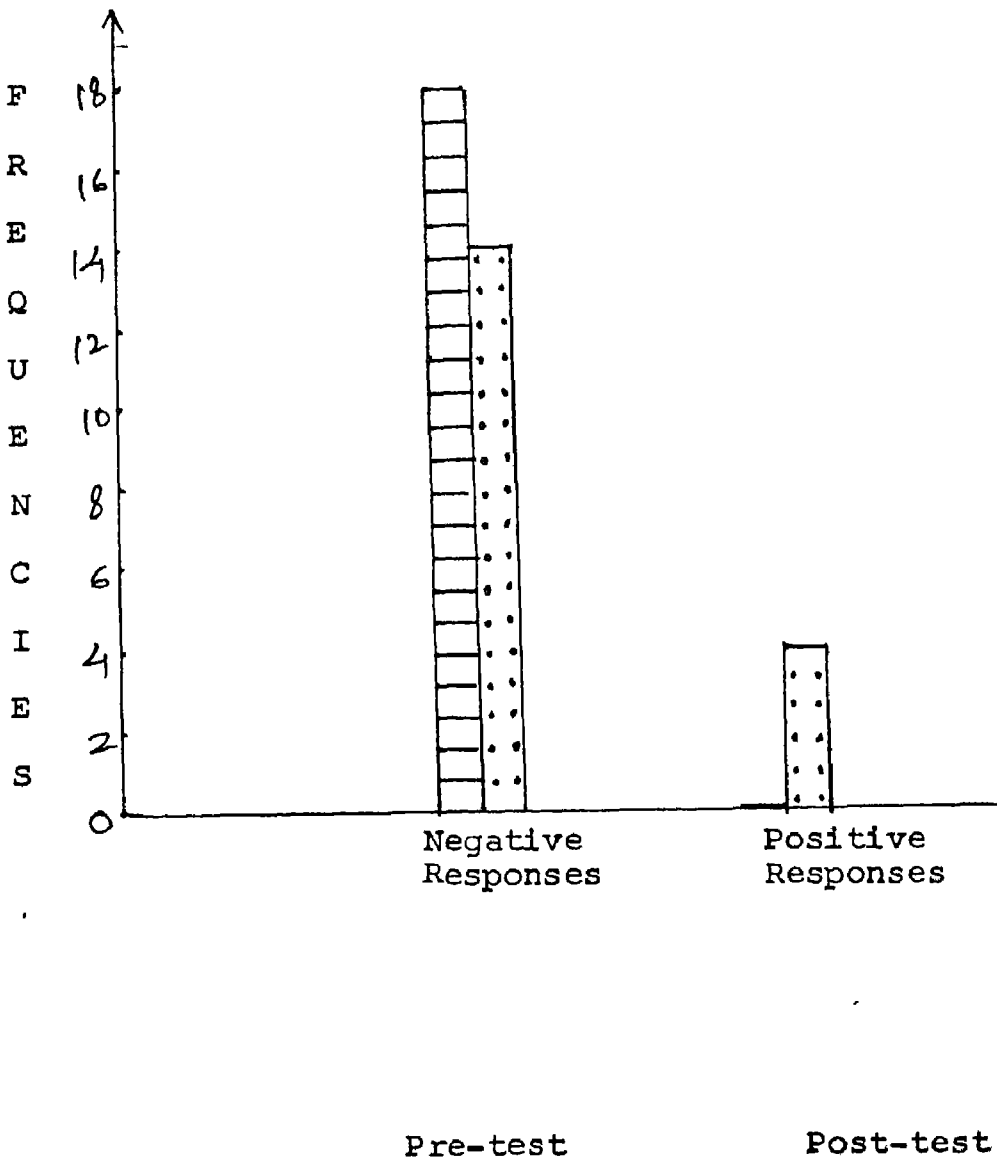
GRAPH NO. 5-B-5

TEACHING THE CHILD TO SPEAK WITHOUT WEARING HEARING-AID

Pre-test Post-test
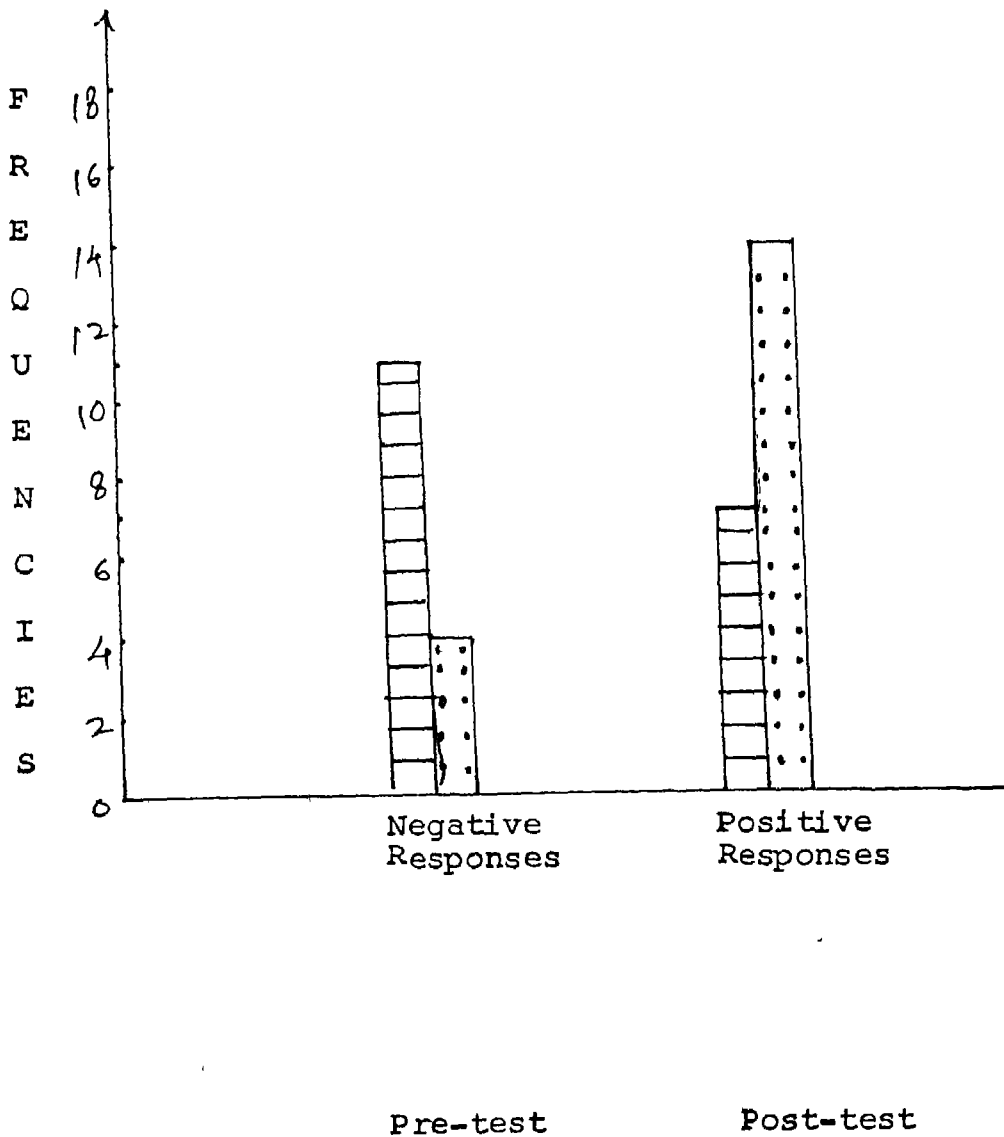
PART 'C': This part contains some statements. These statements are based on the certain concepts right and wrong. Through informal discussions Investigator had revealed that the parents carry many wrong concepts. They sometimes observe such measures which do not help the child in any way. During the course of the programme inputs were given in this behalf. The analysis of the data is as follows :

There were 15 statements in all. The parents had to tell whether the statement is right or wrong.

There was an attempt to see what is the overall aggregate picture so far as the pretest and posttest results are concerned.

In all, there were 270 responses. In the pretest the incorrect responses were 45 and the correct were 154. It was not a very bad picture. But the main point to be considered was there were 71 responses as uncertain or 'cannot tell.'

If we look at the responses in the posttest, it will be seen that the number of uncertain responses is reduced to 9. This is a very good indication as the parents had started to think specifically on certain points. Similarly the number of correct responses is increased to 218 from 154.
Graph No. 5-C gives the idea of the same.

1) The first question was about the relationship of use of hearing aid and the cure of hearing loss. The number of parents giving the correct response has increased from 7 in pretest to 13 in the posttest. It is nearly doubled. The uncertainty on the part of the parents is reduced to 0. This is really significant. Please see Graph No. 5-C-1.

2) The next statement was like this.'All the sounds can be heard by using hearing aid'. This is not a correct statement. This was pointed out by 9 parents in the pretest and by 15 parents in the posttest. It is a good change. Uncertainty on the part of the parents is reduced to 0 in the posttest.
Please see Graph No. 5-C-2.

3) The next statement was incorrect, which reads like this. 'One can hear better by using costly hearing aid'.

The number of parents giving correct response is increased from 11 to 15 in posttest. The number of uncertainty about the response is reduced to 1 from 5 in the posttest. Our audiologist had given them good orientation in this case, because most of the people always insist that they should be given costly hearing aid. They are ready to spend on that. Really utility and not the cost that matters in this case.
Please see Graph No. 5-C-3.

4) It is our experience that parents are very eager to hear the child's voice. They are under wrong impression that as soon as they make the child use hearing aid, it will start speaking. This is really a false concept. To test this, the statement is given like this. 'child can speak by using hearing aid'.

The correct response in the pretest -5- is increased upto 9 in the post-test and the uncertainty is reduced from 4 to 1.
Please see Graph No. 5-C-4.

One thing, we insisted throughout the course that the parents should respond the child when he has, expectation for the same. It is the practice on the part of the parents to call by name the deaf child when he starts using hearing aid. They call out, the child hears, looks to the person with expectation - the person - may be a mother or father is satisfied that the child can hear. She or he does not communicate any more with the child. The child is disappointed. Naturally next time he does not give any response to the call after his name. The parents think that child can-not hear again. They are disappointed. When we used to point out such experiences they used to realize the importance of the treatment to the child in this respect.

5) Parents think that the structure of the ear of the handicapped child is different than that of the normal child. A statement to that effect was given. The number of correct responses was increased from 13 to 17 in the post-test and the number of uncertain responses is reduced to 0.
Please see Graph No. 5-C-5.

6) In our informal discussions the parents wanted to know about the fate of their second child. Some of them pointed out that some professionals told them that if the second child is born after seven years, it will be normal. We wanted to know about their understanding in this case. The number of correct response was increased from 12 to 17 and the uncertainty on the part of the parents was reduced to 0 in the post-test.
Please see Graph No. 5-C-6.

7) Parents do not spare any measures for the cure of their child. They think that some medical treatment will play a magic and their child will regain hearing. The statement No. 7 was about cure by homeopathy. The number of correct responses is increased from 11 to 15. But it seems that parents have doubts. The uncertain answers were 3 in the post-test also.
Please see Graph No. 5-C-7.

8) The next statement is about the use of the

headphones. 12 parents responded correctly in the pre-test. Strongely enough the uncertainty on the part of the parents in pre-test is turned into correct response in the post-test. It seems that 4 to 6 parents were totally ignorant about their information. Please see Graph No. 5-C-8,

9) Parents are under the impression that their deaf child will start hearing as normal child does, after using the hearing aid. It is not at all correct. The correct response in this case is increased from 10 to 15 in the post-test. Please see the Graph No. 5-C-9.

10) & 11) Parents **adopt** any measures for the child. Some measures have no logical significance. But parents get solace in that. They go on doing so many things desperately. We came to know about two such measures followed by the parents. One is to put oil in the ear and the second is to apply oil daily at the back of the ear.

During our programme we always persuaded the parents for not going for such measures. The result was positive. There was no **uncertainty** on the part of the parents in the post-test.**Instilling**oil in the ear is a traditional measure followed by many people in our country even in the case of normal child. Even then information given during the programme was rightly digested by the parents. It is a good indication of change in attitude. Please see Graph No. 5-C-10 and 5-C-11.

12) The next statement was regarding the defect of the internal ear. We gave them the orientation on the subject with the help of models - charts, etc. The result is that the number of correct response increased to 12 in post-test from 7 in the pre-test and the uncertainty on their part was reduced to 0 in the post-test.
Please see Graph No. 5-C-12.

13) 'If the hearing aid is used with the mould it helps more'. This was the statement to which 17 parents gave correct response in post-test. It was 12 in the pre-test. The uncertainty was reduced to 0. We observed that after getting proper orientation, many parents started making the child use the hearing aid with the mould.
Please see Graph No. 5-C-13.

14) Severe cold may result in the deafness is an idea in the minds of some parents. So the statement was given accordingly.

The correct response in this case was increased from 8 in pretest to 12 in post-test.
Please see Graph No. 5-C-14.

15) As mentioned earlier, the parents wanted to make the child hear by any measure. They heard about the new operation viz. 'Cochlear Implant'. It was

believed that if Cochlea is implanted, child can hear clearly. There were many points to be considered in this respect. Many of them must have consulted the specialists as the correct response in the pretest was 13%, which is good. It was 15 in the post-test.

Though the parents had some idea about the Cochlear implant, they had more orientation after the lecture by Dr. Hemant Dabake.

Please see Graph No. 5-C-15.

GRAPH NO. 5-C

CONSOLIDATED RESPONSES

	Incorrect Responses	Un-certain Responses	Correct Responses	Total
Pre-test	45	71	154	270
Post-test	43	9	218	270
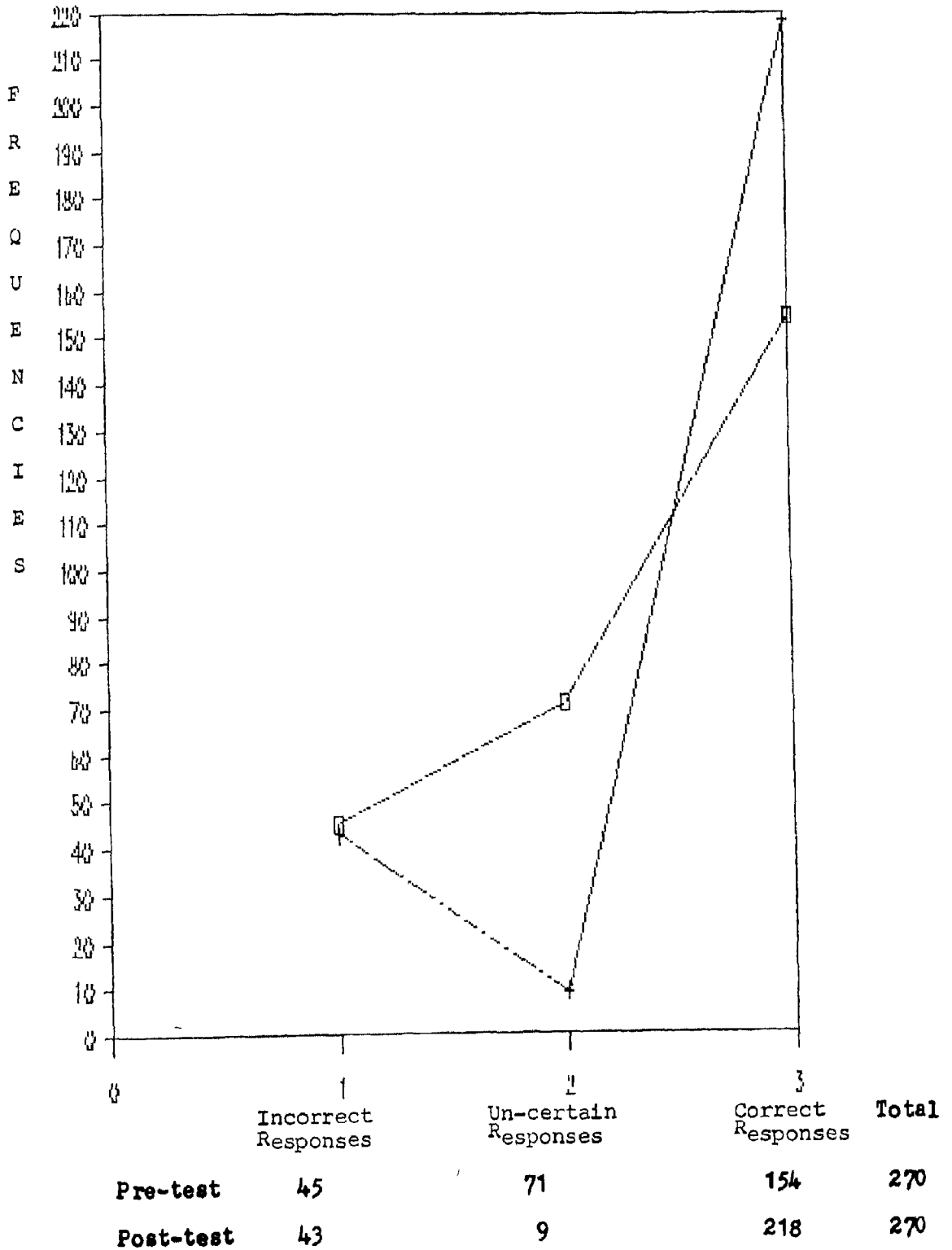
GRAPH NO. 5-C-1

THE HEARING LOSS CAN BE CURED BY USING HEARING-AID
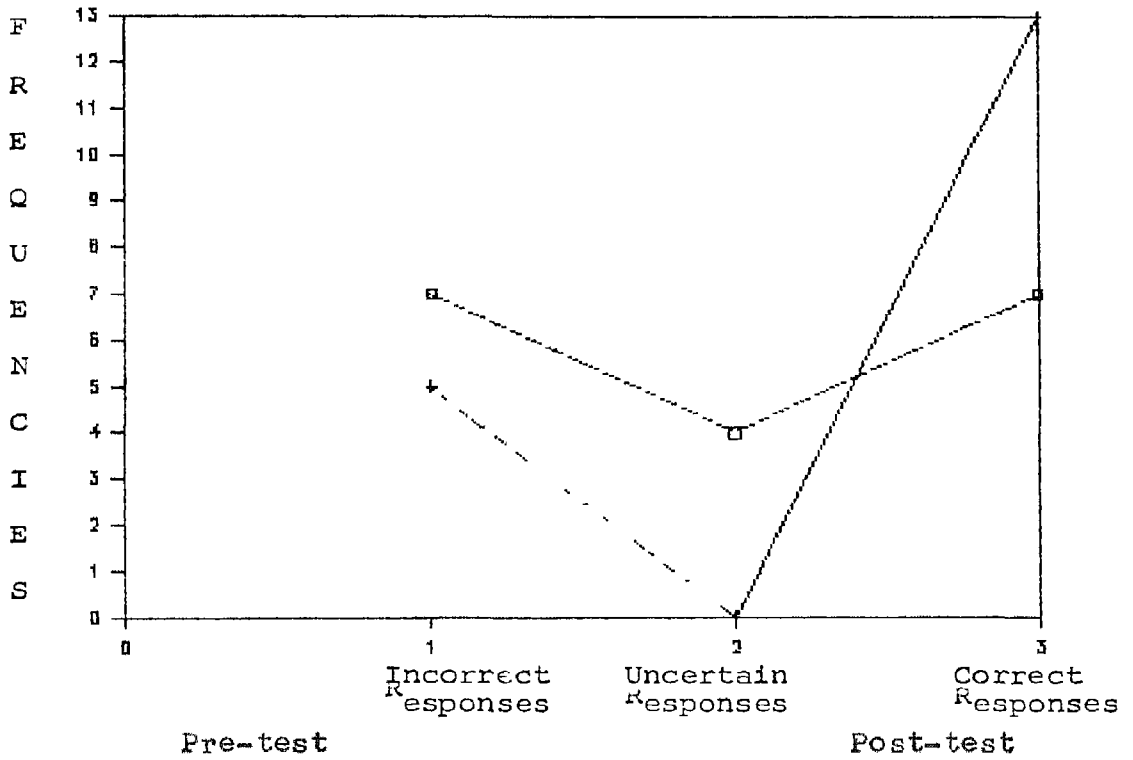
GRAPH NO. 5-C-2

ALL SOUNDS CAN BE HEARD IF A CHILD USES HEARING-AID
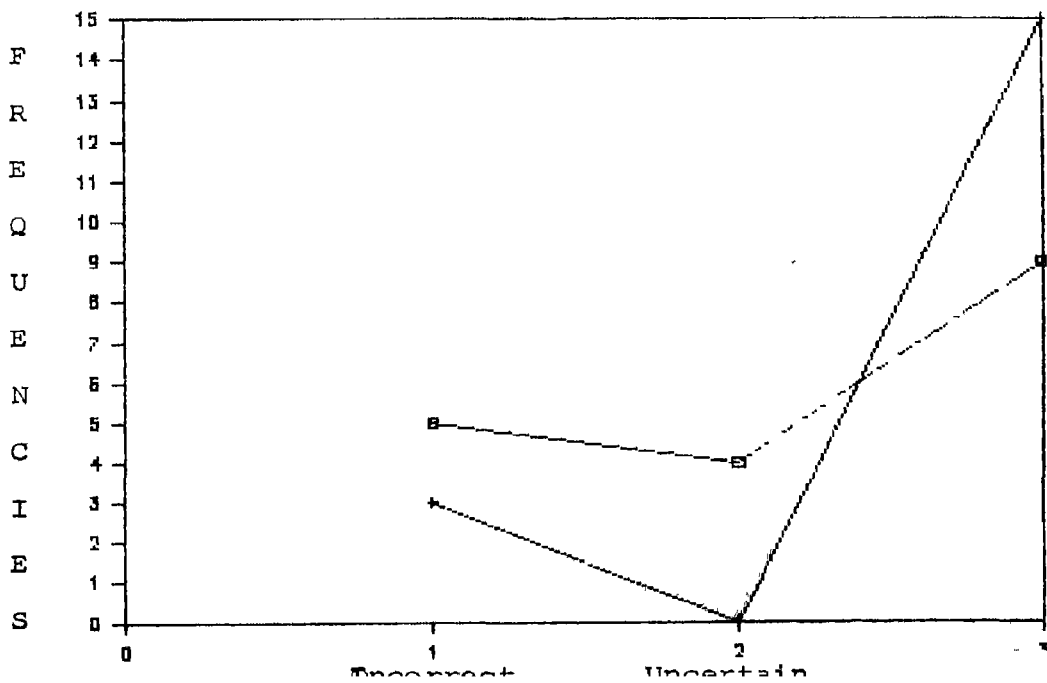
GRAPH NO. 5-C-3

ONE CAN HEAR BETTER, IF HE USES THE COSTLY HEARING-AID
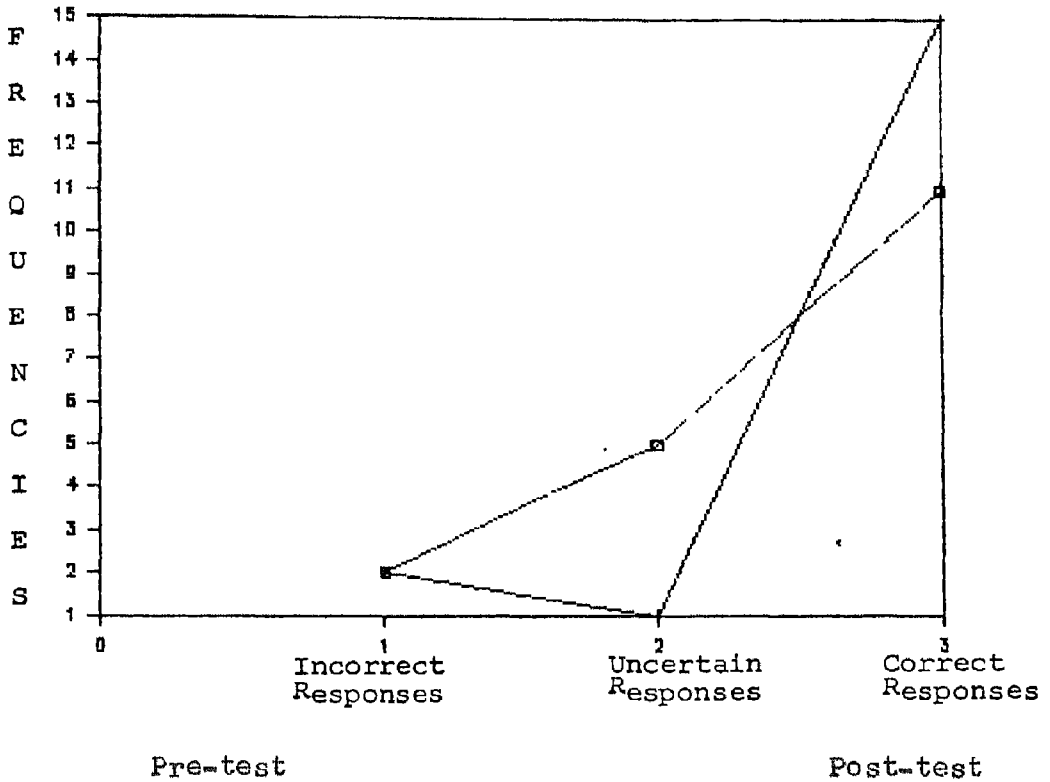
GRAPH NO. 5-C-4

A CHILD CAN SPEAK, IF HE USES HEARING-AID

FREQUENCIES

9
8
7
6
5
4
3
2
1
0

1 Incorrect Responses

2 Uncertain Responses

3 Correct Responses
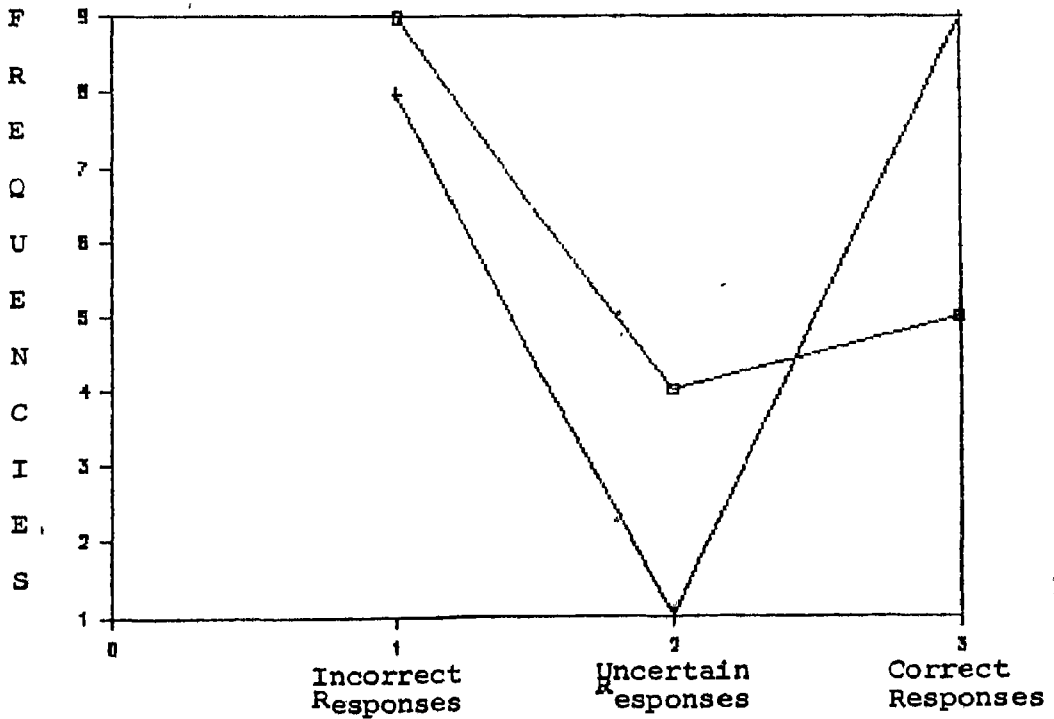
GRAPH NO. 5-C-5

The structure of the ear of normal and deaf child is similar
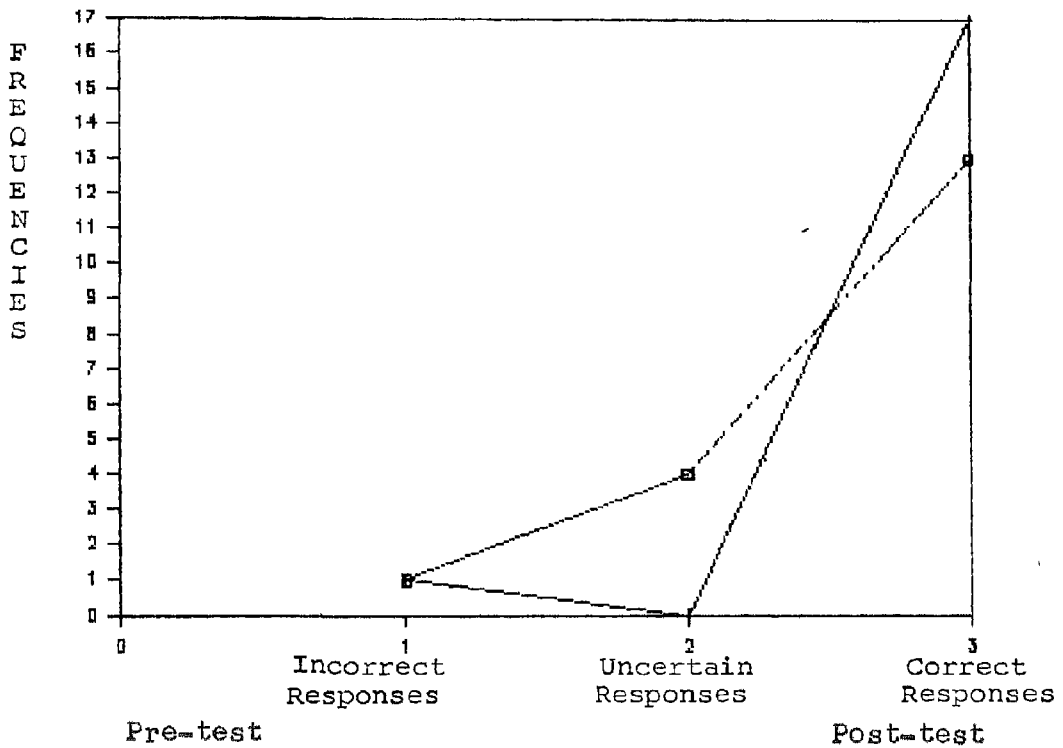
GRAPH NO. 5-C-6

If one has a deaf child, the second child should be born AFTER 7 YEARS SO THAT THE SECOND CHILD WILL NOT BE DEAF
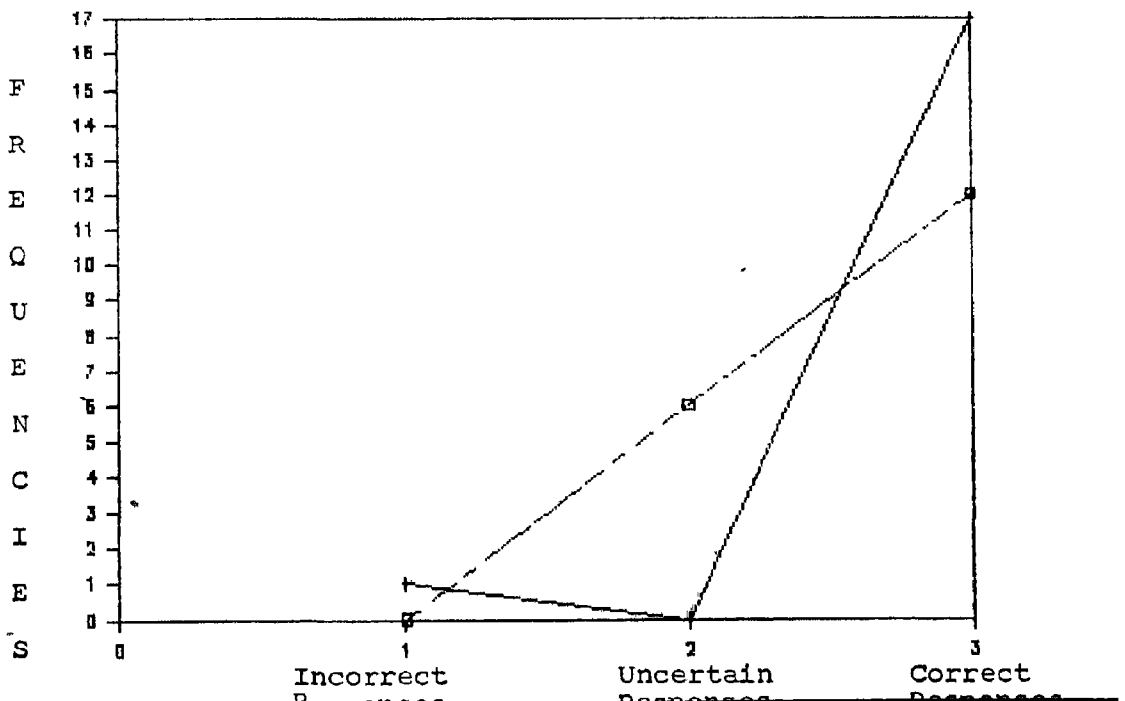
GRAPH NO. 5-C-7

DEAFNESS CAN BE CURED BY HOMOEOPATHY
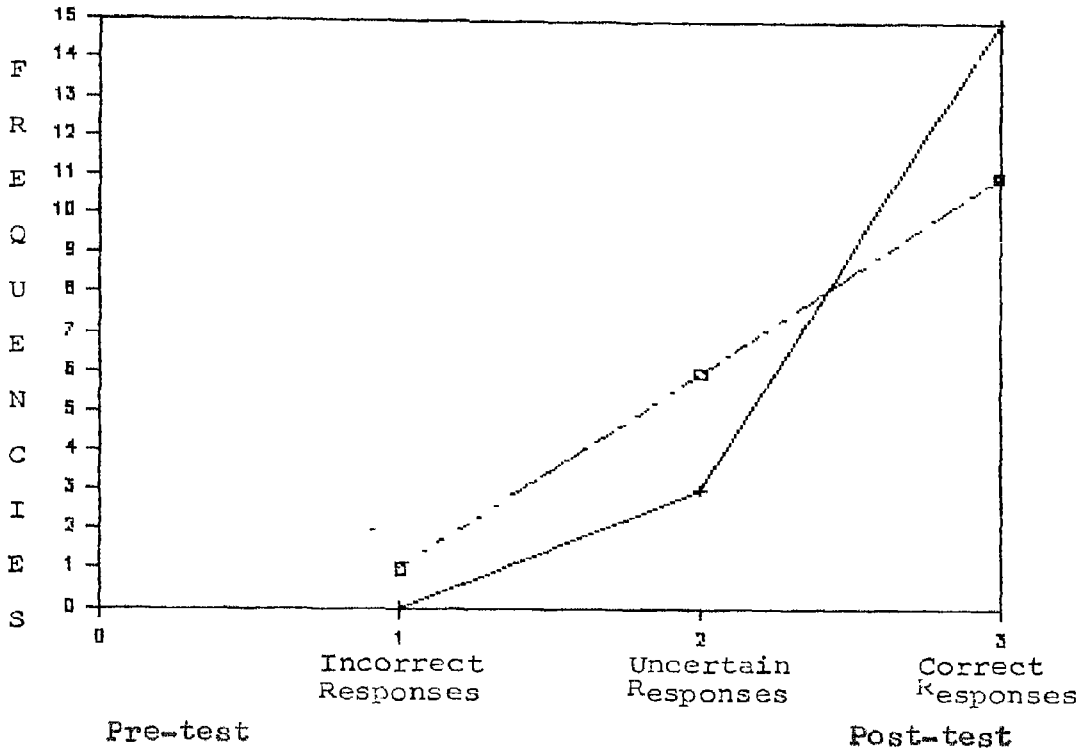
GRAPH NO. 5-C-8

HEAD-PHONES CAN BE USED IN PLACE OF HEARING-AID
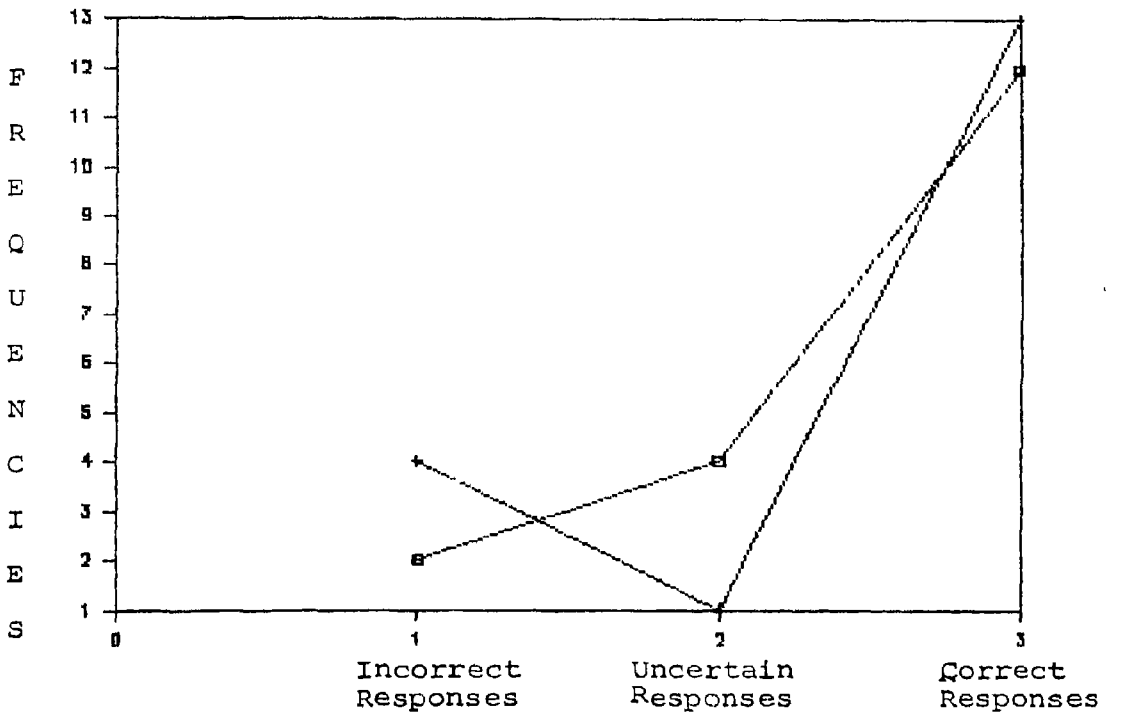
GRAPH NO. 5-C-9

A DEAF CHILD CAN HEAR AS GOOD AS NORMAL CHILD, IF HE USES THE HEARING-AID
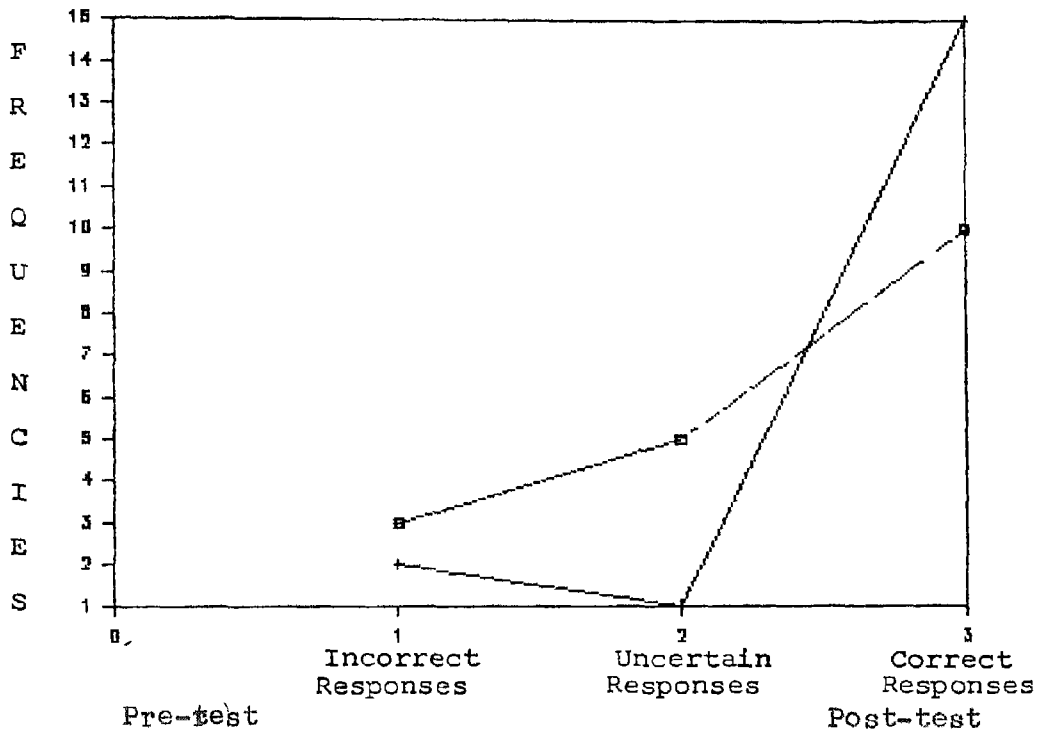
GRAPH NO. 5-C-10

THERE WILL BE CHANGE IN HEARING IF WE APPLY OIL AT THE BACK OF THE EAR
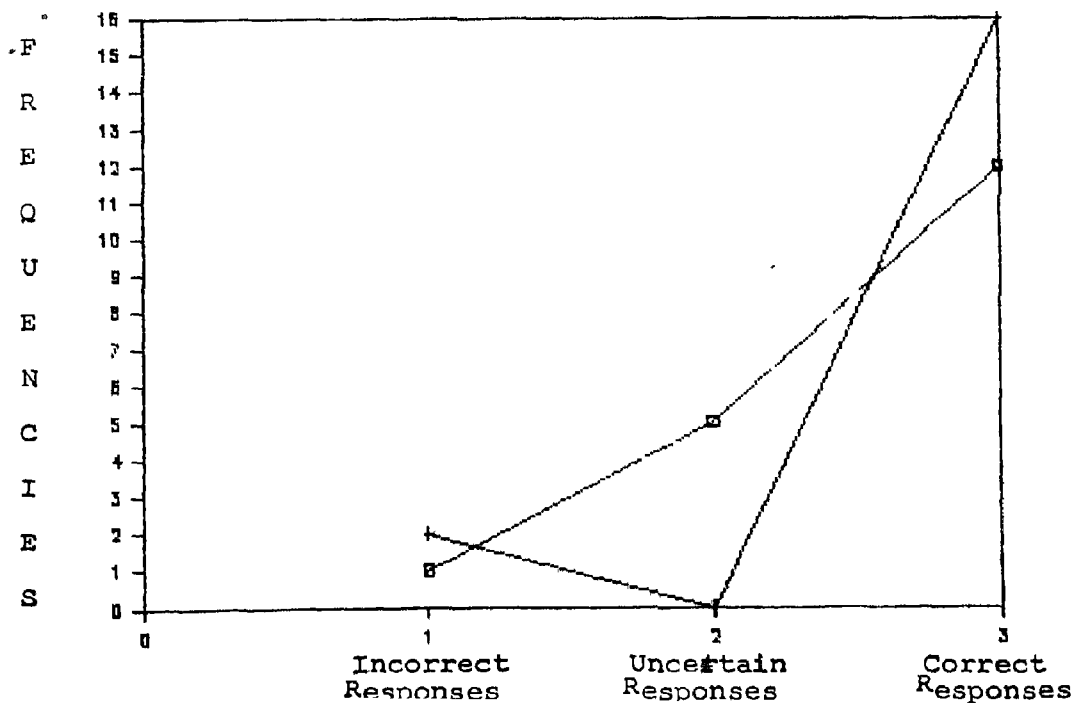
GRAPH NO. 5-C-11

IF WE PUT OIL IN THE EAR, THERE WILL BE CHANGE IN HEARING
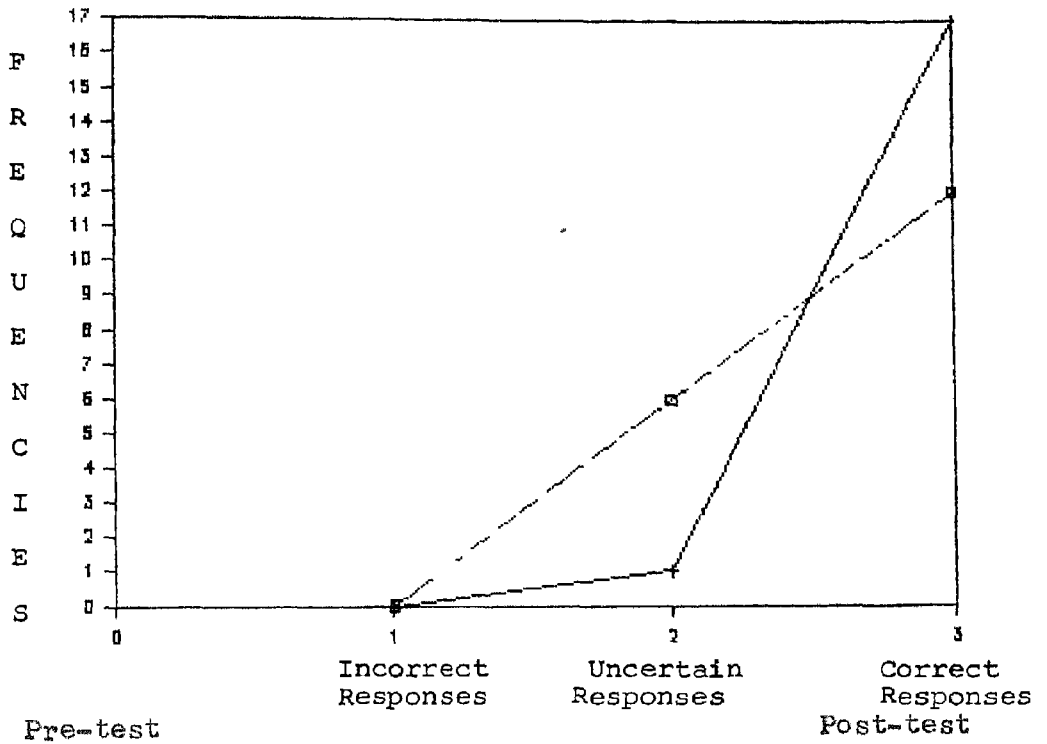
GRAPH NO. 5-C-12

ONE CAN HEAR, IF THE DEFECT IN THE INTERNAL EAR IS REMOVED
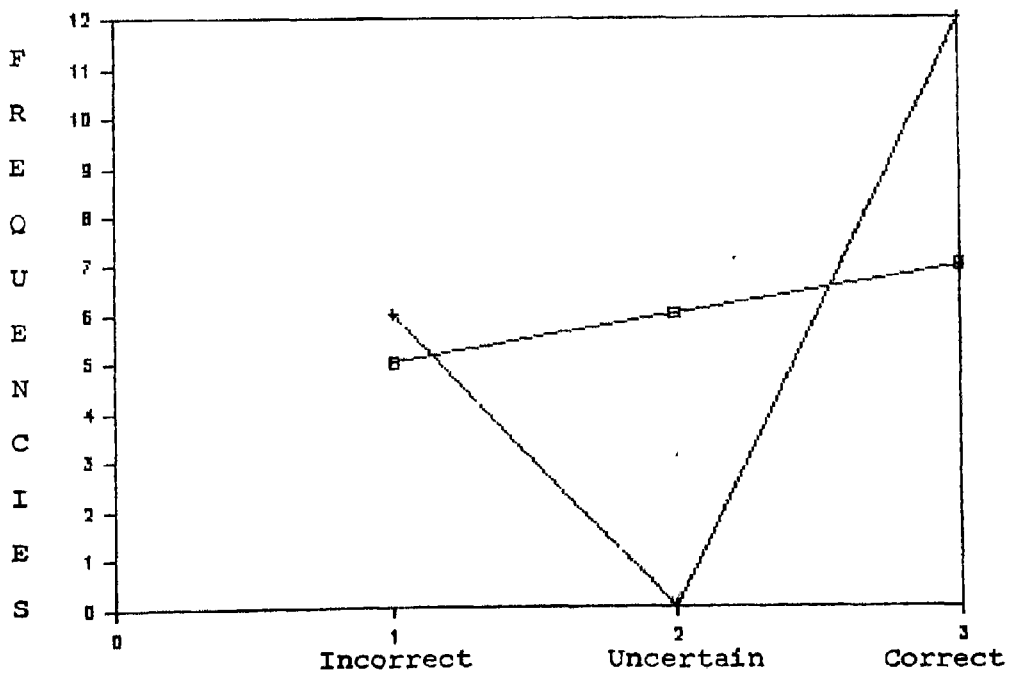
GRAPH NO. 5-C-13

IF HEARING-AID IS USED WITH MOULD, IT IS MORE HELPFUL
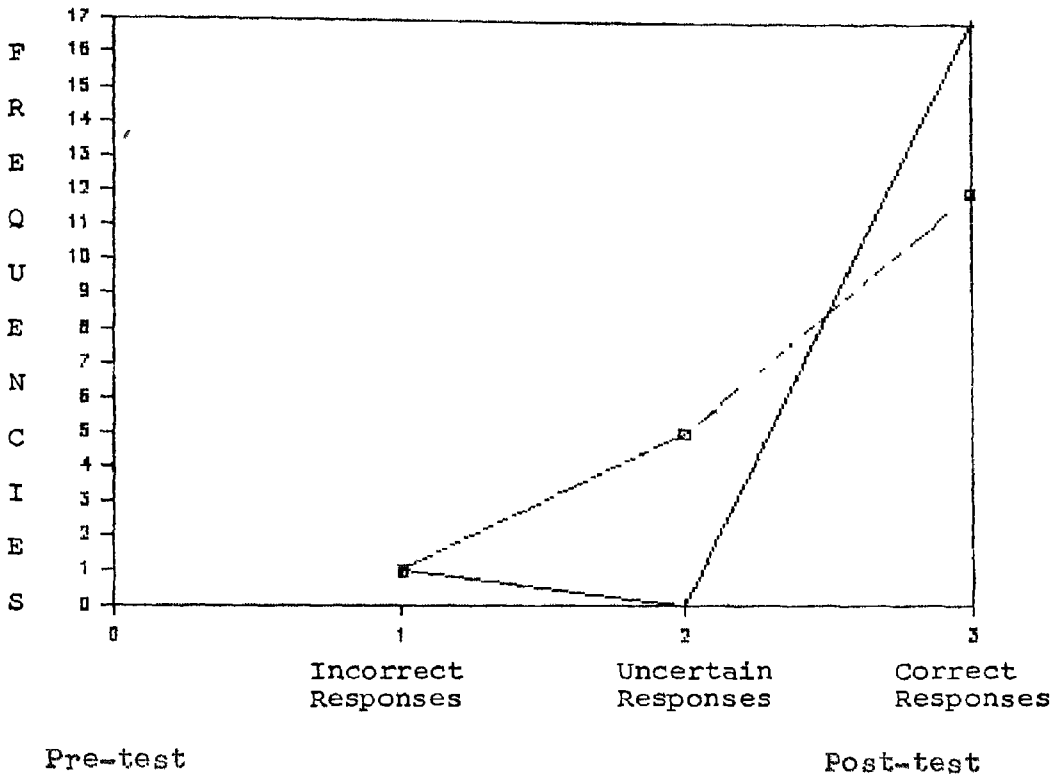
GRAPH NO. 5-C-14

DUE TO CONSTANT ATTACKS OF COLD ONE CAN BE DEAF

F R E Q U E N C I E S

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

0 1 2 3

Incorrect Responses

Uncertain Responses

Correct Responses
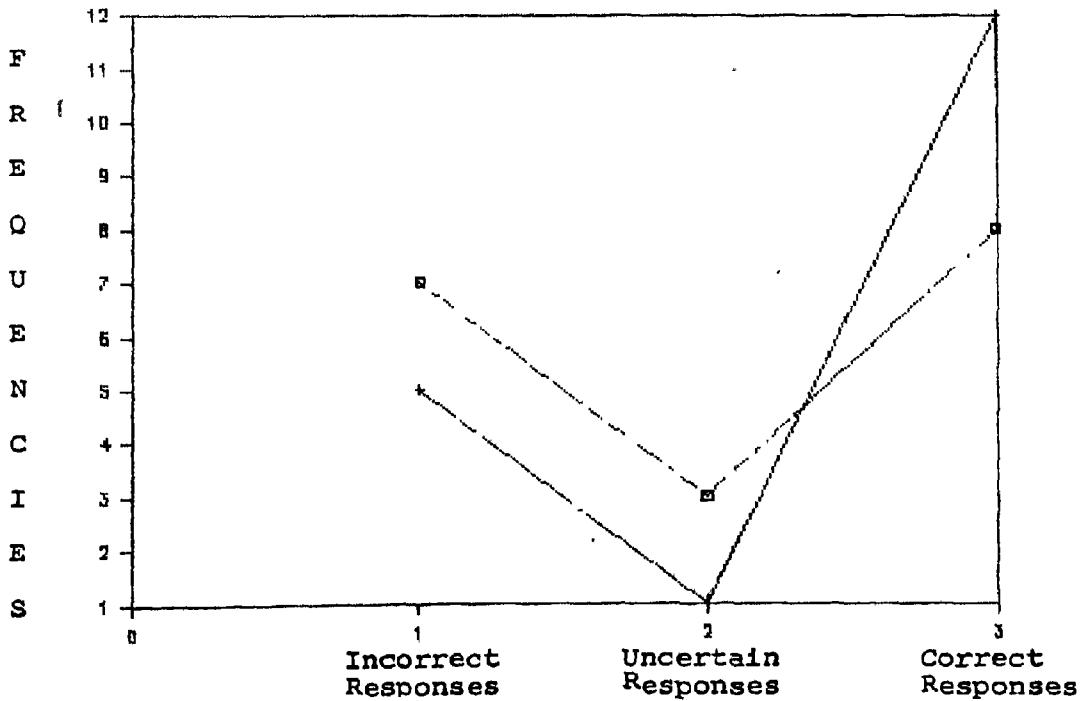
GRAPH NO. 5-C-15

DEAF CHILD CAN HEAR CLEARLY, IF OPERATED FOR COCHLEAR IMPLANT

Pre-test Post-test
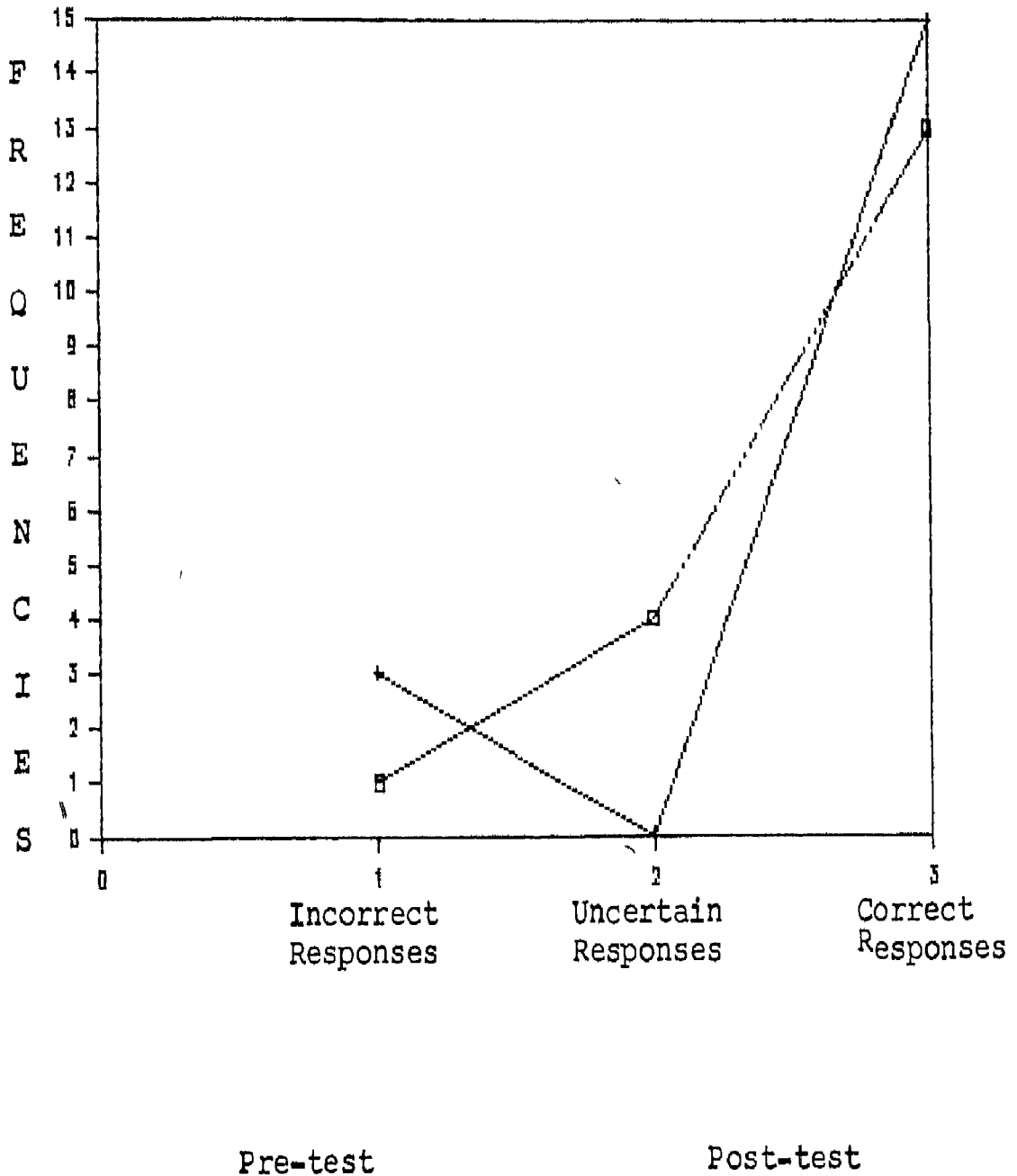
PART 'D' This part of the questionnaire deals with the parent's efforts in developing speech and language of the child. In the case of the child all minute details are to be noted daily. For this the parents are expected to maintain a diary. The interpretation is as follows :

1) Parents were asked to respond about the comprehension and the expression of words on the part of the child.

In the pretest 15 parents gave the negative answer, only 3 parents told something about the point; while in the post-test the number of parents giving correct answer was increased to 12. This is due to continuous insistance on our part to tell the parents to observe the child on every occasion when he is at home.

Please see Graph No. 5-D-1.

2) It is always expected that parents should teach the child at home. Parents have very honest efforts in this respect. 15 parents have given a positive response in pre-test, which is increased in the post-test cent percent.

Please see Graph No. 5-D-2.

3) & 4) We wanted to see whether parents are in a position to locate the difficulties of the child in

comprehension and the expression of the words, so parents were asked to mention the words. It was observed that 12 parents were knowing about this point. They had mentioned some such words in their answers. The number is positively increased in post-test as 18 and 17. This shows that parents began to be more attentive in this respect.

Please see Graph No. 5-D-3 and 5-D-4.

5) & 6) Questions Nos. 5 and 6 were about the diary. It was observed that the number of parents who were maintaining diary was only 8 in pre-test. It was increased upto 12 in the post-test. Same is the picture in case of question No. 6. It is increased from 5 in the pre-test to 13 in the post-test. It seems that though 8 parents were maintaining diary in the beginning they were not very particular about the things to be noted, because only 5 parents could answer regarding the points to be noted. Similarly, though in response to 'Q' 5 in post test 12 parents gave positive response while in response to 'Q' 6 in post-test 13 parents gave the positive response. It may be that one parent, though did not tick positively in response to 'Q' 5 had tried to locate the points about 'Q' 6.

Please see Graph No. 5-D-5 and 5-D-6.

7) It is expected that teaching to the deaf child

should be responsibility of all the persons in the family. It is really a good picture that out of 18 parents, 14 parents have given the positive response even in pre-test and it is increased to 15 in post-test.

Please see Graph No. 5-D-7.

GRAPH NO. 5-D-1

KNOWLEDGE ABOUT COMPREHENSION AND EXPRESSION WORDS BY THE CHILD
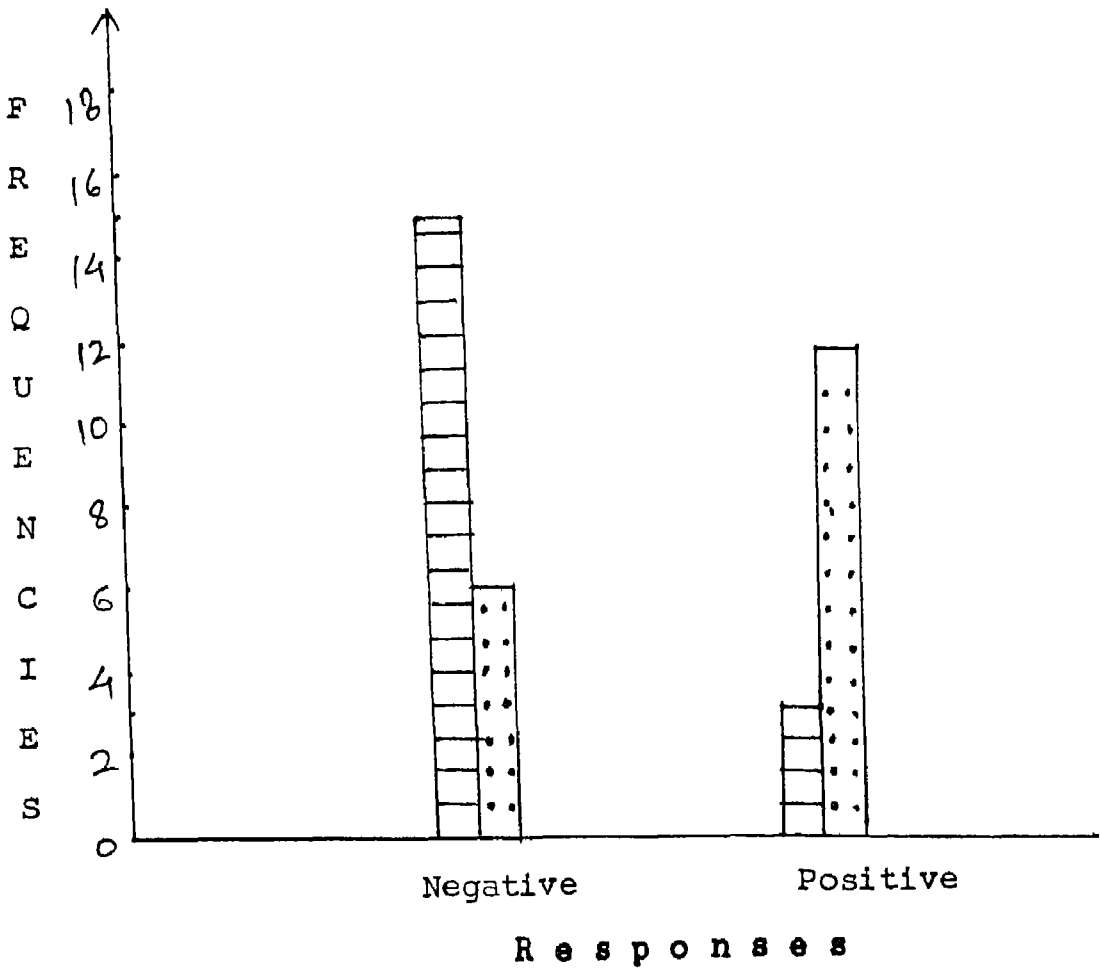
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-D-2

DAILY TEACHING TO THE CHILD
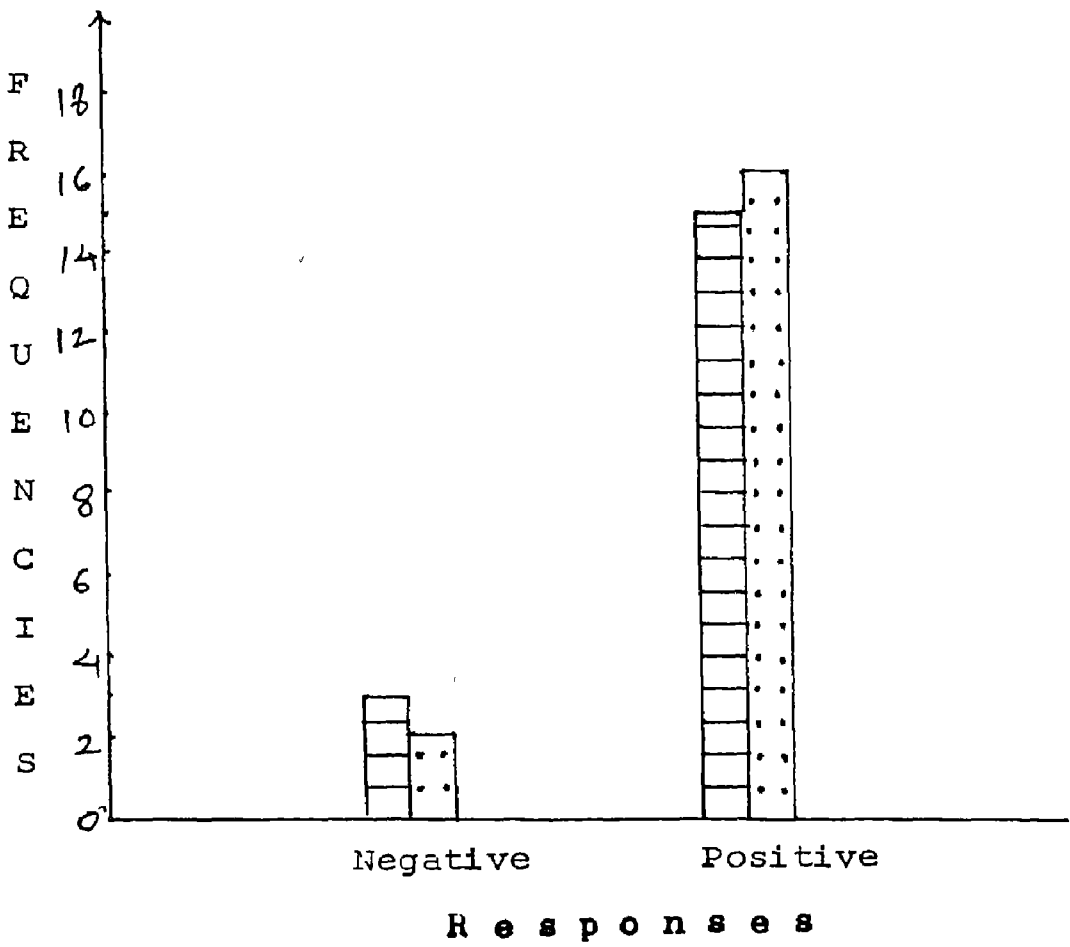
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-D-3

THE WORD THE CHILD GRASPED EASILY
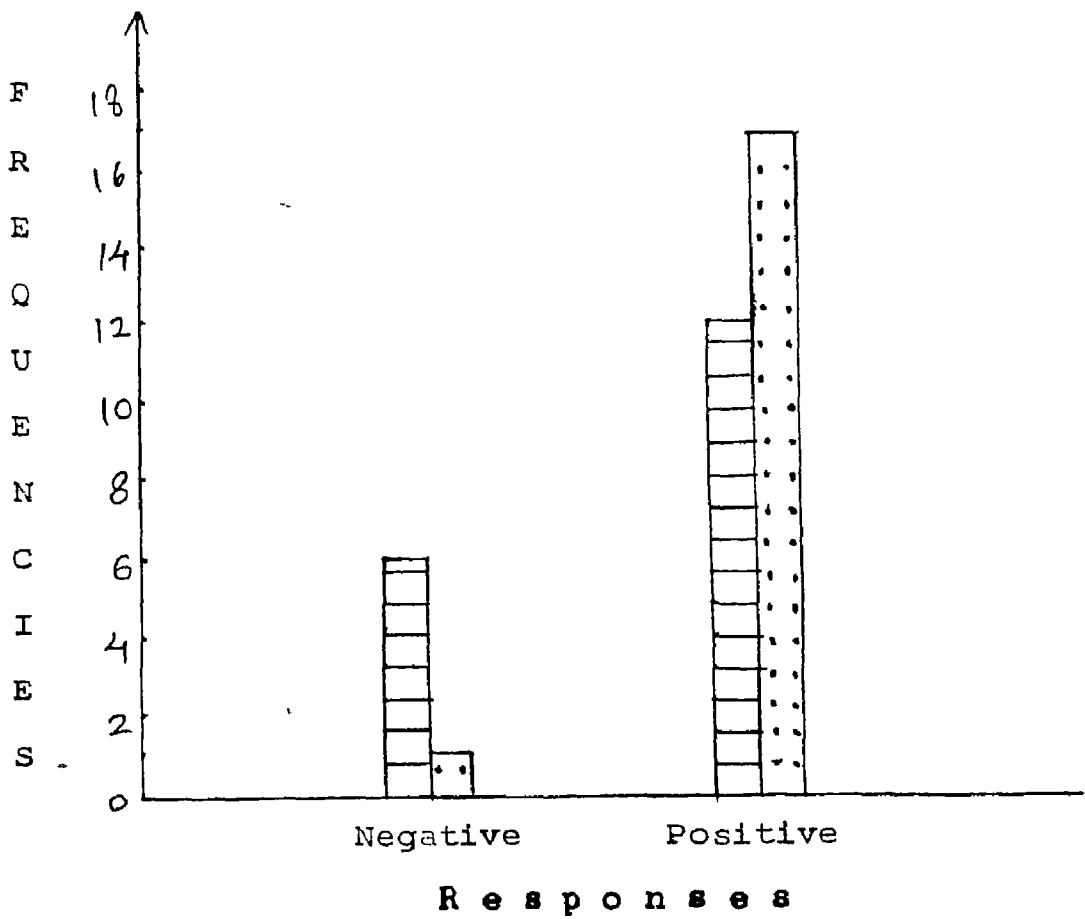
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-D-4

THE WORD THE CHILD GRASPED WITH DIFFICULTY
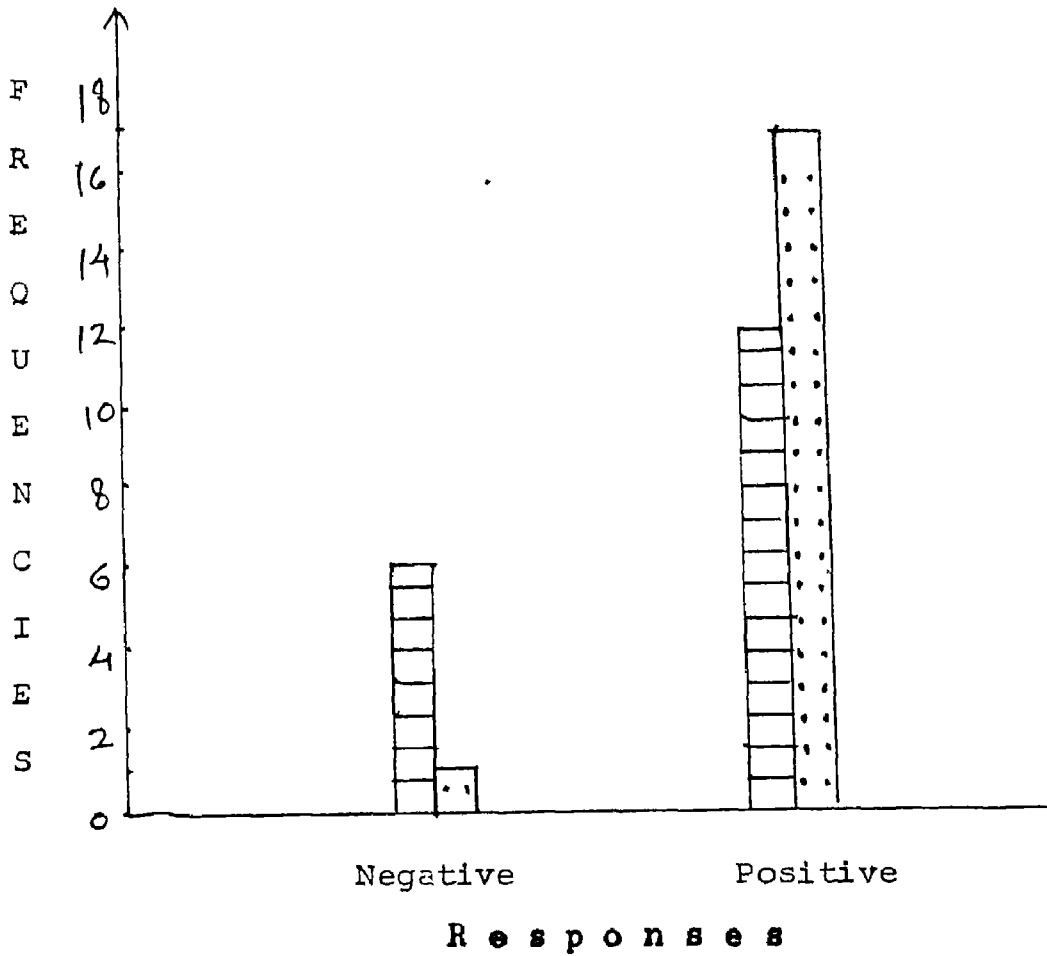
Pre-test Post-test

GRAPH NO. 5-D-5

MAINTENANCE OF DIARY FOR THE CHILD
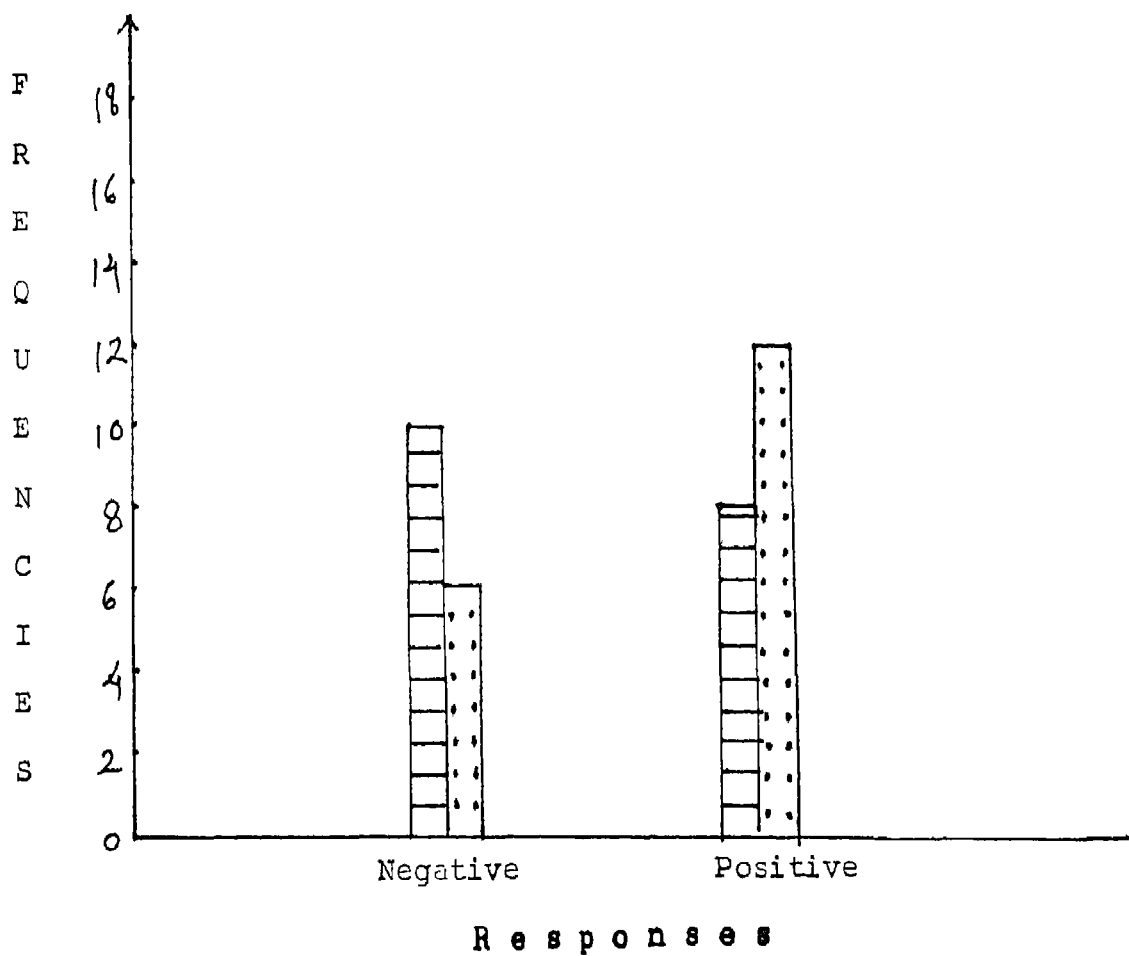
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-D-6

POINTS TO BE NOTED IN THE DIARY
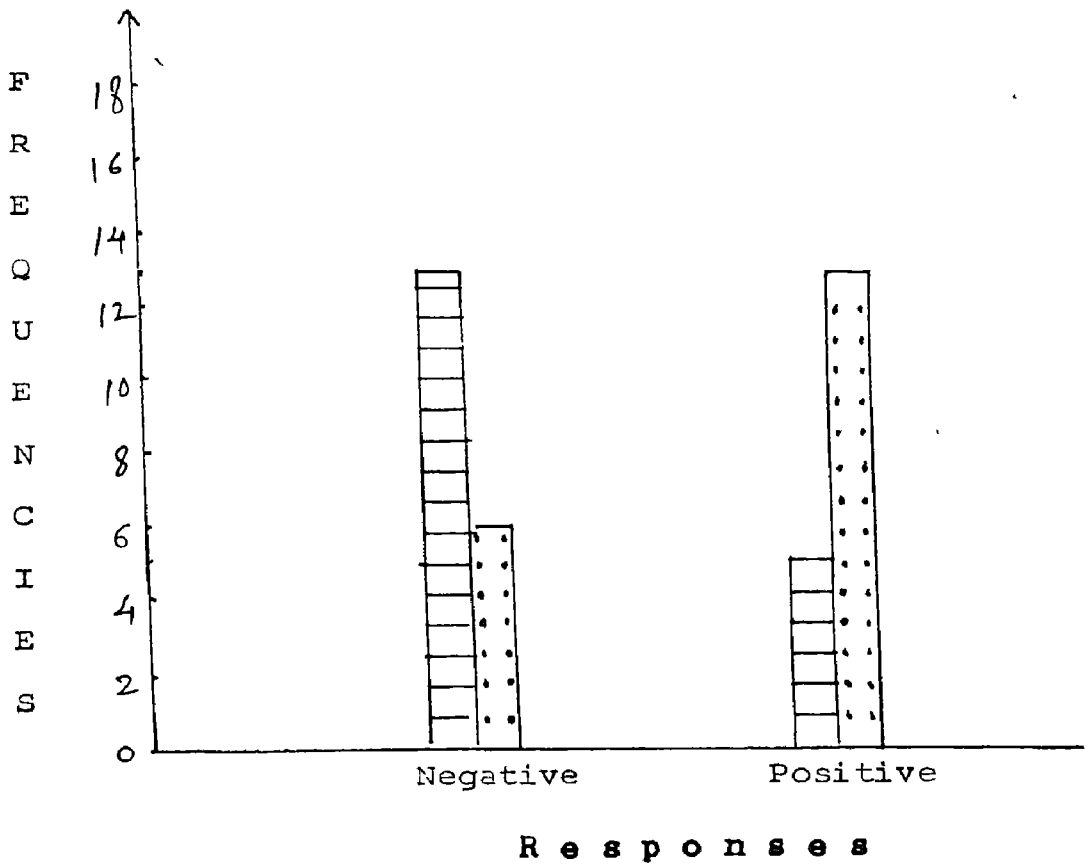
Pre-test

Post-test

GRAPH NO. 5-D-7

ASSISTANCE FROM FAMILY MEMBERS IN TEACHING THE CHILD
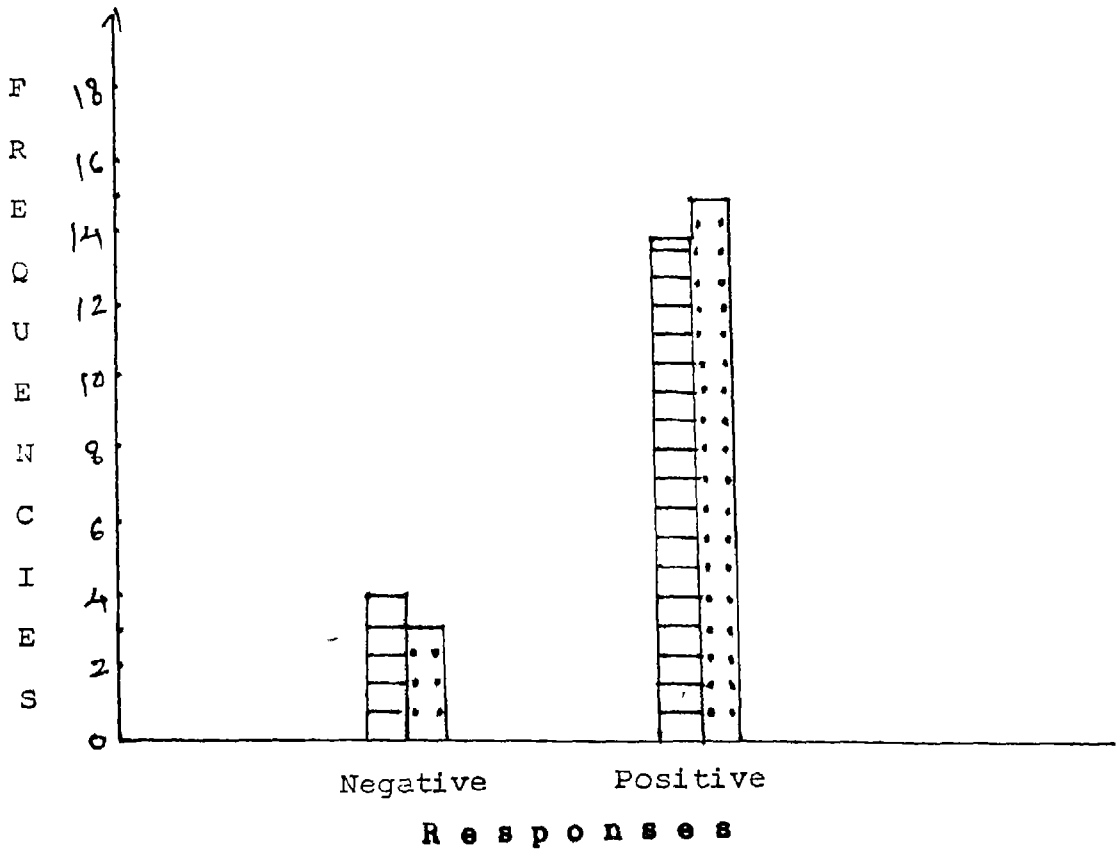
Pre-test

Post-test

PART 'E' In the 'E' part of the questionnaire, some statements were given. The parents were requested to tick the responses on 5 point scale.

It was to be judged, whether the parents have developed a positive attitude towards the problem of the child at the end of the programme.

From the Table No. 5-E, it is seen that the number of positive responses on the part of the parents has increased from 77 to 114 i.e. it is increased by 64%.

This gain is really encouraging. The improvement in the child's state can-not be expected so rapidly within a span of the project. T h e understanding of the parents towards their child's problem is increased. It is clear that they have tried to develop proper and positive attitude in this respect.
Please see Table No. 5-E.

TABLE - 'E'

(Ref.: Questions under 'E')

Showing the responses in respect of the experiences of the parents about their child

	Pre Test			Post Test		
Sr. No.	Positive Response	Negative Response	No Response	Positive Response	Negative Response	No Response
1	13	4	1	15	3	-
2	8	9	1	9	9	-
3	11	6	1	14	3	1
4	9	9	-	17	1	-
5	4	11	3	8	6	4
6	4	10	4	5	11	2
7	4	12	2	14	2	2
8	1	13	4	5	10	3
9	12	6	-	15	3	-
10	11	7	-	12	5	1
Total	77	87	16	114	53	13

PART 'F' It is always observed that parents pay more attention to the handicapped child than the normal one. They want to compensate by this attention. We wanted to know the position in this respect. Out of 18 parents the question was not applicable to 4 parents. Out of remaining 14, 12 parents have given the positive response to the question.

They, in their responses to next two questions, added that they have tried to convince other children that the handicapped child needs more attention. They have also accepted that this affects their daily routine but they have to adjust all the things. It seems that it is not very easy to appeal to the parents to give equal attention to all the children. It is the natural tendency of the parents to protect the handicapped child in every respect.

GRAPH NO. 5-F

PREFERENTIAL TREATMENT TO THE HEARING IMPAIRED CHILD

Pre-test

Post-test
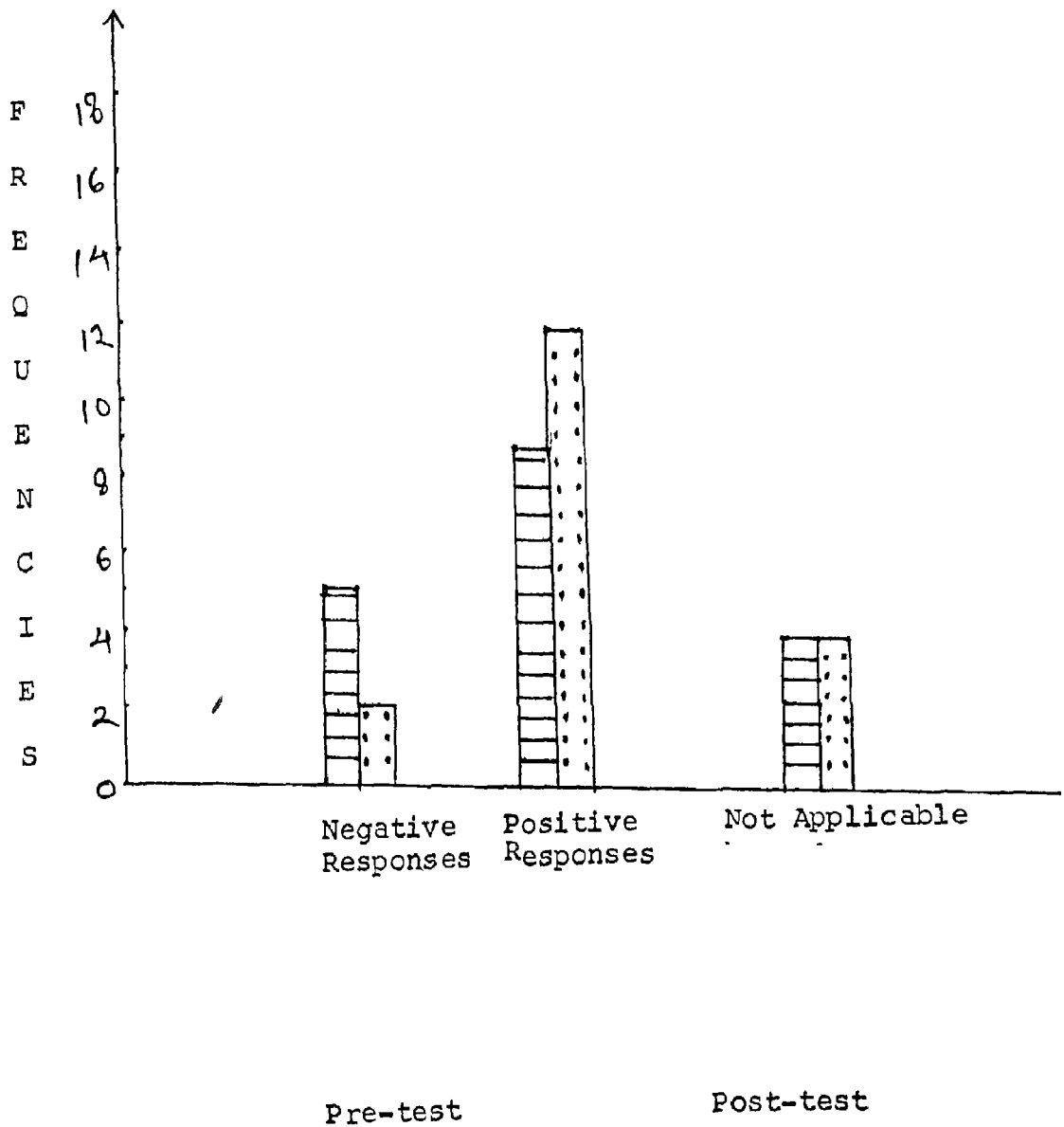
P A R T 'G' of the questionnaire was regarding the rehabilitation of the child.

1) To the question what are your anxieties about the future of your child, the number of parents giving responses is the same i.e. 15. It seems that the parents have always the anxiety and they have expressed it explicity in both the tests.
Please see Graph No. 5-G-1.

2) To the question what is your exact idea about the rehabilitation of your child, the number of parents responding is increased by 2 i.e. the increase is by 18%. In the first test also parents have some idea about the rehabilitation as 11 parents out of 18 have responded correctly. It may be that in the case of girls, the parent's only idea of rehabilitation is her marriage and it was expressed in the first test also.
It is clear from the Graph No. 5-G-2.

3) To the question 'do you think that your child should marry the hearing impaired?' The parents cannot decide because the number of uncertain answers is decreased only by 33.33%. It may be due to the fact that most of the children are small. The parents must not have thought about the problem with all pros and cons. But from this question they must have atleast started thinking in this direction. However, the idea is not accepted nearly by 50% of the parents in the

second test.

Please see Graph No. 5-G-3.

4) When we discussed the concept of rehabilitation of the handicapped, we referred to various persons, who were well-established and suggested the parents to meet such persons. The number of parents purposely meeting such a person is increased by 43%. It shows that they have started becoming free to approach people.

Please see Graph No. 5-G-4.

5) About the institutions working for the cause of the handicapped, parents did not know much. It is obvious from the result of both the tests. The parents had no opportunity, perhaps, to get in touch with such institutions. We gave information of some institutions in the programme but only few of the parents must have noted them.

Please see Graph No. 5-G-5.

6) Almost all of the parents are not in the know of any association or organization of the parents of the hearing impaired. It is obvious from the results of both the tests. The main reason for this, is no such association was in existence. The only attempt they knew was the one under the project.

Please see Graph No. 5-G-6.

7) To the question whether there should be any cooperative movement of the parents of the deaf, in the pre-test 13 parents gave the answer in affirmative. This was increased upto 17 in post-test. In our oral discussions during the project we had tried to get their ideas about the nature of the movement. They expressed that their idea was limited to deposit some money and raise a fund. The Investigator explained to them her idea of raising the man-power and actual participation by the parents. They accepted the idea. The picture in this behalf is seen from the Graph No. 5-G-7.

8), 9) & 10)

In response to questions No. 8,9 and 10, the parents showed that they are not aware about the different concessions and facilities available to the hearing impaired. That is clear when most of them say that the concessions are not sufficient. In fact, it is on their demand, a lecture was arranged on the topic by authority in the Social Welfare Department. But it was not grasped by them. At the same time they could not suggest actual expectations in this regard. There is no increase in responses to Question No. 9 and 10 in the post-test. It seems that the parents have not thought seriously about the concessious and facilities for the hearing impaired children. Graph No. 5-G-8, Graph No. 5-G-9 and Graph No. 5-G-10 reveal this.

11) The opinion regarding the necessity of residential school for the hearing impaired:- The number of parents not accepting the idea is more i.e. 13, compared to the parents accepting the idea. The number of accepting the idea is increased in the post-test by 3. On enquiry, some parents said that the peers found to be more adjusting to the hearing impaired. They suggested that these children, if accepted in the residential school of normals, will be more benefitted. They explained that it was their experience that their normal children can understand their handicapped child in a better way. But such answers were given only by one or two parents. All others could not give exact reasons for this.

Please see Graph No. 5-G-11.

12) To the question No. 12, parents have showed negative attitude towards independent business. It is even increased by 60% in post-test. It may be due to the present conditions in the society that the parent see. It might-also be due to the fact that number of girls is more in the project, naturally parents by tradition, do not think of any other thing then marriage.

Please see Graph No. 5-G-12.

GRAPH NO. 5-G-1

ANXIETY REGARDING THE FUTURE OF THE CHILD
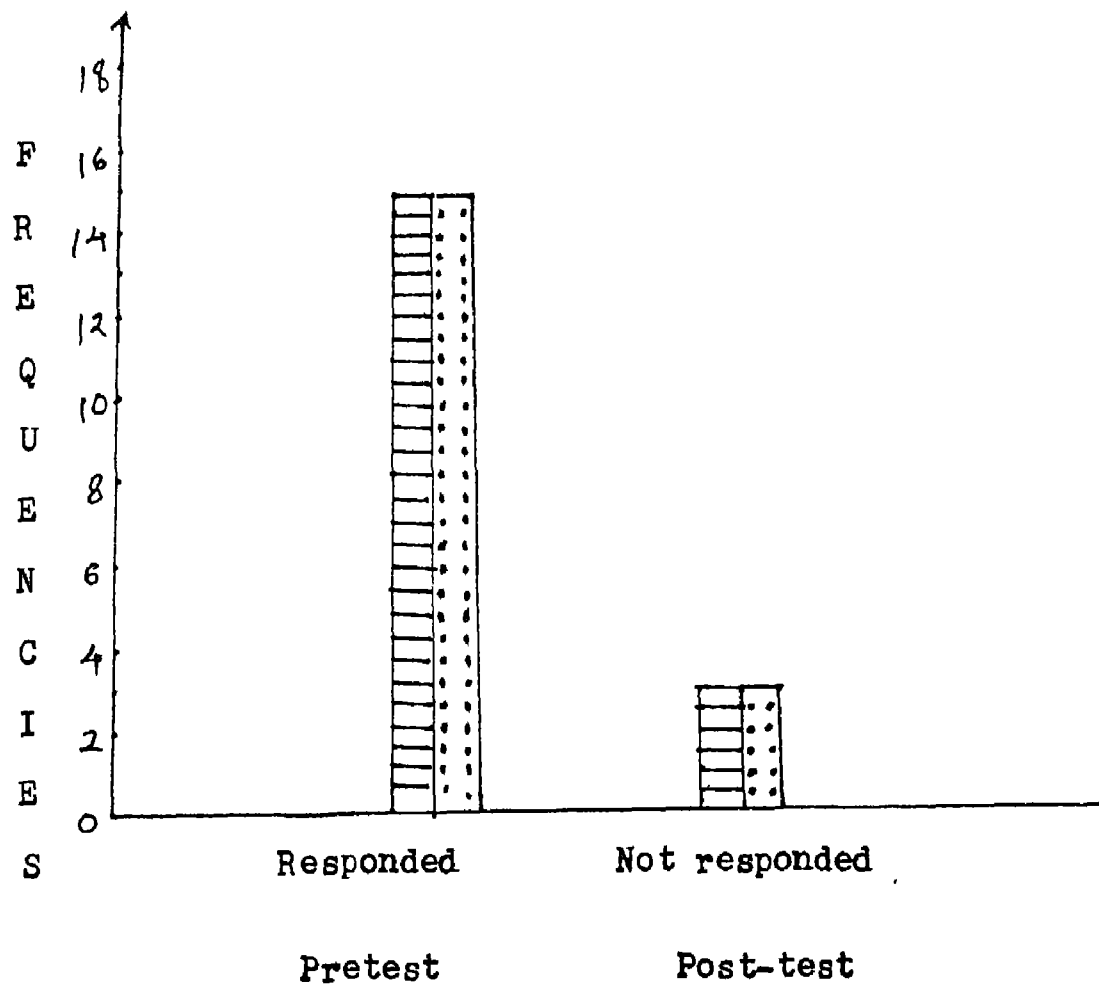
GRAPH NO. 5-G-2

IDEA ABOUT THE REHABILITATION OF THE CHILD
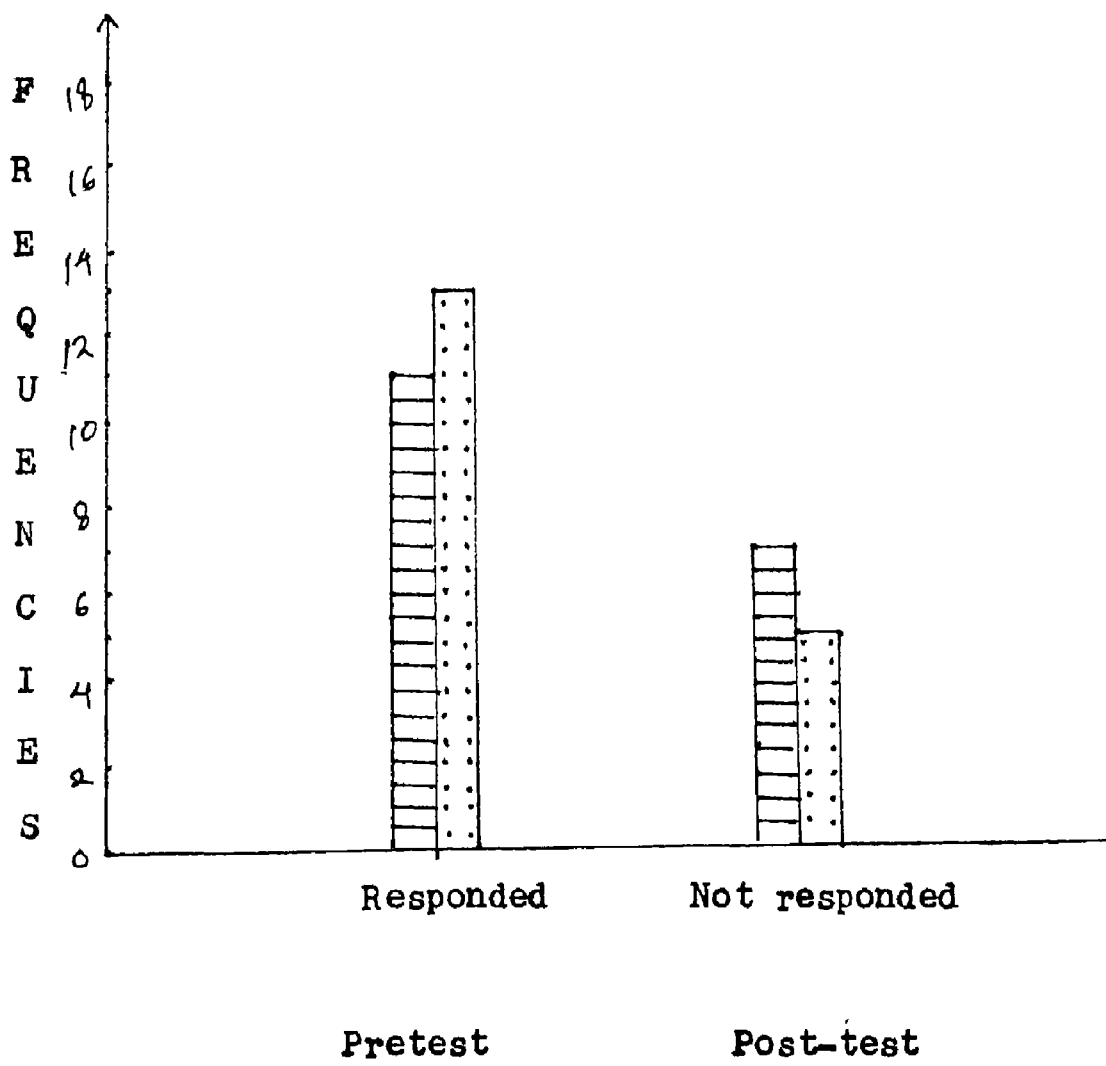
Pretest　　　　Post-test

GRAPH NO. 5-G-3

OPINION ABOUT MARRIAGE OF THE CHILD WITH DEAF PARTNER
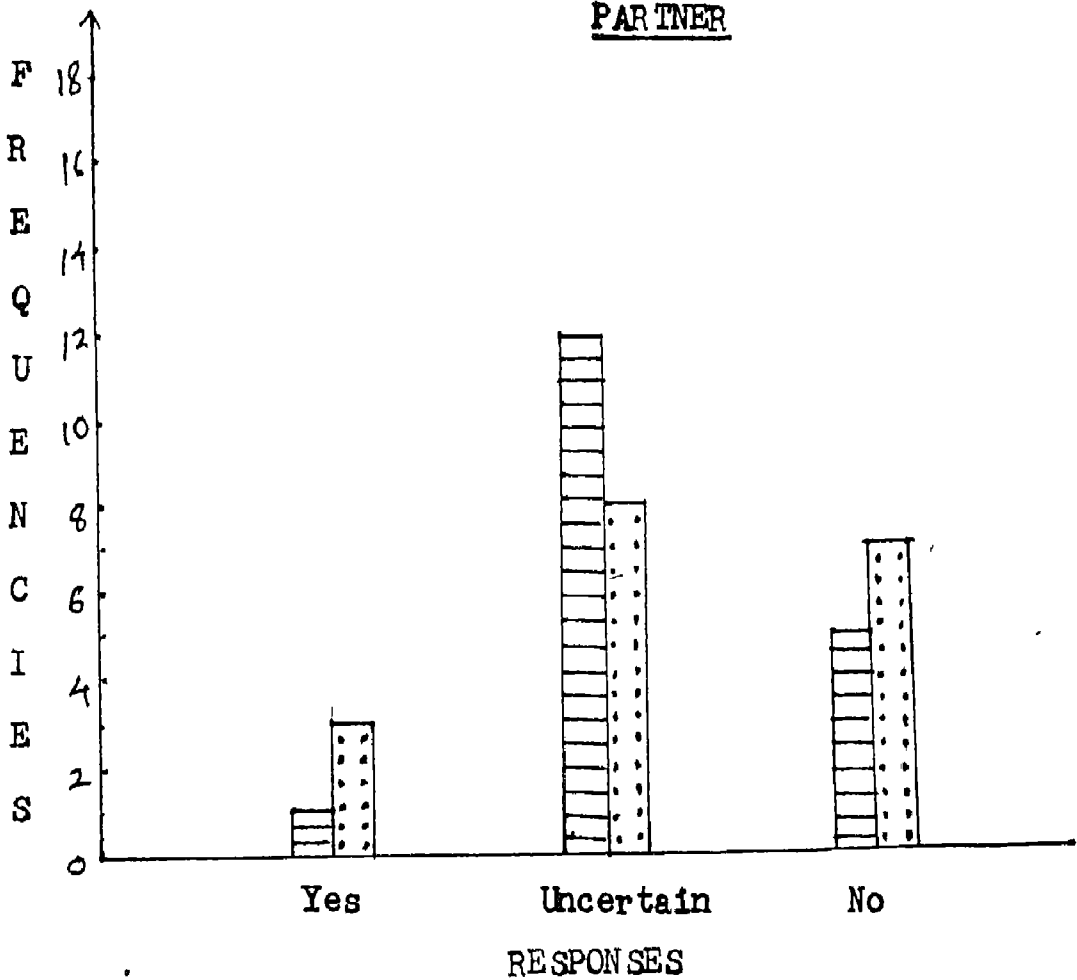
Pretest Post-test

GRAPH NO. 5-G-4

MEETING WITH REHABILITATED DEAF PERSON

Pretest Post-test
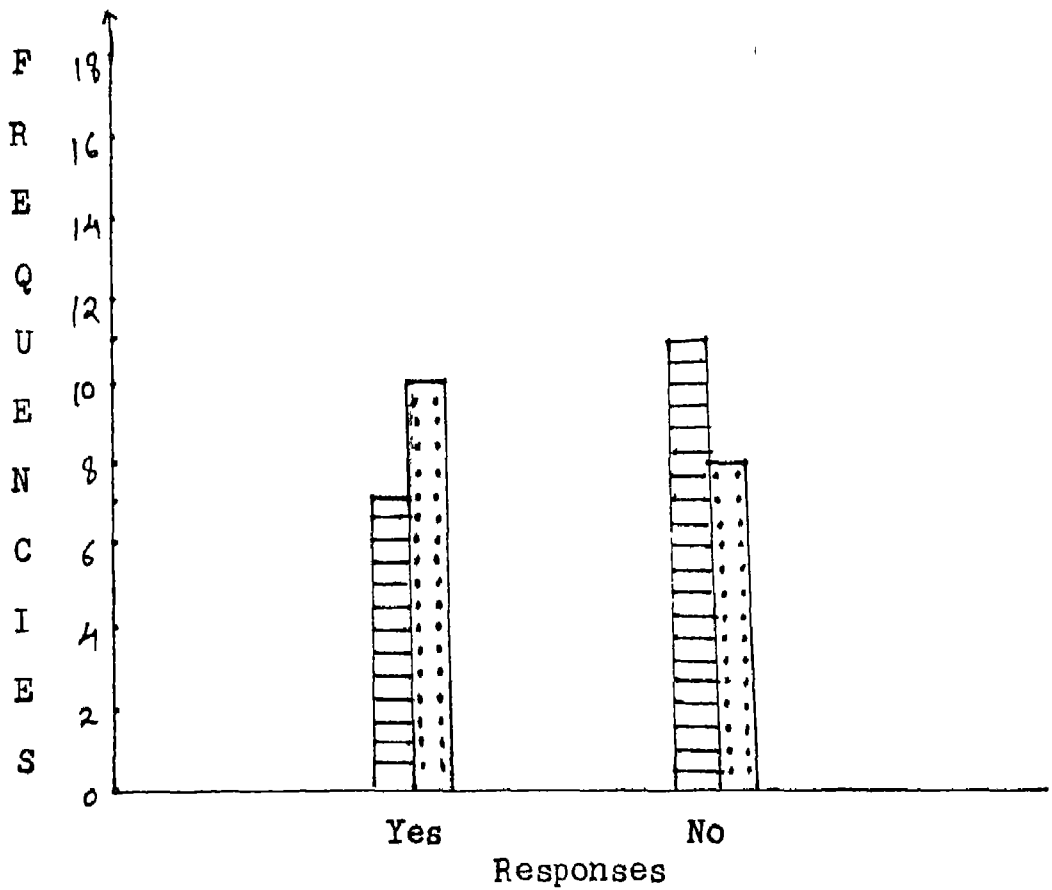
GRAPH NO. 5-G-5

INFORMATION REGARDING THE INSTITUTES WORKING FOR THE DEAF
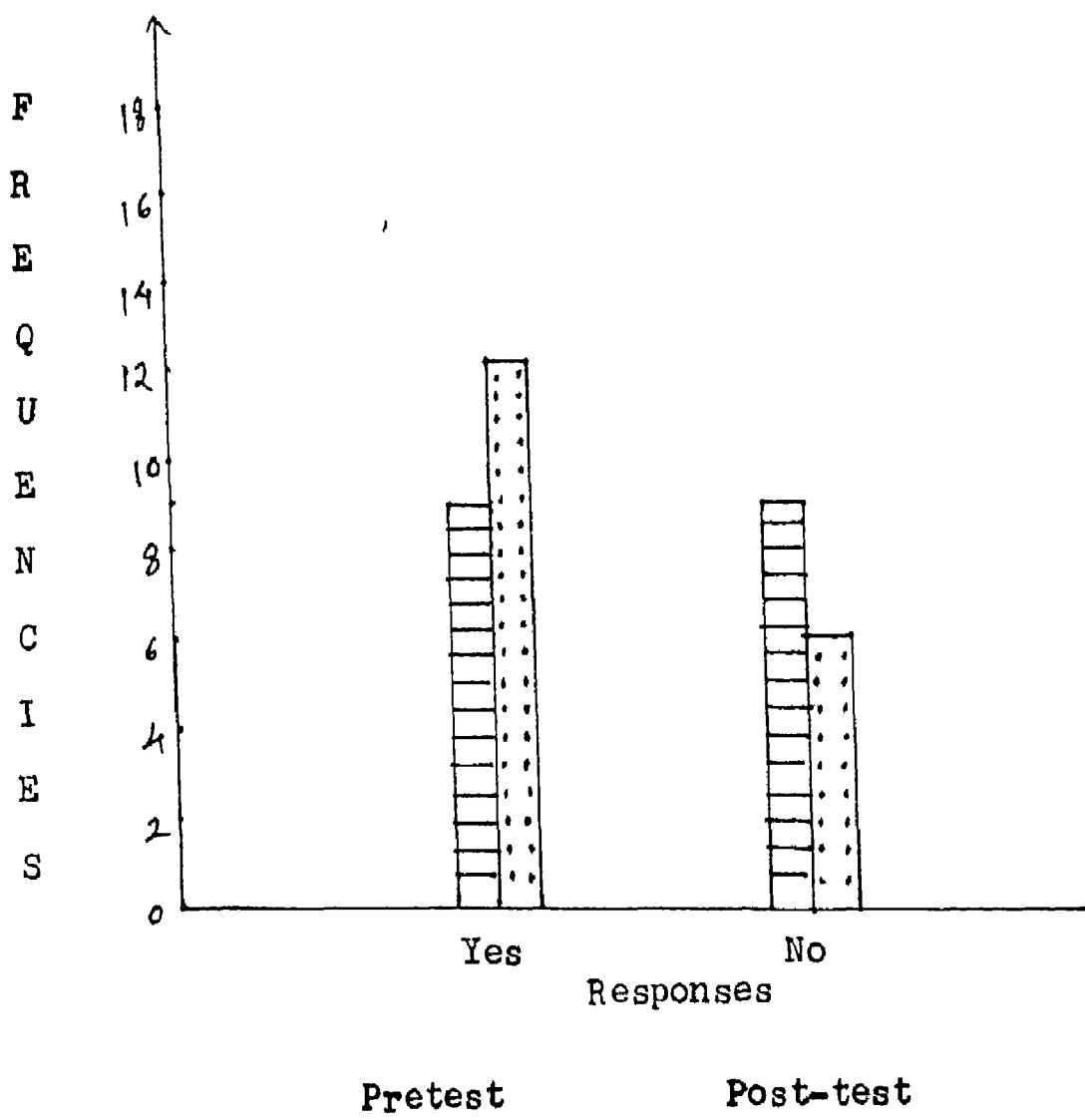
GRAPH NO. 5-G-6

INFORMATION REGARDING THE ASSOCIATION OF PARENTS OF DEAF
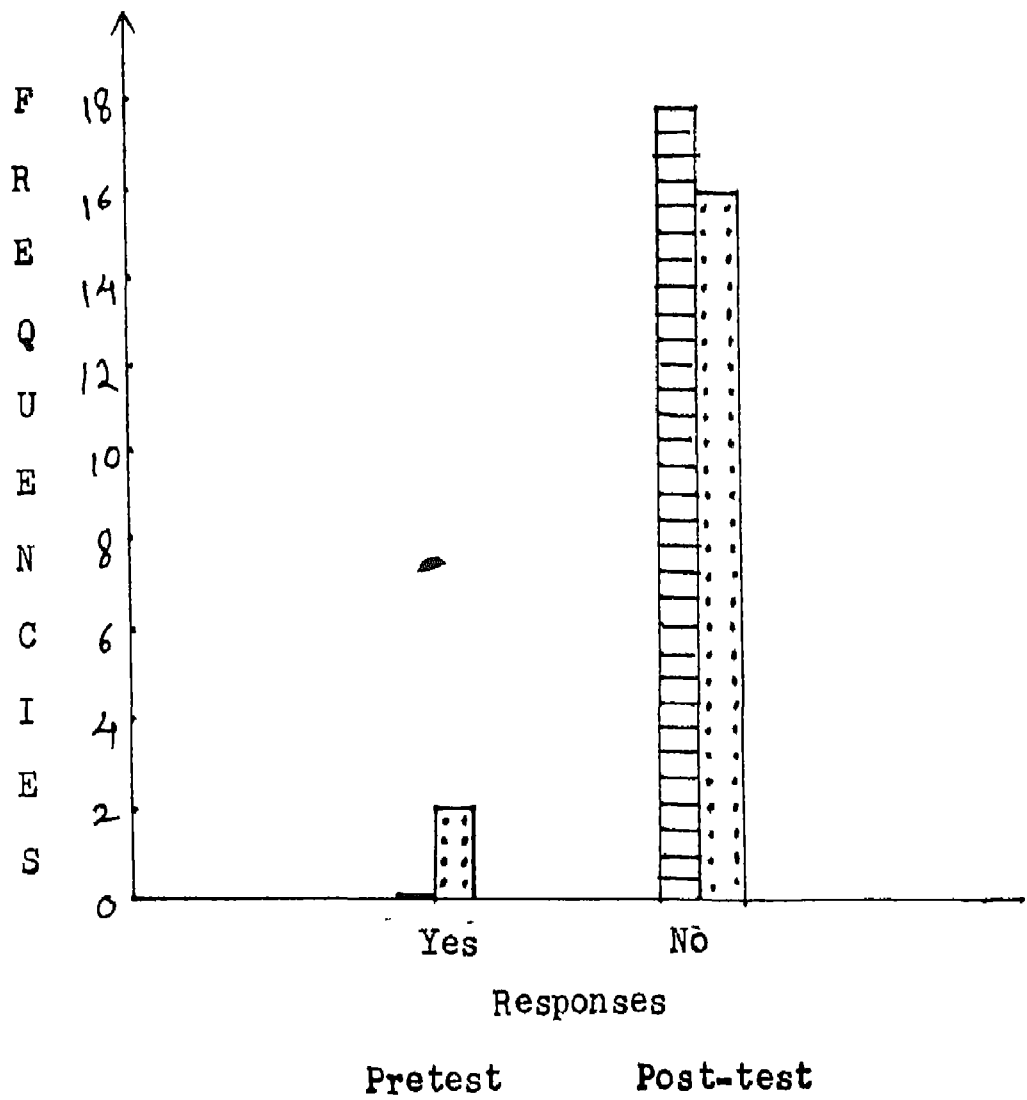
GRAPH NO. 5-G-7

OPINION REGARDING THE COOPERATIVE MOVEMENT OF THE PARENTS OF THE DEAF

Pretest Post-test
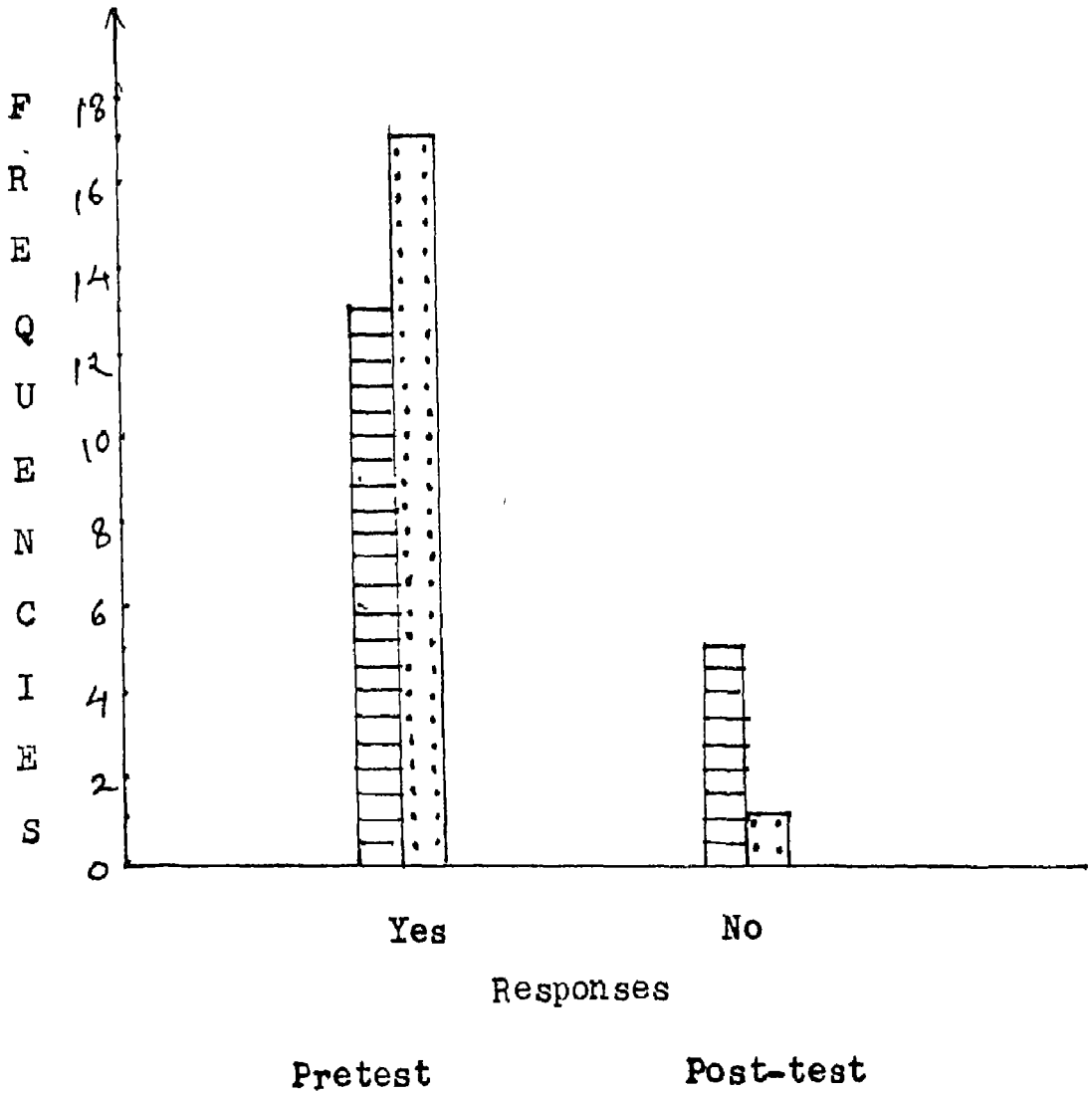
GRAPH NO. 5-G-8

FACILITIES AND ASSISTANCE FOR THE DEAF

Pre test Post-test
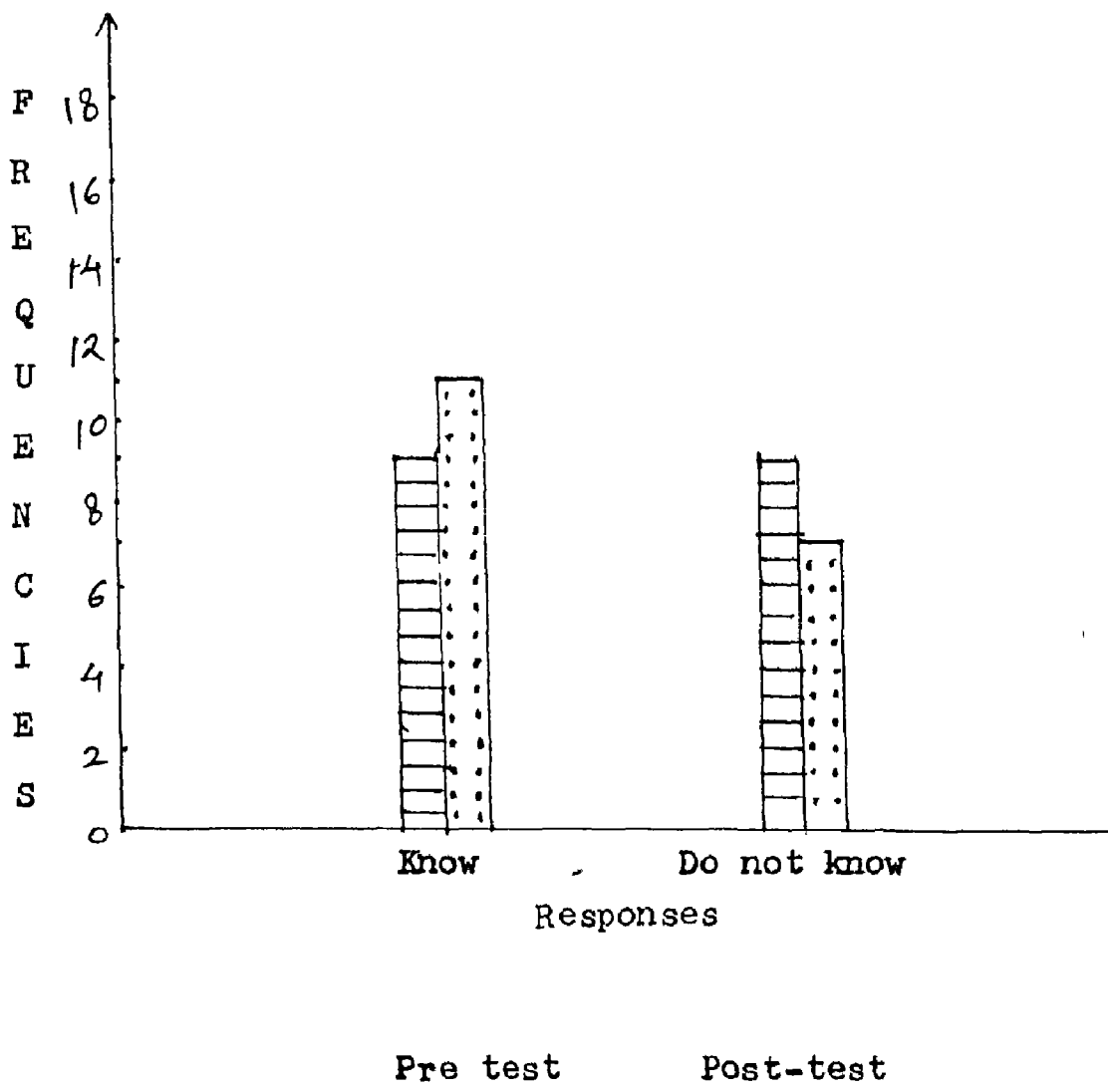
GRAPH NO. 5-G-9

OPINION REGARDING ADEQUACY OF ASSISTANCE
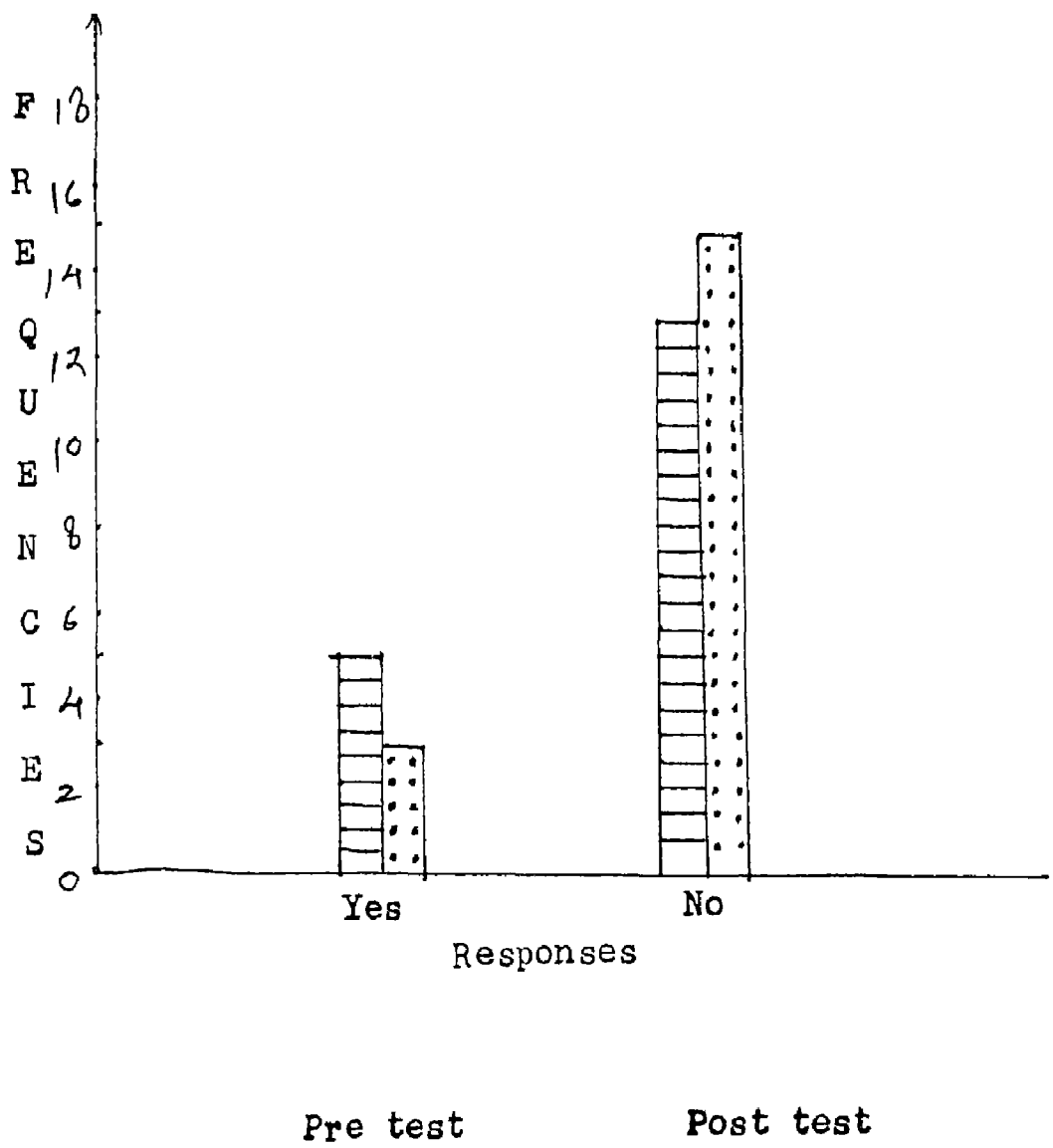
Pre test Post test

GRAPH NO. 5-G-10

OPINION REGARDING ADDITIONAL ASSISTANCE DESIRED
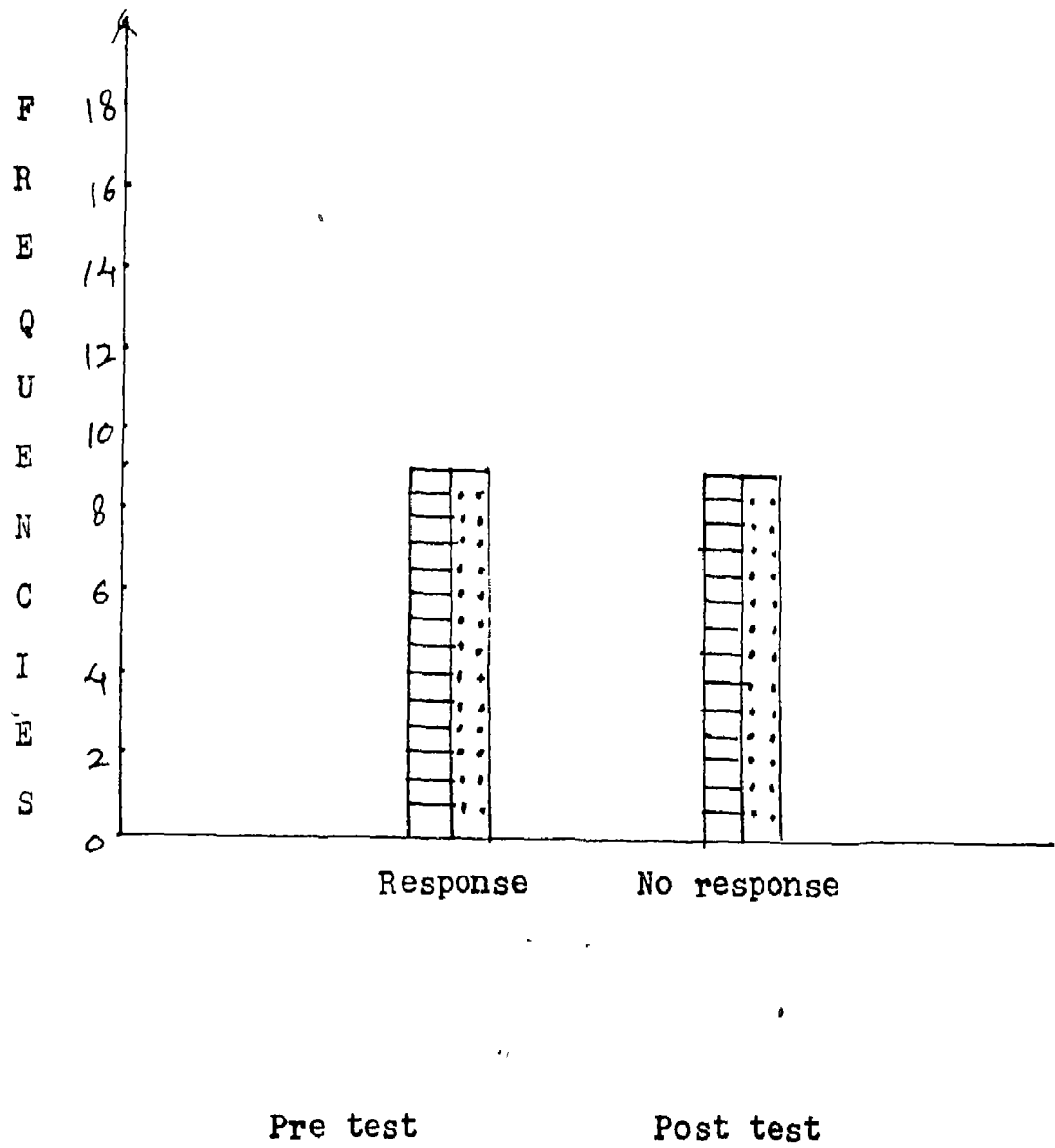
Pre test Post test

GRAPH NO. 5-G-11

OPINION REGARDING RESIDENTIAL SCHOOL FOR THE DEAF
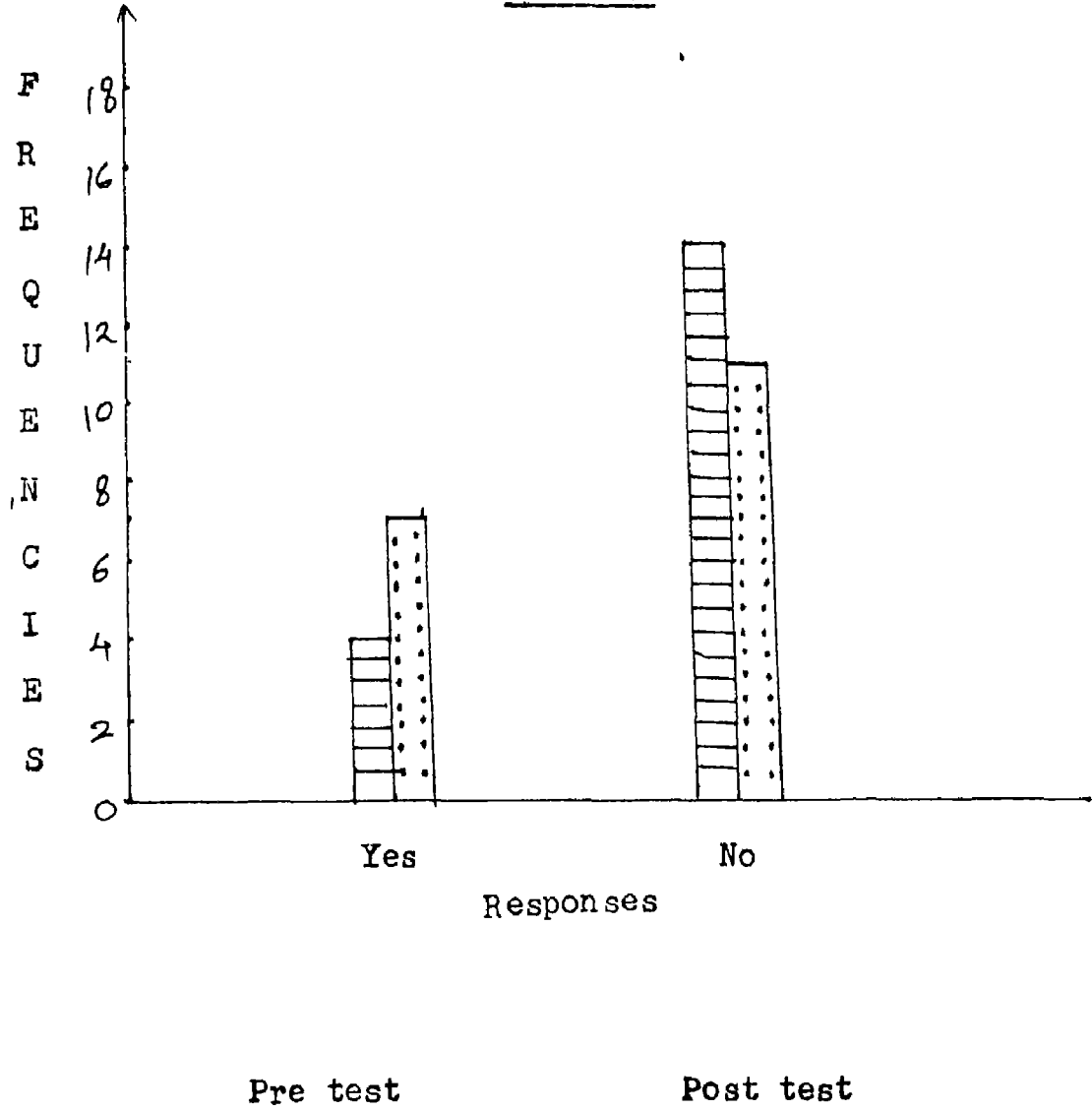
Pre test Post test

GRAPH NO. 5-G-12

OPINION REGARDING SELF-EMPLOYMENT OF THE DEAF
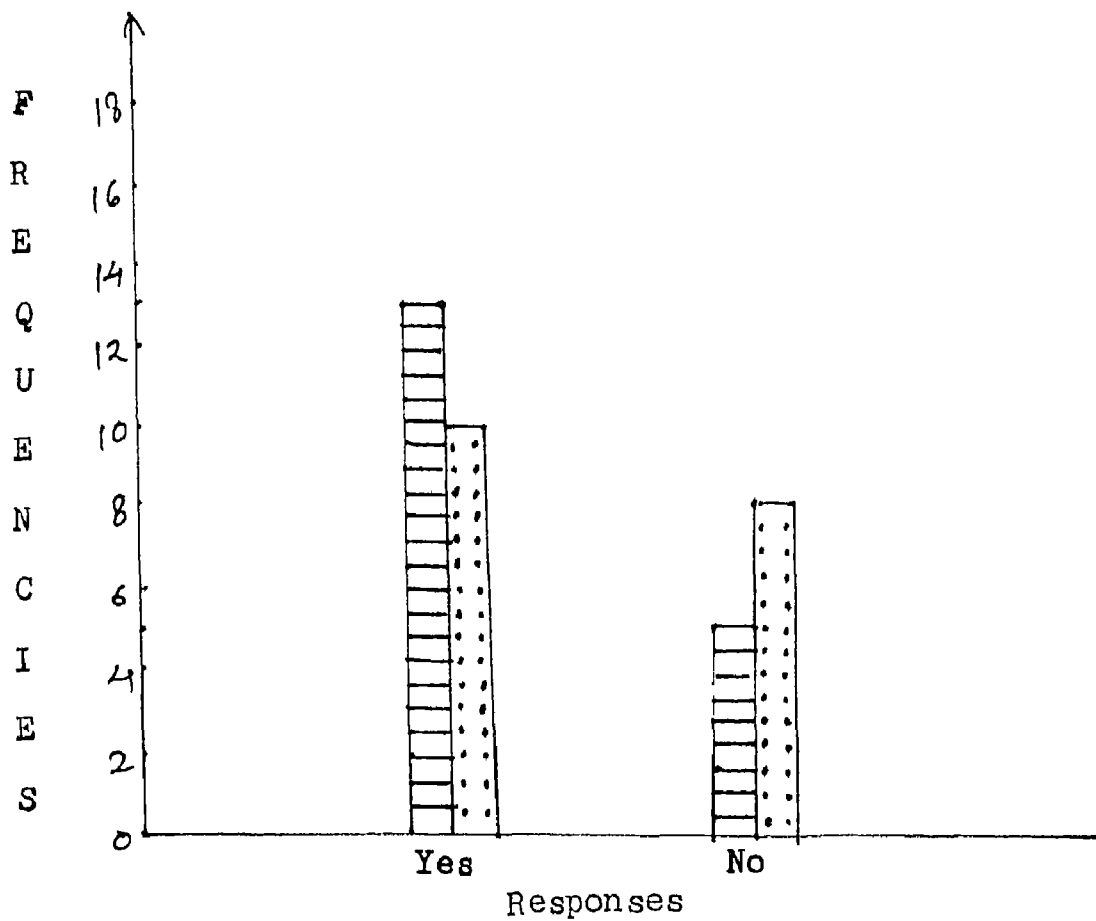
Pre-test Post-test

PART 'H': The last part of the questionnaire was prepared to check the attitudes of the parents towards the problems of the deaf, the siblings, etc. The situations were given and they were asked to comment, give reasons, find out the possible ways, etc.

The situations and the statements referred to other persons and not to the parents. This facilitated the free responses on the part of the parents, as they thought they were talking about somebody else.

The first question only, was a direct question. It was 'In what category would you place your child?', deaf, mute, child with special needs. In the first test most of them placed their child as deaf or mute. In the post-test 12 out of 18 have placed the child in the category as a child with special needs.

For all other six situations the parents were asked to give open responses. The responses can be summarised as follows :

To the question 2, the parents showed the same responses in both the tests as follows :

Geetabai should explain the difficulties of her child to other normal children. She should invite the

normals to play with her child.

It seems that the parents must be actually trying this way or they want to try in this way.

3) Responses to the third question were the same in both the tests. They were as follows :

Kamalabai feels awkward to take her child to her relatives or friends for following reasons -

a) She must be feeling shy.
b) She must be feeling shy because the child speaks too loudly and that too not clearly. The relatives or friends always refer to his handicap, etc.

It seems that these are the experiences of the parents. They feel too much and are touchy about such incidents. Only five parents added in the post-test that Kamalabai should not feel shy to take her child to relatives or friends.

4) The question No. 4 was about the blame that is always given to the mother of the deaf child by her in-laws.

In responses to this, pretest answers were as follows :

Sharadabai should neglect.

She should keep quiet if blamed.

She should not answer back.

In the post-test, however, the noted change was observed. The responses were as follows -

Sharadabai should discuss the problem with in-laws. She should convince them that the child can stand on his own. She should boldly tell that she alone is not responsible for the handicap of the child. She should tell the in-laws about various facilities in social and educational field. She should tell them about the other potentialities of the child. She should convince them that the child needs grandmother also. She should live separately from the in-laws.

These responses show that the parents have become more aware regarding the problem. They themselves might not be in a position to act as they have responded. But at least they wish to do so.

5) The experience about the other normal children are the same in both the tests. They are as follows :-

The normal sister feels ashamed of the handicap brother. She does not like that the mother pays more

attention to him. She feels ashamed in the company of her friends because of her brother. She hates her brother. She feels that she has no 'Dada' like other friends. She thinks that even though her deaf brother is elder, he enjoys more foudling from the mother. As he is deaf, he gets all the facilities.

All these responses show that the inter-person relations of the sibings are not very healthy.

In post-test, 3 parents suggested that the mother should convince the normal sister to be friendly and helpful to the handicapped one.

6) In response to question No. 6, the parents gave the following responses in both the tests. The responses in the pretest were also correct measures suggested by them to Kamalabai.

She should pay equal attention to all. She should try to console normal one. She should teach both the children at a time. She should not be partial to the deaf child.

This shows that parents are really aware of what is ideal behaviour expected of them. However, it is very difficult to see whether they themselves observe such policy.

7) In response to last question, the pretest and the post-test show some difference. In pretest, the responses were as follows:

Leelatai must not be admiring her child at all. She is ignorant about her child. She is aware of the short-coming of her child.

In post-test the responses have changed into a positive attitude.

Leelatai must be wishing to have good progress of her child. She wants to know exactly what is a progress of her child in hearing capacity and speech. Some of them added that she should not compare like this.

Conclusions : From the above discussion it seems that -

1) The parents showed no change in their guesses in case of the facts over which they do not have any control e.g. Question No. 3 and 5.

2) They showed no change in responses but the responses in the I and II test were positive e.g. Question No. 2 and 6 where it shows that they must be really trying their best to cope up with the situation.

3) The categorical change was found in response to No. 4. It seems that they have become more aware of the whole problem and are ready to do something boldly. In response to Question No. 7 there is also a positive change in their attitude.

QUALITATIVE ANALYSIS :

Observations regarding the gradual change in the attitude of the parents.

It is comparatively easy to observe the difference between entering behaviour and the final out-put in any programme of intervention. To trace the change at different points while the process is going on is rather difficult. In the present study the investigator was interested in knowing the nature of change that took place gradually. So she spared no opportunity to observe the parents on different occasions either in the programmes or in informal talks through the project. The teachers involved in the project noted the details of the interviews, home visits and casual talks of the parents. Through all this a course of change could be traced. The following discussion can reveal the change in the attitude of the parents.

1) In the beginning the parents were not ready to leave the children with us. They used to attend the programmes and help their child every now and then, when he was involved in any activity. They were much anxious about the child. We insisted that they should leave the child with us without any anxiety and come back after two hours to fetch the child. After two to three programmes the parents realized that there was

no harm leaving the child with us. Their child was very happy in the group. Mutual faith and confidence was established gradually.

2) The parents did not know what to do of this free time. In the beginning they sat somewhere in the college premises. They did not talk with other parents. But gradually they started mixing with one another. They went for shopping or visiting the exhibitions. They could discuss the problems of their child. They became gradually more free and open minded. They realized that everybody was facing the same difficulties. This gave them more confidence.

3) Some parents made a demand to provide them with books. They read the books, shared the thoughts and tried to discuss their difficulties either with us or with other parents.

There was a very encouraging and happy feed back from the parents. If the child was obstinate or would not behave, parents would tell him that if he would not obey, they would not take him to college next Saturday. The effect was magic and the child used to behave immediately.

4) There were some young mothers having their first

child handicapped. In informal talks we suggested that they should have second child. It may not be handicapped. They should not be afraid. One mother immediately answered "Even if my second child will be handicapped, I am now well-prepared and ready to accept him."

5) Some parents brought their normal children to the programmes. When we requested the normal child to join the activity, the parents flatly refused to allow. They did not bear the idea even. We wanted to see what is the effect of the presence of normal peers on the hearing - impaired ones. We always insisted the participation of normal children. They started taking part in the activities, they helped their siblings, the good bond of friendship was established. Afterwards some parents reported that normal children helped the handicapped brother or sister more actively than before. It was realized that the parents and the normal accepted the handicapped child.

6) The parents who were attending the programmes regularly, informed many other parents to join the programme, as they found the programme very useful. Towards the middle of the project six new children were included in the programme. Their parents attended the programmes regularly. All of the new parents are

attending the programmes which are still conducted as 'Saturday Activity' in the college.

7) The mother of Rahul (who had a profound hearing loss) was a very careful mother. She showed lot of enthusiasm in the programme since beginning. She openly discussed her problems. This gave the encouragement to other parents to speak openly.

Rahul's mother started sending Rahul to his school and gymnasium on bicycle. Rahul had lot of difficulties in the beginning in a very busy and nasty traffic of Pune. The mother wanted some solutions. We discussed the matter and ultimately thought of preparing a badge for Rahul consisting of the International Symbol of hearing impairment. She prepared a suitable badge to tie on Rahul's back and also on the bicycle. This helped Rahul. We opened the topic to other parents. Many of them had showed the willingness to use the badge for their children. Rahul's mother said, "The project has given us the platform to strive jointly for our children". Based on this experience, the Investigator wrote an article in local newspaper to convince more parents of the badge. The Investigator is responded very well by many other parents in this connection.

8) There were two mothers (of S. and M.) who did

not accept the handicap of their child. Whatever was discussed in the programme, they both used defence mechanism. They would always tell that they themselves were doing exactly what was being discussed for their children. They were doing very well. They had no problems. At the same time they would express that in spite of their hard efforts, they did not find response from their children. It took lot of efforts on the part of the teachers and the investigator to make them realize the situation. We made them compulsory to leave the children with us, we gave them assignments to be completed. The teachers paid visits, we had discussions with their in-laws. Ultimately, towards the end of the programme, they were adjusted. It resulted in the adjustment of the children too.

9) When a socio-drama was presented by the resource persons and the student teachers (a full information about this socio-drama is elsewhere.) the parents were moved. Some of them were weeping. Even the male parents were not an exception. The parents could understand the feelings of their own children both handicapped and normal, the involvement of the in-laws in the well-being of the handicapped child. They could see their own image either as a mother or father of the handicapped child. They had more understanding about the inter-person relationships among the family members. Immediately

after the socio-drama there was a pin-drop silence. The father of the girl 'P' who was a depressed father and had always a withdrawl, was moved a lot. Slowly the parents resorted to the normalcy and started reacting. The programme lasted for half an hour. The parents had an outlet for their unexpressed anxieties and feelings. This helped them to face the reality with more understanding.

10) Increasing participation of the parents :- one remarkable change that was gradually revealed was parents' active participation in the programme. In the beginning barring few exceptions, the parents were passive listeners in the programme. Gradually, they started asking questions or discussing some problems in the meetings. They suggested some programmes, two such programmes were -

i) facilities and provisions made by Government or voluntary agencies for the handicapped,

ii) The Cochlear implant.

They further suggested that they should be given an opportunity to give an account of certain attempts and experiments done by them in the case of their child. Such programme was organized on 17.3.91. Seven parents presented an account of their experiments which were either successful or failure. The other parents actively reacted and there was objective examination of these efforts. This showed that parents had developed

a right type of attitude towards the problem.

11) More appreciating step was taken by the parents at Khanapur Camp. The investigator alongwith other resource persons presented Role plays. The parents had a discussion on the role plays. Four parents offered to present one Role play on the topic "How to treat the handicapped when we receive guests". Four parents alongwith the three children presented the programme. In that, they presented their usual experiences. This role play was followed by discussion. This showed that parents were becoming more free to discuss the problems of the handicapped.

12) At Khanapur camp one game, "Completion of the story", was conducted. The parents were divided into four groups. The first sentence of the story was given to them. Each member was to add a sentence and the group was to complete the story. The sentence was "Govindrao came to know about the hearing-impairment of his child and ......". Each group completed the story. The noteworthy thing was, each group completed the story in proper rehabilitation of the child. This was an indication of optimism on the part of the parents.

13) Another assignment was given to four groups, "To prepare a constitution of the Association of the

parents of hearing-impaired." The parents prepared the same giving details such as name, membership rules, meetings, subscriptions, etc. One name "Sambhashini" was accepted by all. In July 1990, such association was formed actually and the programmes are being conducted even at present.

14) Mutual Home visit programme :-

This assignment was given to them in Diwali vacation of the year 1989. It was after a month of the commencement of the project (7-10-89). The parents were divided into two groups. Some were made hosts and some were guests. They were requested to contact each other and arrange a home visit. Only three parents responded and arranged the visits. All others had their usual excuses. It was felt by the Investigator that it was too early to expect the parents to be so open minded to discuss any problems with other parents within a month's time. But towards the end of the programme, seven parents reported to have paid visits to each other alongwith their children. Two mothers (mother of S and mother of M) paid more visits to some Senior and enthusiastic parents for guidance. They reported that such visits were useful to get in touch with the different aspects of the problem. This developed the fellowship among the parents. This progress of the parents is definitely an indication of change in them.

15) In the valedictory function on 21.4.90, the parents helped the Investigator to arrange fancy dress competition, recital of , arranging the exhibition of the photographs. They expressed their reactions towards the programme. As this programme took place after annual examination, seven children and their mothers could not attend it, as they were out of Pune. However, their male parents (father) attended the programme. This showed their involvement in the project.

16) There were programmes of discussion and guidance by Smt. Shobha Bhagwat, who is a director of Cultural and Sports Centre for Children in Pune. The parents suggested to her that she should admit hearing-impaired children in her centre, so that they will get an opportunity for socialization and development of various talents. There is always a long waiting list of children in this centre. But Mrs. Bhagwat made a special case and allowed four children initially in the centre. Now there are more children attending the centre. They are doing quite well with the normal. The normal children are also getting good training to accommodate such children. This was the result of motivation and initiative on the part of the parents included in the project.

ENRICHMENT OF THE TEACHERS PARTICIPATED IN THE PROJECT

It was one of the objectives of the programme to give orientation to the teachers in the project, on how to conduct such programme. It was with the help of the teachers for the Deaf, the whole project was conducted. Naturally it was one of the objectives of the project, to see how the programme has helped the teachers in the project, in organizing such programmes using different tools, mastering the techniques of interviews, observation, realizing the difficulties of children, as well as the parents.

1) The first point to be noted was that all the seven teachers included in the project had lot of motivation since the orientation programme. Five of them were working as regular teachers in the schools for the deaf or running their own clinics. But they spared lot of time in preparing and planning. On every Saturday they were present for the programme.

2) They conducted the interviews, paid the home visits, observed the children minutely, noted the points for case study.

3) They followed the techniques of language teaching in their schools or clinics also. They gave the assignment

to the parents from the ideas they could get from the project.

4) During the next academic year, they were invited by some institutes for the deaf to conduct the programmes for children and for parents. They accepted the invitation and conducted the programmes at Nigadi Pune, Nasik and Kolhapur. This showed the confidence they got from the project.

5) There was a training programme for the primary teachers under the 'Palghar Project at SCERT Pune.' The Investigator and the teachers were invited to work as resource persons. The teachers gave a good demonstration on speech correction. The demonstration was made on three children included in the project. It was appreciated by the participants. The teachers in the project conducted the programmes for the children and the parents independently in May vacation 1991.

During the next academic year, the programme of the project, Saturday Activity, was continued in which all the seven teachers participated.

During the year 1991-92 they have decided to conduct Sunday School, a whole day programme for the deaf.

During the May Vacation 1991, two teachers

conducted independently, the programmes for the children in the age groups of 3 to 6 years and 7 to 9 years.

The nature of the activities was as follows :

For the groups of 3 to 6 years, story telling, chorus singing, auditory training on the harmonium, drawing and painting.

For the age groups of 7 to 9 years - developing the story with the help of pictures, difference of weight in light and heavy objects, verse recitation, crafts, games based on sounds.

They organized a meeting of parents in which the parents narrated their experiences.

From all the above observations, it is clear that the teachers are benefitted by participating in the project.

STUDENT-TEACHERS' ENRICHMENT :

One of the objectives of the research project was to provide the student-teachers an experience of organizing out-school activities. Since beginning student-teachers were involved in conducting the programmes.

However, it was not made compulsory for them. On

every Saturday, they were present turn by turn. It was observed that 28 student-teachers attended the programmes and helped our teachers to conduct the same. All of them attended the two-day special programme for language development and speech correction and one day Khanapur Camp.

1) They had the practical experiences of organizing such out-school activities.

2) They could select the children for case study from these children in the project. They had an opportunity to observe children closely, to have familiar acquaintances with the parents. It was a good exposure for them.

3) Many of them attended and helped arranging the valedictory function.

4) The programme of socio-drama-soliloquies of the deaf children, their parents, siblings, grand parents, etc. was the out-come of one tutorial given to the student-teachers. Each one of them had a particular role of the above. They wrote the feelings of the 'one' that was allotted to them randomply, a week earlier of actual writing the tutorial. It resulted in a good collection. The final Soliloquies were prepared by some of the students after discussions in groups. They were presented at Khanapur programme.

The student-teachers were asked to give their reactions towards the project programmes at the end of their academic year. Their reactions can be summarised as follows :

1) They could get much exposure of organizing activities of the hearing-impaired children.

2) They had the opportunity to come in closer contact with the children as well as with the parents.

3) They had the opportunity to realize the difficulties on the part of the parents both educated and otherwise. One reaction was remarkable that they found advising the uneducated parents much more easier than advising the educated ones.

4) The discussion with the help of films about language development and speech correction is of importance in teaching the hearing impaired children.

5) The most discussed topic about Cochlear Implant was clear to them by a talk and slides by Dr. Hemant Dabake.

6) All the activities arranged at Khanapur Camp both for parents and children were totally a novel

experience for them. They appreciated that in spite of the fact that parents and children were in the same premises, they were busy in separate activities. They found that the parents were least worried about the children.

7) The student-teachers had decided to arrange such programmes in their career as a teacher.

8) From the letters of three of our past student-teachers, it was revealed that they have organized the programmes on these lines during the vacation.

9) The student-teachers reacted that they had lot of motivation in the field due to this project.

REFERENCE

1) Henry E. Garrette, Statistics in Psychology and Education (Bombay :- 1966, Vakils Fetter & Simons Ltd.) P. 226

2) Ibid, P. 461

CHAPTER - VI

SUMMARY, CONCLUSIONS AND RECOMMENDATIONS

This is a concluding chapter, which includes the following points :-

1) Need and significance of the present study,
2) Statement of the problem,
3) Objectives of the study,
4) Procedure,
5) Major findings,
6) Conclusions,
7) Recommendations,
8) Suggestions for further research.

(1) NEED AND SIGNIFICANCE OF THE PRESENT STUDY :-

It is observed that very little research work has been done in the field of special education. Whatever research is done, it is either in the form of surveys conducted by the Government Departments or as a part of pre-requisite for completion of degree work on academic level.

We rarely find experiments or action research in the field of special education. It may be due to the fact that the sophisticated research designs cannot be applied in the field of special education because of

difficulties in getting the samples required for the same.

Under these circumstances the Investigator thought it necessary to undertake the present research in the field of special education.

In the world of handicapped, the rehabilitation is the most important factor. For that, language development and socialization are the main aspects, which help rehabilitation. In the present research the experiment is conducted on both of these aspects.

It is said that education of a handicapped child is education of the whole family. Unless parents are made aware of this fact, no real development of the handicapped child is possible. There is no provision for porental education in the field. The Investigator has tried to prepare a programme for education of the parents, which proved useful for the orientation of the parents.

There is lack of any evaluative data in the field of special education. We cannot use readymade evaluation techniques, which are meant for normals, in the field of special education. It is urgently needed to evolve such techniques applicable to handicapped children. In this research work, the Investigator has tried to evolve some such evaluative scales to measure the aspects under

evaluation in the case of children and the parents.

The present research will contribute to the enrichment of -

i) Hearing impaired children,
ii) Parents of hearing impaired children,
iii) Student-teachers of the training course,
iv) Teachers of the deaf,
v) Training institutes for the deaf.

(2) STATEMENT OF THE PROBLEM :-

"To study the effect of supplementary educational programme (to be prepared and implemented) for hearing impaired children, on their language development and socialization; and to study the effect of parental education programme (to be prepared and implemented) on their awareness of acceptance of their child's handicap."

(3) OBJECTIVES OF THE STUDY :-

1) To find out the hearing loss of the deaf children,
2) To find out the social and economic background of the deaf children,
3) To identify the problems of children in language development,
4) To evolve a programme of supplementary education for language development of the deaf children,
5) To evolve scale for measurement of language development of the deaf children,
6) To identify the problems of the deaf children in respect of socialization,

7) To evolve a programme for supplementary education for socialization of the deaf children,

8) To evolve a scale for measuring socialization of the deaf children,

9) To identify the problems of the parents in accepting the handicap of their child,

10) To evolve a programme for developing awareness of parents about the handicap of their children,

11) To evolve a scale for measuring the awareness of parents about the handicap of their children,

12) To mobilize the resources in the field,

13) To prepare a package programme of supplementary education for the hearing impaired children,

14) To conduct the case studies.

(4) PROCEDURE :-

i) Research Design - The research is conducted in the field of special education. It is the programme of Intervention.

It is a single group pre-test, post-test design with intervention as an independent variable and post-test results as dependent variable.

ii) Sample selected - The sample selected was 34 hearing impaired children in the age-group of 3 to 12 years and their parents.

There were 13 boys and 21 girls. There was a wide range in the sample so far as degree of hearing loss,

exposure to schooling, ability to produce sound, etc.

There were three pairs of children coming from the same family (1) 2 brothers (2) two sisters (3) a brother and a sister. Out of 38 parents, 25 were mothers and 13 were fathers.

iii) Tools of Research - The following tools were selected for the collection of the Data:

a) Socio-economic background proforma,
b) pre-test, post-test questionnaire for the parents,
c) Interview schedule,
d) Language test for the children,
e) Socialization check-list,
f) Case study,
g) Package programmes for the children,
h) Programmes for the parents.

iv) Statistical treatment - The Investigator used the percentage & 't'-ratio for statistical interpretation of the data, Graphical representation is used in certain cases.

(5) MAJOR FINDINGS OF THE STUDY :-

After interpreting the data both quantitatively and qualitatively, the Investigator had the following findings -

A) Language Development of the Children -

From the statistical interpretation, the difference in the language development in the children was found to be significant at 0.01 level. This can be clear from the discussion on the point in Chapter No. V.

From the qualitative observations made by the teachers and the Investigator, it was found that the children started speaking boldly. They started speaking in full sentences. They were eager to express without feeling shy.

B) Socialization of the children -

The findings in the case of socialization were as follows :-

1) The children in all the three age groups gradually left the negative behaviours such as crying, keeping away from the group, not obeying, etc. during the course of the programme, (Graph V-1, V-5 and V-9).

2) The children developed a good habit of greeting one another, on arrival in the college and while leaving the college after the programme. (Graph V-2, V-6 and V-10)

3) The children developed positive social behaviour such as answering, taking turns, volunteering for work, etc. during the programme. In most of the cases the increase in the positive behaviour is doubled in the third phase. It

is an indication of good socialization of the children. (Graph No. V-3, V-7, and V-11).

4) The children were expected to pick up some higher social behavioural traits such as admiring the good work done by others, feeling free in the presence of strangers, etc. In this case also the children showed good development. (Graph No. V-4, V-8 and V-12).

From qualitative observations the findings are as follows :-

The children were very well socialized during the programme as they very readily mixed with new student-teachers when the programme restarted during the next year. (i.e. 1990-91).

(C) <u>Awareness of the parents</u> :-

It was found that at the end of the programme - parents had an information about the structure of the ear, causes of hearing defect, etc.

They could not give the exact nature of the defect of their child, but they knew about the degree of hearing loss. The misunderstandings on the part of the parents regarding the operation of the Cochlear implant were totally removed.

The parents became aware of the positive point such as 'residual hearing' of the child. Parents became more free and open-minded in disclosing the facts regarding the consultation from different doctors or following other than medical measures. (Discussion and the Graphs 5-A-1 to 5-A-8 in Chapter V)

It was found at the end of the programme, parents understood about the parts of the hearing aid. They understood about the maintenance of the hearing aid.

They realized the utility of continuous use of the hearing aid.

They realized the necessity of teaching the child to lip-read. (discussion and graphs 5-B-1 to 5-B-5 in Chapter V).

It was found that the parents left many wrong concepts regarding their hearing impaired child. They developed the right concepts in many respects.

They left false ideas about the use of hearing aid and the increase in hearing capacity or speech of the child. They realized the frutility of using traditional measures for the cure of deafness of their child.

They were found to be firm in giving responses. Uncertainty in responses was reduced to zero. (Discussion and Graphs 5-C and 5-C-1 to 5-C-15 in Chapter V).

It was found that at the end of the project, parents started keeping record about the child's receptive and expressive language. All of them started teaching their child. They could detect the difficulties on the part of the children about the words. They become more attentive towards the problems of the child. (Graphs 5-D-1 to 5-D-7 in Chapter V).

It was found that the parents developed a very positive attitude towards the problem of the handicap of their child in many cases. (Table No. 5-E in the Chapter V).

It was found that the parents paid more attention to the handicapped child than to their normal child, even at the cost of the other duties at home.

The parents protected the handicapped children in every respect. (Graph No. 5-F in Chapter No. V).

It was found that the parents had anxieties about the future of the child. They were not sure about the marriage of their child with the hearing impaired one.

They did not have much information about the

facilities and concessions provided to the handicapped children.

They did not show willingness in case of 'self-employment' of their child in future.

They expressed the willingness in joining and participating in the parents' association or cooperative movement. (Discussion and Graphs 5-G-1 to 5-G-12 in Chapter No. V).

The parents became aware of the problems of their children, the siblings, the in-laws. They tried to find out the answers to some such problems in their own way.

A categorical change was found in the attitude of the parents regarding the blame that always goes to the mother of the handicapped child.

There is a positive change in the attitude of parents. (Discussion on the part 'H' of the questionnaire in the Chapter V).

It was observed that there was lot of enrichment of the teachers participated in the project and the student-teachers involved in the project.

REALIZATION OF OBJECTIVES -

There were fourteen objectives to be realized in the study.

Objectives Nos. 1 to 12 are realized.

Objective No. 13 was realized as the package programmes were prepared by the teachers. However, as the study is in the special education all the technical aspects might not have been fulfilled.

Objective No. 14 was realized in a limited way as it is the programme of supplementary education.

6) CONCLUSIONS :-

The present research was helpful to bring about the language development in the hearing impaired children.

It helped in developing socialization of the children.

It was observed that parents increased their awareness in the problems of the handicap of their child.

There is wide scope for such type of research work in the field of special education.

(7) RECOMMENDATIONS :-

1) There should be permanent arrangements of parental education for the parents of hearing impaired children in every school.

2) The supplementary education programmes should be an integrat part of the school programmes of the hearing impaired children and the integration units.

3) The provision for training of out-of-school activities for hearing impaired children must be made in the teacher's training institutes for the deaf.

4) The practical aspects of organizing such programmes should have weightage in the curriculum of the training institutes.

5) There should be provision for training of organizing the programmes for parents in training institutions for hearing impaired.

6) There should be parents' association attached to special schools.

7) Different tools for gathering the data in the field of special education, should be evolved.

(8) TOPICS FOR FURTHER RESEARCH :-

1) Comparative study of the attitude of parents having a hearing impaired daughter and hearing impaired son.

2) Case studies of the parents having more than one hearing impaired child.

3) Study of effect of socio-economic status of the parents on their awareness of the acceptance of handicap of their child.

4) Study of the sufficiency and efficacy of different provisions made for handicapped children at the Government and Semi-Government level.

5) Study of the attitudes of fathers towards their hearing impaired child.

6) Analysis of the mental processes of the parents that take place within a year of detection of the handicap of their child.

7) Study of difficulties of siblings in dealing with the handicapped brother or sister.

8) Evolving of a tool to find out non-verbal potentials of the hearing impaired children.

BIBLIOGRAPHY

BOOKS -

Akkinson J; Berne E., and Woodworth R.S., Dictionery of Psychology. Delhi: 4th ed., Goyal Publishers and Distributers, 1987.

Best Joh W., Research in Education, 4th ed., New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd., 1983.

Douglas Tom, Groupwork Practice, Vth ed., London Tavistock Publications Ltd., (reprinted by Routledge) 'New Fetter Lane, 1989.

Hans Furth G., Deafness and Learning, California, Wadsworth Publishing Co., Inc., 1973.

Kaushik Sandhya Singh, Parents are teachers, New Delhi: Northern Book Centre, 1988.

Milton Seligman, Strategies for Helping Parents of Exceptional Children, London: Collier Macmillan Publishers, 1979.

Topping Keith J., Parents are Educators, London & Sydney, Croom Helm, 1986

Tracy William R., Designing Training and Development Systems, Bombay: Taraporewala Publishing Industries Pvt. Ltd., 1977.

ARTICLES -

1) The school that sally built, Reader's Digest, July 1982.

2) Seven secrets of peak performance, Reader's Digest, November 1982.

N I P C C D

Compedium of Research Tools in Social Science Research, New Delhi: Documentation and Information Centre. Vol.-I (Part 'A') Vol.-I (Part 'B') Vol.-III

महाराष्ट्र राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद, पुणे अपंग मुलांसाठी एकात्म शिक्षण, १९९०.

LIST OF APPENDICES

1)	Appendix 'A'	A list of programmes conducted for the children.
2)	Appendix 'B'	A list of programmes conducted for the parents.
3)	Appendix 'C'	Socio-economic background proforma.
4)	Appendix 'D'	Pre-test Post-test for the parents.
5)	Appendix 'E'	Language Test.
6)	Appendix 'F'	Score Card.
7)	Appendix 'G'	Socialization checklists.
8)	Appendix 'H'	Format of the programme.
9)	Appendix 'I'	Parents' reactions towards Khanapur Programme.
10)	Appendix 'J'	Parents' reactions towards the project.
11)	Appendix 'K'	List of resource persons.
12)	Appendix 'L'	List of teachers participated in the Project.

13) Appendix 'M' Cuttings from news-papers.

14) Photo Section

APPENDIX NO. 'A'

PROGRAMMES CONDUCTED FOR THE CHILDREN INCLUDED IN THE PROJECT

1)	Get-together, Registration, Introduction	21.9.89 23.9.89 30.9.89
2)	Stalls of crackers arranged in near-real situation in the college - Introduction	7.10.89
3)	Actual transactions of purchase by the children in near-real situation in the college	14.10.89
4)	Visit to cracker-stalls in the city and actual purchase of crackers by children	21.10.89
5)	Visit to Agriculture College Pune (Morning)	18.11.89
6)	Cartoon films (afternoon)	18.11.89
7)	Reporting of Agriculture College programme by children (Reinforcement)	25.11.89
8)	Preparation of Collage by children	2.12.89
9)	Completion of Colas by children	9.12.89
10)	Programme of monkeys by traditional monkey keeper	16.12.89
11)	Story of Monkey and the cat demonstration and dramatization by children	23.12.89
12)	Funny games and Auditory games	30.12.89
13)	Drawing and painting	6.1.90
14)	Makar-sankrant ceremony	13.1.90
15)	Celebration of a birth-day party of a small deaf child	20.1.90

No.	Activity	Date
16)	Funny Games	3.2.90
17)	Craft and ~~Oregamy~~ Origami	10.2.90
18)	Khanapur - one day camp i) Fun fair ii) Paper-statue iii) Passing the parcel iv) Open-air games, races competitions v) Drama competition vi) Adventure vii) Funny games with the parents	18.2.90
19)	Crafts and Arts	24.2.90
20)	Fancy dress competition	3.3.90
21)	Games with the help of educational aids	10.3.90
22) & 23)	Rehearsal of the closing function - drama, dance, fancy-dress	16.4.90 17.4.90
24)	Closing programme of the year	21.4.90
25)	Sending greeting cards during Diwali Vacation.	

APPENDIX NO. 'B'

PROGRAMMES CONDUCTED FOR THE PARENTS INCLUDED IN THE PROJECT

No.	Programme	Date
1)	Preliminary meetings for introduction of the programmes	21.9.89 24.9.89
2)	Psychology of the deaf, problems of the deaf Lecture-cum-discussions by Smt. Shobha Bhagwat	7.10.89 8.10.89
3)	Facilities available for the deaf children Lecture - by Shri Shastri	18.11.89
4)	Adjustment problems of the deaf children Lecture-cum-discussion by Dr. Lata Paranjape	23.12.89
5)	Hearing-impairment and care of the hearing aids Lecture-cum-discussion by Smt. Kalyani Mandake	6.1.90
6)	Sports medicine for the deaf Lecture - discussions and demonstrations by Dr. Rajeev Sharangpani M.D. (Expert in Sports Medicine)	13.1.90 14.1.90
7)	Auditory training and conversation method Lecture-discussion with Video-cassettes Two day full time programme by Smt. Kunda Dalavi, Principal, C.I.T.D. Bombay	3.2.90 4.2.90
8)	Khanapur one day camp a) Role Playing i) Early detection and acceptance of the handicapped, (Dr. Lata Paranjape and Smt. Kalyani Mandake)	18.2.90

ii) Hearing aids - use and maintenance,)
by - Smt. Sangekar and Smt. Kalyani Mandake)

iii) How to handle the deaf child when we receive guests (Extempore role-play by parents))

b) Funny Games by - Shri Shreedhar Rajguru)

c) Socio-drama-self expression by the hearing-impaired child and persons related to him (Presented by student-teachers of the course, Resource person and the Parents))

d) Formation of the Association of the Parents of the deaf (Group work done by the parents))

e) Funny games with the children (Shri Rajguru))

f) Completion of a story by the parents (Dr. Lata Paranjape))

9) Cochlear-implant, Lecture and slides by Dr. Hemant Dabake M.S. (E.N.T.)) 10.3.90

10) Experiments done by me in the case of my child-success and failures (Narrations by the parents followed by the discussion and guidance by Smt. Shobha Bhagwat)) 17.3.90

11) Mutual home-visits during Diwali Vacation and holidays (by parents))

12)	Reading books- regarding the problems of the hearing-impaired children.	
13)	Preparation for the closing function	16.4.90 17.4.90
14)	Participation in the closing function	21.4.90

APPENDIX NO. 'C'

SOCIO-ECONOMIC BACKGROUND OF THE PARENTS

Questionnaire for the parents of
the hearing-impaired children

(A) General information of the family -

1) About the parent participating in the programme.

a) Name in full ____________________

b) Age ____________________

c) Education ____________________

d) Occupation ____________________

e) Place of occupation ____________________

f) Monthly income ____________________

2) About the parent not participating

a) Name in full ____________________

b) Age ____________________

c) Education ____________________

d) Occupation ____________________

e) Place of occupation ____________________

f) Monthly income ____________________

3) Information about other members of the family.

Name	Age	Education	Occupation	Income	Relation with the hearing impaired

4) Residential Address

____

____

Phone No. ___________________________________

(B) More information about the parents

i) Hobbies ______________________

ii) Daily reading ______________________

iii) Favourite programmes on T.V. ______________________

iv) Favourite programmes on Radio ______________________

v) Leisure time activities ______________________

vi) Vehicle used ______________________

vii) Membership (if any) of social organization ______________________

(C) Information about hearing-impaired child.

i) Name in full ______________________

ii) Date of Birth ______________________

iii) Weight ______________________

iv) Height ______________________

v) Name of the school ______________________

vi) Standard ______________________

vii) Hobbies ______________________

viii) Characteristics of child's nature ______________________

(D) More information from the mother of the child.

i) Was there anyone suffering from the handicap in the previous generation?

Yes/No

If so, information about it ______________________

____

ii) Was there any problem at the time of the delivery?

Yes/No

If so, its nature ______________________

____

iii) Was there any problem in the pre-natal stage?

Yes/No

If so, its nature ______________________

____

iv) Was the child fully healthy at the time of birth?

Yes / No

If not, what was the problem ? ____________________

____

____

v) Did the child cry immediately after the birth?

Yes / No

vi) What were the problems regarding the child during 3 to 6 months after the birth?

____

____

vii) Did the child suffer from any serious disease?

Yes / No

If so, its information ____________________

____

viii) When was the handicap detected?

____

ix) What was the treatment given?

____

____

x) So far which doctors have you consulted?

____

____

xi) Whom are you consulting at present?

____

xii) How much have you spent on the treatment of your child?

____

xiii) What is the order of the child in siblings?

____

xiv) Do you teach your own child?

Yes / No

If Yes, how many hours?

____

xv) Do other members teach the child?

____

xvi) Do you send child for the tuitions?

Yes / No

To whom? ______________________________________

How long? ______________________________________

How much do you spend on it?

____

xvii) Why do you send your child for tuitions?

____

____

Is the purpose served? ___________________________

How? ____

____

xviii) Do you visit your child's school?

Yes / No

How aften in a week? ______________________

Why ? ______________________________

xix) Do you discuss with the teachers?

____

In what connection? ______________________

____

xx) Do you follow the suggestions of the teachers?

____

How? ______________________________

____

xxi)How many friends has your child?

____

How often does he/she go to them?

____

(E) <u>About the school life of the child.</u>

i) At what age did you admit your child to school?

____

ii) Did you consult anybody before?

Yes / No

Details ______________________________

____

iii) What was the purpose in admitting the child in the school?

____

____

iv) Is individual attention given in the school?
Yes / No

v) Do the teachers guide you in solving the problems of your child?
Yes / No

Do the teachers inform you about the progress of the child?
Yes / No

vi) In what competitions does your child take part?

____

vii) Has your child participated in picnics and excursions?
Yes / No
Details ______________________________

____

viii) Which class does your child attend for other than school subjects?

____

____

(F) <u>For participating parents</u>

i) What are your objectives in joining this project?

____

____

ii) What programmes would you suggest in this project?

____

____

____

____

Appendix No. 'D'

PRETEST POSTTEST QUESTIONNAIRE FOR THE PARENTS

A)

1. What are the parts of the ear?

____

2. In what part of the ear is the defect in case of your child?

____

3. What is the exact nature of the defect?

____

4. What are the causes of it?

____

5. What defects of the ear can be cured with the help of operation?

____

6. What is the hearing loss of your child?

Right ear ______________ Left ear ______________

7. What is the residual hearing of your child?

____

8. What is the diagnosis of this hearing loss made by different doctors?

____

____

9. What measures have you tried other than medical?

____

____

10. Is your child operated of tonselitis? Why?

____

____

B)

1. What are the parts of the hearing aid?

____

____

2. At what interval is the battery of the hearing aid to be changed?

____

____

3. Does your child use hearing aid continuously throughout the day?

____

4. Which is the best hearing aid? Give the name of the company.

____

____

5. Do you teach speech to your child without making him use hearing aid?

____

c)

Certain statements are given below. Mark the statement with which is correct according to you and with 'X' which is incorrect according to you.

1. The hearing loss can be cured by using hearing aid.

2. All the sounds can be heared if a child uses the hearing aid.

3. One can hear better if he uses the costly hearing aid.

4. A child can speak if he uses hearing aid.

5. The structure of the ear of normal child and a deaf child is similar.

6. If one has a deaf child, the second child should be born after seven years so that the second child will not be deaf definitely.

7. Deafness can be completely cured by Homoeopathy.

8. We can use headphones in place of hearing aid.

9. A deaf child can hear as good as a normal child if he uses hearing aid.

10. There will be considerable change in hearing if we apply oil at the back of the ear.

11. If we put oil daily in the ear there will be change in hearing.

12. One can hear if the defect in the internal ear is removed.

13. If hearing aid is used with mould it is more helpful.

14. Due to constant attacks of cold one can be deaf.

15. Deaf child can hear clearly if there is an operation of cochlear

D)

1. How many words does your child know?

   Comprehension ______________ Expression ________

2. Do you teach your child every day? How long?

   ____

3. Which words did he find easy?

   ____

4. Which words did he find difficult?

   ____

5. Do you maintain diary for your child?

   ____

6. What points do you note in it?

   ____

7. Do you get any assistance from your family members in teaching your child? How?

   ____

E)

Below are given some statements with a measuring scale.

Please tick with ' ' in appropriate column.

	Not at all	Some times	Can't tell	Many times	Always
1. My child can understand speech by lip reading					
2. He can speak in complete sentence.					
3. I understand the speech of my child.					
4. I use sign language while speaking with him.					
5. Others don't understand my child's speech.					
6. My child understands sequence of tense while speaking.					
7. I have to write down everything to make my child understand.					
8. My child uses intonation while speaking.					

	Not at all	Some times	Can't tell	Many times	Always
9. My child is always eager to volunteer to speak.					
10. My child is ready to speak with a stranger.					

F)

1. Do you pay more attention to your deaf child?

____

Give reasons

____

____

2. What is the effect of this on your other children?

____

____

3. What is the effect of paying more attention to this child on your other duties?

____

____

G)

1. What are your anxieties regarding the future of your child?

____

____

____

2. What is your exact idea about the rehabilitation of your child?

____

____

3. Do you think that your son/daughter should marry the deaf?

If yes - Why? ______________________________

If not - Why? ______________________________

4. How you met any deaf person who is well rehabilitated?

____

What do you feel about the future of your child after meeting such person?

____

____

5. How many institutes involved in the work of the deaf do you know?

____

____

6. Do you know any association of the parents of the deaf?

____

7. Are you of the opinion that there should be a co-operative movement for the deaf? Why?

____

____

8, What are the facilities for the deaf?

____

____

9. Is it sufficient?

____

10 What other concessions or aid do you expect?

____

____

11 Do you think that there should be residential school for the deaf?

____

12 Do you think that your child should venture in independent business/profession?

____

H)

1. In what category will you place your child?

i) Handicapped ii) Hearing-impaired

iii) Deaf and mute iv) Child with special needs

____

2. Geetabai's deaf child is not accepted by other normal children in the the vicinity while playing. What should Geetabai do?

____

____

3. Kamalabai feels awkward to take her deaf child when she visits her relatives and friends. What must be the reasons for that?

____

____

4. Sharadabai's in-laws blame her because she has a deaf child. What should Sharadabai do?

____

____

____

5. Sagunabai's elder son is deaf and her younger daughter is normal. The daughter hates her elder brother. What must be the reasons for that?

____

____

6. Kamalabai pays more attention to her deaf child. So academic progress of her normal children is hampered. What should Kamalabai do in this case?

____

____

7. Leelatai always compares her deaf child with his deaf friends. What must be the reasons for this?

____

____

APPENDIX NO. 'E'

LANGUAGE TEST ITEMS

SUBTEST - I TEST FOR NOUNS

Score 10 points

Method: 6 pictures of common objects and 4 common objects were shown to each child. The child was supposed to name these objects.

Scoring: The articulation errors were not taken into consideration while scoring, 1 point was given for each correct response. Any attempt to describe word or to explain using gestures was considered as a wrong response.

SUBTEST - II TEST FOR ABILITY TO USE NOUNS IN SENTENCES

Score 5 points

Method: The child was shown 5 pictures one at a time. He was asked to describe the picture using a sentence e.g. The boy is reading a book. For each answer a particular noun was decided as a target-word.

Scoring: Articulation errors and other words in sentences e.g. verb etc. were not taken into consideration. A particular noun was a 'target word'. If this noun was used correctly, 1 point was scored.

SUBTEST - III TEST FOR ABILITY TO USE NOUN AS AN ANSWER TO QUESTION

Score 5 points

Method

5 pictures were presented to a child, one at a time. A question was asked which required one word (noun) as an answer.

e.g. A cat drinks milk

What does cat drink?

Ans. milk (target word)

Scoring

Articulation errors and other words in the sentences were not taken into consideration. Only the target word was considered and if it was correct, 1 point was scored.

SUBTEST - IV TEST FOR SINGULAR AND PLURAL

Score 10 points

Method

5 pairs of pictures were made and one pair was presented at a time. A pair represented object in singular and plural e.g. book, books. A picture showing single object was shown first and then the picture showing same object in plural.

Scoring

The child was supposed to name object in singular and again name it in plural with appropriate changes. Articulation errors were not considered. Each correct response was scored for 1 point.

SUBTEST - V **TEST FOR GENDER**

Score 10 points

Method 5 pairs of pictures were made, each representing gender change.

e.g. Cock - Hen, Lion - Lioness

Boy - Girl, etc.

One pair of pictures was shown to child at a time and the child was to identify the gender.

Scoring Articulation errors were not taken into account. Each correct response carried 1 point.

SUBTEST - VI **TEST FOR ADJECTIVES**

Scoring 5 points

Method 5 pairs of pictures were made. In each pair, two adjectives, opposite in nature, were represented e.g. A fat boy - A thin boy. The child was asked to describe the picture. If he could not, a clue was given, saying the adjective related to one picture e.g. He is a fat boy. Describe the other boy. A target word was decided for each pair of pictures.

Scoring Articulation errors were not taken into account. 1 point was scored for each correct response (target word).

SUBTEST - VII TEST FOR VERBS

Scoring 5 points

Method — 5 pictures each showing a specific action were made. The child was shown one picture at a time and was supposed to describe the action using appropriate verb.

Scoring — No other words except verbs were considered. The use of proper verb was considered as a correct response. The choice of correct verb was the criteria of the correct response. The changes in verbs according to subject and tense were not taken into account. Errors in articulation were neglected. Each correct response scored 1 point.

SUBTEST - VIII TEST FOR ABILITY TO CHANGE VERB ACCORDING TO SUBJECT AND TENSE

Scoring 10 points

Method — 5 pairs of pictures were made showing some actions. The child was asked to describe these pictures. While describing the pictures, the child was supposed to make specific changes in verb and arrange it according to subject or tense.

e.g. - The boy is drinking

The girl is drinking

The verb was a target word which was supposed to match with subject and tense.

Scoring — 1 point was scored for each correct response.

SUBTEST - IX — TEST FOR PREPOSITIONS

Scoring 10 points

Method — 10 pictures requiring use of a specific preposition for their description were made e.g. The clock is on the table. The preposition used were on, under, in, behind, etc. The child was shown one picture at a time and was asked a question. The answer required use of a specific preposition which was considered as a target word for that picture.

Scoring — The other words in sentences, articulation errors were not taken into account. Each correct response scored 1 point.

SUBTEST - X — TEST FOR CASE.

Score 10 points

Method — 10 pictures were made each representing an action. One picture was shown to the child at a time and a question was asked. The answer required the use of specific case word which was the target word for that picture e.g. मुलगा कुणाला बिस्कीट देतो?
मुलगा कुत्र्याला बिस्कीट देतो.

Scoring No other words, except the target word, were taken into account while scoring. Each correct response scored 1 point.

SUBTEST - XI STORY TELLING

Scoring - on Rating Scales.

Method:

Pictures representing a story in sequential order was shown to each child. The child was asked to make the story from the pictures.

Lastly, the judgements were made regarding the following:

1. Intelligibility of Speech

   Rating (Very Bad, Bad, Fair, Good, Very good)

2. Use of gestures

   Rating (Less - appropriate - more than required)

3. Use of sign language
   Actual observation remarks

APPENDIX NO. 'F'

LANGUAGE ABILITY TEST

SCORE CARD

NAME : ____________________

SCHOOL : ____________________

AGE : ____________ STD. : ____________

Sub Test No.	Applicable	Marks out of	Marks obtained	Remarks
1		10		
2		5		
3		5		
4		10		
5		10		
6		5		
7		5		
8		10		
9		10		
10		10		
TOTAL				

(A) INTELLIGIBILITY OF SPEECH

V. Bad   Bad   Fair   Good   Very Good

(B) USE OF GESTURES

Less   Appropriate.   More than required

(C) USE OF SIGN LANGUAGE

Too much   Moderate   Not at all

Appendix No : '3'

SOCIALIZATION CHECK-LIST

AGE GROUP 3 TO 6 YEARS

Name of the child ______________________ Age ________

Sr. No.	ITEM	Datewise Record				
1	Cries					
2	Runs away					
3	Keeps away from the group					
4	Plays alone					
5	Greets on arrival and while leaving					
6	Answers the questions					
7	Plays with playmate					
8	Takes turn while playing					

Sr. No.	ITEM	Datewise Record					
9	Smiles with the stranger, if present in the programme						
10	Appreciates good things						
11	Uses signs while speaking						
12	Asks questions about the programme on his own						

SOCIALIZATION CHECK-LIST

AGE GROUP 7 TO 9 YEARS

Name of the Child ______________________ Age ________

Sr. No.	I T E M	Datewise Record			
1	Quarrels with other children				
2	Disobeys the orders				
3	Keeps away from the group				
4	Plays isolated				
5	Greets on arrival and while leaving				
6	Asks questions/suggests on his own				
7	Volunteers for play or activity				
8	Tidies up everything after the programme				

Sr. No.	I T E M	Datewise Record					
9	Moves freely at the new place or in the presence of the stranger						
10	Appreciates good things of others						
11	Tries to speak						
12	Gives chance to others						

SOCIALIZATION CHECK-LIST

AGE GROUP 10 TO 12 YEARS

Name of the Child ______________________ Age ______

Sr. No.	I T E M	Datewise Record				
1	Keeps away from the group					
2	Disobeys orders					
3	Doesn't play with the children of opposite sex					
4	Suggests the name of others for the activity					
5	G reets on arrival and while leaving					
6	Tells about own difficulty					
7	Volunteers for play/ activity					
8	Tidies up everything after the programme					

Sr. No.	I T E M	Datewise Record					
9	Moves freely at the new place or in the presence of the stranger						
10	Appreciates good things of others						
11	Tries to speak						
12	Gives chance to others						

APPENDIX NO. [illegible]

फटाक्यांचे दुकान

दिनांक – ७.१०.१९८९ व १४.१०.१९८९
व २१.१०.१९८९

वयोगट – ३ ते ६ वर्षे

अ] उद्दिष्टे – हा कार्यक्रम झाल्यानंतर मुलांना फटाके व त्यांचे प्रकार व त्यांचे आवाज याबद्दलच्या संकल्पना स्पष्ट होतील व खालील शब्दांचे अर्थ समजतील.

ब] खालील उच्चार येतील – १] फटाके २] टिकली ३] दुकान ४] पैसे ५] लहान ६] मोठा

क] सामाजिकीकरण कसे साधेल?

१] फटाके हातात घेऊन बघणे.
२] सांगितल्यानंतर अभिरूप दुकानातून व प्रत्यक्ष स्टॉलवर जाऊन फटाके आणणे.
३] फटाके व टिकल्या न घाबरता उडवणे.
४] सांगितल्यावर कचरा गोळा करण्यास मदत करणे.

ड] श्रवण प्रशिक्षण – फटाक्यांचे लहान-मोठे आवाज व त्यातील फरक

कार्यक्रम –

शिकविण्याची पद्धत	गट	साधने
१] वेगवेगळ्या दुकानांची [उदा. भाजीचे, खेळण्यांचे, खाऊचे] चित्रे दाखवणे व दुकानांचा संबोध स्पष्ट करणे.	सर्व मुले	चित्रे व प्रत्यक्ष वस्तू
२] फटाक्यांची चित्रे व फटाके दाखवणे व वस्तू चित्र जुळवणी व त्यांचे उच्चार करून घेणे.	गटातील सर्व मुले व वैयक्तिक	चित्रे व प्रत्यक्ष फटाके.

अभिरूप दुकान -

शिकविण्याची पद्धत	गट	साधने
१] दुकानात काय काय आहे त्याची माहिती देणे	सर्व मुले	प्रत्यक्ष फटाके
२] पैसे देऊन फटाके घ्यायला लावणे	वैयक्तिक	पैसे व फटाके.

प्रत्यक्ष व्यवहार -

१] फटाक्यांच्या स्टॉलवर जाऊन शिक्षकांच्या अथवा मोठ्या मुलांच्या मदतीने फटाके घेणे.	वैयक्तिक	पैसे व फटाके

कृती - फटाके उडवून दाखवणे व मुलांकडून उडवून घेणे व त्यांचे आवाज जाणीवपूर्वक ऐकविणे.

आवश्यक चित्रे - १] वेगवेगळ्या दुकानांची चित्रे

२] दिवाळीचे चित्र

३] फटाक्यांची चित्रे [उदा. भुईनळा, फुलबाजी, फटाके]

फटाक्याचे दुकान

दिनांक - ७·१०·१९८९, १४·१०·१९८९ व २१·१०·१९८९

वयोगट - ७ ते ९ वर्षे

अ] उद्दिष्टे - हा कार्यक्रम झाल्यावर मुलांना दुकान व पैसे देऊन खरेदी ह्या संकल्पना स्पष्ट होतील व खालील शब्दांचे अर्थ समजतील·

१] दुकान २] पैसे ३] फटाके ४] पैसे देणे घेणे
५] लहान-मोठा आवाज·

ब] खालील उच्चार येतील [प्रत्येकाच्या कुवतीनुसार]

१] फटाका २] फुलबाजी ३] टिकल्या ४] भुईचक्र
५] दुकान ६] पैसे ७] लहान ८] मोठा

क] सामाजिकीकरण कसे साधले? -

१] दुकानात जाऊन फटाके खरेदी करणे [वैयक्तिक]·
२] फटाके आपसांत वाटून घेणे·
३] फटाके उडविल्याचा आनंद व्यक्त करणे·
४] फटाके उडवून झाल्यावर सफाई करणे·

ड] श्रवणप्रशिक्षण -१] फटाक्याचा लहान व मोठा आवाज
२] उद्‌गारवाचक शब्द [उदा· बापरे! वा!]

कार्यक्रम -

शिकविण्याची पद्धत	वयोगट	साधने
१] वेगवेगळ्या दुकानांची चित्रे दाखवणे व त्यातून दुकानाचा संबोध स्पष्ट करणे·	सर्व मुले	चित्रे, शब्दपट्ट्या
२] वेगवेगळे फटाके दाखवणे व उच्चार करून घेणे	सर्व मुले व वैयक्तिक	प्रत्यक्ष वस्तू व शब्दपट्ट्या

अभिरूप दुकान -

शिकविण्याची पद्धत	वयोगट	साधने
१] दुकानांत काय काय आहे?	सर्व मुले	प्रत्यक्ष फटाके
२] फटाक्यांची किंमत विचारायला सांगून पैसे देणे व फटाके घेणे	वैयक्तिक	प्रत्यक्ष फटाके

प्रत्यक्ष व्यवहार -

१] फटाक्यांच्या स्टॉलवर जाऊन फटाक्यांची खरेदी करणे	वैयक्तिक	पैसे व फटाके
२] मला फुलबाजीची एक पेटी द्या. भुईनळा केवढयाला?	वैयक्तिक	पैसे व फटाके

कृती -

१] फटाके उडविणे	वैयक्तिक	फटाके व काडयापेट्या अथवा उदबत्ती

आवश्यक चित्रे - निरनिराळ्या दुकानांची चित्रे
फटाक्यांची चित्रे

शब्दीचवळ्या - १] फटाके २] फुलबाजी ३] दुकान ४] किंमत ५] पैसे
६] भुईनळा ७] लहान आवाज ८] मोठा आवाज

फटाक्याचे दुकान

दिनांक = ७.१०.१९८९, १४.१०.१९८९
व २१.१०.१९८९

वयोगट = १० ते १२ वर्षे

अ] उद्दिष्टे – हा कार्यक्रम झाल्यावर मुलांना खरेदी अथवा पैसे देणे घेणे हा व्यवहार समजेल व मुलांना खालील शब्दांचे अर्थ कृतीतून समजतील.
१] खरेदी – विक्री २] पैसे देवघेव ३] अभिरूप दुकान

ब] उच्चार कोणकोणते येतील?

१] दुकान २] ॲटमबॉंब ३] फुलबाजी ४] खरेदी
५] फटाके ६] मोठा आवाज, लहान आवाज

क] सामाजिकीकरण कसे साधेल?

१] अभिरूप दुकानांतून व फटाक्यांच्या स्टॉलवर जाऊन फटाक्यांची खरेदी करणे.
२] दोघांनी एकत्र जाऊन फटाके आणणे.
३] आपण फटाके उडविताना इतरांना व स्वत:ला इजा न होईल हे पाहणे.
४] फटाके उडवून झाल्यानंतर सर्व केर–कचरा स्वत:हून उचलणे.
५] लहान मुलांना मदत करणे.

ड] श्रवणप्रशिक्षण –

१] फटाक्याचा लहान व मोठा आवाज.
२] प्रश्नार्थक व उद्गारवाचक वाक्यांमधील फरक

शिकविण्याची पद्धत	गट	साहित्य
१] वेगवेगळ्या दुकानांचा संबोध मुलांना आहेच. परंतू प्रत्यक्ष व्यवहाराची कल्पना येण्या करिता अभिरूप दुकानांमार्फत व्यवहार शिकविणे.	९ ते १२ वर्षे	चित्रे, प्रत्यक्ष फटाके

शिकविण्याची पद्धत	गट	साहित्य
२] फटाके केव्हा केव्हा उडवितात?	९ ते १२ वर्षे	उदा. दिवाळीत, मॅच जिंकल्यावर, दसरा इ. हे सांगून. चित्रे.
३] प्रत्यक्ष फटाके वाजवून उच्चार करून घेणे.	वैयक्तिक	फटाके त्यांचे प्रकार व शब्दचिठ्या.
अभिरूप दुकान -		
१] दुकानांत काय काय आहे?	गटांतील सर्व मुले	फटाके, फुलबाज्या, भुईचक्र बाण, ॲटम बॉंब, पिस्तुल
२] दुकानदाराला फटाक्यांची नांवे व किंमत विचारणे व मुलांना खरेदीची संकल्पना समजाऊन देणे.	सर्व मुले	पैसे व प्रत्यक्ष वस्तू
प्रत्यक्ष व्यवहार -		
१] खऱ्याखुऱ्या दुकानांत जाऊन मुलांकडून व्यवहार करून घेणे.	वैयक्तिक	प्रत्यक्ष फटाके
२] हिशोब करणे.		
कृति -		
फटाके उडविणे	वैयक्तिक	
आवश्यक चित्रे -	१] निरनिराळ्या दुकानांची चित्रे उदा. भेटकार्डे, राख्या, यांचे स्टॉल खेळण्यांचे दुकान, इ., दिवाळीचे चित्र	
आवश्यक शब्दचिठ्या -	स्टॉल, अभिरूप दुकान, फटाके, ॲटमबॉंब भुईचक्र, पिस्तुल, लवंगीसर, खरेदी विक्री	

वाढदिवस - २०•१•१९९०

वयोगट - ३ ते ६ वर्षे

अ] उद्दिष्ट - वाढदिवस ही संकल्पना स्पष्ट होईल व निरनिराळ्या शब्दांचे अर्थ समजतील•

ब] खालील शब्दांचे अर्थ समजतील -

१] वाढदिवस २] ओवाळणे ३] खाऊ

क] उच्चार कोणकोणते येतील -

१] वाढदिवस २] खाऊ ३] भाऊ ४] ताई

ड] सामाजिकीकरण कसे साधेल -

१] स्वत: फुगे फुगवणे•
२] ज्याचा वाढदिवस आहे तो मुलगा सर्वांना खाऊ देतो•
३] सांगितल्यावर कचरा गोळा करणे•
४] सांगितल्यावर ज्याचा वाढदिवस आहे त्याला शुभेच्छा व भेटवस्तू देणे•

इ] श्रवणप्रशिक्षण - १] फुगा फुटल्याचा आवाज•
२] टाळ्यांचा आवाज•

कार्यक्रम -

शिकविण्याची पद्धत	वयोगट	साधने
१] वाढदिवसाचे फोटो दाखवले	गटातील सर्व मुले•	फोटो
२] वाढदिवसाची संकल्पना स्पष्ट करण्यासाठी - तू मोठा झालास नवीन कपडे आणले, हट्ट करायचा नाही, आईचे ऐकायचे, रडायचे नाही हे समजावून सांगितले•	गटातील सर्व मुले	ओवाळण्याचे साहित्य

शिकविण्याची पद्धत	वयोगट	साहित्य
३] ओवाळणे - शब्द समजून देण्यासाठी स्वत: ओवाळून दाखविले	गटातील सर्व मुले	ओवाळण्याचे साहित्य
४] फुगे वाटले	गटातील सर्व मुले	फुगे
५] मुलांना भेटवस्तू देण्यास सांगितले.	गटातील सर्व मुले	भेटवस्तू
६] खाऊ वाटला	गटातील सर्व मुले	केक, वेफर्स
७] सर्व मुलांकडून टाळ्या वाजवून घेतल्या		

वाढदिवस

वयोगट - ७ ते ९ वर्षे

अ] उद्दिष्ट - वाढदिवस ही संकल्पना स्पष्ट होईल व निरनिराळ्या शब्दांचे अर्थ समजतील.

ब] खालील शब्दांचे अर्थ समजतील -

१] वाढदिवस   २] औक्षण   ३] ओवाळणे
४] अभिनंदन

क] सामाजिकीकरण कसे साधेल? -

१] वाढदिवसा निमित्त स्वत:हून प्रेझेन्ट आणणे
२] बसायला सतरंजी घालणे / नंतर उचलणे
३] सांगितल्यावर कागद, फुटलेले फुगे वगैरे उचलणे
४] इतरांनी काय प्रेझेन्ट आणले हे बघण्याची उत्सुकता वाटेल
५] सांगितल्यावर ओवाळायला पुढे येतील.

ड] श्रवण प्रशिक्षण -
१] फुगा फुटल्याचा आवाज
२] टाळ्यांचा आवाज
३] टेपरेकॉर्डवर लावलेली गाणी

कार्यक्रम -

शिकविण्याची पद्धत	वयोगट	साधने
१] वाढदिवसाचे फोटो दाखवून प्रश्न विचारणे.	गटातील सर्व मुले	फोटो
२] स्वत: ओवाळून दाखवले व नंतर प्रत्येकाकडून ओवाळून घेतले व औक्षणाची तयारी उदा. निरांजन, सुपारी, अक्षदा हे नवीन शब्द सांगितले व दृढीकरण केले.	सर्व मुले	ओवाळण्याचे साहित्य

३) फुगे फोडले

४) मुलांनी खाऊ वाटला

चित्रे - औक्षण करतानाचे चित्र

शब्दचिठ्ठ्या - निरांजन, औक्षण, वाढदिवस, तबक

वाढदिवस - २०•१•१९९०

वयोगट -१० ते १२ वर्षे

अ] उद्दिष्ट - हा कार्यक्रम झाल्यावर वाढदिवस ही संकल्पना स्पष्ट होईल व निरनिराळ्या शब्दांचे अर्थ समजतील•

ब] खालील शब्दांचे अर्थ समजतील -

१] औक्षण २] शुभेच्छा ३] ओवाळणे
४] अभिनंदन

क] उच्चार कोणकोणते येतील -

१] औक्षण २] अभिनंदन ३] ओवाळणे
४] निरांजन ५] तबक

ड] सामाजिकीकरण कसे साधेल? -

१] वाढदिवसानिमित्त स्वत:हून प्रेझेन्ट आणणे•
२] वाढदिवसाच्या शुभेच्छा देणे•
३] बैठक घालायला मदत करणे•
४] सजावट करायला मदत करणे•
५] कचरा गोळा करणे•
६] औक्षण करायला स्वत:हून पुढे येणे•
७] कितवे वर्ष लागले, कितवे संपले हे बघणे•
८] ज्याचा वाढदिवस आहे त्याच्याशी स्वत:हून बोलणे, खेळणी व इतर वस्तू बघण्याची उत्सुकता•
९] खाऊ वाटायला मदत करणे•

कार्यक्रम -

शिकविण्याची पद्धत	वयोगट	साधने
१] वाढदिवसाचे फोटो दाखवले• मुले स्वत:हून फोटोबद्दल बोलतील अशी अपेक्षा• तसे न झाल्यास प्रश्न विचारणे•	गटातील सर्व मुले	फोटो

शिकविण्याची पद्धत	वयोगट	साधने
२] स्वत: ओवाळून दाखवणे	गटातील सर्व मुले	तबक, निरांजन, वात, तेल, सुपारी इ. ओवाळण्याचे साहित्य, भेटवस्तू
३] फुगे फोडायला सांगितले		
४] मुलांनी खाऊ वाटला.		

चित्रे - औक्षण करतानाचे चित्र

APPENDIX NO. 'I'

PARENT'S REACTIONS TOWARDS KHANAPUR PROGRAMME

At the end of the Khanapur camp, parents were requested to give their reactions in writing. All of them gave their reactions which can be summarised as follows :

1) The planning of the whole-day programme was neat and followed properly.

2) Now we can believe that the deaf children and their parents can spend a day together very happily.

3) We could recognise many new aspects of our young ones (deaf).

4) We could realise that all of us have the same types of difficulties.

5) We got acquainted with many parents of the deaf.

6) We could exchange our difficulties, we could guide others also.

7) The programmes like role playing gave us the idea how to treat the children.

8) Sharing the strain and agony helped us to get consolation.

9) Free discussions helped us to gain moral strength.

10) We never had such a joyful and happy time.

11) As we both (husband and wife) were there, it gave us a sense of joint responsibility and sharing.

12) A totally novel experience.

13) The games and competitions arranged for the parents made us relaxed.

14) We realised that the development of the parents is also necessary.

15) We laughed heartily, we felt free to discuss the problems.

16) The soliloquies were very effective. It gave out let to our feelings. It was a catharsis so to say.

17) Please make us laugh always like this.

18) The children otherwise bored in school atmosphere appeared to be very happy, carefree and active in the natural surrounding of the camp-site.

19) We (mothers) were happy more, because many fathers came and we (mothers) were completely free as the children were in the custody of the teachers.

Suggestions :

1) Such programmes should be organised twice a year.

2) There should be more time for group discussions.

3) It should be made compulsory for each parent to express his experiences in such camps.

APPENDIX NO. 'J'

PARENTS' REACTIONS TOWARDS THE PROJECT

In any programme of intervention, it is very important to get feed back from the persons for whom the intervention was effected, about the nature of the programmes included. It gives us the guidelines for arranging the projects in future.

In the present project the parents were requested to point out which programmes they liked the most.

Majority of the parents liked the following programmes:

I
1) A lecture-cum-discussion on 'Psychological problems of hearing impaired,' by Shobha Bhagwat,

2) A lecture-cum- slides and discussion on Cochlear implant, by Dr. Hemant Dabake,

3) "My experiments in respect of my hearing impaired child" presented by seven parents,

4) All the programmes arranged at camp Khanapur.

II To a question, "What are your observations regarding the following points", most of them gave the correct responses. The responses of 18 parents were as follows :

Responses	No. of parents responded
1) The inhibitions regarding talking about the handicapped child were lessened.	12
2) The worries about the child were decreased, when I saw that other parents are facing the same difficulties.	10
3) I became doubtful about the efforts for the child from the experiences of the other parents.	4
4) I felt confident that we will be successful if strive jointly.	15
5) I left blind hopes about the child, knowing the limitations regarding his progress.	10
6) With lot of information on different aspects, I could know exactly what is to be done.	14
7) I found, parents' efforts are equally important as teachers'.	14
8) I found that other activities are equally important as academic progress of the child.	15
9) Many efforts are to be made for my child.	15
10) The future aspirations regarding my child became clear.	11

To the question, "If arranged next year, would you join such programme?" All of them replied positively. They showed willingness in helping

organization of programme.

From the above responses the general observations are as follows :-

1) Parents have developed some positive attitude towards the problem of their child.

2) They have realized the importance of such programme of intervention.

3) They liked the participatory programmes arranged for them.

APPENDIX NO. 'K'

LIST OF RESOURCE PERSONS

	Name	Address
1)	Smt. Bhagwat Shobha	Garware Bal-Bhavan, Shukrawar Peth, Pune-411 002
2)	Dr. Dabake Hemant	33-14 Erandawane, Dabake Nursing Home, Pune - 411 004
3)	Smt. Dalvi Kunda	Principal, C.I.T.D., Agripada, Bombay.
4)	Dr. Deshpande Vasant	A-2/5 Gajendranagar, Dattawadi, Pune-411 030
5)	Smt. Kakade Sheela	Lokmanyanagar, Pune - 411 030
6)	Smt. Dr. Karandikar Suman	999/B Niyojan Society, Navi Peth, Pune-411 030
7)	Shri Kulkarni V.N.	Tilak College of Education, Pune - 411 030
8)	Smt. Mandke Kalyani	964, Sadashiv Peth, Pune - 411 030
9)	Shri Rajguru Shreedhar	46, Abhay Apartments, Rambaug Colony, Kothrud, Pune - 411 029
10)	Smt. Sangekar Aruna	S.G. Barve Complex, J.M. Road, Shivajinagar, Pune - 411 005
11)	Dr. Sharangpani Rajeev	Aniket Society, Pune - 411 002

APPENDIX NO. L

TEACHERS PARTICIPATED IN THE PROJECT

1) Smt. Joshi Padma
2) Smt. Kanitkar Kamalini
3) Smt. Umbrani Sheela
4) Smt. Puranik Veena
5) Smt. Kale Amita

ADDITIONAL -

1) Smt. Sathe Renu
2) Smt. Deshpande Keerti

APPENDIX NO.[illegible]

दिनांक ८-९-१९८९

तरुण भारत

माहिती-निवेदने

मूकबधिर मुलांसाठी सांस्कृतिक कार्यक्रम

टिळक शिक्षण महाविद्यालयातर्फे ३ ते १२ वर्षे वयोगटातील मूकबधिर मुलांसाठी शनिवार-रविवार व सुट्टीच्या दिवशी विविध कार्यक्रम घेण्यात येणार आहेत यात छंद वर्ग, नाट्य, सहली, विविध स्थळांना भेटी सांघिक खेळ इत्यादींचा समावेश असेल. त्याचप्रमाणे मूकबधिर मुलाच्या पालकासाठीही कार्यक्रम घेण्यात येणार आहेत यामध्ये चर्चासत्रे, प्रत्यक्ष सहभागी कार्यक्रम, कॅसेटस फिल्म्स, भूमिका नाट्य इत्यादींचा उपयोग करण्यात येईल सपर्क- टिळक शिक्षण महाविद्यालय, पुणे ३० (सकाळी १०-३० ते १२-३०) डॉ सौ लता पराजपे फोन- ४४१५६५, (सायकाळी ५ ते ६) येथे साधावा प्रवेश मर्यादित प्रवेशाची अतिम तारीख २०-९-१९८९

सकाळ : शुक्रवार / सप्टेंबर १९८९

निवेदने

मूक बधिर मुलांसाठी कार्यक्रम

टिळक शिक्षण महाविद्यालय :

तीन ते बारा वर्षे वयोगटातील मूक-बधिर मुलांसाठी शनिवार, रविवार व सुटीच्या दिवशी विविध कार्यक्रम घेण्यात येणार आहेत यात छंदवर्ग, नाट्य - सहली, विविध स्थळांना भेटी, सांघिक खेळ इत्यादींचा समावेश असेल. त्याचप्रमाणे मूक-बधिर मुलांच्या पालकांसाठीही कार्यक्रम घेण्यात येणार आहेत संपर्क : डॉ सौ लता परांजपे, टिळक शिक्षण महाविद्यालय, पुणे ३० फोन ४४१५६५ (सकाळी १० ३० ते दुपारी १२ ३० व सायं ५ ते ६) प्रवेश मुदत २०/९/८९

कर्णबधिरांच्या मदतीसाठी

एके दिवशी दुपारी मी फूटपाथवर उभी होते एक मुलगा सायकलवरून चालला होता, मागून स्कूटरवाला हॉर्न देत येत होता. सायकलवाला एकदम वळला अन् नेहमी रस्त्यावर जे घडते ते घडले स्कूटरची धडक बसून सायकल पडली "कधीचा हॉर्न वाजवतोय ऐकू येत नाही का ? आणि आता का बोलत नाहीस?" असे स्कूटरवाल्याचे बोलणे ऐकू येत होते मुलगा नुसताच उभा चार-सहा लोक जमलेले रहदारी तशी कमीच मला एकदम शका आली हा राजू तर नसेल ? माझ्या मैत्रिणीचा मुलगा- मी पुढे गेले तो राजूच होता, भाबावून उभा मी त्याच्या पाठीवर हात ठेवला-त्याची मान वळवली, त्याला एकदम् आनंद झाला तो त्याच्या चेहऱ्यावर दिसला त्याला क्षणात हुंदका फुटला स्कूटरवाला बोलतच होता मी म्हटले, "अहो, याला खरेच ऐकू येत नाही. हे बघा त्याचे 'श्रवणयत्र कानाच्या मागे असलेले श्रवणयंत्र मी दाखवले स्कूटरवाला ओशाळला म्हणाला, "बाई माफ करा, पण आमच्या सारख्याला हे कळावे कसे की हा कर्णबधिर आहे?"

खरेच आहे ते। पाढरी काठी आता लोकांना चागली माहीत झाली आहे. अस्थिव्यग लोकाचे जयपुरी फूट, कुबड्या, तिचाकी सायकाली हे सर्व लोकांच्या परिचयाचे झाले आहे पण कर्णबधिर व्यक्ती ओळखण्याची काय खूण ? त्यामुळे पुणे-मुबईसारख्या ठिकाणी अशा व्यक्तिच्या रस्त्यावरील सुरक्षिततेची काय हमी ? माझ्या डोक्यात चक्र सुरू झाले राजूच्या आईशी चर्चा केली तिलाही तोच प्रश्न पडला परतु काही। दिवसातच बऱ्याच वेळा कर्णबधिरत्वाची खूण म्हणून एक चिन्ह दाखवले गल्याचे आम्हाला आढळले राजूच्या आईने मुबईच्या अलियावर जग इन्सिट्यूटशी सपर्क साधून ते मागवले मग त्याचा मोठा कापडी बॅज केला व तिने ठरवले की, हा बॅज राजूच्या पाठीवर लावायचा अत्यत सोयीस्कर बॅज-सहज दिसणारा-बंद असल्यामुळे कोणत्याही कपड्यावर पाठ व पोट यावर बाधून बसविता येणारा

पण हे एकट्या राजूने घालून चालणार नाही सर्वच कर्णबधिर मुलासाठी हे आवश्यक आहे म्हणून टिळक कॉलेजमधील शनिवारच्या 'उपक्रम' या कर्णबधिर मुले व त्याचे पालक याच्यासाठी चालणाऱ्या उपक्रमातील पालकाशी चर्चा केली, काहींनी तयारी दर्शविली काहींना हे कठीण वाटले परतु नाही मात्र कुणीच म्हटले नाही ।

खरेच, रस्ता क्रॉस करणे, बसमध्ये

डॉ. सौ. लता परांजपे

चढणे, उतरणे सायकलसारखे वाहन चालविणे हे सर्व या मुलाना स्वतत्रपणे करावे लागते ही मुले कधी कधी २-२ बसेस करून शाळेपर्यंत पोहोचतात कुणी क्लासला जाते या सर्व ठिकाणी पालक त्याच्याबरोबर असणे शक्य नाही. तरी असा पाठीवर 'बॅज' असला तर इतराना त्याची जाणीव होईल व वाहनचालक सावध होईल, कुणी पुढे येऊन रस्ता क्रॉस करायला, बसमध्ये चढायला मदत करील, म्हणून राजूच्या आईचा आदर्श डोळ्यापुढे ठेवून सर्वांनी असे बॅजेस लावले पाहिजेत सायकललाही मागे असा बॅजचा बोर्ड लावला पाहिजे म्हणजे या मुलाच्या सुरक्षिततेसाठी मोठीच मदत होईल

एका कर्णबधिर मोठ्या वयाच्या मुलाशी बोलताना आणखी एक गोष्ट जाणवली या मुलाना आर टी ओ कडून वाहन चालक परवाना मिळत नाही आर्थिकदृष्ट्या परवडत असूनही अशा व्यक्तींना वाहन घेता येत नाही बस अथवा रिक्षा धद्याच्या दृष्टिने सोयीचे पडत नाही माझ्या मनात विचार आला, वाहनामध्ये काही विशिष्ट बदल करून व अशा निदान दुचाकी वाहनाना कर्णबधिरत्वाचे खुणेचे रिफ्लेक्टर्स बसवून पुढे दोन्ही बाजूला आरसे लावून या लोकानाही अशी निदान दुचाकी वाहने चालविता येऊ शकतील का ?

पाश्चिमात्य देशामध्ये कर्णबधिराना वाहन परवाना दिला जातो त्याच्या गाड्याना चालक कर्णबधिर असल्याची खूण दाखवणारा बोर्ड असतो अशा प्रहेची सोय आपल्याकडेही उपयुक्त होऊ शकेल व कर्णबधिर मडळींना ते वरदान ठरेल घड्याळाच्या काट्याबरोबर जसे सामान्य माणसाला पळावे लागते, तशीच अपगाचीही धडपड सातत्याने सुरू असते अपगात्वामुळे त्याना ही शर्यत करताना खूपच त्रास होतो त्याना सामाजिक व शारीरिक गतिमानता (Social and Physical Mobility) साधण्यासाठी मदत करणे हे आपले कर्तव्य आहे सामाजिक समायोजन व पुनर्वसनासाठी ही आवश्यक बाब आहे त्यासाठी ही व्यक्ती चटकन् ओळखता येणे महत्त्वाचे आहे तेव्हा हा बॅज त्याना लावायला सागून अनेक दृष्टीने त्याची सोय बघता येईल आजचे त्याचे 'मूक' व्यग हे जास्त बोलके होईल व प्रगतीचा मार्ग खुला होईल

टिळक कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, पुणे ३० येथे याविषयी अधिक माहिती आणि सहकार्य मिळेल.

२१ जून १९९१

वाचकांचा पत्रव्यवहार

वाहन परवाना द्यावा

'कर्णबधिराच्या मदतीसाठी' लेखात कर्णबधिरत्वाची खूण म्हणून एक चिन्ह शाळेत जाणाऱ्या विद्यार्थ्यांच्या पाठीवर लावण्याची केलेली सूचना चागली आहे गेल्या २५ ते ३० वर्षांत कर्णबधिरांमध्ये लक्षणीय प्रगती झाली आहे. कित्येक कर्णबधिरानी कॉलेजचे शिक्षणही पूर्ण केले आहे ही मुल वेगवेगळ्या कारखान्यातून काम करतात कामावर दररोज बसने वा रिक्षाने जाणे म्हणजे वेळेचा व पैशाचा अपव्यय म्हणून अशा मुलासाठी आर.टी ओ ने नियमात बदल करून व लेखात दिल्याप्रमाणे कर्णबधिरत्वाच्या खु ते रिफ्लेक्टर बसवण्याची अट घालून सर्व कर्णबधिराना दुचाकी वाहन चालविण्याचा परवाना द्यावा वि भ आपटे, पुणे

कार्यक्षम राजकीय व्यवस्था हवी

रशियाचे राष्ट्राध्यक्ष गोर्बाचोव्ह यानी समाजवाद- समतावाद सोडून देऊन लोकशाहीचा मार्ग अवलबिला पण लोकशाहीराष्ट्रात लोकाचे सरक्षण व प्रगती होते का याचा विचार व्हावयास हवा मध्यवर्ती शासन यत्रणा, भक्कम, राष्ट्रीय बाण्याची व लोकहितदक्ष असल्याशिवाय लोकशाही यशस्वी होऊ शकत नाही लोकशाहीतील स्वातत्र्याचा दुरुपयोग होत आहे सगळे प्रश्न, लोक रस्त्यावर येऊन सोडवू पाहात आहेत बेळगावचा प्रश्न लोकशाही मार्गाने का सुटत नाही ? कोठलीहीराज्य यंत्रणा यशस्वी होण्यासाठी ती राबविणारे, चारित्र्यसपन्न, निस्वार्थी, लोकहितदक्ष व राष्ट्रप्रेमीच असावे लागतात यासाठी कार्यक्षम राजकीय व्यवस्थेची देशाला नितात गरज आहे

डॉ पा गो पुरदरे, पुणे.

मोलाचे मार्गदर्शन

मधुमेहावर नियत्रण आणि लोकशिकण्याची गरज (सकाळ ८ जून) या डॉ. मदन फडणीस याच्या विचाराने एकप्रकारे दिलासा आणि मार्गदर्शन लाभले एकूण सर्वच अन्नातून शेवटी काहीअशी साखर निर्माण होते व इन्शुलिनच्या सहाय्याने पेशींना पोहोचविली जाते त्याचप्रमाणे चुकीचा समज काही प्रमाणात निश्चितच दूर केला सामाजिक बाधिलकेच्या जाणिवेतून दिलेले हे लोकशिक्षण व मार्गदर्शन मोलाचेच ठरेल.

मधुसूदन श ढोकळे (मास्तर), पिंपरी

यांस जबाबदार कोण ?

'चासकमान' या धरणाच्या नियोजित प्रकल्पामध्ये यावर्षीच पाणी अडविल्यामुळे गेले ८ दिवस तेथील नागरिकाची अवस्था दयनीय अशी होती, तथापि 'पाणी अडविण्याचा' निर्णय ज्या घाईने घेतला, ती घाई धरणग्रस्ताच्या पुनर्वसनासाठी का दाखवली नाही ? पाणी अडविल्यानतर वापरण्यासाठी जो पर्यायी रस्ता केला तो एका पावसातच कसा खचतो ? धरणग्रस्ताना पर्यायी जागा मिळून फक्त १- २ महिनेच झाले आहेत तथापि, या कालावधीत नवीन जागेत सर्वांनाच नवीन बाधकाम करणे शक्य आहे का, याचा विचार केलेला दिसत नाही. पूर्वसूचना दिल्यानतर पुरेसा कालावधी न मिळाल्यामुळे 'बिबी' गावातील अनेक धरणग्रस्ताचे नुकसान झाले तसेच पर्यायी रस्ता खचल्यामुळे तेथून पुढच्या गावाचा सपर्क ८- १० दिवस तुटला या सर्व कारणामुळे या धरणग्रस्ताचे जे हाल होत आहेत, त्यास शासनच जबाबदार आहे याची योग्य ती चौकशी व्हावी

राजेंद्र काजळे, वाडा, खेड

बेजबाबदार निवेदने टाळा

भारत-पाकिस्तान सरहद्दीवर तैनात केलेल्या सीमा सुरक्षा दलातील पाचशे जवानाना निवडणूक बदोबस्ताचे कामासाठी तेथून काढून घेण्यात आले आहे, असे वृत्त वाचनात आले (सकाळ १३ जून) देशातील या निवडणुकीसाठी सुरक्षा बदोबस्त लागणार, हे निर्विवाद, पण त्यासाठी आपल्या देशात बळजबरीने घुसणाऱ्या घुसखोराना प्रतिबध करण्यासाठी सीमेवर तैनात केलेल्या सुरक्षा व्यवस्थेत कपात करणे योग्य नाही याशिवाय सुरक्षा सैनिक कारणपरत्वे काढून घेतले, तरी तसे निवेदन सुरक्षा यत्रणेतील जबाबदार अधिकाऱ्याने करणे योग्य म्हणता येणार नाही

शकर वा दामोदरे, पुणे

'श्वान' लस उपलब्ध व्हावी

तळेगाव-ढमढेरे येथील प्राथमिक आरोग्य केंद्रात 'श्वान'लस उपलब्ध नाही लसटोचणीसाठी रुग्णाला तालुक्याच्या ठिकाणी न्यावे लागते सदर अडचण जाणून येथील आरोग्य केंद्रात सदरील रुग्णाची 'श्वान'लस उपलब्ध होणे आवश्यक आहे

विजय सभाजी ढमढेरे, कोंढापुरी, ता शिरूर, जि पुणे

छळ पुरस्कार.... एक आवाहन

पुरदर तालुका ग्राहक मचने म रा.वि म च्या सासवड येथील कार्यालयास सतत वीजपुरवठा खडित केल्याबद्दल ३१ मे रोजी 'ग्राहक छळपुरस्कार' प्रदान केला. ग्राहक मचच्या या उपक्रमाची दखल दैनिक 'सकाळ'ने प्रथम घेतली, यामुळे असख्य वाचकानी चागली प्रतिक्रिया व्यक्त केली ३१ मे रोजी वीजमडळाने फारशी दखल घेतली नाही, परतु ७ जून रोजी मडळाचे कार्यालयास कुलूप लावण्याचा कार्यक्रम ग्राहक मचने जाहीर करताच मडळाच्या अधिकाऱ्यानी ४ जून रोजी चर्चा करून ग्राहकाच्या अडचणी समजू घेतल्या. आता सासवड परिसरात विद्युतपुरवठा अभावानेच खडित होतो

यावरून ग्राहक सघटित झाला तर त्याचे कोणतेही काम यशस्वी होते, हे दिसून आले आहे

मनोहर पाटील, अध्यक्ष पुरदर तालुका ग्राहक मच, सासवड, पुणे पुरदर, पुणे

मीटर लॉक

काही महिन्यापूर्वी आकाशवाणीवर महाराष्ट्र राज्य वीज मडळाच्या मुख्य अभियत्यानी ग्राहकाच्या तक्रारींना उत्तरे देताना सागितले होते, की विजेची बिले प्रत्यक्ष रीडिंग घऊन तत्परतेने दिली जातील परतु अद्यापपर्यंत 'मीटर लॉक' असा शेरा मारून बिले पाठविली जात आहेत मला मागील ४ बिले (८ महिने) 'मीटर लॉक' म्हणून आली आहेत १ - २ वेळा तर मीटर रीडिंग घेऊन गेल्यावर 'मीटर लॉक' म्हणून बिले मिळाली. आहेत या महिन्यात २७-५-९१ अखेरचे बिल १२-६-९१ ला मला मिळाले त्यावर बील भरण्याची शेवटची तारीख १३-६-९१ आहे हा असा ग्राहकाचा छळ कधी सपणार.

म वि ताडफळे, पुणे

ग्राहकाला भुर्दंड का ?

पुणे येथून एका औषध दुकानातून 'विकास खोकल्याच्या गोळ्या'ची २ पाकिटे खरेदी केली १ पाकीट चागले होते, तर दुसऱ्या पाकिटातील गोळ्याना बुरशी आलेली होती म्हणून त्या औषध दुकानदाराला ते पाकीट आतील गोळ्यासह नेऊन प्रत्यक्ष दाखविले व सदर माल त्या कपन्याच्या विक्रेत्याला दाखवा, अशी विनती केली परत गेल्यावर तो म्हणतो की कपनीचा सेल्समन खराब मालाबाबत काही ऐकायला तयार नाही मग ग्राहकाने सर्व पॅकिंग माल फोडून पहावा काय ? ग्राहकानेच सर्व भुर्दंड सोसावा काय ?

श्रीनिवास पाध्ये, पुणे

बुधवार १९.६.९१ "सकाळ"

महाराष्ट्र टाईम्स, मुंबई
दि १८ ०६ १९९१

कर्णबधिरांनी जागतिक चिन्ह वापरावे

एके दिवशी दुपारी मी फूटपाथवर उभी होते एक मुलगा सायकलवरून चालला होता मागून स्कुटरवाला हॉर्न देत येत होता सायकलवाला एकदम वळला मग नेहमी रस्त्यावर घडते तेच घडले स्कूटर आडवी झाली सायकल मोडली स्कूटरवाल्याचे शब्द कधीचा हॉर्न वाजवतोय— ऐकू येत नाही का आता का बोलत नाहीस— इत्यादी इत्यादी मुलगा नुसताच उभा. मला एकदम शंका आली, हा राजू तर नसेल ? माझ्या मैत्रिणीचा मुलगा मी पुढे गेले तो राजू होता, भाबावून उभा मी त्याच्या पाठीवर हात ठेवला त्याला एकदम आनद झाला तो चेहऱ्यावर दिसला क्षणात हुंदका फुटला स्कूटरवाला बोलतच होता मी म्हटले अहो, याला खरेच ऐकू येत नाही हे बघा याचे श्रवणयत्र स्कूटरवाला ओशाळला म्हणाला, बाई माफ करा" पण आमच्यासारख्याना हे कळावे कसे की हा कर्णबधिर आहे ?

खरच आहे ते पांढरी काठी आता लोकाना चागली माहीत झाली आहे. अस्थिव्यंग लोकाचे जयपुरी पाय, कुबड्या, तिचाकी सायकली हे सर्व लोकांच्या परिचयाचे पण कर्णबधिर व्यक्ती ओळखण्याची काय खूण ? राजूच्या आईशी चर्चा केली तिलाही तोच प्रश्न पडला दूरदर्शनवर बऱ्याच वेळा कर्णबधिरत्वाची खूण म्हणून एक चिन्ह दाखवले गेले राजूच्या आईने मुंबईच्या अलियावर जंग संस्थेशी संपर्क साधून ते चिन्ह मागवले मग त्याचा मोठा कापडी 'बॅज' केला तिने ठरवले की हा 'बॅज' राजूच्या पाठीवर लावायचा

पण हे एकट्या राजूने घालून चालणार नाही सर्वच कर्णबधिर मुलांसाठी हे आवश्यक म्हणून मग आमच्या टिळक कॉलेजमधील शनिवारच्या 'उपक्रम' या कर्णबधिर मुले व त्यांचे पालक यांच्यासाठी चालणाऱ्या उपक्रमातील पालकांशी चर्चा केली काहींनी तयारी दर्शविली. काहींना हे कठीण वाटले परतु नाही मात्र कोणीच म्हटले नाही

रस्ता ओलांडणे, बसमध्ये चढणे - उतरणे, सायकलसारखे वाहन चालवणे हे सर्व या मुलांना स्वतंत्रपणे करावे लागते ही मुले कधी कधी दोन - दोन बसेस करून शाळेपर्यंत पोहोचतात कोणी क्लासला जातो या सर्व ठिकाणी पालक त्यांच्याबरोबर असणे शक्य नाही तरी असा पाठीवर बॅज असला तर इतरांना त्याची जाणीव होईल व वाहनचालक सावध होईल. कोणी पुढे येऊन रस्ता क्रॉस करायला, बसमध्ये चढतांयास मदत करील म्हणून राजूच्या आईचा आदर्श डोळ्यापुढे ठेवून सर्वांनी असे बॅजेस् लावले पाहिजेत. सायकललाही मागे असा बॅजचा बोर्ड लावला पाहिजे म्हणजे या मुलांच्या सुरक्षिततेसाठी मोठीच मदत होईल.

एका कर्णबधिर मोठ्या वयाच्या मुलाशी बोलताना आणखी एक गोष्ट जाणवली या मुलांना आर टी. ओ कडून वाहन चालक परवाना मिळत नाही. आपापल्या धंद्यामध्ये स्थिर असणाऱ्या व आर्थिकदृष्ट्या परवडत असूनही अशा व्यक्तींना वाहन घेता येत नाही बस अथवा रिक्षा ही धंद्याच्या दृष्टीने सोयीची पडत नाही. वाहनामध्ये काही विशिष्ट बदल करून व अशा निदान दुचाकी वाहनांना कर्णबधिरत्वाचे खुणेचे 'रिफ्लेक्टर्स' बसवून, पुढे दोन्ही बाजूला आरसे लावून या लोकांनाही अशी निदान दुचाकी वाहने चालवता येऊ शकतील का ?— म्हणजे ॲम्ब्युलन्स म्हणजे पांढरी गाडी, वर लाल दिवा म्हणजे व्ही. आय. पी. गाडी, अशा गोष्टी जनमानसात पक्क्या झाल्यात, तशी ही झाली तर रहदारीतही या व्यक्ती तग धरू शकतील

पाश्चिमात्य देशांमध्ये कर्णबधिराना वाहन परवाना दिला जातो त्यांच्या गाड्यांना तसा बोर्ड असतो, की चालक कर्णबधिर आहे अशा तऱ्हेची सोय आपल्याकडेही उपयुक्त होऊ शकेल कर्णबधिर मंडळींना ते वरदान ठरेल

सध्याचे युग हे गतिमान युग आहे घड्याळाबरोबर शर्यत ही जशी सामान्य माणसांची आहे तशीच अपंगांचीही आहे अपंगत्वामुळे त्यांना ही शर्यत करताना खूपच त्रास होतो त्यांना सामाजिक व शारीरिक गतिमानता साधण्यासाठी मदत करणे हे आपले कर्तव्य आहे सामाजिक समायोजन व पुनर्वसनासाठी ही आवश्यक बाब आहे त्यासाठी ही व्यक्ती चटकन् ओळखता येणे महत्त्वाचे आहे. तेव्हा हा बॅज त्यांना लावायला सांगून अनेक दृष्टीने त्यांची सोय बघता येईल. आजचे त्यांचे 'मूक' व्यंग हे जास्त बोलके होईल व प्रगतीचा मार्ग खुला होईल.

हे पुढचे सर्व चित्र डोळ्यासमोर ठेवायला हवे. निदान आज जी शाळकरी मुले आहेत त्यांच्याकरिता तरी अशी बॅजिसची योजना राबविण्यास सुरुवात केली तर मुलांचे पालक खूपच निर्धास्त राहतील राजूच्या आईने सुरुवात केलीच आहे इतरांनी त्यात सामील होण्याची गरज आहे याबाबत आपल्याला अधिक माहिती व सहकार्य हवे असल्यास टिळक कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, पुणे-३० इथे संपर्क साधावा

—श्रीमती लता परांजपे,
४ फाटक बाग, नवी पेठ,
पुणे ३०.

श्रीमती स्मिता जयंत साठ्ये,
४७/७३१ लोकमान्यनगर,
पुणे-४११ ०३०.